IUC ACADEMY

INCLUSIVE UNIVERSAL CAREERS ACADEMY

Learn. Prepare. Progress. • www.iucacademy.com

IUC अकादमी नोट्स

संपूर्ण
पाठ्यक्रम • विस्तृत व्याख्या • तुलनात्मक सारणियाँ • अभ्यास प्रश्न

भारतीय कला एवं संस्कृति

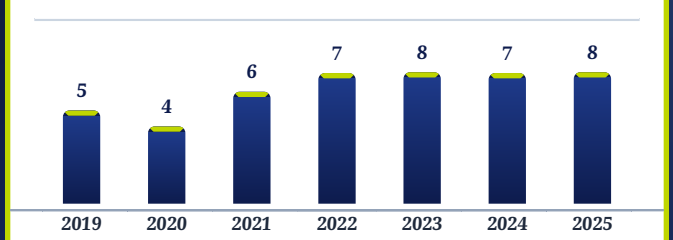
INDIAN ART, HERITAGE & CULTURE

सिविल सेवा (UPSC CSE), राज्य पीसीएस (UPPSC, BPSC, MPPSC, RAS) एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु संपूर्ण सचित्र अध्ययन नोट्स

विषयवार परीक्षा प्रश्न भार विभाजन (%)



विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का रुझान



इस पुस्तक के प्रमुख अध्याय एवं परीक्षा भार

- वास्तुकला एवं मंदिर शैली (26%)
- बौद्ध एवं जैन धर्म-दर्शन (22%)
- साहित्य, भाषा एवं लिपि (18%)
- शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत (14%)
- चित्रकला एवं हस्तशिल्प (12%)
- यूनेस्को धरोहर एवं विविध (8%)

संपूर्ण पाठ्यक्रम
NCERT एवं मानक स्रोत

ग्राफ व चित्र
फ्लोचार्ट, सारणियाँ व आरेख

स्मृति ट्रिक्स
त्वरित याद करने के सूत्र

अभ्यास प्रश्न
व्याख्या सहित हल

आमुख एवं परीक्षा रणनीति मार्गदर्शिका — भारतीय कला एवं संस्कृति

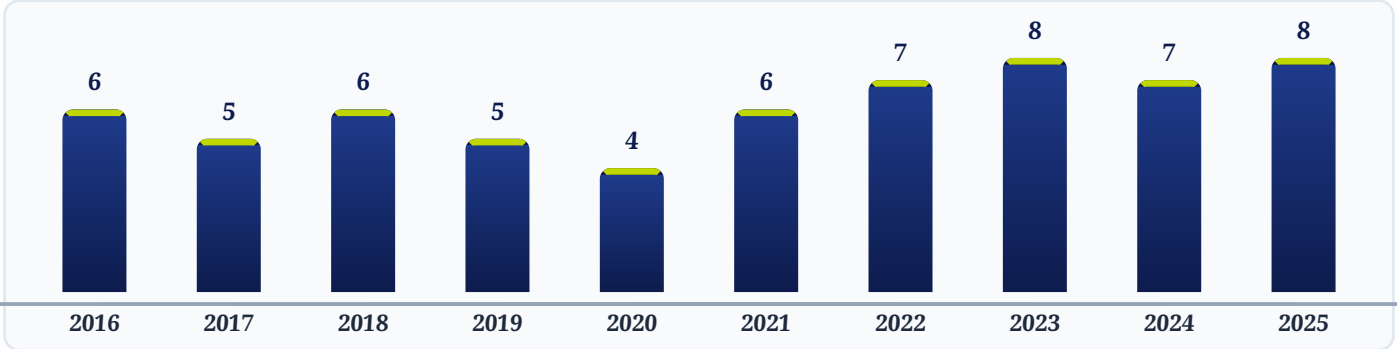
IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy) • छात्रों की सरल समझ हेतु विशेष रूप से निर्मित

प्रिय विद्यार्थियों,

सिविल सेवा (UPSC CSE) एवं विभिन्न राज्य लोक सेवा आयोगों (UPPSC, BPSC, MPPSC, RAS) की परीक्षाओं में सफलता का मूल मंत्र है — **"कम से कम समय में सटीक अवधारणा और बार-बार रिवीजन"**। अधिकांश पुस्तकों में सामग्री अत्यंत जटिल और बिखरी हुई होती है, जिससे छात्रों को मुख्य बिंदुओं को याद रखने में कठिनाई होती है।

इसी समस्या के समाधान हेतु **IUC Academy (www.iucacademy.com)** के शिक्षाविदों ने इस पुस्तक को पूर्णतः **मौलिक, छात्र-हितैषी और सुस्पष्ट भाषा** में नए सिरे से संकलित किया है। इसमें प्रत्येक विषय को सरल व्याख्या, स्पष्ट की-वर्ड्स, तुलनात्मक सारणियों, सचित्र आरेखों, डेटा ग्राफ और यादगार **IUC स्मृति ट्रिक्स** के साथ प्रस्तुत किया गया है।

विगत 10 वर्षों (2016–2025) में 'भारतीय कला एवं संस्कृति' से पूछे गए प्रश्नों का रुझान ग्राफ



1. सरल छात्र व्याख्या

प्रत्येक कठिन बिंदु को आसान भाषा में समझाया गया है ताकि पहली बार पढ़ने वाला छात्र भी तुरंत समझ सके।

2. स्मृति सूत्र (Tricks)

तथ्यों, तिथियों, सूचियों और अनुच्छेदों को याद रखने के लिए विशेष IUC निमोनिक्स दिए गए हैं।

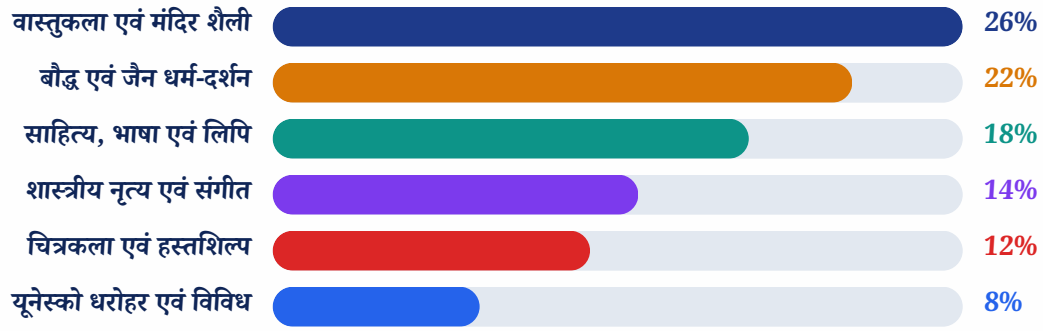
3. त्वरित रिवीजन

सारणियों, फ्लोचार्ट और अध्याय सारांश की सहायता से परीक्षा के अंतिम दिनों में पूरा पाठ्यक्रम दोहराएँ।

विषयवार प्रश्न भार विश्लेषण एवं उच्च-प्राथमिकता डैशबोर्ड

परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने हेतु अध्यायवार प्राथमिकता सूचकांक एवं प्रमुख स्मृति सूत्र

अध्यायवार प्रश्न वितरण सूचकांक (Topic-wise Weightage %)



इस पुस्तक की शीर्ष 5 मास्टर स्मृति ट्रिक्स (Top Memory Mnemonics)

1. सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल व नदियाँ: ट्रिक: 'लोभी मौसी का हरा कंघा रमा ने ले लिया' — लोथल (भोगवा), मोहनजोदड़ो (सिंधु), हड़प्पा (रावी), कालीबंगन (घग्गर), रंगपुर (मादर), रोपड़ (सतलज)।

2. सारनाथ अशोक स्तंभ के 4 पशु (दिशा अनुसार): ट्रिक: 'घोड़ा पश्चिम, हाथी पूरब, बैल दक्षिण, शेर उत्तर' — अबेकस पर 24 तीलियों वाला धर्मचक्र और मुंडक उपनिषद से 'सत्यमेव जयते' उत्कीर्ण है।

3. भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य एवं राज्य: ट्रिक: 'भरत नाट्टू, गान करना, पूरी आदिल, कथक उत्तर, कली-मोहिनी केरल, मणि-सत्र असम' — भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कुचिपुड़ी (आंध्र), कथक (उ.प्र.), कथकली व मोहिनीअट्टम (केरल), मणिपुरी (मणिपुर), ओडिसी (ओडिशा), सत्रिया (असम)।

4. षड्दर्शन एवं उनके प्रवर्तक: ट्रिक: 'सांख्य कपिल, योग पतंजलि, न्याय गौतम, वैशेषिक कणाद, मीमांसा जैमिनी, वेदांत बादरायण' — भारतीय आस्तिक दर्शन की 6 मूल शाखाएँ।

5. बौद्ध संगीतियाँ: स्थान एवं शासक: ट्रिक: 'राजा-महाराजा आजा, वैशाख में सबका काल है, पटाओ मत आशिक, कुंवर जी कंगाल हैं' — 1. राजगृह (अजातशत्रु), 2. वैशाली (कालाशोक), 3. पाटलिपुत्र (अशोक), 4. कुंडलवन (कनिष्क)।

पुस्तक की विस्तृत विषय-सूची (Table of Contents)

1. भारतीय वास्तुकला

- सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला
- मौर्य वास्तुकला
- मौर्योत्तर वास्तुकला
- स्तूप और लोक परंपराएँ
- गुप्त वास्तुकला
- इंडो-इस्लामिक वास्तुकला
- आधुनिक वास्तुकला

2. मंदिर वास्तुकला

- प्रारंभिक मंदिर
- नागर (उत्तर भारतीय मंदिर शैली)
- द्रविड़ (दक्षिण भारतीय मंदिर शैली)
- वेसर और अन्य क्षेत्रीय शैलियाँ

3. भारतीय मूर्तिकला

- सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ
- मौर्यकालीन मूर्तियाँ
- मौर्योत्तरकालीन मूर्तियाँ
- गुप्त कालीन मूर्तियाँ
- मध्यकालीन मूर्तियाँ

4. भारतीय चित्रकला

- प्रागैतिहासिक शैलचित्र
- भित्ति चित्र
- नायक चित्रकला
- केरल भित्तिचित्र
- लघु चित्रकारी
- क्षेत्रीय शैलियाँ (17वीं-19वीं शताब्दी)
- पहाड़ी शैली
- आधुनिक चित्रकला
- लोक चित्रकला

5. भारत में नृत्य शैलियाँ

- भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ
- भरतनाट्यम (तमिलनाडु)
- कथकली (केरल)
- कथक (उत्तर प्रदेश)
- मणिपुरी शैली (मणिपुर)
- ओडिसी (ओडिशा)
- कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश)
- सत्रिया (असम)
- मोहिनीअट्टम (केरल)

6. भारतीय संगीत

- भारतीय संगीत का इतिहास
- शास्त्रीय संगीत
- हिंदुस्तानी संगीत
- हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ
- कर्नाटक संगीत
- लोक संगीत
- संगीत वाद्यंत्र

7. भारतीय धर्म एवं दर्शन

- हिंदू धर्म के विभिन्न संप्रदाय
- शैव धर्म
- भारतीय धर्म एवं दर्शन
- भारतीय दर्शन के संप्रदाय
- पारसी धर्म
- ईसाई धर्म
- यहूदी धर्म
- इस्लाम
- सिख धर्म
- 8. भारतीय साहित्य एवं भाषा 61
- भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्टभूमि
- द्रविड़ साहित्य
- भारतीय भाषाएँ एवं उनका प्रभाव

9. भारत के प्रमुख नाट्यरूप और कठपुतली कला

- रंगमंच के रूप
- लोक नाट्य (FOLK THEATRE)
- भारत की कठपुतली कला

10. भारतीय हस्तशिल्प

- काँच से निर्मित वस्तुएँ
- कपड़े पर हस्तशिल्प
- हाथी दाँत शिल्प (Ivory Crafting)
- टेराकोटा शिल्प
- मिट्टी के बर्तनों की शिल्पकला
- धातु शिल्प
- चमड़े के उत्पाद
- काष्ठ कला
- विभिन्न प्रकार के खिलौने
- पत्थर की वस्तुएँ (Stoneware)

• कढ़ाई शिल्प (Embroidery Crafts)
• भारत में ब्लॉक प्रिंटिंग
• फर्श के डिजाइन
• जीआई टैग (GI Tag) प्राप्त प्रमुख हथकरघा उत्पाद 11. विभिन्न कालों में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 84
• खगोल विज्ञान (Astronomy)
• चिकित्सा (Medicine)
• धातुकर्म (Metallurgy)
• नौवहन (Navigation)
• जीव विज्ञान (Biology)
• रसायन विज्ञान (Chemistry)
• कृषि (Agriculture) 12. भारत में सांस्कृतिक संस्थान और पुरस्कार 88
• भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण
• भारतीय शिल्प परिषद
• इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र
• ऑल इंडिया रेडियो
• सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र
• भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार
• भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
• राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम
• भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद
• राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन
• कला और सांस्कृतिक विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट
• साहित्य अकादमी
• संगीत नाटक अकादमी
• ललित कला अकादमी
• पुरस्कार एवं सम्मान 13. यूनेस्को की सूची में शामिल भारत के विश्व धरोहर स्थल 93
• मूर्त विश्व धरोहर स्थल

14. विविध

• भारत में मार्शल आर्ट
• भारत में त्योहार और मेले
• प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय सिक्के
• मध्यकालीन सिक्के
• ब्रिटिश कालीन और आधुनिक सिक्के

15. परिशिष्ट

• नवीन संग्रहालय
• महत्त्वपूर्ण पुस्तकें एवं लेखक
• विदेशी यात्री और उनके अवलोकन/विवरण
• भारत में महत्त्वपूर्ण भक्ति आंदोलन
• भारत के महत्त्वपूर्ण सूफी संप्रदाय
• दिल्ली के सात शहर
• महत्त्वपूर्ण GI Tags की सूची

भारतीय वास्तुकला — परिचय

वास्तुकला का मुख्य अभिप्राय संरचनाओं को डिजाइन करने की कला और विज्ञान से है।

भारतीय वास्तुकला की कहानी प्राचीन सिंधुघाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक स्वतंत्र भारत तक के क्रमिक विकास की कहानी है सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला भारतीय वास्तुकला के सबसे पुराने अवशेष सिंधु घाटी सभ्यता स्थल- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, रोपड़, कालीबंगन, लोथल और रंगपुर में प्राप्त हुए हैं।

- इस सभ्यता के नगरों को एक आयताकार ग्रिड पैटर्न में बसाया गया था जिसमें सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- **मानकीकरण:** मानकीकृत आयामों में पकी हुई मिट्टी के ईंटों का उपयोग किया और जिप्सम, मोर्टार का उपयोग करके ईंटों की परतों को एक साथ जोड़ा।
- **आवासीय इमारतें:** घरों को सामान्य रूप से आँगन, सपाट छतों और कई कमरों के साथ बनाया जाता था। बड़े घरों में सामान्यतः निजी कुएँ और स्नानगृह होते थे। दरवाज़े और खिड़कियाँ शायद ही कभी मुख्य सड़कों पर खुलती थीं, जिससे गोपनीयता बनी रहती थी।
- **रक्षात्मक संरचनाएँ:** बाढ़ और आक्रमणों से बचाने के लिए शहरों में ईंटों से बनी किलेबंद दीवारें होती थीं।
- **उठा हुआ मंच:** ऊपरी और निचले दोनों शहर ऊँचे मंचों पर बने थे, लेकिन ऊपरी शहर के मंच की ऊँचाई अधिक थी।
- धौलावीरा एक विशिष्ट जगह है, क्योंकि इसे तीन भागों में विभाजित किया गया था और निर्माण में जली हुई ईंटों की बजाय पत्थरों का उपयोग किया गया था।
- **उन्नत जल निकासी प्रणाली:** शहर उन्नत जल निकासी प्रणाली से सुसज्जित थे जिसमें प्रत्येक घरकी छोटी नालियाँ, एक बड़े नाले से जुड़ी हुई थीं।
  - नियमित सफाई और रखरखाव के लिए नालियों को अस्थाई तौर पर ढका गया था।
  - नियमित अंतराल पर मलकुण्ड की उपस्थिति के अलावा कुओं की उपस्थिति भी देखी गई।
- **शहरों को दो प्रभागों में विभाजित किया गया था:** गढ़/ उच्च शहर निचला शहर
- पश्चिमी भाग में स्थित
- निचले शहर से छोटा
- इसमें बड़ी-बड़ी इमारतें जैसे अन्न भंडार, प्रशासनिक भवन, स्तंभ वाले हॉल, शासकों और अभिजात वर्ग के निवास, प्रांगण आदि सम्मिलित थे।
- पूर्वी भाग में अवस्थित
- गढ़ से बड़ा
- एक कमरे वाले छोटे घर संभवतः कार्यशील वर्ग के लिए बनाए गए।

मौर्य वास्तुकला

मौर्य वास्तुकला बौद्ध धर्म और जैन धर्म से प्रभावित थी। राज्य संरक्षण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के आधार पर इसे दरबारी कला और लोक कला में विभाजित किया गया है।

1. दरबारी कला

इसमें शासकों द्वारा बनवाए गए वास्तुशिल्प सम्मिलित हैं। इसका उपयोग राजनीतिक और धार्मिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था।

महल

- कुम्रहार में अशोक का महल एक तीन मंजिला विशाल लकड़ी की संरचना थीजिसमें एक ऊँचा केंद्रीय स्तंभ था।
- चंद्रगुप्त मौर्य का महल, ईरान में पर्सेपोलिस के एके मेनिड महलों (Achaemenid palaces) से प्रभावित था। मेगस्थनीज के अनुसार यह महल मानव जाति की महानतम कृतियों में से एक था।

स्तंभ

अशोक के स्तंभ शिलालेख राज्य के प्रतीक के रूप में और युद्ध विजय की स्मृति में बनवाए गए थे।

- स्तंभ सामान्य रूप से चुनार के बलुआ पत्थर से बने थे।

• **स्तंभ को चार भागों से वर्गीकृत किया गया है:**

◦ **यष्टि (Shaft):** यष्टि एक पत्थर के टुकड़े या मोनोलिथ (एकाश्म) से बना होता है जिससे स्तंभ के आधार का निर्माण होता है।

◦ **शिखर (Capital):**शिखर यष्टि के ऊपर स्थित होता है। यह कमल या घंटी के आकार का हो सकता है। ईरानी स्तंभों से प्रभावित घंटी के आकार वाले ये स्तंभ, अपने विशेष चमक औरविशिष्ट परिमार्जन के लिए जाने जाते हैं।

◦ **अबेकस (Abacus):**शिखर (Capital)के शीर्ष पर, एक गोलाकार या आयताकार आधार होता है जिसे अबेकस के नाम से जाना जाता है।

अबेकस पर जानवरों की आकृतियों को स्थापित किया जाता है।

◦ **शिखर आकृतियाँ (Capital Figure):** ये सामान्य रूप से बैल, शेर, हाथी जैसे जानवरों की आकृतियाँ होती हैं।

• शिखर आकृतियों वाले कुछ मौजूदा स्तंभ बिहार के बसरा-बखिरा, लौरिया नंदनगढ़ और रामपुरवा (वृषभ) में तथा उत्तर प्रदेश में संकिसा और सारनाथ (अशोक स्तंभ) में प्राप्त हुए हैं।

चित्र: सारनाथ स्तंभ

राष्ट्रीय प्रतीक

• सारनाथ स्तंभ का अबेकस और शीर्ष भाग का सिंह, देश के आधिकारिक राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

• सारनाथ स्तंभ के अबेकस में चार जानवर चार दिशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं- घोड़ा (पश्चिम), हाथी (पूर्व), वृषभ (दक्षिण) और शेर (उत्तर)।

अबेकस में चारों दिशाओंमेंचौबीस तीलियों वाले एक चक्र का चित्रण है।

• पशुओं की गति दाएँ से बाएँ होती है। राष्ट्रीय प्रतीक पर बैल को नीचे दाईं ओर तथा घोड़े को नीचे बाईंओर देखा जा सकता है।

◦ हाथी, रानी मायादेवी के स्वप्न को दर्शाता है, वृषभ उस महीने की राशि (वृषभ) को दर्शाता है जिसमें बुद्ध का जन्म हुआ था, घोड़ा बुद्ध के घोड़े कंथक का प्रतिनिधित्व करता है,जिसका उपयोग उन्होंने राजसी जीवन से दूर जाने के लिए किया था और सिंह, आत्मज्ञान की प्राप्ति को दर्शाता है।

◦ इस स्तंभ शिखर का निर्माण अशोक ने धर्मचक्रप्रवर्तन (बुद्ध द्वारा पहला उपदेश) की स्मृति में करवाया था।

◦ चार शेर के प्रतीक, सभी दिशाओं में बुद्ध के धम्म को फैलाने के प्रतीक हैं।

• राष्ट्रीय प्रतीक में, मुंडक उपनिषद के शब्द “सत्यमेव जयते” जिसका अर्थ, “सत्य की ही जीत होती है,” अबेकस के नीचे देवनागरी लिपि में अंकित है।

अशोक और अकेमेनियन (हखामनी) स्तंभों के बीच अंतर पहलू अशोक स्तंभ अकेमेनियन स्तंभ अवधि तीसरी शताब्दी ई.पू. छठी-चौथी शताब्दी ई.पू.

उद्देश्य अशोकके धम्म (नैतिक कानून) के संदेशों के विस्तार के लिए स्वतंत्रूप से शिलालेखों के रूप में स्थापित।

बड़े महलनुमा या औपचारिक — संरचनाओं, जैसे- दर्शक हॉल

(अपादान) को सहारा देने आदि के लिए।

सामग्री बलुआ पत्थर या अन्य — स्थानीय पत्थर — चूना पत्थर, बलुआ पत्थर या अन्य — स्थानीय पत्थर — संरचना शिखर के साथ एकल — अखंड यष्टि

ऊँचे, विस्तृत शिखर के साथ बाँसुरीदार यष्टि और एक साथ जोड़े गए कई पत्थर धार्मिक प्रभाव बौद्ध धर्म से संबद्ध पारसी धर्म और फारसी संस्कृति से संबद्ध शिखर (Capital) शेर, हाथी और वृषभ की मूर्तियाँ अधिकाशतः बड़े अक्षरों में जुड़वा बैलों के सिर, ग्रिफिन या अन्य पौराणिक जीव अंकित होते हैं।

स्तूप

स्तूप मूल रूप से शवाधान टीलों को कहा जाता है। स्तूप शवाधान टीले का पारंपरिक रूप सेप्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें मृतकों के अवशेष और राख रखी जाती है। बौद्ध-पूर्व होने के बावजूद, स्तूपों को बौद्धों द्वारा लोकप्रिय बनाया गया। **[UPSC 2023]**

स्तूप के संरक्षक

संरक्षकों में सामान्य लोगों से लेकर गहपति और राजा तक शामिल होते थे।

• कई स्थलों पर शिल्पीसंघों द्वारा दान का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। यद्यपि, बहुत कम शिलालेख हैं जिनमें कारीगरों के नामों का उल्लेख है, जैसे- पीतलखोरा (पश्चिमी घाट में सतमाला रेंज) में कान्हा और महाराष्ट्र में कोंडाने गुफाओं (लोनावाला के पास) में स्थित शिलालेख।

• शिलालेखों में कारीगरों की श्रेणियों जैसे पत्थर तराशने वाले, सुनार, पत्थर पॉलिश करने वाले, बढ़ई आदि का भी उल्लेख किया गया है।

• दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से, संरक्षण का पैटर्न बहुत सामूहिक रहा है और शाही संरक्षण के बहुत कम उदाहरण देखने को मिलते हैं।

चित्र: स्तूप की संरचना — चित्र: साँची स्तूप — स्तूप की विशेषताएँ

बौद्ध स्तूप एक ठोस संरचना वाला एक अर्द्ध-गोलाकार गुंबद है।

• स्तूप का मुख्य भाग कच्ची ईंटों से बना हुआ है वहीं दूसरी ओर बाहरी सतह पक्की ईंटों से बनी हुई है।

• इसमें एक बेलनाकार संरचना होती है जिसके शीर्ष पर हर्मिका और छतरी बनी होती है।

• यह प्रदक्षिणा पथ से घिरा होता है, जहाँ भक्त परिक्रमा करते हैं।

• पूरी संरचना लकड़ी की रेलिंग और तोरण नामक प्रवेश द्वारों से भी घिरी होती है।

• बुद्ध के जीवन की घटनाओं, जैसे- जन्म, परित्याग, ज्ञानोदय, धर्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण को कमल, हाथी, जातक कथाओंआदि प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: राष्ट्रीय प्रतीक



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — राष्ट्रीय प्रतीक

मुख्य परीक्षा दृष्टि: बुद्ध के जीवन की घटनाओं, जैसे- जन्म, परित्याग, ज्ञानोदय, धर्मचक्रप्रवर्तन और महापरिनिर्वाण को कमल, हाथी, जातक कथाओंआदि प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: राष्ट्रीय प्रतीक • बड़े महलनुमा या औपचारिक • संरचनाओं, जैसे- दर्शक हॉल • सामग्री बलुआ पत्थर या अन्य • स्थानीय पत्थर | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2023

महत्त्वपूर्ण स्तूप

• **बुद्ध के अवशेषों पर स्तूप का निर्माण:**
  ◦ बिहार में राजगृह, वैशाली, वेथादीपा और पावा।
  ◦ नेपाल में कपिलवस्तु, अल्लकप्पा और रामग्राम।
  ◦ उत्तर प्रदेश में कुशीनगर और पिप्पलिवन।

• अवंती और गांधार सहित कई स्थानों पर बुद्ध के अवशेषों पर कई अन्य स्तूपों के निर्माण का भी विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है, जो गंगा घाटी के बाहर हैं।

• भरहुत, बोधगया, अमरावती और नागार्जुनकोंडा अन्य महत्त्वपूर्ण स्थल थे।

साँची का स्तूप

साँची स्तूप जो एक विश्व धरोहर स्थल है, भोपाल के पास रायसेन जिले में बेतवा नदी के पश्चिम में अवस्थित है। **[UPSC 2021]**

• अन्य अपेक्षाकृत छोटे स्तूपों के साथ, साँची में तीन मुख्य स्तूप हैं।
  ◦ ऐसा माना जाता है कि स्तूप-1 में बुद्ध के अवशेष हैं।
  ◦ स्तूप-2 में तीन अलग-अलग पीढ़ियों से संबंधित दस कम प्रसिद्ध अर्हतों (जिन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है) के अवशेष हैं। उनके नाम अवशेष ताबूत पर पाए जाते हैं।

◦ स्तूप-3 में सारिपुत्त और महामौगलायन (बुद्ध के दो प्रमुख शिष्य) के अवशेष हैं।

• मूल रूप से, स्तूप एक छोटी ईंट की संरचना थी जिसका समय के साथ विस्तार हुआ। बाद में, इसे पत्थर से ढक दिया गया और वेदिका तथा तोरण (प्रवेश द्वार) से घेर दिया गया।

• शिलालेख के साथ अशोक का सिंह-शीर्ष स्तंभ, स्तूप के दक्षिणी ओर पाया गया है।

• यहाँ ऊपरी प्रदक्षिणा पथ भी है,जो इस स्थल के लिए अद्वितीय है।

• चारों प्रवेश द्वारों कोमूर्तियों द्वारा सजाया गया है। साँची की मूर्तियाँ, आयाम में छोटी होने के बावजूद, बहुत प्राकृतिक हैं।

• स्तंभों पर यक्षों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं और शालभंजिका (पेड़ की शाखा पकड़ेहुएमहिला)कीमूर्तियाँअपने आकर्षक आकारके लिए उल्लेखनीय हैं।

• अशोक के काल में स्तूप कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची थी।

2. लोक कला

शाही समर्थन के अलावा, स्थानीय समर्थन के माध्यम से मूर्तिकला, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ और गुफा निर्माण सहित, कला के रूपों का विकास हुआ। इन्हें लोक कला के रूपों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

गुफा वास्तुकला

रॉक-कट गुफा वास्तुकला का विकास मौर्य काल के दौरान हुआ और सामान्य रूप से इन रॉक-कट गुफाओं का उपयोग जैन और बौद्ध भिक्षुओं द्वारा विहार (आवास स्थल) के रूप में किया जाता था।

• गुफाओं की मुख्य विशेषताओं में अत्यधिक पॉलिशयुक्त आंतरिक भाग और सजावटी प्रवेश द्वार थे।

• प्रारंभिक मौर्य गुफाओं का उपयोग आजीवक संप्रदायों द्वारा किया जाता था। बाद में, वे बौद्ध मठों के रूप में लोकप्रिय हो गईं।

• बिहार के बराबर और नागार्जुनी गुफाओं का निर्माण मौर्य काल के दौरान हुआ था।

◦ मुख्य विशेषताओं में आयताकार और गोलाकार प्रवेश द्वार, चिकनी आंतरिक दीवारें और ध्यान हेतु न्यूनतमकक्ष सम्मिलित हैं। लोमस ऋषि गुफा जैसी कुछ गुफाओं में मेहराब द्वार और सम्राट अशोक के शिलालेख हैं।

◦ गुफाएँ ज्यामितीय नक्काशी और शिलालेखों के साथ प्राकृतिक परिवेश में रणनीतिक रूप से स्थित हैं, जो संप्रदाय की कठोर जीवन शैली और प्रकृति से जुड़ाव पर बल देती हैं।

◦ बराबर पहाड़ियाँ चार गुफाओं के समूह को समाहित करती हैं, जिन्हें एक साथ 'बराबर गुफाएँ' कहा जाता है। इन्हें 'लोमस ऋषि', 'सुदामा', 'विश्वकर्मा' और 'करण चौपड़' गुफाओं के नाम से जाना जाता है।

◦ नागार्जुनी गुफाओं में वादीथीका गुफा, वापियका गुफा और गोपिका गुफा सम्मिलित हैं।

लोमस ऋषि गुफाएँ [UPSC 2013]

ये बिहार में गया के पास बराबर पहाड़ियों पर चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ हैं।

• ये गुफाएँ अशोक ने आजीवक संप्रदाय को दान में दी थीं।

• गुफा को प्रवेश द्वार पर अर्द्ध-वृत्ताकार चैत्य मेहराब से सजाया गया है।

• नासिक की गुफाओं(महाराष्ट्र) को पांडव लेनी (लेणी) गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है। [UPSC 2021]

मूर्तियाँ

इसका उपयोग मुख्य रूप से स्तूपों में तोरण, मेधी की सजावट और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था।

• मौर्यकाल की मूर्तियाँ जैन, हिंदू और बौद्ध तीनों धर्मों से संबंधित हैं।

• ये अपनी यथार्थवादी, प्राकृतिक शैली, चिकनी सतह और पॉलिश पत्थर के लिए प्रसिद्ध हैं। मुख्य प्रतिमाओं में पशु प्रतीकरवाद (जैसे- शेर और हाथी), धर्मचक्र जैसी प्रारंभिक बौद्ध प्रतिमाएँ और दीदारगंज यक्षिणी (उर्वरता और प्रचुरता का प्रतीक एक विस्तृत और सुंदर महिला आकृति) सम्मिलित हैं।

उल्लेखनीय उदाहरणों में सारनाथ का सिंह स्तंभ और रामपुरवा स्तंभ सम्मिलित हैं।

मृदभांड के बर्तन

- मौर्य काल के मिट्टी के बर्तनों को उत्तरी काले परिमार्जित (पॉलिश्ड) मृदभांड (NBPW) के नाम से सुप्रसिद्ध है।
- उनकी विशेषता यह थी कि वे काले रंग के अत्यधिक चमकदार मृदभांड थे और उन्हें मिट्टी के बर्तनों में विशिष्ट श्रेणी के बर्तन माना जाता है।

मौर्योत्तर वास्तुकला

उस काल की कला बदलते सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को प्रतिबिंबित करती है जिसे उत्तर में शुंगों, कण्वों, कुषाणों और शकों तथा दक्षिणी और पश्चिमी भारत में सातवाहनों, इक्ष्वाकु ओं, आभीरों और वाकाटकों द्वारा आगे बढ़ाया गया था।

रॉक-कट गुफाएँ

इस अवधि में दो प्रकार की गुफाओं का विकास हुआ:

- चैत्य और
- विहार **[UPSC 2013]** गुफाओं को सामान्य रूप से मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था।

उनमें आँगन और पत्थर की दीवारें भी थीं।

चैत्य विहार

- चैत्य को प्रार्थना कक्ष के रूप में उपयोग किया जाता था।
- इनमें एक छोटा आयताकार द्वार होता था, जो एक मेहराबदार हॉल में खुलता था।
- विहार वस्तुतः बौद्ध और जैन भिक्षुओं के लिए आवासीय स्थल होते थे।
- इनमें एक मुख्य गृह, सभागृह और भोजन कक्ष होता था।
- चट्टानों की गहराई में बने कक्ष ध्यान के लिए होते थे।

पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा

यहाँ ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी तक की कई बौद्ध गुफाएँ पाई गई हैं।

- पश्चिमी भारत में प्रमुख तौर पर वास्तुशिल्प के तीन प्रकार थे:
  - मेहराबदार गुंबदनुमा छत चैत्य हॉल (अजंता, पीतलखोरा, भाजा में)।
  - मेहराबदार गुंबदनुमा छत स्तंभरहित हॉल (महाराष्ट्र के थाना-नादसूर में)।
  - **सपाट छत वाला चतुर्भुज हॉल:** पीछे की ओर एक गोलाकार कक्ष के साथ सपाट छत वाला चतुर्भुज हॉल (महाराष्ट्र में कोंडिवाइट में)।
- **चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं के महत्त्वपूर्ण स्थल:** नासिक में विहार गुफाएँ, जुन्नार (महाराष्ट्र) में गणेशलेणी और मुंबई में कन्हेरी गुफाएँ।

चित्र: अधूरी चैत्य गुफा, कन्हेरी — चित्र: चैत्य हॉल, कार्ले — चित्र: नासिक गुफा संख्या 3

- कार्ले में,सबसे बड़े रॉक-कट चैत्य गृह की खुदाई की गई थी। इस गुफा को मानव और जानवरों की आकृतियों से सजाया गया था।
- कुछ महत्त्वपूर्ण विहार गुफाएँ अजंता गुफाएँ, बेडसा गुफाएँ और नासिक गुफाएँ हैं।
- नासिक में विहार गुफाओं कीखुदाई में सामने के स्तंभों परघाट-आधार और घाट-शीर्ष पर मानव आकृतियाँ उके री गई थीं।
- **अन्य गुफा स्थल:** पुणे के पास भाजा गुफाओं में बौद्ध गुफाएँ हैं, मुंबई में कन्हेरी। **[UPSC 2023]**
- जुन्नार सबसे बड़ा गुफा उत्खनन स्थल है।
  - जुन्नार में विहार गुफा की भी खुदाई की गई थीजिसे गणेशलेणी के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसमें बाद के काल की गणेश की एक छवि स्थापित की गई थी।

पूर्वी भारत में गुफा परंपरा

बौद्ध गुफाओं की खुदाई मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश और ओडिशा के तटीय क्षेत्रों मेंकी गई है।

गुंटापल्ले गुफा (आंध्र प्रदेश) गुफाओं की खुदाई दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में की गई थी। पश्चिमी भारत की गुफाओं की तुलना में यह गुफा अपेक्षाकृत छोटी है।यह उनप्रमुख स्थलों में से एक है, जहाँ एक ही स्थान पर संरचित स्तूप, विहार और गुफाओं की खुदाई की गई है। इसमें गोलाकार चैत्य गुफा और आयताकार विहार गुफाएँ हैं।

आंध्र में अन्य गुफा स्थल: रामपेर्रामपल्लम, अनकापल्ली और धान्यकटक।

- **विशाखापत्तनम में अनकापल्ली:** चौथी-पाँचवीं शताब्दी के दौरान पहाड़ी को काटकर एक विशाल चट्टानी स्तूप बनाया गया था। यह एक अद्वितीय स्थल है, क्योंकि यहाँ देश में चट्टानों को काटकर बनाए गए सबसे बड़े स्तूप हैं।
- **धान्यकटक (आंध्र प्रदेश):** महासांघिकों के अधीन प्रमुख बौद्ध केंद्र। **[UPSC 2023]**

उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ (ओडिशा) इन गुफाओं में, खारवेल जैन राजाओं के शिलालेख हैं। शिलालेखों के अनुसार गुफाएँ जैन भिक्षुओं के लिए थीं।

चित्र: उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: रॉक-कट गुफाएँ

1. **रॉक-कट गुफाएँ**
2. **चैत्य विहार**
3. **पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा**
4. **चित्र: अधूरी चैत्य गुफा, कन्हेरी**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — रॉक-कट गुफाएँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ (ओडिशा) इन गुफाओं में, खारवेल जैन राजाओं के शिलालेख हैं। शिलालेखों के अनुसार गुफाएँ जैन भिक्षुओं के लिए थीं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: रॉक-कट गुफाएँ • चैत्य विहार • पश्चिमी भारत में गुफा परंपरा • चित्र: अधूरी चैत्य गुफा, कन्हेरी • चित्र: चैत्य हॉल, कार्ले | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *2013, 2023*

IUC विशेष स्मृति सूत्र #1: सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल व नदियाँ

ट्रिक: 'लोभी मौसी का हरा कंघा रमा ने ले लिया' — लोथल (भोगवा), मोहनजोदड़ो (सिंधु), हड़प्पा (रावी), कालीबंगन (घग्गर), रंगपुर (मादर), रोपड़ (सतलज)।

- इस गुफा में विशाल आकृतियाँ पाई जाती हैं। इस परिसर में कुछ गुफाओं की खुदाई, 8वीं-9वीं शताब्दी ईस्वी में की गई थी।
- यहाँ अनेक एकल-कक्ष खुदे हुए हैं। स्तूप
- मौर्योत्तर काल में स्तूप आकार में बड़े और अधिक सजावटी हो गए।
- लकड़ी और ईंट के स्थान पर पत्थर का प्रयोग तेजी से होने लगा।
- शुंग राजवंश ने तोरण का विचार प्रस्तुत किया।
- तोरणों पर आकृतियाँ और पैटर्न उके रे गए थे। ये हेलेनिस्टिक प्रभाव के प्रमाण थे।

उदाहरण: मध्य प्रदेश में भरहुत स्तूप और साँची स्तूप। स्तूप और लोक परंपराएँ

1. लोक देवता

- प्राचीन बौद्ध स्तूपों में यक्ष और यक्षिणी (प्रकृति की आत्माएँ) जैसे लोक देवताओं के चित्रण हैं, जिनमें साँची स्तूप में प्रसिद्ध शालभंजिका यक्षिणी उर्वरता का प्रतीक है।

• जल और उर्वरता का प्रतिनिधित्व करने वाले नाग देवता अमरावती और नागार्जुनकोंडा में दिखाई देते हैं, वहीं दूसरी ओर द्वारपाल (संरक्षक देवता) स्तूप के प्रवेश द्वारों पर पाए जाते हैं, जैसे- भरहुत में।

• सूर्य और चंद्र जैसेदिव्य देवता भी सम्मिलित हैं, जो ब्रह्मांडीय सद्भाव को दर्शाते हैं। मातृका जैसी उर्वरता आकृतियाँ, खास तौर पर साँची और भरहुत जैसे स्थलों पर सहायक भूमिकाओं में दिखाई देती हैं, जो बौद्ध शिक्षाओं को स्थानीय कृषि परंपराओं से जोड़ती हैं।

• कई स्तूपों में बोधिवृक्ष या लोक देवताओं से जुड़े पवित्र वृक्षों की नक्काशी है। वृक्षों को स्थानीय देवताओं के निवास के रूप में पूजा जाता था, जो बौद्ध और स्थानीय आध्ययात्मिक प्रथाओं को जोड़ते हैं।

2. दैनिक जीवन

• जटिल नक्काशीदार तोरण (द्वार) जातक कथाओं और दैनिक जीवन, जैसे-शिकार, नृत्य और कृषि के दृश्यों को दर्शाते हैं।

• अमरावती स्तूप (आंध्र प्रदेश, भारत), जो व्यापार, यात्रा और धार्मिक प्रथाओं को दर्शाने वाली अपनीविस्तृत कथात्मक मूर्तियों के लिए जाना जाता है। पट्टिका (पैनल) मानव और प्रकृति के बीच संबंधों को दर्शाती है, सद्भाव और सादगी पर बल देती है।

गुप्त वास्तुकला

गुप्त साम्राज्य को "प्राचीन भारत का स्वर्ण युग" कहा जाता है। प्रारंभिक गुप्त शासकों ने बौद्ध वास्तुकला को प्रोत्साहित किया, लेकिन बाद में उनके द्वारा मंदिर वास्तुकला को प्रोत्साहित किया गया।

गुफाएँ

गुप्त काल के दौरान, गुफाओं की दीवारों पर भित्तिचित्र एक प्रमुख विशेषता है।

अजंता गुफाएँ : [UPSC 2016, 2021]

अजंता की गुफाएँ चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं की एक श्रृंखला हैं, जो घोड़े की नाल के आकार में व्यवस्थित हैं। ये महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के वाघोरा नदी के किनारे सह्याद्रि पहाड़ियों में स्थित हैं।

• इसमें 29 गुफाएँ हैं जिनमें से 25 विहार और 4 चैत्य के रूप में प्रयोग किए जाते थे।

• ये वाकाटक राजाओं के संरक्षण में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा उत्कीर्ण की गई थीं; इन राजाओं में हरिसेन प्रमुख थे।

• अजंता की गुफाओं में गर्भ-गृह में स्थित बुद्ध की मूर्ति अपने परंपरागत रूप में है। भारीपन मूर्तियों का सामान्य लक्षण है। बच्चों के साथ यक्षी और हरीति की मूर्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। लोकप्रिय बोधिसत्व अवलोकितेश्वर को चित्रों और मूर्तियों में दर्शाया गया है।

• इन गुफाओं में गुफा संख्या 26 सबसे बड़ी है और इसमें विभिन्न प्रकार की बुद्ध प्रतिमाएँ उके री गई हैं जिनमें सबसे बड़ी महापरिनिर्वाण प्रतिमा है।

अजंता गुफाओं में चार चैत्य गुफाएँ हैं, जो प्रारंभिक चरण (दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व) (गुफा संख्या 10 और 9) और बाद के चरण पाँचवीं शताब्दी ईस्वी (गुफा संख्या 19 और 26) से संबंधित हैं। इसमें बड़े चैत्यविहार हैं और इसे मूर्तियों और चित्रों से सजाया गया है। अजंता पहली शताब्दी ईसा पूर्व और पाँचवीं शताब्दी ईस्वी की चित्रकला का एकमात्र उदाहरण है।

एलोरा की गुफाएँ

यह अजंता से 100 किमी. दूर औरंगाबाद जिले में स्थित है। इसकी खुदाई चरणनंद्री पहाड़ियों में चट्टानों से की गई है।

• यह 34 गुफाओं का एक समूह है-17 ब्राह्मण, 12 बौद्ध और 5 जैन धर्म से संबंधित है। [UPSC 2013]

• इन गुफाओं का विकास 5वीं और 11वीं शताब्दी के मध्य हुआ था (अजंता की गुफाओं की तुलना में ये नई हैं)।

• इनमें विषयवस्तु और स्थापत्य शैली की दृष्टि से विविधता है।

• इनके स्तंभ विशाल हैं। अजंता में भी दो मंजिला गुफाओं की खुदाई की गई है, लेकिन एलोरा में तीन मंजिल वाली गुफाएँ एक अनूठी उपलब्धि है।

बौद्ध गुफाएँ

• इन गुफाओं में बुद्ध की प्रतिमाएँ आकार में बड़ी हैं; वे सामान्य रूप से पद्मपाणि और वज्रपाणि की छवियों द्वारा संरक्षित होती हैं।

• बौद्ध गुफाओं में वज्रयान बौद्ध धर्म से संबंधित कई छवियाँ हैं, जैसे- तारा, महामायुरी, अक्षोब्या, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ आदि।

• केंद्रीय आकृति बुद्ध की है, जो तीन दिव्य मुद्राओं में पाई जाती है: ध्यान करना (ध्यान मुद्रा), उपदेश देना (व्याख्यान मुद्रा) और दाहिने हाथ की तर्जनी से पृथ्वी को छूना (भूमि-स्पर्श मुद्रा)।

• बौद्ध गुफाओं में तारा, खादिरवानी-तारा, चुंडा, वज्रदत-विश्वारी, महा-मयूरी, सुजाता, पंडारा और भृकुटी की नक्काशीदार छवियों के माध्यम से देवी का प्रतिनिधित्व किया गया था।

जैन गुफाएँ

जैन गुफाओं के अंतर्गत यक्ष-मतंग,महावीर, पार्श्वनाथ और गोमतेश्वरकीमूर्तियाँप्रमुखहैं।

वैदिक धर्म की गुफाएँ

• इन समूहों की सबसे प्रारंभिक गुफाएँ छोटी और सरल हैं। कैलाशनाथ गुफा (गुफा-16) को छोड़कर अधिकतर गुफाएँ चौकोर आकार की हैं।

कैलाशनाथ मंदिर (गुफा-16)

चित्र: कैलाशनाथ मंदिर (गुफा सं. 16)

• यह एक अखंड संरचना है, जो एक ही ठोस चट्टान से बनाई गई है। ऐसा कहा जाता है कि यह मंदिर भगवान शिव के निवास स्थान कैलाश का प्रतिनिधित्व करता है।

• इस मंदिर का निर्माण राष्ट्रकूट राजवंश के कृष्ण प्रथम (756-773 ई.) द्वारा करवाया गया था।

• यह मंदिर दो मंजिला है और पहली मंजिल पर कैलाश मंदिर है।

• निचली मंजिल पर आदमकद हाथियों की नक्काशी उत्कीर्ण की गई है। देखने में ऐसा लगता हैमानो हाथियों ने मंदिर को अपनी पीठ पर उठा रखा है।

• मंदिर के बाहरी हिस्से में शैव और वैष्णव देवताओं की छवियाँ हैं।

• प्रांगण में ध्वजदंड और एक नंदी मंडप के साथ दो विशाल स्तंभ हैं।

• शिव-पार्वती का विवाह समारोह, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को उठाने का प्रयास और देवी दुर्गा द्वारा महिषासुर का विनाश, सुंदर मूर्तियाँ हैं।

• एक आकर्षक मूर्ति मगरमच्छ पर सवार नदी देवी गंगा की और कछुए पर सवार नदी देवी यमुना की है।

• शैव विषयों में, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को हिलाना, अंधकासुरवध और कल्याणसुंदर को प्रचुरता से चित्रित किया गया है वहीं दूसरी ओर वैष्णव विषयों में विष्णु के विभिन्न अवतारों को दर्शाया गया है।

एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ — गुफा नं विशेषताएँ

10 विश्वकर्मा गुफा या बढ़ई की गुफा।

इस गुफा में महात्मा बुद्ध धर्मचक्र मुद्रा में बैठे हैं और उनके पीछे बोधि वृक्ष बना हुआ है।

12 एक हृष्ट-पुष्ट महिला को कोबरा का कमरबंद और सिर पर टोपी पहने हुए दर्शाया गया है।

खदरीवानी-तारा ने भी उसी गुफा में अपने एक हाथ में एक कोबरा पकड़ रखा है।

गुफा 14-रावण की खाई — गुफा 15-दशावतार मंदिर — गुफा 29-धूमर लेना

गुफा 30-छोटा कैलाश (जैन गुफा) गुफा 32-इंद्र सभा (जैन गुफा) गुफा 33-जगन्नाथ सभा (जैन गुफा) एलीफे टा की गुफाएँ (5वीं शताब्दी के मध्य से 6वीं शताब्दी) यह मुंबई के पास एलीफेंटा द्वीप (जिसे घारापुरी द्वीप के रूप में भी जाना जाता है) पर स्थित है। यह मूल रूप से एक बौद्ध स्थल था जिस पर बाद में शैव धर्म का प्रभुत्व स्थापित हो गया। यह एलोरा के समकालीन है और अपनी मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है। यह एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।

चित्र: महेशमूर्ति

• इसमें पाँच हिंदू गुफाएँ और एक जोड़ी बौद्ध गुफाएँ स्थित हैं।

• सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा महेशमूर्ति गुफा है। बाघ की गुफाएँ यह मध्य प्रदेश के धार जिले में बाघनी नदी के तट पर स्थित है और नौ बौद्ध गुफाओं का एक समूह है। इसका विकास लगभग 5वीं-6वीं शताब्दी ईस्वी में प्रमुख तौर पर सातवाहन काल के दौरान हुआ था। सबसे महत्त्वपूर्ण गुफा, रंग महल है।

जूनागढ़ की गुफाएँ (गुजरात) इसकी अनूठी विशेषता प्रार्थना कक्ष के सामने 30-50फीट ऊँचे गढ़का होना हैजिसे 'ऊपर कोट' के नाम से जाना जाता है।

मंडपेश्वर गुफाएँ (मुंबई के पास बोरिवल्ली) मंडपेश्वर गुफाओं(मुंबई के पास बोरिवल्ली) कोमोंटपेरिर गुफाओं के नाम से भी जाना जाता है। ये गुफाएँ गुप्त काल के अंत में ब्राह्मण गुफाओं के रूप में विकसित हुई थीं और बाद में इसे एक ईसाई गुफा में बदल दिया गया।

उदयगिरि की गुफाएँ (ओडिशा की उदयगिरि-खंडगिरि गुफाओं से भिन्न) ये गुफाएँ विदिशा, मध्य प्रदेश में स्थित हैं और इन्हें 5वीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में चंद्रगुप्त द्वितीय के संरक्षण में बनाया गया था।

• **मूर्तियाँ:** विष्णु का वराह या सूअर अवतार। **[UPSC 2014, 2015]** स्तूप स्तूप स्थल-समत (उत्तर प्रदेश), रत्नागिरी (ओडिशा) और मीरपुर खास (सिंध) धमेख स्तूप (वाराणसी के निकट) का विकास इसी काल में हुआ था।

देवनी मोरी गंगा घाटी के बाहरएक महत्त्वपूर्ण स्तूप स्थल है। यह स्थल अस्पष्ट रूप से तीसरी शताब्दी या चौथी शताब्दी का प्रतीत है।

टेराकोटा और मृदभांड

मिट्टी की मूर्तियों का उपयोग धार्मिक औरमृदभांड, दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था। गुप्त काल के मृदभांडों के अवशेष अहिच्छत्र , राजगढ़, हस्तिनापुर और बशर में प्राप्त हुए हैं। इस काल के मृदभांडों का सबसे विशिष्ट वर्ग "लाल मृद्भांड" है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ

1. एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ

2. गुफा नं विशेषताएँ

3. गुफा 14-रावण की खाई

4. गुफा 15-दशावतार मंदिर

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: देवनी मोरी गंगा घाटी के बाहरएक महत्त्वपूर्ण स्तूप स्थल है। यह स्थल अस्पष्ट रूप से तीसरी शताब्दी या चौथी शताब्दी का प्रतीत है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: एलोरा की कुछ प्रमुख गुफाएँ • गुफा नं विशेषताएँ • गुफा 14-रावण की खाई • गुफा 15-दशावतार मंदिर • गुफा 29-धूमर लेना | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 773 ई, 2014, 2015

मंदिर वास्तुकला

गुप्त काल के दौरान, प्रारंभिक चरण में सपाट छत वाले अखंड मंदिरों से लेकर बाद के वर्षों में मूर्तियों से युक्त शिखर वाले मंदिरों की क्रमिक प्रगति हुई। प्रगति को 5 चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

• **प्रथम चरण:** मंदिर चपटी छत वाले चौकोर आकार के थे। पूरी संरचना एक कम ऊँचाई वाले चबूतरे/मंच पर बनाई गई थी।

• **द्वितीय चरण:** मंच ऊँचे या ऊपर उठाए गए थे। दो मंजिला मंदिर प्राप्त हुए हैं। एक महत्त्वपूर्ण विकास गर्भगृह के चारों ओर एक ढका हुआ चलने योग्य मार्ग था जिसे प्रदक्षिणापथ कहा जाता था, जैसे-नचनाकुठारा में पार्वती मंदिर (मध्य प्रदेश)।

• **तृतीय चरण:** तृतीय चरण में समतल छत के स्थान पर शिखरों का उद्भव हुआ। मंदिरों की पंचायतन शैली की शुरुआत की गई।

• **चतुर्थ चरण:** सामान्यतः तीसरे चरण के समान ही था, सिवाय इसके कि मुख्य मंदिर अब अधिक आयताकार हो गया, जैसे- महाराष्ट्र में टेर मंदिर।

• **पंचम चरण:** उथले आयताकार प्रक्षेपण वाले वृत्ताकार मंदिर का निर्माण। जैसे- राजगीर में मनियार मठ।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की शुरुआत 12वीं शताब्दी ईस्वी के अंत में भारत पर मुहम्मद गौरी के कब्जे के साथ हुई।

- मुसलमानों ने सासैनियन और बीजान्टिन साम्राज्यों की विभिन्न डिजाइनों को, जो उन्हें विरासत मेंमिली थीं, स्थानीय संस्कृति के साथ जोड़ दिया, जिससे इंडो-सारसेनिक या इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की उत्पत्ति हुई।
- उन्होंने नए तत्त्वों जैसे सुलेख, जड़ाउ कार्य का उपयोग करके अलंकरण, शहतीर, ब्रैकेट, गुंबद आदि की शुरुआत की।

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ:

- धनुषाकार शैली (Arcuate Style) ने वास्तुकला की पारंपरिक ट्रैबीट शैली (Trabeate Style) का स्थान ले लिया।
- मस्जिदों के आस-पास मीनारों का निर्माण शुरू किया गया।
- मोर्टार का उपयोग जोड़ने की सामग्री के रूप में किया गया।
- मुसलमानों को किसी भी सतह पर जीवित आकृतियों को उके रने की मनाही थी। उन्होंने अपनी धार्मिक कला और वास्तुकला विकसित की जिसमें अरबी कला (अरबस्क शैली), ज्यामितीय पैटर्न तथा प्लास्टर और पत्थर पर सुलेख सम्मिलित थे।
  - **अरबस्क:** एक सजावटी डिजाइन जिसमें रेखाएँ, पत्तियाँ और फूल आपस में गुंथे होते हैं।
- इमारतों में उत्कृष्ट जाली का कार्य किया गया था, जो इस्लामी क्षेत्र में प्रकाश के महत्त्व को दर्शाता है।
- आँगन में उपस्थित तालाबों, फव्वारों और छोटी नालियों के माध्यम से जल के उपयोग को महत्त्व मिला।
  - जल का उपयोग मुख्य रूप से तीन उद्देश्यों के लिए किया जाता था, अर्थात्धार्मिक, सजावटी और परिसर को ठंडा रखने के लिए।
- बगीचे की'चारबाग शैली'की शुरुआत की गईजिसमें एक वर्गाकार ब्लॉक को चार समान उद्यानों में विभाजित किया गया था।

चित्र: चारबाग शैली

- पितरा-ड्यूरा तकनीक अर्द्ध-कीमती पत्थरों का उपयोग कर किए गए सचित्र मोजेक कार्य को संदर्भित करती है।
- **टाइलिंग (Tessellation):** दीवारों और फर्शों को टाइल से सजाने की एक तकनीक।
- अग्रसंक्षेपण (Foreshortening) तकनीक, जो शिलालेखों को वास्तव में जितना करीब है उससे अधिक करीब दिखाती है।

धनुषाकार शैली और ट्रैबीट शैली के बीच अंतर — धनुषाकार शैली ट्रैबीट शैली

- मेहराबों एवं गुंबदों का प्रयोग।
- मेहराबों का निर्माण वूसोइर (इंटर लॉकिंग ब्लॉकों की शृंखला) के साथ किया जाना आवश्यक था जिसमें कीस्टोन लगे हुए थे।
- मस्जिदों के शीर्ष पर अर्द्ध-गोलाकार गुंबदों का प्रयोग।
- मस्जिदों के चारों कोनों पर मीनारें मौजूद थीं।
- निर्माण के लिए चूने के प्लास्टर, ईंट और मोर्टार का उपयोग किया गया था।
- ब्रैकेट, स्तंभ लिंटल्स का उपयोग।
- मंदिरों के शीर्ष पर शंक्वाकार या वक्रेखीय शिखर का प्रयोग।
- मीनारें अनुपस्थित होती हैं।
- पत्थर सभी निर्माणों का प्राथमिक घटक था।

शैलियों की श्रेणियाँ

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के अध्ययन को पारंपरिक रूप सेवर्गीकृत किया गया है:

- शाही शैली (दिल्ली सल्तनत)
- प्रांतीय शैली (मांडू, गुजरात, बंगाल और जौनपुर)

- मुगल शैली (दिल्ली, आगरा और लाहौर)
- दक्कनी शैली (बीजापुर, गोलकुंडा)

1. शाही शैली

यह सल्तनत काल के दौरान शासन करने वाले विभिन्न राजवंशों के तहत फला-फूला और प्रत्येक शासक ने अपनी कुछ विशेषताएँ प्रदान कीं।

गुलाम राजवंश

- इस काल की वास्तुकला की शैली को वास्तुकला की मामलुक शैली के नाम से सुप्रसिद्ध है।
- इस अवधि के दौरान अधिकांश निर्माण मौजूदा धार्मिक संरचनाओं के पुनर्निर्माण थे।
- बलबन की कब्र को पहले वास्तविक मेहराब से सजाया गया था।
- कुतुब मीनार, दिल्ली में कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा आदि इस काल की अन्य संरचनाएँ थीं।

कुतुब मीनार

इसे पाँच मंजिला इमारतों में विभाजित किया गया है जिसके निर्माण की शुरुआत कुतुब-उद-दीन ऐबक द्वारा शुरू की गई और बाद में इल्तुतमिश और फिरोज शाह तुगलक द्वारा इसे पूरा किया गया। संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में इसका निर्माण किया गया था।

- फिरोज शाह तुगलक (1351-88 ई.) ने इसकी दो मंजिलों का पुनर्निर्माण कराया।
- यह भारत की सबसे ऊँची पत्थर की मीनार है।
- मीनार बहुभुज और गोलाकार आकृतियों का मिश्रण है।
- यह मुख्य रूप से लाल और भूरे बलुआ पत्थर से बनी है और ऊपरी मंजिलों में कुछ हद तक संगमरमर का उपयोग किया गया है।
- इसकी विशेषता अत्यधिक सजी हुई बालकनियाँ और पत्तों वाले डिजाइनों से जुड़े शिलालेखों की पट्टियाँ हैं।

मीनारों का उपयोग प्रतिदिन अजान या नमाज के बुलावा हेतु होता था। अधिक ऊँचाई शासक की ताकत और शक्ति का प्रतीक थी।

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद: कुतुबुद्दीन ऐबक ने1197 ईस्वी के आस-पास इस मस्जिद का निर्माण कराया था।

खिलजी वंश

उन्होंने 1290 ई. से 1320 ई. तक शासन किया और वास्तुकला की सेल्जुक शैली की स्थापना की।

- मोर्टार का उपयोग पत्थरों को जोड़ने के लिए प्रमुखता से किया जाने लगा।
- खिलजी वास्तुकला की विशेषता लाल बलुआ पत्थर का उपयोग और संगमरमर से उभरी धनुषाकार शैली, गुंबद के नीचे धँसी हुई मेहराबें, छिद्रित खिड़कियाँ, एक बड़ा गुंबद और एक नुकीले घोड़े की नाल के आकार में एक वास्तविक मेहराब है।
- **उदाहरण:** अलाउद्दीन खिलजी द्वारा अलाई दरवाजा, सीरी किला आदि।

अलाई दरवाजा: इसे अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में बनवाया था और यह पहले वास्तविक गुंबद से सुशोभित है।

तुगलक वंश:

- भवन की मजबूती पर अधिक तथा साज-सज्जा पर कम जोर दिया गया। इसने निर्माण की एक शैली पेश की जिसे 'बैटर' के नाम से जाना जाता है।

इसे अधिक मजबूती देने के लिए ढलान वाली दीवारों का उपयोग किया गया, जो इसकी विशेषता थी जैसा कि गियासुद्दीन तुगलक के मकबरे में देखा गया है।

- उनकी विशेषताओं में प्रमुख निर्माण सामग्री के रूप में पत्थर के मलबे का उपयोग,चार केंद्रित मेहराब काप्रयोगात्मक उपयोग(मेहराब-बीम संयोजन तुगलक शैली की एक पहचान है), सम्मिलित हैं। कब्रों में एक नुकीले गुंबद और अष्टकोणीय योजना का उद्भव,इमारतों के पैनलों मेंसजावट के एक तत्त्व के रूप में मटमैली टाइलों की शुरूआत।

चित्र: कुतुब मीनार

• तुगलकाबाद, जहाँपनाह और फिरोजाबाद शहर तुगलक काल के निर्माण के उदाहरण हैं।

• **लोदी राजवंश:** दिल्ली और उसके आस-पास बिना किसी भव्य सजावट के बड़ी संख्या में कब्रें बनाई गईं। इन मकबरों को अष्टकोणीय योजना पर डिजाइन किया गया था।

• दोहरे गुंबदों की शुरुआत की गई जिसमें शीर्ष गुंबद के अंदर एक खोखला गुंबद शामिल था।

• सिकंदर लोदी का मकबरा (दिल्ली) भारत में निर्मित पहला उद्यान मकबरा था।

सल्तनत काल की सार्वजनिक इमारतें इसमें सराय, पुल, बावली, बाँध, कचेहरी (प्रशासनिक भवन), कोतवाली (पुलिस स्टेशन), डाक-चौकी (पोस्ट-स्टेशन), हम्माम (सार्वजनिक स्नानघर) और कटरा (बाजार स्थान) सम्मिलित हैं।

सराय: इसे 13वीं शताब्दी में तुर्कों द्वारा भारत में लाया गया था। सराय के अस्तित्व का सबसे पहला उल्लेख बलबन के समय (1266) में मिलता है।

• मुहम्मद तुगलक और फिरोज तुगलक को दिल्ली के साथ-साथ सल्तनत के प्रमुख भूमि मार्गों पर बड़ी संख्या में सरायों का निर्माण करने के लिए जाना जाता है।

कु एँ और बावड़ियाँ दिल्ली सल्तनत वास्तुकला का एक हिस्सा थे। गंधक की बावली महरौली (दिल्ली) में इल्तुतमिश द्वारा निर्मित बावड़ियों में से एक है।

2. प्रांतीय शैली

इंडो-इस्लामिक वास्तुकला में बंगाल, गुजरात, जौनपुर, गोलकुंडा, मालवा और दक्कन के तात्कालिक राज्यों की स्थानीय वास्तुकला शैलियों को शामिल किया गया, जिससे प्रांतीय शैली को बढ़ावा मिला। इनमें से कुछ प्रांतीय विशेषताएँ थीं: बंगाल: बाँस के निर्माण से उत्पन्न हुई ढलानदार कंगनी वाली बंगाल की छत को मुसलमानों द्वारा अपनाया गया।

• ईंट मुख्य निर्माण सामग्री थी और पत्थर का उपयोग प्रमुख तौर पर स्तंभों तक ही सीमित था।

• सजावट के लिए ढकी हुई ईंटों और चमकदार टाइलों का उपयोग किया जाता था।

• उदाहरण- गौर में कदम रसूल मस्जिद और दखिल दरवाजा, पांडुआ में अदीना मस्जिद, बंगाल में दर्सबारी मस्जिद और अहमदाबाद में सीदी सैय्यद मस्जिद।

• **जौनपुर:** इसे शर्की शासकों का संरक्षण प्राप्त था। इसने मीनारों के उपयोग से बचने का प्रयास किया। उदाहरण- जौनपुर की अटाला मस्जिद और लाल दरवाजा मस्जिद।

• **मालवा:** इसमें पर्यावरणीय अनुकूलन शामिल है जैसा कि बड़ी खिड़कियों, मेहराबों, कृत्रिम जलाशयों (बावली) आदि में देखा जा सकता है। एक प्रमुख विशेषता विभिन्न रंग के पत्थरों और संगमरमर का उपयोग था।

• उदाहरण- हिंडोला महल, रानी रूपमती मंडप, जहाज महल, अशरफी महल आदि।

• **दक्कन:** इसे बीजापुर शैली के रूपमें भी जाना जाता है। इसेआदिल शाह के संरक्षण में विकसित किया गया था। तीन धनुषाकार अग्रभाग, बल्बनुमा गुंबद और कॉर्निस का उपयोग इस शैली के निर्माणों की विशेषताएँ हैं।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: कुतुब मीनार



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कुतुब मीनार

मुख्य परीक्षा दृष्टि: दक्कन: इसे बीजापुर शैली के रूपमें भी जाना जाता है। इसेआदिल शाह के संरक्षण में विकसित किया गया था। तीन धनुषाकार अग्रभाग, बल्बनुमा गुंबद और कॉर्निस का उपयोग इस शैली के निर्माणों की विशेषताएँ हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कुतुब मीनार • खिलजी वंश • तुगलक वंश • चित्र: कुतुब मीनार • 2. प्रांतीय शैली | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1351, 1197, 1290, 1320, 1266

• इमारतों को मजबूत करने के लिए लोहे के क्लैंप और मोर्टार के मजबूत प्लास्टर का उपयोग किया गया था। छतें बिना किसी सहारे के थीं। दीवारों को भी समृद्ध नक्काशी से सजाया गया था। बीजापुर (कर्नाटक) में गोल गुंबज इसी शैली में बनाया गया था।

• **गोल गुंबद:** यह आदिल शाही राजवंश के सातवें सुल्तान मुहम्मद आदिल शाह (1626-1656) के मकबरे के रूप में बनाया गया था।

• गुंबद कॉम्प्लेक्स में नक्कार खाना (एक अनुष्ठानिक नगाड़ा कक्ष) एक मस्जिद और एक सराय है।

• इसे अलंकृत प्लास्टर वर्क के साथ गहरे भूरे बेसाल्ट का उपयोग करके बनाया गया था।

• इसके गुंबदों, मेहराबों और ज्यामितीय बनावट में तिमुरिड और फारसी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

• इसका गुंबद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा गुंबद है।

• गुंबद के साथ एक प्रतिध्वनित गैलरी एक ध्वनिक आश्चर्य है जो ध्वनियों को बढ़ा सकती है और बार-बार प्रतिध्वनित कर सकती है। [विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता) में भी एक प्रतिध्वनित गैलरी है।]

3. मुगल शैली

• मुगलों ने कला और वास्तुकला का संरक्षण किया

• **बाबर:** उसने पानीपत और रोहिलखंड में मस्जिदों का निर्माण कराया।

• **हुमायूँ:** उसने दीनपनाह नामक नगर की नींव रखी। हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली) यह उनकी विधवा बेगा बेगम द्वारा निर्मित मुगल वास्तुकला का पहला विशिष्ट उदाहरण है।

• यह फारसी वास्तुकला और भारतीय परंपराओं का संश्लेषण है। इसमें एक ऊँचा दोहरा गुंबद है और साथ ही छतरियाँ भी हैं, जो दूर से इसे पिरामिडनुमा आकार देती हैं।

• इसमें चारबाग शैली का उद्यान है।

• मकबरे की लाल बलुआ पत्थर से निर्मित दो मंजिला संरचना, कक्षों की एक शृंखला के ऊपर खड़ी की गई है, जो एक संगीत रचना की तरह है।

• केंद्रीय कक्ष के अष्टकोणीय रूप में समाधि स्थल है।

• यह पहली बार है जब लाल बलुआ पत्थर और सफे द संगमरमर का उपयोग किया गया है।

शेरशाह:

• उसका काल वास्तुकला में लोदी शैली से मुगल शैली की ओर संक्रमण का चरण है।

• उसने दिल्ली में पुराना किला और किला-ए-कुहना मस्जिद का निर्माण कराया।

• उसने पटना में शेरशाह सूफी मस्जिद, पाकिस्तान में रोहतास किला और सासाराम में अपना मकबरा बनवाया।

• उसने एक पुराने मौर्य मार्ग का विस्तार और पुनर्निर्माण किया और इसका नाम बदलकर 'सड़क-ए-आजम' रखा। इसे बाद में ग्रैंड ट्रंक रोड कहा गया।

अकबर:

• यह मुगल कला और वास्तुकला के स्वर्णिम काल की शुरुआत थी। यह काल हिंदू और इस्लामिक निर्माण शैली का मिश्रण था।

• लाल बलुआ पत्थर का उपयोग और ट्रैबीट निर्माण का व्यापक उपयोग अकबर के निर्माण शैली की मुख्य विशेषताएँ थीं।
  ◦ मेहराबों का उपयोग संरचनात्मक रूप की बजाय प्रमुख तौर पर सजावटी रूप में किया गया।
  ◦ गुंबद कभी-कभी खोखले होते थे, लेकिन तकनीकी रूप से कभी भी वास्तविक दोहरे क्रम के नहीं होते थे।

• अकबर की निर्माण परियोजनाओं को दो मुख्य समूहों में विभाजित किया जा सकता है जिनमें से प्रत्येक एक अलग चरण का प्रतिनिधित्व करता है।
  ◦ पहला समूह- आगरा, इलाहाबाद और लाहौर मेंएक किले कीइमारतें और कुछ महल।
  ◦ दूसरा समूह- मूलतः फ़तेहपुर सीकरी में अकबर की नई राजधानी का निर्माण।

आगरा का किला

• आगरा किले का दिल्ली गेट और जहाँगीरी महल, अकबर के शासनकाल की एकमात्र प्रतिनिधि इमारतें हैं।

जहाँगीरी महल

• इसकी संरचना लाल बलुआ पत्थर से बनी एक मजबूत इमारत के रूप में की गई है। उद्यान चारबाग शैली में बनाए गए हैं।

• अंदर मौजूद अधिकांश संरचनाएँ शाहजहाँ के शासनकाल के दौरान बनाई गई थीं। इसमें शाहजहाँ द्वारा निर्मित दीवान-ए-आम (सार्वजनिक दर्शकों का हॉल) और दीवान-ए-खास (निजी दर्शकों का हॉल) सम्मिलित थे।

• **फतेहपुर सीकरी:** इसकी स्थापना शेख सलीम चिश्ती के प्रति कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में की गई थी।

• इसे "इतिहास में एक ठहरे हुए क्षण" के रूप में वर्णित किया गया है, क्योंकि यहाँ की इमारतें हिंदू और फारसी शैलियों के अनूठे मिश्रण काप्रतिनिधित्व करती हैं। यह अकबर की नई राजधानी थी।

• सभी इमारतें पारंपरिक ट्रैबीट निर्माण शैली का उपयोग करते हुए विशिष्ट समृद्ध लाल बलुआ पत्थर से बनी हैं।

• इमारतें स्थानीय चट्टानों से बनाई गई थीं और मोर्टार के उपयोग के बिना जोड़ी गई थीं।

फतेहपुर सीकरी शहर के अंदर महत्त्वपूर्ण इमारतें

• बुलंद दरवाजा (गुजरात पर अकबर की जीत की याद में 1576 ई. में बनाया गया) विश्व का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार है। **[UPSC 2018]**

• सलीम चिश्ती का मकबरा- यहसफे द संगमरमर से बनी फतेहपुर सीकरी की एकमात्र इमारत है।

• इबादत खाना- अकबर विभिन्न धर्मों के नेताओं के साथ विचार-विमर्श के लिए इसका इस्तेमाल करता था। **[UPSC 2014]**

• अन्य इमारतों में पंच महल, पचीसी कोर्ट (शतरंज खेलने के लिए), जामा मस्जिद, हिरण मीनार, जोधाबाई का महल आदि सम्मिलित हैं।

• वृन्दावन में गोविंद देव मंदिर का निर्माण राजा मान सिंह ने लाल पत्थर से करवाया था। मंदिर के निर्माण के लिए पत्थर अकबर द्वारा दान मेंदिया गया था।

• **जहाँगीर:** उसने चित्रकला पर अधिक ध्यान केंद्रित किया और वास्तुकला को पीछे छोड़ दिया।

• उसके शासनकाल में हुए कुछ महत्त्वपूर्ण निर्माण अकबर का मकबरा (सिकंदरा), मोती महल (लाहौर) तथा कश्मीर में शालीमार बाग और निशात बाग थे।

अकबर का मकबरा: इसकी डिजाइन स्वयं अकबर ने की थी और इसका निर्माण उनके जीवनकाल में ही शुरू हुआ था। इसे बाद में जहाँगीर ने पूरा करवाया।

• नूरजहाँ ने सफे द संगमरमर से एतमाद-उद-दौला (आगरा) के मकबरे का निर्माण करवाया।

शाहजहाँ: शाहजहाँ के शासनकाल में मुगल वास्तुकला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

• उस काल की इमारतें संगमरमर की नाजुक नक्काशी और पिएट्रा-ड्यूरा के काम से सुसज्जित है।

• मेहराब को पत्तियों की आकृति से सजाया गया, गुंबद पतली गर्दन के साथ बल्बनुमा हो गए और स्तंभ कोमल आकृतियों के साथ बनाए गए थे।

• उनके उल्लेखनीय निर्माण में सम्मिलित हैं- शाहजहाँनाबाद शहर (वर्तमान पुरानी दिल्ली), ताज महल, आगरा के किले में मोती मस्जिद (संगमरमर से बनी), दिल्ली में जामा मस्जिद, दिल्ली में लाल किला आदि।

लाल किला

• यह यमुना नदी के पुराने मार्ग के निकट है।

• दो प्रवेश द्वार हैं- दिल्ली गेट और लाहौर गेट।

• किले के अंदर प्रमुख इमारतें हैं- दीवान-ए-आम, दीवान-ए खास, मोती महल, हीरा महल और रंग महल।

  ◦ **दीवान-ए-खास:** यह भी कहा जाता है कि इसका संगमरमर का मंच कभी प्रसिद्ध मयूर सिंहासन का आधार था।

    ■ सुप्रसिद्ध कथन, "यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है,यहीं है, यहीं है," इस संगमरमर के महल की दीवारों पर सुशोभित हैं।

ताज महल

- यह अर्जुमंद बानो बेगम, जिन्हें मुमताज महल के नाम से भी जाना जाता था, का मकबरा है।
- मुख्य वास्तुकार फारसी मूल के भारतीय उस्ताद अहमद लाहौरी थे।
- इसमें मुगल वास्तुकला की सभीविशेषताएँ विद्यमान हैं, जैसे- सुलेख, पिएट्रा-ड्यूरा और चारबाग शैली उद्यान।
- **औरंगज़ेब:** वह शुद्धतावादी था और वास्तुकला में सक्रिय रुचि नहीं लेता था।
- उसके शासनकाल की प्रमुख इमारतों में औरंगाबाद में उसकी पत्नी राबिया-उद-दौरानी का मकबरा (बीबी का मकबरा), लाहौर में बादशाही मस्जिद और दिल्ली के लाल किला में मोती मस्जिद सम्मिलित हैं।
  - औरंगाबाद में निर्मित उनकी पत्नी के मकबरे में, ताज महल की नकल करने की कोशिश की गई है।

मुगल काल के दौरान सार्वजनिक उपयोगिता संबंधी नागरिक कार्य: जौनपुर में गोमती नदी पर बना पुल और पश्चिमी यमुना नहर।

लखनऊ में स्थित बड़ा इमामबाड़ा का निर्माण 1784 ई. में आसफ-उद-दौला द्वारा किया गया था। इसके निर्माण में मोर्टार के उपयोग के बिना ईंटों को जोड़ा गया है।

रूमी दरवाजा भी लखनऊ में स्थित है। इसे अवध के नवाब आसफ-उद-दौला ने बनवाया था। इसे चूने से लेपित ईंटों का उपयोग करके बनाया गया था।

[UPSC 2018]

आधुनिक वास्तुकला

आधुनिक भवन निर्माण और योजना का परिचय भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद हुआ। इस वास्तुकला का मुख्य उद्देश्य उनके संगठनों, उनके लोगों और भारत जैसे बड़े साम्राज्य को नियंत्रित करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक था, उसे स्थान देना था।

पुर्तगाली प्रभाव

- भारत में वास्तुकला की इबेरियन शैली की शुरुआत की।
- विषम रंगों के उपयोग से युक्त आँगन, घरों और बारोक शैली की अवधारणा भी पेश की।
- पुर्तगाली निर्माण के उदाहरण- गोवा में 'कैथेड्रल' और 'बेसिलिका ऑफ़ बॉम जीसस,' तथा दीव में दीव किला आदि।

फ़्रांसीसी प्रभाव

- शहरी नगर नियोजन की अवधारणा का आगमन हुआ।
- पुदुचेरी, चंदननगर, माहे (केरल), कराईकल (तमिलनाडु) और यनम (आंध्र प्रदेश) शहरों का विकास।
- फ्रांसीसी निर्माण के अन्य उदाहरण- पुदुचेरी में चर्च ऑफ सेक्रेड हार्ट ऑफ जीसस और चंदननगर (पश्चिम बंगाल) का सेक्रेड हार्ट चर्च।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: लाल किला

1576	2018	2014	1784
लाल किला	ताज महल	आधुनिक वास्तुकला	पुर्तगाली प्रभाव

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — लाल किला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: फ्रांसीसी निर्माण के अन्य उदाहरण- पुदुचेरी में चर्च ऑफ सेक्रेड हार्ट ऑफ जीसस और चंदननगर (पश्चिम बंगाल) का सेक्रेड हार्ट चर्च।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: लाल किला • ताज महल • आधुनिक वास्तुकला • पुर्तगाली प्रभाव • फ़्रांसीसी प्रभाव | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1576, 2018, 2014, 1784

IUC विशेष स्मृति सूत्र #2: सारनाथ अशोक स्तंभ के 4 पशु (दिशा अनुसार)

ट्रिक: 'घोड़ा पश्चिम, हाथी पूरब, बैल दक्षिण, शेर उत्तर' — अबेकस पर 24 तीलियों वाला धर्मचक्र और मुंडक उपनिषद से 'सत्यमेव जयते' उत्कीर्ण है।

ब्रिटिश प्रभाव

• गोथिक शैली का आगमन हुआ और इसे भारतीय वास्तुकला के साथ मिला दिया गया जिसके परिणामस्वरूप, वास्तुकला की इंडो-गोथिक शैली का विकास हुआ।

• 1911 ई. के बाद नव-रोमन वास्तुकला का उदय हुआ। इंडो-गोथिक शैली

• यह वास्तुकला की भारतीय, फारसी और गोथिक शैलियों का एक अनूठा मिश्रण है और इसे विक्टोरियन शैली के रूप में भी जाना जाता है।

• इमारतें बड़ी और विस्तृत हैं, जिनकी दीवारें इंडो-इस्लामिक युग की तुलना में पतली हैं।

• इंडो-इस्लामिक युग के घुमावदार मेहराबों के विपरीत, मेहराब नुकीले थे।

• बड़ी खिड़कियाँ विक्टोरियन शैली की अनूठी विशेषता हैं।

• **उदाहरण:** कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल, मुंबई में गेटवे ऑफ इंडिया आदि।

नव-रोमन शैली

• एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर की कृतियाँ इस शैलीका बेहतरीन उदाहरण थीं, उदाहरण: नई दिल्ली का परिसर।

• यह वास्तुकला की सभी शैलियों का संगम था जिसने इस शैली को वैविध्यपूर्ण बना दिया।

• निर्माण की मिश्रित प्रकृति के परिणामस्वरूप सादगी, आधुनिकता और उपयोगिता से अत्यधिक समझौता किया गया।

• गोलाकार इमारतों पर अधिक ध्यान दिया गया और पश्चिमी वास्तुशिल्प डिजाइनों को साकार करने के लिए प्राच्य रूपांकनों (Oriental Motifs) का अत्यधिक उपयोग किया गया था।

आजादी के बाद वास्तुकला

आजादी के बाद वास्तुकला के दो दृष्टिकोण उभरे- पुनरुद्धारवादी और आधुनिकतावादी, लेकिन दोनों ही औपनिवेशिक प्रभाव से छुटकारा नहीं पा सके परिणामस्वरूप, भारत की वास्तुकला परंपराओं के मानक में गिरावट आई।

• स्वतंत्रता पश्चात्की भारतीय वास्तुकला आधुनिकता, स्थिरता और पारंपरिक तत्त्वों के मिश्रण द्वारा चिह्नित है।

• प्रमुख विकासों में ली-कार्बूजियर द्वारा चंडीगढ़ का आधुनिकतावादी डिजाइन, लोटस टेंपल और विधान सौधा जैसी प्रतिष्ठित संरचनाएँ और सीआईआई-सोहराबजी गोदरेज ग्रीन बिजनेस सेंटर जैसी ग्रीन इमारतों पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।

• स्थानीय वास्तुकला का पुनरुद्धार और स्थानीय सामग्रियों का एकीकरण भी महत्त्वपूर्ण हो गया। उल्लेखनीय उपलब्धियों में विश्व स्तरीय सरकारी भवन, धार्मिक मंदिर तथा मेट्रो और हवाई अड्डे जैसे आधुनिक परिवहन बुनियादी ढाँचे सम्मिलित हैं, जो भारत के विकास और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं।

• चार्ल्स कोरेया, बालकृष्ण दोशी, पियरे जेनेरेट और साहिब सिंह जैसे वास्तुकारों ने भारतीय परंपरा के साथ आधुनिकता का मिश्रण करते हुए भारतीय स्वतंत्रता पश्चात्के वास्तुशिल्प परिदृश्य को व्यापक रूप से प्रभावित किया है।

• बालकृष्ण दोशी का IIM अहमदाबाद और चार्ल्स कोरेया का कंचनजंगा अपार्टमेंट आधुनिक भारतीय वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

मंदिर वास्तुकला — प्रारंभिक मंदिर

• स्तूपों के निरंतर निर्माण के साथ-साथ ब्राह्मणवादी (Brahmanical)/हिन्दूमंदिर एवं मूर्तियाँ अधिक लोकप्रिय हो गईं।

• प्रत्येक मंदिर में एक प्रमुख देवता की मूर्ति स्थापित की गई थी।

• **मंदिर के पूजा गृह के तीन प्रकार हैं:**

1. संधार (प्रदक्षिणा पथ के साथ) — 2. निरंधरा (प्रदक्षिणा पथ के बिना)

3. सर्वतोभद्र (सभी दिशाओं से प्रवेश किया जा सकता है)

उल्लेखनीय मंदिर:

• उत्तर प्रदेश में देवगढ़।

• मध्य प्रदेश में विदिशा के पास उदयगिरि, एरण, नचना-कुठार।

• इन मंदिरों में सामान्य रूप से एक बरामदा, एक हॉल और पीछे की ओर एक पूजा स्थल होता था।

हिन्दूमंदिर की संरचना

• **गर्भगृह:** गर्भगृह, शुरू में एक ही प्रवेश द्वार वाला एक छोटा कक्ष था, जो समय के साथ एक बड़े कक्ष में विकसित हुआ। इसे मुख्यमूर्ति को रखने के लिए डिजाइन किया गया है।

• **प्रवेशद्वार (मंडप):** मंदिर का प्रवेश द्वार, जैसे कि बरामदा अथवा द्वार मंडप बड़ी संख्या में उपासकों को समायोजित करने के लिए एक स्थान के रूप में कार्य करता है।

• **वास्तु शिल्प तत्व:** स्वतंत्र खड़े मंदिरों में एक पहाड़ जैसा शिखर चित्रित है, जो उत्तर भारत में एक घुमावदार शिखर का रूप लेता है और दक्षिण भारत में एक पिरामिड नुमा टॉवर के रूप में होता है।

• **वाहन और ध्वज:** गर्भगृह के सामने अक्षीय रूप से स्थित, वाहन मुख्य देवता के वाहन के रूप में होता है जिसके साथ एक मानक स्तंभ या ध्वज लगा हुआ होता है।

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ:

• मंदिरों की दो अलग-अलग शैलियाँ प्रचलित हैं-
  ◦ उत्तर में नागर शैली।
  ◦ दक्षिण में द्रविड़ शैली।
  ◦ दोनों ही शैलियाँ वास्तुशिल्प विशेषताओं और शिखर के आकार में भिन्न हैं।
  ◦ कुछ विद्वान वेसर शैली को नागर और द्रविड़ तत्वों के मिश्रित रूप को एक स्वतंत्र वास्तुकला शैली के रूप में देखते हैं।

नागर (उत्तर भारतीय मंदिर शैली) उत्तर भारत में मंदिर वास्तुकला की प्रचलित शैली को नागर शैली के नाम से सुप्रसिद्ध है, जो 5वीं शताब्दी ईस्वी के आस-पास विकसित हुई थी।

पीठ कलश आमलक शिखर गर्भगृह चित्र: नागर मंदिर विशेषताएँ

• उत्तर के मंदिर प्राय: ऊँचे पत्थर के चबूतरे पर बनाए जाते हैं।

• दक्षिण भारत के विपरीत, यहाँ सामान्य रूप से विस्तृत सीमा-दीवारों या प्रवेश द्वारों का अभाव है।

• मंदिरों में सामान्य रूप से मंदिर निर्माण की पंचायतन शैली का पालन किया जाता है।

• गर्भ गृह के बाहर गंगा और यमुना की प्रतिमाएँ स्थापित की गई हैं।

• मंदिर परिसर में कोई जल की टंकी या जलाशय नहीं थे।

• शिखर का ऊर्ध्वाधर सिरा एक क्षैतिज बाँसुरीदार चक्र में समाप्त होता है जिसे आमलक के नाम से जाना जाता है।

• आमलक के शीर्ष पर एक गोलाकार आकार की संरचना होती है जिसे कलश कहा जाता है।

पंचायतन शैली *[UPSC 2014]*

• इसमें प्रमुख देवता के मंदिर सहित चार सहायक मंदिर होते हैं।

• मुख्य मंदिर वर्गाकार और मंडप लम्बा होता है।

• क्रॉस का आकार देने के लिये सहायक मंदिरों को मंडप के दोनों ओर एक-दूसरे के विपरीत स्थापित किया गया है।

• **उदाहरण:** देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) में दशावतार मंदिर, ऐहोल (कर्नाटक) में दुर्गा मंदिर।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मंदिर वास्तुकला

1. मंदिर वास्तुकला	2. प्रारंभिक मंदिर
3. 1. संधार (प्रदक्षिणा पथ के साथ)	4. 2. निरंधरा (प्रदक्षिणा पथ के बिना)

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मंदिर वास्तुकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उदाहरण: देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) में दशावतार मंदिर, ऐहोल (कर्नाटक) में दुर्गा मंदिर।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मंदिर वास्तुकला • प्रारंभिक मंदिर • 1. संधार (प्रदक्षिणा पथ के साथ) • 2. निरंधरा (प्रदक्षिणा पथ के बिना) • हिन्दूमंदिर की संरचना | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2014

नागर शैली के मंदिरों को निम्नलिखित प्रकार से उप-विभाजित किया गया है

- शिखर के आकार में भिन्नता के आधार पर नागर मंदिरों का उप-विभाजन: विभिन्न प्रकार के मंदिर दुर्ग (शिखर)
- आरंभिक मंदिरों में एक ही दुर्ग (शिखर) बनाए जाते थे।
- लेकिन बाद के मंदिरों में कई दुर्ग निर्मित किए जाने लगे।
- गर्भगृह हमेशा सबसे ऊँचे शिखर के ठीक नीचे स्थित होता है।
- समयके साथकईप्रकारके शिखरविकसितकिए जाने लगे, जोनिम्नलिखित हैं:
- **लैटिना शिखर:**
  - यह 'लैटिना' या 'रेखा-प्रसाद' शिखर के प्रकार के रूप में प्रसिद्ध है।
  - इसका आधार वर्गाकार है और दीवारें अंदर की ओर मुड़ी हुई या ढलान वाली होती हैं, जो शीर्ष पर एक बिंदु पर समाप्त होती हैं।
  - लैटिना इमारतें कई छोटे शिखर को सहारा देने के लिए विकसित की गई थीं, जो उभरती हुई पर्वत चोटियों की तरह एक साथ एकत्रित थीं।
- **फामसाणा शिखर:**
  - ये लैटिना शिखर की तुलना में अधिक चौड़े और छोटे होते हैं।
  - इनकी छतें कई स्लैबों से बनी होती हैं, जो धीरे-धीरे एक बिंदु तक उठती हैं।
  - कई उत्तर भारतीय मंदिरों में, मंडपों (हॉलों) पर फमसाणा डिज़ाइन का उपयोग किया जाता है वहीं दूसरी ओर मुख्य गर्भगृह एक लैटिना इमारत में रखा जाता है।

वल्लभी प्रकार की इमारत:

- इसकी विशेषता आयताकार इमारतें हैं जिनकी छत एक गुंबददार कक्ष में उठी हुई होती है, जिसकी वजह से इसे 'वैगन-वॉल्टेड इमारतें' कहा जाता है।
- इसमें और बौद्ध रॉक-कट चैत्य गुफाओं की जमीनी योजना में समानताएँ होती हैं।
- गुंबददार कक्ष का किनारा गोल है, जो प्राचीन बाँस या लकड़ी के वैगन जैसा दिखाई देता है।

मध्य भारत

- उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और राजस्थान के प्राचीन मंदिरों की विशेषताएँ लगभग समान हैं।
- प्रारंभिक गुप्तकाल के मंदिर अपेक्षाकृत साधारण होते हैं जिनमें एक मंडप और गर्भ गृह को सहारा देने वाले चार स्तंभ होते हैं।
- मध्य प्रदेश में खास तौर पर उदयगिरि और साँची में गुप्तकाल के मंदिर बलुआ पत्थर से बनाए गए हैं।
- साँची का मंदिर 17 सपाट छत वाला पहला मंदिर था। देवगढ़ मंदिर वास्तुकला
- उत्तर प्रदेश का देवगढ़ (ललित पुर जिला) छठी शताब्दी ईस्वी की शुरुआत में गुप्तकाल के उत्तरार्ध के मंदिर वास्तुकला का उदाहरण है।
- देवगढ़ मंदिरों का निर्माण पंचायतन शैली में किया गया।
- वक्र रेखीय शिखर (घुमावदार लैटिना या रेखा-प्रसाद प्रकार का शिखर) नागर शैली का एक प्रमुख उदाहरण है।

• यह पश्चिममुखी मंदिर (पश्चिममुखी कम आम है, क्योंकि अधिकांश मंदिर पूर्व या उत्तरमुखी हैं) में एक भव्य द्वार है जिसमें गंगा और यमुना की प्रतिमाएँ स्थापित हैं।

चित्र: (a) दशावतार विष्णु मंदिर, देवगढ़, पाँचवीं शताब्दी ईसवी (b) शेषशायी विष्णु, दशावतार मंदिर, देवगढ़

• मंदिर में विष्णु के विभिन्न रूपों के चित्रण से यह गलत धारणा पैदा हुई कि यह एक दशावतार मंदिर था जिसमें चार सहायक मंदिर थे, जिनमें विष्णु के अवतार थे।

• यद्यपि, इन मंदिरों का मूल समर्पण अज्ञात है वहीं दूसरी ओर विष्णु के मुख्य रूप, जैसे- शेषशयन, नर-नारायण और गजेंद्रमोक्ष पश्चिम की ओरस्थित मंदिर की दीवारों को सुशोभित करती हैं।

खजुराहो मंदिर वास्तुकला

• इनका निर्माण चंदेल राजाओं द्वारा दसवीं शताब्दी ई. में करवाया गया था।

• लक्ष्मण मंदिर (विष्णु को समर्पित), 954 ईस्वी में चंदेल राजा धनगा द्वारा निर्मित, शिखर और प्रमुख आमलक (एक क्षैतिज बांसुरीदार डिस्क) और कलश (या फूलदान) में एक घुमावदार पिरामिड शैली को प्रदर्शित करता है।

• सभी नागर मंदिरों में आमलक और कलश मौजूद हैं और इन मंदिरों में बालकनियों और बरामदों का निर्माण किया गया है।

चित्र: विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो

• खजुराहो में कंदरिया महादेव मंदिर का निर्माण विद्याधर (1003-1035 ईस्वी) के शासन काल के दौरान किया गया था।

• खजुराहो की मूर्तियों में कामुक मूर्तियाँ और इनमें आलिंगनबद्ध जोड़े की मूर्तियाँ भी सम्मिलित हैं जिन्हें शुभ और मंदिर का अभिन्न अंग माना जाता है।

• खजुराहो में कई हिंदू मंदिर, जैन मंदिर और एक चौसठ योगिनी मंदिर भी है।

• चौसठ योगिनी मंदिर दसवीं शताब्दी से पहले का है और तांत्रिक पूजा से जुड़े देवी-देवताओं को समर्पित है।

चौसठ योगिनी मंदिर (मध्य प्रदेश) **[UPSC 2021]**

मुरैना जिले में 11 वीं सदी के इस मंदिर को बनाने का श्रेय कच्छप घाट राजा देवपाल को दिया जाता है।

• मंदिर के गोलाकार आकार के कारण यह धारणा बन गई है कि भारतीय संसद का डिजाइन इससे प्रभावित था।

• इसे एकत्तारसो महादेव मंदिर (Ekattarso Mahadeva Temple) के नाम से भी जाना जाता है।

• सातवीं और दसवीं शताब्दी के मध्य निर्मित योगिनियों के पंथ को समर्पित कई मंदिर मध्य प्रदेश, ओडिशा और दक्षिण में तमिलनाडु तक फैले हुए हैं।

पश्चिम भारत

• गुजरात, राजस्थान और पश्चिमी मध्य प्रदेश तक फैले पश्चिमी भारत के मंदिर विभिन्न प्रकार के पत्थरों का उपयोग किया गया है

• बलुआ पत्थर आम है वहीं दूसरी ओर भूरा से काला बेसाल्ट दसवीं से बारहवीं शताब्दी की मंदिर की मूर्तियों में दिखाई देता है।

• माउंट आबू के जैन मंदिरों (दसवीं से बारहवीं शताब्दी ई.) और रणकपुर (राजस्थान) में पंद्रहवीं शताब्दी ई. के मंदिर में मुलायम सफे द संगमरमर देखने को मिलता है।

मोढेरा का सूर्य मंदिर

मोढेरा के सूर्य मंदिर का निर्माण 1026 ईस्वी के दौरान सोलंकी राजवंश के राजा भीमदेव प्रथम द्वारा किया गया था।

• इसमें एक विशाल आयताकार सीढ़ीदार टैंक और सूर्य कुंड, जो वास्तुकला में जल निकायों के प्रभाव को दर्शाता है।

• इस मंदिर की सीढ़ियों के ऊपर 108 लघु मंदिरों की नक्काशी की गई है।

• मंदिर की जटिल नक्काशी और मूर्तिकला का कार्य गुजरात की लकड़ी पर नक्काशी परंपरा के प्रभाव को प्रदर्शित करती है।

• केंद्रीय छोटा मंदिर पूर्व की ओर है ताकि विषुव के दौरान सूर्य उस पर सीधे चमक सके।

गुजरात में समलाजी (Samlaji) क्षेत्र:

• यह एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक मंदिर स्थल है।

• यह पूर्व क्षेत्रीय परंपराओं को गुप्तोत्तर शैली के साथ मिश्रित करता है। पूर्वी भारत

• उत्तर-पूर्व, बंगाल और ओडिशा में मंदिर वास्तुकला के इतिहास से विशिष्ट शैलियों का पता चलता है।

• बंगाल में सातवीं शताब्दी तक टेराकोटा एक प्रचलित माध्यम था। असम असम मंदिर वास्तुकला गुप्तकाल के प्रभाव को दर्शाती है।

• गुप्तोत्तर शैली दसवीं शताब्दी तक कायम रही, इसके बाद बारहवीं से चौदहवीं शताब्दी तक एक विशिष्ट असमिया शैली का उदय हुआ।

• ऊपरी बर्मा की ताई और बंगाल की पाल शैली से प्रभावित अहोम शैली का साक्ष्य गुवाहाटी में सत्रहवीं शताब्दी के कामाख्या मंदिर (देवी कामाख्या को समर्पित एक शक्तिपीठ) में मिलता है।

• असम में नीलांचल शैली में निर्मित कामाख्या मंदिर, नागर और क्षेत्रीय स्थापत्य तत्त्वों का अनूठा मिश्रण है। इसका अर्द्ध-गोलाकार गुंबद, जो एक छत्ते जैसा दिखता है, इसे पारंपरिक घुमावदार शिखरों से अलग करता है। गर्भगृह में एक मूर्ति की बजाय एक योनि के आकार की दरार है, जो शक्ति का प्रतीक है।

• मंदिर में पंचरथ लेआउट, तांत्रिक देवताओं के साथ समृद्ध नक्काशीदार दीवारें और दस सहायक मंदिरों वाला एक परिसर है। स्थानीय ग्रेनाइट से निर्मित, यह तांत्रिक परंपराओंऔर क्षेत्रीय अनुकूलन दोनों को दर्शाता है, जो इसे एक विशिष्ट शक्ति पूजा स्थल बनाता है।

बंगाल

बंगाल की मंदिर शैलियाँ पाल शैली (नौवीं से 11वीं शताब्दी) से लेकर सेन शैली (11वीं से 13वीं शताब्दी) तक भिन्न हैं।

• बौद्ध मठ स्थलों के संरक्षक पाल शासकों ने बराकर में सिद्धेश्वर महादेव मंदिर जैसे मंदिरों मेंमौजूदा स्थानीय वंगा शैली को उके रा,जो बाद की शताब्दियों में उन्नत रूपों में विकसित हुआ।

  ◦ एक बड़े आमलक से सुसज्जित तथा एक ऊँचा और घुमावदार शिखर इसकी विशेषता है और यह ओडिशा के समकालीन मंदिरों के लगभग समान है।

• टेराकोटा ईंट के मंदिरों का प्रसार 17वीं शताब्दी के दौरान हुआ।

• धनुषाकार ताकों के साथ-साथ काले से भूरे बेसाल्ट और क्लोराइट पत्थर के स्तंभों ने गौड़ और पांडुआ में बंगाल सल्तनत की शुरुआती इमारतों के निर्माण को प्रभावित किया।

• स्थानीय भवननिर्माण परंपराओं ने इसमें एकनिर्णायक भूमिकानिभाई।मंदिरों में विशिष्ट घुमावदार छतें हैं, जो पारंपरिक बंगाली फूस की झोपड़ियों जैसी दिखती हैं। इसके प्रकारों में सम्मिलित हैं: एक-चला (एकल छत), दोई-चला (दोहरी छत), चार-चला (चार छत वाली), आचला (आठ छत वाली)।

• यह विशेषता, जिसे बांग्ला छत के नाम से जाना जाता है, बाद में मुगल इमारतों में अपनाई गई, जो पूरे उत्तर भारत में एक पहचानने योग्य वास्तुशिल्प बन गई।

• वास्तुशिल्प इस्लामी वास्तुकला से लिए गए मेहराबों और गुंबदों के रूपों से भी प्रभावित है

• इन मंदिरों के प्रमुख स्थानों में विष्णुपुर, बांकुरा, वर्दवान (वर्तमान में वर्धमान) और वीरभूम सम्मिलित हैं जिनमें से अधिकांश 17वीं शताब्दी के हैं। ओडिशा ओडिशा के मंदिरों को रेखापिडा, पिधादेउल और खाकरा क्रम में वर्गीकृत किया गया है और ये नागर क्रम के भीतर एक विशिष्ट उप-शैली का निर्माण करते हैं।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: पश्चिम भारत



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — पश्चिम भारत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: वास्तुशिल्प इस्लामी वास्तुकला से लिए गए मेहराबों और गुंबदों के रूपों से भी प्रभावित है

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: पश्चिम भारत • मोढेरा का सूर्य मंदिर • गुजरात में समलाजी (Samlaji) क्षेत्र • बंगाल | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2021

चित्र: जगन्नाथ मंदिर, पुरी

- ओडिशा के मंदिरों में शिखर (जिन्हें देउल कहा जाता है) शीर्ष तक लंबवत होते हैं और तेजी से अंदर की ओर मुड़े हुए होते हैं जिनका पृष्ठ वर्गाकार होता है।
- हमेशा की तरह देउल्स के पहले मंडप होते हैं जिन्हें ओडिशा में जगमोहन कहा जाता है।
- ओडिशा के मंदिरों में अक्सर चारदीवारी शामिल होती है, जो उन्हें अन्य शैलियों से अलग करती है।
- अधिकांश मुख्य मंदिर स्थल प्राचीन कलिंग (आधुनिक पुरी जिले) सहित भुवनेश्वर या प्राचीन त्रिभुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क में स्थित हैं।
  - भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर भगवान शिव को समर्पित है।
    - इसका उल्लेख ब्रह्म पुराण में मिलता है।
    - इसका निर्माण 11वीं शताब्दी ई. में सोमवंशी राजा जजाति के शरी द्वारा किया गया था। **[UPSC 2015]**

सूर्य मंदिर (कोणार्क)

- इसका निर्माण राजा नरसिम्हदेव प्रथम (पूर्वी गंगा राजवंश) द्वारा 1240 ईस्वी के आसपास एक विशाल शिखर के साथ किया गया था, जो बाद में ढह गया।
- इस मंदिर का जगमोहन या नृत्य-मंडप (मंडप) सुरक्षित है।
- रथ के समान दिखने वाले इस मंदिर की दीवारें विस्तृत सजावटी नक्काशी से ढकी हुई हैं जिसमें 12 जोड़ी विशाल पहिये सम्मिलित हैं, जो सूर्य देव के रथ के पहियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- हरे पत्थर से बनाई गई सूर्य की एक विशाल मूर्ति और रणनीतिक रूप से रखी गई छवियों ने गर्भगृह में सूर्य की किरणों को कैद कर लिया।

पहाड़ी वास्तुकला

- कुमाऊँ , गढ़वाल, हिमाचल और कश्मीर के पहाड़ी क्षेत्रों ने वास्तुकला के एक विशिष्ट रूप को जन्म दिया।
- तक्षशिला और पेशावर जैसे गांधार स्थलों की निकटता ने कश्मीर को प्रभावित किया और वहाँ की कला में सारनाथ, मथुरा, गुजरात और बंगाल की गुप्त और गुप्तोत्तर कालीन परंपराएँ जुड़ने लगीं।
- बौद्ध और हिन्दु भिक्षुओं की लगातार यात्राओं की वजह से पहाड़ी क्षेत्रों में बौद्ध और हिन्दू परंपराओं के मिश्रण में योगदान दिया।

पहाड़ी क्षेत्रों में लकड़ी के उपयोग परंपरा

पहाड़ी क्षेत्रों में पक्की छतों वाली लकड़ी की इमारतों के निर्माण की परंपरा कायम रही।

- मंदिर अक्सर शैलियों का मिश्रण प्रदर्शित करते हैं।
  - इनमें मुख्य गर्भगृह और शिखर रेखा-प्रसाद या लैटिना शैली सम्मिलित हैं।
  - मंडप लकड़ी की वास्तुकला के पुराने रूप को दर्शाता है।
- कुछ मंदिर का निर्माण पगोडा (Pagoda) आकारमें हैं, जो पहाड़ी वास्तुकला की विशिष्टता को प्रदर्शित करते हैं।

कश्मीर में कर्कोटा काल

- कश्मीर में कर्कोटा काल खास तौर पर आठवीं और नौवीं शताब्दी के दौरान प्रसिद्द रहा।
- यह काल मंदिर वास्तुकला के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- इसमें स्थानीय कश्मीरी शैलियों का मिश्रण है, जिसमें गुप्त और गांधार परंपराओं का प्रभाव है। प्रमुख विशेषताओं में सम्मिलित हैं:
  - **पत्थर की चिनाई:** सटीक पत्थर-काटने और निर्माण के लिए ग्रे चूना पत्थर और एशलर चिनाई का उपयोग।
  - **पिरामिडनुमा छतें:** मार्तंड सूर्य मंदिर जैसे मंदिरों में सीढ़ीदार, पिरामिडनुमा छतें थीं, जो कार्कोटा शैली की विशेषता है।
  - **आयताकार/वर्गाकार प्रदर्शन:** एक बरामदा और खुले आँगन के साथ केंद्रीय गर्भगृह, अधिकांशत: सहायक मंदिरों के साथ।
  - **जटिल नक्काशी:** मंदिरों को हिंदू देवताओंऔर पौराणिक विषयों की मूर्तियों से सजाया गया था।
  - **विस्तृत स्तंभ:** विशाल, सुसज्जित स्तंभ, अधिकांशत: कमल की आकृति के साथ।
  - **प्राकृतिक एकीकरण:** मंदिरों को प्राकृतिक परिदृश्य के साथ एकीकृत करते हुए ऊँचे स्थानों पर बनाया गया था।

• मार्तंड सूर्य मंदिर इन स्थापत्य विशेषताओं को मूर्त रूप देने वाला सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है।
  ◦ पंड्रेथन मंदिर, संभवतः शिव को समर्पित है।
  ◦ पंड्रेथन मंदिर, कश्मीर की लकड़ी की इमारत परंपरा का उदाहरण है जिसमें एक नुकीली छत बाहर की ओर झुकी हुई होती है।

चंबा की मूर्तियाँ और परंपरा का मिश्रण

• चंबा उत्तर-गुप्त शैलीके साथ स्थानीय परंपराओं के मिश्रण को प्रदर्शित करता है।
• इसके गुण 'लक्षणा-देवी मंदिर' में महिषासुरमर्दिनी और नरसिम्हा जैसी मूर्तियों में दिखाई देते हैं।
  ◦ कश्मीर की धातु मूर्तिकला परंपरा से प्रभावित, पीले रंग की इन मूर्तियों में संभवतः जस्ता और तांबे के मिश्रण का उपयोग किया गया है।
  ◦ सातवीं शताब्दी में मेरुवर्मन के शासनकाल के दौरान निर्मित मंदिर का एक शिलालेख इसके ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है।
• हिमाचल प्रदेश के मनाली मेंहिडिम्बा मंदिर महाभारत के एक पात्र हिडिम्बा को समर्पित है। पैगोडा शैली में निर्मित, इसमें जटिल नक्काशी और स्तरीय छतों के साथ लकड़ी का निर्माण है। मंदिर का गोलाकार गर्भगृह और वन क्षेत्र में इसका स्थान इसके आध्ययात्मिक महत्त्व को बढ़ाता है।

कुमाऊँ में नागर वास्तुकला:

• कुमाऊँ में अल्मोडा के पास जागेश्वर और पिथोरागढ़ के पास चंपावत के मंदिर क्षेत्र में नागर वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण दिखाई देते हैं।

द्रविड़ (दक्षिण भारतीय मंदिर शैली) विशेषताएँ

• नागर मंदिरों के विपरीत, द्रविड़ मंदिर एक परिसर की दीवार के भीतर घिरे हुए होते हैं।
• प्रवेश द्वार की दीवार में एक केंद्रीय प्रवेश द्वार स्थापित किया गया है जिसे गोपुरम के नाम से जाना जाता है।

विमान शिखर गोपुरम मंडप — गर्भगृह — चित्र: द्रविड़ मंदिर

• प्रवेश मूर्तियाँ सामान्य रूप से मंदिर की रक्षा करने वाले बड़े द्वारपालों (द्वारपालों) को दर्शाती हैं।
• मंदिर परिसरों में बड़े जलाशय या मंदिर टैंक निर्मित किए गए होते हैं।
• द्रविड़ मंदिरों को पाँच आकृतियों में वर्गीकृत किया गया है–
  ◦ वर्गाकार (कूट या चतुरस्र)
  ◦ आयताकार (शाला या अयतास्र)
  ◦ अंडाकार (गज-पृष्ट या वृत्तायत)
  ◦ वृत्ताकार (वृत्त)
  ◦ अष्टकोणीय (अष्टस्र)
• मंदिर की योजना और विमान के आकार का चुनाव प्रतिष्ठित देवता की प्रतीकात्मक प्रकृति से प्रभावित होता है।
• तमिलनाडु मे काँचीपुरम, तंजावुर, मदुरै और कुंभकोणम के मंदिर शहरी वास्तुकला के केंद्र बिंदु बन गए।
• आठवीं से 12वीं शताब्दी के दौरान व्यापक भूमि क्षेत्रों परनियंत्रण स्थापित करते हुए मंदिर समृद्ध प्रशासनिक केंद्रों में बदल गए।

विशिष्ट विशेषताएँ

• तमिलनाडु का मुख्य मंदिर का 'विमान' एक ज्यामितीय रूप से उभरते हुए सीढ़ीदार पिरामिड के रूप में है, जो उत्तर भारत के घुमावदार शिखर से अलग है।
• 'शिखर' शब्द केवल मुकुट तत्व को संदर्भित करता है जिसका आकार सामान्य रूप से एक छोटे स्तूपिका या अष्टकोणीय गुंबद (उत्तर भारतीय मंदिरों के अमलक और कलश के बराबर) जैसा होता है।
• शिखरों के समूह वाले उत्तर भारतीय मंदिरों के विपरीत दक्षिण भारतीय मंदिरों में सामान्यतः सबसे छोटे मीनार में से एक मुख्य मंदिर होता है जो इसके ऐतिहासिक महत्त्व को दर्शाता है।

पल्लव: दक्षिण भारतीय वास्तुकला के अग्रदूत

पल्लव (दूसरी शताब्दी ई.पू., आंध्र क्षेत्र) एक महत्त्वपूर्ण वास्तुशिल्प विरासत छोड़कर दक्षिण से तमिलनाडु चले गए।

पल्लव वास्तुकला

दक्षिण भारत में मंदिर वास्तुकला पल्लव शासकों के अधीन शुरू हुई और इसे 4 चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. महेंद्र समूह

• पल्लव वास्तुकला के पहले चरण के अंतर्गत चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर सम्मिलित थे।

• महेंद्रवर्मन ने अपने मंडागप्पट्टू शिलालेख में उल्लेख किया है कि ब्रह्मा, ईश्वर और विष्णु को समर्पित उनका मंदिर ईंट, लकड़ी, धातु और मोर्टार जैसी पारंपरिक सामग्रियों का उपयोग किए बिना बनाया गया था।

• मंदिर सामान्य रूप से मंडप प्रकार के होते हैं जिनके सामने एक स्तंभयुक्त हॉल या मंडप होता है और पीछे या किनारों पर एक छोटा मंदिर होता है।

2. नरसिम्हा समूह

• चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिरों को जटिल मूर्तियों से सजाया गया था।

• नरसिंहवर्मन प्रथम के शासनकाल के दौरान पंच पांडव रथ बनाए गए जिनमें सबसे बड़ा धर्मराज रथ था।

• मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली धर्मराज रथ की क्रमानुयायी है।

3. राजसिम्हा समूह

• उनके अधीन वास्तविक संरचनात्मक मंदिरों का विकास हुआ।

• उदाहरण– महाबलीपुरम में तटीय मंदिर नरसिंहवर्मन द्वितीय के शासनकाल में बनाया गया था जिसे राजसिम्हा (आठवीं शताब्दी) और काँचीपुरम में कैलाशनाथ मंदिर आदि के नाम से भी जाना जाता है।

4. नंदिवर्मन समूह

• मंदिर आकार में छोटे थे।

• इसकी विशेषताएँ मंदिर वास्तुकला की द्रविड़ शैली के लगभग समान थीं। महाबलीपुरम **[UPSC 2014, 2015, 2016]**

सातवीं शताब्दी के इस पल्लव स्थल को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

महाबलीपुरम में महत्त्वपूर्ण स्मारक:

• **पंच पांडव रथ:** ये नरसिंहवर्मन प्रथम (630-668 ईस्वी) के संरक्षण में निर्मित सबसे पुराने रॉक-कट मंदिर हैं और इसमें धर्मराज रथ, भीम रथ, अर्जुन रथ, नकुल और सहदेव रथ सम्मिलित हैं।

• **चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा मंदिर:** वराह गुफा मंदिर, कृष्ण गुफा मंदिर, पंच पांडव गुफा मंदिर और महिषासुरमर्दिनी मंडप।

• **ओपन एयर रॉक रिलीफ:** इसमें गंगा का अवतरण शामिल है जिसे अर्जुन की तपस्या या भागीरथ की तपस्या के फल के रूप में भी जाना जाता है।

• **तटीय मंदिर परिसर:** इसमें दो छोटा और एक बड़ा मंदिर है। यह मंदिर मुख्य रूप से भगवान शिव को समर्पित है, तीन मंदिरों में से एक में अनंतशयन (विष्णु) की मूर्ति है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: कुमाऊँ में नागर वास्तुकला

2014	2015	2016
कुमाऊँ में नागर वास्तुकला	विमान	शिखर

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कुमाऊँ में नागर वास्तुकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: तटीय मंदिर परिसर: इसमें दो छोटा और एक बड़ा मंदिर है। यह मंदिर मुख्य रूप से भगवान शिव को समर्पित है, तीन मंदिरों में से एक में अनंतशयन (विष्णु) की मूर्ति है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कुमाऊँ में नागर वास्तुकला • विमान • शिखर • गोपुरम मंडप • गर्भगृह | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2014, 2015, 2016

IUC विशेष स्मृति सूत्र #3: भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य एवं राज्य

ट्रिक: 'भरत नाट्, गान करना, पूरी आदिल, कथक उत्तर, कली-मोहिनी केरल, मणि-सत्र असम' — भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कुचिपुड़ी (आंध्र), कथक (उ.प्र.), कथकली व मोहिनीअट्टम (केरल), मणिपुरी (मणिपुर), ओडिसी (ओडिशा), सत्रिया (असम)।

परिसर में एक जल की टंकी, प्रारंभिक गोपुरम और नंदी की मूर्तियों के साक्ष्य सम्मिलित हैं।

वराहमंडप गुफा: यह अर्जुन की तपस्या के पीछे निम्नलिखित विशेषताएँ रखती हैं –

- सामने के हॉल में दो सिंह स्तंभ हैं।
- पैनलों में से एक वराह को समुद्र से पृथ्वी को उठाते हुए दर्शाया गया है।
- एक उल्लेखनीय विशेषता सूअर की थूथन है। चोल वास्तुकला प्रारंभिक चोल मंदिर:
- चोल वंशीय मंदिर मेंबड़े नहीं होते थे और मंदिर की दीवारों पर'गण' कहलाने वाली कई छोटी आकृतियाँ चित्रित की गई हैं।
- **तमिलनाडु में मंदिर:** नार्थमलाई में विजयालय चोलिसवारा मंदिर, ब्रह्मपुरीश्वर मंदिर, मूवरकोविल आदि सम्मिलित हैं।

बाद के चोल मंदिर:

ये शाही संरक्षण में निर्मित बड़े मंदिर थे।

- राजराजा चोल ने वर्ष 1010 ई. में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण कार्य पूरा कराया, जो अपनी भव्यता और विशालता के लिए जाना जाता है।

बृहदेश्वर मंदिर

चित्र: (a) बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर; (b) नंदी, बृहदेश्वर मंदिर

- यह मंदिर यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल का एक हिस्सा है जिसे चोल-युग के गंगईकोंड चोलपुरम मंदिर और ऐरावतेश्वर मंदिर, साथ-साथ 'महान जीवित चोल मंदिर' के नाम से सुप्रसिद्ध है।
- इस मंदिर के पिरामिडनुमा विमान के शीर्ष पर एक शिखर स्थापित है जो एक अष्टकोणीय गुंबद के आकार की स्तूपिका है।

मंदिर के मुख्य देवता शिव हैं।

- अन्य उदाहरण– दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर (भगवान शिव को समर्पित) जिसका निर्माण राजराजा चोलद्वितीय द्वारा किया गयाथा, दूसरा उदाहरण राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर है।

वेसर और अन्य क्षेत्रीय शैलियाँ

कर्नाटक में, मंदिर वास्तुकला को वेसर शैली के नाम से सुप्रसिद्ध है।

विशेषताएँ :

- यह उत्तर और दक्षिण भारतीय प्रभावों के मिश्रण को दर्शाता है।
- जटिल नक्काशी से सजाए गए खंभों, दरवाजों और छतों वाला खुला चलने योग्य मार्ग।
- जटिल नक्काशी और मूर्तियों में द्रविड़ियन प्रभाव देखा जाता है।
- घुमावदार शिखर और मंदिरों के वर्गाकार आधार में नागर प्रभाव दिखाई देता है।

चालुक्यकालीन मंदिर

पुलके शिन प्रथम ने 543 ई. में बादामी के आसपास पश्चिमी चालुक्य साम्राज्य की स्थापना की।

- कर्नाटक में, पश्चिमी चालुक्यों ने विभिन्न शैलियों को मिश्रित किया जिससे संकर वेसर वास्तुकला का निर्माण हुआ।
- नरम बलुआ पत्थरों को माध्यम बनाकर मंदिर निर्माण की तकनीक शुरू की गई।
- इनके मंदिरों को दो भागों में बाँटा गया है–
  - खुदाई से प्राप्त गुफा मंदिर
  - संरचनात्मक मंदिर
- बादामी को संरचनात्मक और उत्खनन दोनों प्रकार के गुफा मंदिरों के लिए जाना जाता है।
- पट्टडकल और ऐहोल संरचनात्मक मंदिरों के लिए लोकप्रिय हैं। ऐहोल
- रावण फाड़ी गुफा एक विशिष्ट मूर्तिकला शैली का प्रदर्शन करती है जिसमें जीवन से भी बड़ी सप्तमातृकाओं से घिरे नटराज का चित्रण है।

चित्र: दुर्गा मंदिर, ऐहोल

- कर्नाटक का लाड खान मंदिर लकड़ी की छत वाले पहाड़ी मंदिरों से प्रेरित है, लेकिन इसका निर्माण पूरी तरह से पत्थर से किया गया है।
- ऐहोल में दुर्गा मंदिर स्थापित किया गया है जो कि अद्वितीय है और इसमें एक प्रारंभिक अर्धवृत्ताकार मंदिर भी है, जो एक शैलीगत नागर शिखर के साथ बौद्ध चैत्य हॉल की याद दिलाता है।
- हुच्चिमल्लीगुडी मंदिर आकार में आयताकार है।
- मेगुडी जैन मंदिर का निर्माण चालुक्यों के अधीन किया गया था।
  - इसमें कवि रविकृति द्वारा रचित संस्कृत शिलालेख (634-635 ई.) है, जो चालुक्यों विशेषकर शासक राजा पुलिकेशिन द्वितीय की प्रशस्ति है, जिन्हें सत्याश्रय (सत्य का निवास) कहा जाता है।
- यह राजवंश के इतिहास, उसके सभी शत्रुओं, विशेषकर हर्षवर्द्धन की पराजय पर प्रकाश डालता है।
- मंडप-प्रकार की गुफाएँ ऐहोल में संरक्षित हैं।

बादामी (वातापी)

- बादामी में चार गुफा मंदिर स्थापित किए गए हैं।
- इसमें दो मंदिर विष्णु को और एक-एक शिव और जैन तीर्थंकरों को समर्पित हैं।
- मंगलेसा द्वारा निर्मित सबसे बड़ा गुफा मंदिर विष्णु को समर्पित है।
- साँप की शैय्या परविष्णु की लेटी हुई मुद्रा, नरसिम्ह चालुक्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

पट्टकल

- पट्टदकल शाही अनुष्ठानों को करने का एक केंद्र था।
- विरुपाक्ष मंदिर का निर्माण रानी लोहामहादेवी के आदेश पर उनके पति विक्रमादित्य द्वितीय द्वारा काँचीपुरम के विजय के उपलक्ष्य में किया गया था।
  - यहाँ के चालुक्यों ने मामल्लापुरम में राजसिम्ह द्वारा निर्मित मंदिर की विशिष्ट विशेषता को अपनाया।

- विरूपाक्ष मंदिर के पूर्वी बारामदे में एक कन्नड़ शिलालेख स्थापित किया गया है, इसशिलालेखके अंतर्गतमंदिरकोडिजाइनकरनेवालेवास्तुकार की प्रशंसा की गई है, इन वास्तुकार को त्रिभुवाचार्य (तीनों लोकों के निर्माता) की उपाधि दी गई थी।

• पट्टडकल में पापनाथ मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और यहद्रविड़ परंपरा का उदाहरण है।

• पूर्वी चालुक्य मंदिर, जैसे-महाकूट और स्वर्ग ब्रह्मा मंदिर, ओडिशा और राजस्थान की उत्तरी शैलियों के समावेश को दर्शाते हैं।

राष्ट्रकूट

• सातवीं सदी के अंत या आठवीं सदी की शुरुआत में राष्ट्रकूटों ने एलोरा में भव्य वास्तुकला का प्रदर्शन करते हुए दक्कन पर कब्जा कर लिया।

चित्र: कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा

• एलोरा का कैलाशनाथ मंदिर, जो शिव को समर्पित है (एक नंदी मंदिर और एक गोपुरम जैसे प्रवेश द्वार के साथ), एक पूर्ण द्रविड़ इमारत है जो पूरी तरह से जीवित चट्टान से बनाई गई है।

- आठवीं शताब्दी में कृष्ण प्रथम के समय एक ही चट्टान से बनाया गया था।
- यह कर्नाटक के पट्टदकल मेंलोकेश्वर मंदिर के समान हैजिसे चालुक्य राजा विक्रमादित्य द्वितीय ने पल्लवों पर अपनी जीत के उपलक्ष्य में बनवाया था।

होयसल

• होयसल वास्तुकला को इंडो-आर्यन शैली और द्रविड़ शैली के मंदिरों के बीच मध्यवर्ती माना जाता है।

• 1050-1300 ईस्वी के मध्य होयसल शासकों के अधीन कर्नाटक क्षेत्र में मंदिरों का विकास किया गया।

• इस कला के प्रमुख केंद्र बेलूर, हलेबिडु और श्रृंगेरी थे।

होयसल मंदिरों की विशेषताएँ :

• उभरे हुए मंच (जगती के नाम से जाना जाता है) और आंतरिक एवं बाहरी दीवारों पर जटिल मूर्तिकला नक्काशी वाले तारे के आकार के मंदिर।

• ये बलुआ पत्थरों की बजाय सेलखड़ी से निर्मित किए गए हैं, जो जटिल शिल्प कौशल को प्रदर्शित करता है।

• एक केंद्रीय स्तंभ वाले हॉल के चारों ओर कई मंदिर निर्मित किए गए थे।

• **हलेबिड में होयसलेश्वर मंदिर (1150 ई., कर्नाटक):** डार्क शिस्ट स्टोन (परतदार पत्थर) का उपयोग कर राजा विष्णुवर्धन द्वारा निर्मित है।

• बेलूर, हैलेबिड और सोमनाथपुर के मंदिरों की विशेषता सेलखड़ी नक्काशी के साथ तारकीय-योजना (तारे के जैसी) और वेसर शैली का उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

• हेलेबिड मंदिर नटराज के रूप में शिव को समर्पित है।

• **अन्य मंदिर:**

- **बेलुर में चेन्नाके शव मंदिर:** यह हिंदू भगवान विष्णु को समर्पित है।
- **सोमनाथपुर में चेन्नाके शव मंदिर:** कावेरी नदी के तट पर वैष्णव हिंदू मंदिर, भगवान कृष्ण के तीन रूपों- क्रमशः जनार्दन, के शव और वेणुगोपाल को समर्पित है।

विजयनगर वास्तुकला

विजयनगर शासकों (1335-1565 ई.) ने चोल, होयसल, पांड्य और चालुक्य स्थापत्य कला की विशेषताओं को संयोजित किया। ये बीजापुर की इंडो-इस्लामिक शैली से भी प्रभावित थे।

• हालाँकि इसे सामान्यरूप सेद्रविड़ शैलीके नाम से सुप्रसिद्ध है, लेकिन इसकी अपनी विशिष्ट विशेषताएँ थीं।

• वास्तुकला की इस नई शैली को प्रोविडा शैली कहा जाता है।

• मंदिरों की दीवारों को नक्काशी और ज्यामितीय विधि से सजाया गया था।

• गोपुरम सभी तरफ बनाए गए थे और कई मंजिला पिरामिडनुमा संरचनाओं में थे।

• बड़े और ऊँचे गोपुरम को राया गोपुरम के नाम से जाना जाता है।

• इस वास्तुकला के अंतर्गत अम्मान श्राइन के नाम से जानी जाने वाली एक नई संरचना दिखाई देती है। यहाँ मुख्य देवता की पत्नी की मूर्ति को स्थापित किया गया था, उदाहरण– हजारा मंदिर का अम्मान मंदिर (हम्पी, कर्नाटक)।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: पट्टकल

1. पट्टकल	**2. राष्ट्रकूट**
3. चित्र: कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा	**4. होयसल**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — पट्टकल

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस वास्तुकला के अंतर्गत अम्मान श्राइन के नाम से जानी जाने वाली एक नई संरचना दिखाई देती है। यहाँ मुख्य देवता की पत्नी की मूर्ति को स्थापित किया गया था, उदाहरण– हजारा मंदिर का अम्मान मंदिर (हम्पी, कर्नाटक)।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: पट्टकल • राष्ट्रकूट • चित्र: कैलाशनाथ मंदिर, एलोरा • होयसल • विजयनगर वास्तुकला | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1300, 1150, 1335, 1565

हजारा मंदिर (हम्पी):

• इसका प्रयोग संभवतः राजा और उसके परिवार के लिए ही किया जाता था।

• इस मंदिर को रजा का निजी मंदिर के रूप में प्रचलित था ।

• दीवारों पर लगे नक्काशीदार पैनलों में रामायण के दृश्यों को उके रा गया है।

विरुपाक्ष मंदिर (हम्पी):

• शिलालेखों से पता चलता है कि सबसे पुराना मंदिर, नौवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य निर्मित किए गए थे।

• विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के साथ-साथ इसका भी विस्तार हुआ।

• इस मंदिर के मुख्य मंदिर के सामने के हॉल का निर्माण कृष्णदेव राय द्वारा अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में किया गया था।

  ◦ इसे बारीक नक्काशीदार खंभों के माध्यम से सजाया गया है।

  ◦ कृष्णदेव राय को पूर्वी गोपुरम के निर्माण का भी श्रेय दिया जाता है।

विट्ठल मंदिर (हम्पी):

• प्रमुख देवता विट्ठल, जो विष्णु का एक रूप हैं।

• इन्हें आम तौर पर महाराष्ट्र में पूजा जाता है।

• मंदिर परिसरों की एक विशिष्ट विशेषता रथ सड़केंहैं जो मंदिर गोपुरम से एक सीधी रेखा में स्थापित की गई हैं।

• विजयनगर वास्तुकला के अंतर्गत मंदिर विविध चट्टानी स्तंभों से सुसज्जित थे।

• कुछ मंडप अस्तित्व में आए और केंद्रीय मंडप को कल्याण मंडप (दिव्य विवाह का जश्न मनाने के लिए) के रूप में जाना जाने लगा। **[UPSC 2019]**

• मंदिर परिसर के अंदर धर्मनिरपेक्ष इमारतों की अवधारणा भी इसी अवधि के दौरान पेश की गई थी।

  ◦ उदाहरण– विट्ठलस्वामी मंदिर परिसर (इसके स्तंभ को छूने पर संगीतमय ध्वनियाँ सुनाई देती हैं), लोटस महल (यह एक परिषद कक्ष रहा होगा, वह स्थान जहाँ राजा अपने सलाहकारों से मिलते थे), विरूपाक्ष मंदिर और हम्पी (कर्नाटक) में रघुनाथ मंदिर।

[UPSC 2009]

नायक वास्तुकला

यह 16वीं और 18वीं शताब्दी ईस्वी के मध्य नायक शासकों के अधीन विकसित हुआ।

• वास्तुकला की दृष्टि से यह द्रविड़ शैली के समान है, लेकिन इसमें इस्लाम के प्रभाव भी दिखाई देते थे।

• मंदिरों की विशेषता गर्भगृह के चारों ओर स्थापित विशाल प्राकारम या गलियारे हैं।

- मंदिर जटिल नक्काशी से भरे हुए थे।
- गोपुरम की कला नायक शासकों के अधीन अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
  - उदाहरण– मदुरै में मीनाक्षी मंदिर का गोपुरम (वैगई नदी के दक्षिणी तट पर स्थित)। जैन स्थापत्य विरासत
- हिंदुओं की भाँति ही जैन भी विपुल मंदिर निर्माता थे, जिनके पवित्र स्थल पूरे भारत में पाए जाते थे।
- दक्कन में एलोरा और एहोल में वास्तुकला की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण जैन स्थल हैं।
- देवगढ़, खजुराहो, चंदेरी और ग्वालियर जैसे मध्य भारतीय शहरों में दर्शनीय जैन मंदिर हैं
- कर्नाटक एक समृद्ध जैन विरासत का साक्षी है।
- श्रवण बेलगोला में विश्व की सबसे ऊँची अखंड स्वतंत्र संरचना गोमतेश्वर की मूर्ति स्थित है।
- माउंट आबू में विमल शाह द्वारा निर्मित जैन मंदिर, समृद्ध मूर्तिकला सजावट के साथ एक सरल बाहरी भाग का प्रदर्शन करते हैं।
- पलिताना के पास शत्रुंजय पहाड़ियों में जैन मंदिरों का एक भव्य समूह है।
- मुख्य मंदिर प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ को समर्पित है; यह श्वेतांबर मूर्तिपूजक संप्रदाय के लिए सबसे पवित्र मंदिर है।

चित्र: (a) जैन मूर्ति, माउंट आबू; (b) दिलवाड़ा मंदिर, माउंट आबू

- पारसनाथ पहाड़ी (छोटा नागपुर पठार, झारखंड) का नाम 23वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ के नाम पर रखा गया है। उन्हें यहीं मोक्ष की प्राप्ति हुई थी-
  - इस पहाड़ी पर सम्मेद शिखरजी को दिगंबर और श्वेतांबर दोनों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थल माना जाता है।
  - ऐसा माना जाता है कि यहवह स्थान है जहाँ 24 जैन तीर्थंकरों में से 20 ने 'मोक्ष' प्राप्त किया था।
- संथालों द्वारा इस पहाड़ी को मारंग बुरु ('महान पर्वत', सर्वोच्च देवता) के रूप में भी जाना जाता है।

अन्य महत्त्वपूर्ण मंदिर

मंदिर का नाम - (समर्पित) - निर्माता (नाम, राजवंश और काल) वेंकटेश्वर मंदिर (सात पहाड़ियों के मंदिर के रूप में भी जाना जाता है) [आंध्र प्रदेश]: भगवान श्री वेंकटेश्वर (विष्णु के अवतार); तमिल शासक राजा थोंडाईमन द्वारा निर्मित, बाद में चोल राजवंश के राजाओं द्वारा इसे विकसित किया गया।

वराह लक्ष्मी नरसिम्हा मंदिर (सिम्हाचलम मंदिर के रूप में भी जाना जाता है), [आंध्र प्रदेश]: भगवान वराह नरसिम्हा (भगवान विष्णु का अवतार); वर्तमान मंदिर पूर्वी गंगा राजा नरसिंह देव प्रथम द्वारा 13वीं शताब्दी में बनवाया गया था और 1268 ई. में उनके पुत्र भानुदेव प्रथम द्वारा इसे प्रतिष्ठित किया गया।

श्री ब्रह्मराम्भ मल्लिकार्जुन मंदिर [आंध्र प्रदेश]: भगवान शिव और पार्वती; सातवाहन वंश के शिलालेखीय साक्ष्य। विजयनगर साम्राज्य के राजा हरिहर के समय में इसमें कुछ परिवर्धन किए गए।

सूर्यनारायण मंदिर (इसे अरासवल्ली सूर्य मंदिर भी कहा जाता है) [आंध्र प्रदेश]: सूर्य देवता को समर्पित।

सातवीं शताब्दी ई. में शासक देवेंद्र सरमा द्वारा निर्मित। **[UPSC 2017]**

श्री रंगनाथस्वामी मंदिर [नेल्लोर, आंध्र प्रदेश]: भगवान रंगनाथ (भगवान विष्णु का विश्राम रूप); पेन्ना नदी के तट पर स्थित है। 12वीं शताब्दी में निर्मित।

वीरभद्र मंदिर [आंध्र प्रदेश]: भगवान शिव; 1530 ई. में विजयनगर साम्राज्य के तहत निर्मित।

कामाख्या मंदिर (कामरूप कामाख्या के नाम से भी जाना जाता है) [नीलांचल हिल, गुवाहाटी, असम]: देवी कामाख्या; आठवीं-17वीं शताब्दी के दौरान निर्मित।

द्वारकाधीश मंदिर [गुजरात]: भगवान कृष्ण; यह चार धाम के स्थलों में से एक है। मोढ़ेरा सूर्य मंदिर [मेहसाणा जिला, गुजरात]: सूर्य देव; इसका निर्माण 1026-27 ईस्वी में चालुक्य राजा भीम प्रथम के शासनकाल के दौरान किया गया था।

विरुपाक्ष मंदिर [कर्नाटक]: भगवान शिव का एक रूप; शासक देव राय द्वितीय के अधीन एक नायक द्वारा निर्मित।

विट्ठल मंदिर [कर्नाटक]: भगवान विष्णु के अवतार भगवान विट्ठल को समर्पित; इसका निर्माण हम्पी में राजा देवराय द्वितीय (1422-1446 ईस्वी) के शासनकाल के दौरान किया गया था। कृष्णदेवराय (1509-1529 ई.) के शासनकाल के दौरान मंदिर के कई हिस्सों का विस्तार और संवर्द्धन किया गया।

पद्मनाभस्वामी मंदिर [केरल]: भगवान विष्णु; हालाँकि मंदिर आठवीं शताब्दी ईस्वी का है, वर्तमान संरचना 18वीं शताब्दी में तत्कालीन त्रावणकोर महाराजा मार्तंड वर्मा द्वारा बनाई गई थी।

सबरीमाला मंदिर [केरल]: भगवान अय्यप्पन; 12वीं शताब्दी ईस्वी पूर्व निर्मित; पंबा नदी के पास स्थित और पेरियार टाइगर रिजर्व में 18 पहाड़ियों से घिरा हुआ है। ओंकारेश्वर मंदिर [मध्य प्रदेश]: भगवान शिव; खंडवा जिले में नर्मदा नदी में मांधाता नामक द्वीप पर स्थित एक ज्योतिर्लिंग।

महाकालेश्वर मंदिर [मध्य प्रदेश]: भगवान शिव; शिप्रा नदी के पास स्थित ज्योतिर्लिंग।

विट्ठल रुक्मिणी मंदिर या विठोबा मंदिर [महाराष्ट्र]: भगवान विट्ठल को विष्णु और उनकी पत्नी रखुमाई का रूप माना जाता है; 13वीं शताब्दी ईस्वी में होयसल साम्राज्य के शासकों द्वारा निर्मित।

त्र्यंबके श्वर मंदिर [महाराष्ट्र]: भगवान शिव; ज्योतिर्लिंग, तीन पहाड़ियों, ब्रह्मगिरि, नीलगिरि और कालागिरि के मध्य स्थित है। इसका निर्माण बालाजी बाजीराव द्वारा करवाया गया था।

कोणार्क का सूर्य मंदिर [ओडिशा]: सूर्य देव; 13वीं शताब्दी में पूर्वी गंगा राजवंश द्वारा निर्मित।

लिंगराज मंदिर [ओडिशा]: हरिहर, शिव और विष्णु का रूप; 11वीं शताब्दी में सोमावंसी राजवंश के शासकों द्वारा निर्मित। यह भुवनेश्वर में स्थित है। हजार स्तंभों वाला मंदिर [तेलंगाना]: भगवान विष्णु, शिव और सूर्य को समर्पित; 12वीं-14वीं शताब्दी में काकतीय राजवंश के शासकों द्वारा निर्मित।

रामप्पा [तेलंगाना]: रामलिंगेश्वर; 11वीं शताब्दी में काकतीय राजवंश के शासकों द्वारा निर्मित। रंगनाथस्वामी मंदिर [तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु]: भगवान विष्णु; कावेरी नदी और कोल्लिडम नदी से घिरे एक बड़े द्वीप पर स्थित है।

उनाकोटि गुफा मंदिर [त्रिपुरा]: भगवान शिव; इसे 'उत्तर-पूर्व का अंगकोर वाट' भी कहा जाता है। 600-700 ई. में निर्मित।

बारह ज्योतिर्लिंग: सोमनाथ (गुजरात), नागेश्वर (गुजरात), मल्लिकार्जुन श्रीशैलम (आंध्र प्रदेश), महाकालेश्वर, उज्जैन (मध्य प्रदेश), ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश), के दारनाथ (उत्तराखंड), काशी विश्वनाथ, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), देवघर (झारखंड) में बैद्यनाथ, रामेश्वरम (तमिलनाडु) में रामेश्वर, सवाई माधोपुर जिले (राजस्थान) के शिवार में घुश्मेश्वर, औरंगाबाद जिले (महाराष्ट्र) के एलोरा में घृष्णेश्वर, त्र्यंबके श्वर (महाराष्ट्र) और भीमाशंकर (महाराष्ट्र)।

सोमनाथ मंदिर [गुजरात]

- कहा जाता है कि पहला मंदिर 2000 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आया था। 649 ई. में वल्लभिनी के राजा मैत्रे ने एक और मंदिर का निर्माण और जीर्णोद्धार कराया।
- मंदिर का वर्णन एक अरब यात्री अल-बरूनी द्वारा किया गया था और इसने 1024 ईस्वी में गजनी के महमूद को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया।
- समकालीन सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का कार्य भारत के पहले गृह मंत्री वल्लभभाई पटेल के आदेश के अनुसार शुरू किया गया था। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा की। **[UPSC 2022]**

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: सोमनाथ मंदिर [गुजरात]



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सोमनाथ मंदिर [गुजरात]

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मंदिर का वर्णन एक अरब यात्री अल-बरूनी द्वारा किया गया था और इसने 1024 ईस्वी में गजनी के महमूद को यहाँ आने के लिए प्रेरित किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सोमनाथ मंदिर [गुजरात] • वीरभद्र मंदिर [आंध्र प्रदेश] • द्वारकाधीश मंदिर [गुजरात] • विरुपाक्ष मंदिर [कर्नाटक] • विट्ठल मंदिर [कर्नाटक] | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1268, 2017, 1530, 1422, 1446

भारत में विश्व धरोहर स्थलों के अंतर्गत मंदिरों की सूची मंदिर/समूह स्थान निर्माता/वंश प्रमुख विशेषताएँ खजुराहो मंदिर समूह मध्य प्रदेश चंदेल वंश (950–1050 ई.) जटिल कामुक मूर्तियाँ, नागर शैली, आध्ययात्मिकता, जीवन और मानव भावनाओं का चित्रण सूर्य मंदिर, कोणार्क ओडिशा राजा नरसिंहदेव प्रथम (1244 ई.) इसे सूर्यदेव के रथ के रूप में निर्मित किया गया है, जिसमें 24 नक्काशीदार पहिये और सात घोड़े हैं।

महाबलीपुरम के स्मारकों का समूह तमिलनाडु पल्लव वंश (7वीं–8वीं सदी ई.) रॉक-कट वास्तुकला, एकल रथ, शोर मंदिर, तथा गंगा अवतरण जैसी उभरी हुई आकृतियाँ।

बृहदेश्वर मंदिर तमिलनाडु (तंजावुर) चोल वंश (राजराज चोल प्रथम, 1010 ई.) विशाल विमान (टॉवर), चोल भित्ति-चित्र और नंदी प्रतिमा; अपने समय का सबसे बड़ा मंदिर गंगईकोंडचोलपुरम मंदिर तमिलनाडु चोल वंश (राजेंद्र चोल प्रथम, 1035 ई.) उत्कृष्ट नक्काशी, विशाल शिवलिंग और चोल शक्ति को दर्शाने वाली अनूठी वास्तुकला ऐरावतेश्वर मंदिर तमिलनाडु (दारासुरम) चोल वंश (राजराज चोल द्वितीय, 12वीं सदी ई.) जटिल पत्थर की नक्काशी, संगीतमय सीढ़ियाँ और द्रविड़ तथा चोल शैलियों का संयोजन पट्टदकल मंदिर समूह कर्नाटक चालुक्य वंश (7वीं–8वीं सदी ई.) नागर औरद्रविड़ शैलियोंकामिश्रण;प्रमुखमंदिरों मेंविरुपाक्ष औरमल्लिकार्जुन विठ्ठल मंदिर, हम्पी कर्नाटक विजयनगर साम्राज्य (15वीं सदी ई.) प्रतीकात्मक पत्थर का रथ, संगीतमय स्तंभ और विस्तृत नक्काशी के साथ खुला मंडप विरुपाक्ष मंदिर, हम्पी कर्नाटक विजयनगर साम्राज्य (7वीं सदी ई.; 15वीं सदी में विस्तार) हम्पी में सबसे पुराना कार्यरत मंदिर; विशाल गोपुरम के साथ द्रविड़ वास्तुकला कैलाश मंदिर, एलोरा महाराष्ट्र राष्ट्रकूट वंश (8वीं सदी ई.) भगवान शिव को समर्पित सबसे बड़ा एकल-शिला रॉक-कट मंदिर; हिंदू महाकाव्यों की विस्तृत नक्काशी तटीय (शोर) मंदिर तमिलनाडु (महाबलीपुरम) पल्लव वंश (8वीं सदी ई.) द्रविड़ वास्तुकला, समुद्र के किनारे की पृष्ठभूमि के साथ खड़ा; सबसे प्रारंभिक पत्थर निर्मित मंदिर लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर मंदिर समूह का भाग) ओडिशा सोमवंशी राजवंश (11वीं सदी ई.) कलिंग वास्तुकला; ऊँचा विमान और समीप में पवित्र बिंदुसागर झील चेन्नके शव मंदिर, बेलूर कर्नाटक होयसल राजवंश (12वीं सदी ई.) उत्कृष्ट तारे के आकार की योजना, जटिल मूर्तियाँ और हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों का चित्रण होयसलेश्वर मंदिर, हलेबिडु कर्नाटक होयसल राजवंश (12वीं सदी ई.) सोपस्टोन नक्काशी, अद्वितीय सितारा आकार मंच के शव मंदिर, सोमनाथपुर कर्नाटक होयसल राजवंश (13वीं सदी ई.) संक्षिप्त किन्तु समृद्ध अलंकरण; होयसल मंदिर शिल्पकला का प्रतीक मोढ़ेरा सूर्य मंदिर गुजरात सोलंकी राजवंश (1026 ई.) अद्वितीय सौर संरेखण, सूर्य कुंड (सीढ़ीदार टैंक) और देवताओं की जटिल नक्काशी असम के मोइदम असम ताई-अहोम अहोम राजवंश की टीला-दफनाने की व्यवस्था (यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, 2024)। धार्मिक समारोहों और त्योहारों के लिए उपयोग किए जाने वाले पवित्र खुले स्थान; स्तंभों वाले बरामदों और सरल मंदिरों के साथ गोलाकार, खुली वायु वाली डिज़ाइन; परिदृश्य में एकीकृत संरचनाएँ; पत्थर और लकड़ी जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग; वन, पहाड़ियों और नदी के किनारों जैसे सुंदर स्थानों में प्राकृतिक परिवेश के साथ एकीकरण।

भारतीय मूर्तिकला — सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ

भारतीय उपमहाद्वीप की पहली ज्ञात मूर्तियाँ सिंधु घाटी सभ्यता की थीं, जो पत्थर, कांस्य अथवा मिट्टी से बनाई जाती थीं।

पत्थर की मूर्तियाँ

- **दाढ़ी वाले पुरुष की प्रतिमा (मोहनजोदड़ो):** यह मूर्ति स्टीटाइट से बनी है और इसकी व्याख्या एक पुजारी के रूप में की गई है। यह उर और सुसा के सुमेरियन स्थलों में खोजी गई एक समान आकृति से काफी मिलती-जुलती है।

चित्र: दाढ़ी वाले पुजारी की प्रतिमा

- लाल बलुआ पत्थर (हड़प्पा) से बना पुरूष का धड़।
- **पुरुष नर्तक:** इसकी खोज हड़प्पा में हुई थी, जो संगीत और नृत्य के महत्त्व को दर्शाता है।

कांस्य आकृतियाँ

मानव और पशु आकृतियों की कांस्य मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो "लॉस्ट वैक्स तकनीक" या "साइर पर्ड्यू" का उपयोग करके बनाई गई थीं।

चित्र: कांस्य नर्तकी की मूर्ति

- त्रिभंगमुद्रामें चार इंचऊँचीतांबे की नृत्यकरने वाली लड़की मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुई थी।
- प्राप्त मूर्तियों में पशु आकृतियों में एक भैंस, तांबे का कुत्ता, लोथल से पक्षी और कालीबंगन से एक बैल की कांस्य मूर्ति शामिल है।
- दैमाबाद (महाराष्ट्र) की कांस्य मूर्तियाँ अनूठे प्रकार की हैं जैसे हृष्ट-पुष्ट बैल जूते हुए रथ को संचालित करता मनुष्य।

लॉस्ट वैक्स तकनीक

मोम की मूर्तियों को पहले मिट्टी की परत से ढक कर सूखने दिया जाता है। फिर मोम को गर्म किया जाता है और पिघला हुआ मोम मिट्टी के आवरण में बने एक छोटे छेद के माध्यम से बाहर निकाल जाता है। इस प्रकार बनाए गए खोखले साँचे को पिघली हुई धातु से भर दिया जाता है। एक बार जब धातु ठंडी हो जाती है तो मिट्टी का आवरण पूरी तरह से हटा दिया जाता है।

टेराकोटा

इन मूर्तियों को बनाने के लिए आग में पकी हुई मिट्टी का उपयोगकिया जाता है।

वे पंचिंग विधि का उपयोग करके बनाए गए थे और ज्यादातर गुजरात और राजस्थान (कालीबंगा) के स्थानों में पाए गए थे।

- मोहनजोदड़ो में देवी माँ की मूर्ति की पूजा उर्वरता और समृद्धि के लिए की जाती थी।
- अन्य आकृतियाँ जैसे बैल, गिलहरियों का एक जोड़ा, खिलौना जानवर (मोहनजोदड़ो), दाढ़ी वाला पुरुष जिसके घुंघराले बाल थे और पहियों वाली खिलौना गाड़ियाँ भी मिलीं।

मुहरें

मानक हड़प्पा मुहर एक चौकोर पट्टिका थी, जो सामान्य रूप से स्टीटाइट से बनी होती थी और एक चित्रात्मक लिपि के साथ उत्कीर्ण होती थी जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।

- वहीं दूसरी ओर अधिकांश मुहरें वर्गाकार हैं और यह भी पाया गया कि त्रिकोणीय, आयताकार, गोलाकार और बेलनाकार मुहरों का भी उपयोग किया जा रहा था।
- मुहरें बनाने में प्रयुक्त अन्य सामग्रियाँ गोमेद, चर्ट, फ़ाइनेस, टेराकोटा, सोना, हाथी दांत और तांबा थीं।
- **मुहरों पर आकृतियाँ:** सामान्य रूप से उनके एक तरफ जानवर या मानव आकृति होती थी और विपरीत तरफ एक अभिलेख या दोनों तरफ अभिलेख होते थे।
- जानवरों की आकृतियों में एक सिंघ वाला बैल, गैंडा, बाघ, हाथी, बाइसन, बकरी, भैंस आदि सम्मिलित हैं। हालाँकि मुहरों पर गायों का कोई साक्ष्य नहीं प्राप्त हुआ।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: भारतीय मूर्तिकला

1. **भारतीय मूर्तिकला**
2. **सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ**
3. **पत्थर की मूर्तियाँ**
4. **चित्र: दाढ़ी वाले पुजारी की प्रतिमा**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारतीय मूर्तिकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: जानवरों की आकृतियों में एक सिंघ वाला बैल, गैंडा, बाघ, हाथी, बाइसन, बकरी, भैंस आदि सम्मिलित हैं। हालाँकि मुहरों पर गायों का कोई साक्ष्य नहीं प्राप्त हुआ।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारतीय मूर्तिकला • सिन्धु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ • पत्थर की मूर्तियाँ • चित्र: दाढ़ी वाले पुजारी की प्रतिमा • कांस्य आकृतियाँ

IUC विशेष स्मृति सूत्र #4: षड्दर्शन एवं उनके प्रवर्तक

ट्रिक: 'सांख्य कपिल, योग पतंजलि, न्याय गौतम, वैशेषिक कणाद, मीमांसा जैमिनी, वेदांत बादरायण' — भारतीय आस्तिक दर्शन की 6 मूल शाखाएँ।

मुहरों का उपयोग

- इनका उपयोग विभिन्न व्यापारिक संघों या व्यापारियों द्वारा मुद्रांकन प्रयोजनों के लिए किया जाता था।
- ऐसा प्रतीत होता है कि मुहरों का उपयोग ताबीज़ के रूप में भी किया जाता था उनके मालिक इसे वैसे ही लिए रहते थे जैसे आधुनिक समय में पहचान पत्र को लिया जाता है।

चित्र: पशुपति की मुहर — पशुपति मुहर

- यह मोहनजोदड़ो में खोजी गई एक स्टीटाइट मुहर है। इसमें एक मानव आकृति या एक देवता को पालथी मारकर बैठे हुए (योगी की बैठी हुई आकृति) दर्शाया गया है।
- एक हाथी और एक बाघ को दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर बाईंओर एक गैंडा और एक भैंसा देखा जा सकता है। आसन के नीचे दो मृग दिखाए गए हैं।
- यह मुहर हड़प्पा युग के धर्म पर प्रकाश डालती है। मिट्टी के बर्तन सिंधुघाटी के मिट्टी के बर्तन में मुख्य रूप सेचाक निर्मित हैं, इनमें बहुत कम हीहस्त निर्मित हैं।

• सादेमिट्टी के बर्तन सामान्य रूप सेलाल मिट्टी के होते हैंजिनके साथ बारीक लाल या भूरे रंग की परत होती है या नहीं होती है।

• काले रंगसे रंगे हुए बर्तनों पर लाल रंगकी बारीक परत होती हैजिस पर चमकदार काले रंग से ज्यामितीय और जानवरों के डिज़ाइन बनाए जाते हैं।

• पॉलीक्रोम मिट्टी के बर्तन दुर्लभ थे और इनमें मुख्य रूप से छोटे फू लदान लाल, काले, हरे, शायद ही कभी सफे द और पीले रंग के ज्यामितीय पैटर्न से सजाए गए थे।

• उके रे हुए बर्तन भी दुर्लभ थे। उके रे गए सजावटी बर्तनों के आधारों तक ही सीमित थे।

मिट्टी के बर्तनों का उपयोग

• तल पर बड़े छेद और पूरी दीवार पर छोटे छेद वाले छिद्रित मिट्टी के बर्तनों का उपयोग संभवत: शराब को छानने के लिए किया जाता था।

• छोटे बर्तन सामान्य रूप से आकार में आधे इंच से कम सजावटी उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते थे।

• घरेलू प्रयोजनों के लिए मिट्टी के बर्तन सभी आकृतियों और आकारों में पाए जाते थे। सुंदर वक्रों का प्रयोग किया गया जबकिसीधी और कोणीय आकृतियाँ अपवाद थीं।

मनका और आभूषण

जैसा कि चन्हुदड़ो और लोथल में खोजे गए कारखानों से स्पष्ट है कि मनका उद्योग इस काल में, अच्छी तरह से विकसित था।

• मनका(मोती) बनाने के लिए बहुमूल्य धातुओं, रत्नों, हड्डियों और पकी हुई मिट्टी का उपयोग किया जाता था। कारेलियन, नीलम, जैस्पर, क्रिस्टल, क्वार्ट्ज, स्टीटाइट, फ़िरोज़ा, लापीस लाजुली, तांबा, कांस्य, सोना, शंख, फ़ाइनेस, टेराकोटा आदि सामग्री का उपयोग किया गया था।

• हार, पट्टियाँ, बाजूबंद और अंगुलियाँ सामान्य रूप से पुरुषों औरमहिलाओंदोनों द्वारा पहनी जाती थीं लेकिन करधनी, झुमके और पायल केवल महिलाओं द्वारा पहने जाते थे।

• उस समय के लोग फै शन के प्रति सचेत थे। सिनेबार का उपयोग सौंदर्य प्रसाधन के रूप में किया जाता था। फे स पैक, लिपस्टिक और कोलिरियम (आईलाइनर) भी उन्हें ज्ञात थे।

• फरमाणा (हरियाणा) में एक कब्रिस्तान मिला है जहां शवों को आभूषणों के साथ दफनाया जाता था।

मौर्यकालीन मूर्तियाँ

मौर्य काल के दौरान भारतीय मूर्तिकला में काफी प्रगति हुई और यह काफी हद तक बौद्ध धर्म से प्रभावित थी। हालाँकि मूर्तिकला प्रस्तुतियों में कुछ ब्राह्मण देवताओं के उदाहरण भी हैं।

• मूर्तियों का उपयोग धार्मिक अभिव्यक्ति और स्तूपों की सजावट (तोरण और मेधी में) के लिए किया जाता था।

• मौर्यकालीन स्तंभ सिंह कैपिटल (सारनाथ) और बुल कैपिटल (रामपुरवा, बिहार) अशोक द्वारा बनवाए गए थे।

• धौली (उड़ीसा) में एक चट्टान को काटकर बनाई गई हाथी की मूर्ति है। इसका निर्माण अशोक के शासन काल में हुआ था। यह पहली बार था कि एक विशाल पशु आकृति को किसीशिलाखंड या चट्टान से उके रा गया था और इसमें अशोक (268-232 ईसा पूर्व) के शिलालेख सम्मिलित थे। **[UPSC 2022]**

• लोहानीपुर (बिहार) में एक पुरुष आकृति का धड़ मिला जो संभवत: किसी जैन तीर्थंकर का प्रतिनिधित्व करती है।

• पटना, विदिशा और मथुरा जैसे कई स्थानों पर यक्ष और यक्षिणियों की बड़ी मूर्तियाँ मिलीं।

यक्ष और यक्षिणियाँ

ये तीनों धर्मों से संबंधित थे: जैन धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म।

• ये छवियाँ ज्यादातर अच्छी तरह से पॉलिश की गई सतहों के साथ खड़ी स्थिति में हैं।

• आधुनिक पटना के पास दीदारगंज में एक यक्षिणी (बलुआ पत्थर से बनी) की खड़ी मूर्ति मिली थी। मौर्योत्तरकालीन मूर्तियाँ मूर्तिकला की परंपरा का विकास ग्वालियर और मथुरा से खोजी गई यक्ष और यक्षिणियों की अखंड मुक्त-खड़ी मूर्तियाँ, भरहुत में बौद्ध स्तूप के सुंदर नक्काशीदार द्वार और कटघरे के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

भरहुत मूर्तिकला (मध्य प्रदेश)

• मूर्तियों को तराशने के लिए ग्रीन शिस्ट का उपयोग किया गया था।

• ये मौर्य काल में यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियों की तरह लम्बे हैं। यहाँ मूर्तिकलाओं के बनावट हल्के उभरे हुए नक्काशी में है, जो रैखिकता बनाए रखती है।

• इसमें शरीर और भुजाओं में एक सामान्य अकड़न होती है। चित्र की सतह की उथली नक्काशी के कारण हाथों और पैरों का प्रक्षेपण संभव नहीं था इसलिए हाथ मुड़े हुए थे और पैरें भी मुड़ी हुई थी।

चित्र: भरहुत मूर्तिकला

• पहली और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व की सभी पुरुष छवियों में एक मुख्य विशेषता गाँठदार टोपी है।

• रानी मायादेवी के सपने, रुरु जातक का चित्रण (जहाँ बोधिसत्व हिरण अपनी पीठ पर एक आदमी को बचा रहा है) आदि जैसी कहानियों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने के लिए भरहुत में कथात्मक नाक्काशियों का उपयोग सचित्र भाषा के रूप में किया गया था।

• शैलीगत विकास के संदर्भ में सांची स्तूप -1, मथुरा और आंध्र प्रदेश (गुंटूर जिला) में वेंगी में मूर्तिकला विकास का अगला चरण उल्लेखनीय है। साँची की मूर्तियाँ साँची में वर्तमान स्तूप पहली बार अशोक के शासनकाल के दौरान बनाया गया था लेकिन इसका विस्तार पहली शताब्दी में बाहरी रेलिंग और परिक्रमा घेरा जोड़ कर किया गया था।

चित्र: तोरण द्वार (साँची स्तूप) सांची के स्तूप-1 में ऊपरी और निचला प्रदक्षिणापथ या परिक्रमा पथ है। इसमें चार खूबसूरती से सजाए गएतोरण हैं जो बुद्ध और जातक के जीवन की विभिन्न घटनाओं को दर्शाते हैं। कुछ कहानियों में कुशीनारा की घेराबंदी, बुद्ध की कपिलवस्तु की यात्रा और अशोक की रामग्राम स्तूप (नेपाल) की यात्रा शामिल है।

• नक्काशी तकनीकें भरहुत से अधिक आधुनिक दिखाई पड़ती है।

• सिर को मूर्ति वाले स्थान पर आगे की ओर निकाला जाता है।

• त्रिभंग मुद्रा में वृक्षिका (वृक्ष देवी) या लकड़ी की अप्सरा की ब्रैकेट आकृति को दर्शाया गया है।

• आकृतिक रचनाओं में अधिक उभार होता है, मुद्रा का चित्रण स्वाभाविक हो जाता है तथा शरीर में कठोरता नहीं रहती, छवियों को गतिशीलता दी जाती है, सिर को मूर्ति वाले स्थान पर आगे की ओर निकाला जाता है।

• साँची स्तूप-1 में, आख्यान अधिक विस्तृत हो जाते हैं हालाँकि स्वप्न प्रकरण का चित्रण बहुत सरल रहता है।

• बेहतरीन मूर्तिकला के कुछ प्रमुख उदाहरण विदिशा, भरहुत (मध्य प्रदेश), बोधगया (बिहार), जग्गय्यापेटा (आंध्र प्रदेश), मथुरा (उत्तर प्रदेश), खंडगिरि-उदयगिरि (ओडिशा), पुणे के पास भाजा और नागपुर (महाराष्ट्र) के पास पावनी से प्राप्त हुए हैं।

• पहली शताब्दी ईस्वी के बाद, गांधार (अब पाकिस्तान में), उत्तर भारत मेंमथुरा और आंध्र प्रदेश में वेंगी कला उत्पादन के महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरे।
प्रतीकात्मक रूप में बुद्ध को मथुरा और गांधार में मानव रूप मिला।

गांधार शैली

• गांधार में मूर्तिकला परंपरा मेंबैक्ट्रिया, पार्थिया और स्थानीय गांधार परंपरा का संगम था।

• इस कला का मुख्य विषय भगवान बुद्ध और बोधिसत्व (महायान बौद्धर्म) था। मथुरा शैली

• वैष्णव (मुख्य रूप से विष्णु और उनके विभिन्न रूप) और शैव (मुख्य रूप से लिंग और मुखलिंग) संप्रदायों की मूर्तियाँ मिलीं लेकिन बौद्ध की मूर्तियाँ भी बड़ी संख्या में मिलीं।

  ◦ विष्णु और शिव की मूर्तियाँ की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उन्हें उनके आयुधों (हथियारों) द्वारा दर्शाया जाता है।

• प्रारंभिक जैन तीर्थंकर की मूर्तियाँ और राजाओं की मूर्तियाँ विशेषकर बिना सिर वाले कनिष्क की मूर्ति भी मथुरा में पाई गई हैं।

• मथुरा में स्थानीय मूर्तिकला परंपरा पंजाब के संघोल में पाई गई स्तूप मूर्तियों की तरह उत्तर भारत में भी फैली।

कला की विभिन्न शैलियों की तुलना — आयाम गांधार शैली मथुरा शैली अमरावती शैली

बाह्य प्रभाव ग्रीको-रोमन प्रभाव पूर्णत: स्वदेशी; मौर्य काल के दौरान पाए गए पहले यक्ष प्रतिमाओं की तर्ज पर बनाया गया।

विशुद्ध स्वदेशी

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: चित्र: भरहुत मूर्तिकला

1. चित्र: भरहुत मूर्तिकला
2. गांधार शैली
3. कला की विभिन्न शैलियों की तुलना
4. विशुद्ध स्वदेशी

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — चित्र: भरहुत मूर्तिकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: बाह्य प्रभाव ग्रीको-रोमन प्रभाव पूर्णतः स्वदेशी; मौर्य काल के दौरान पाए गए पहले यक्ष प्रतिमाओं की तर्ज पर बनाया गया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: चित्र: भरहुत मूर्तिकला • गांधार शैली • कला की विभिन्न शैलियों की तुलना • विशुद्ध स्वदेशी • चित्र

धार्मिक प्रभाव बौद्ध धर्म और हेलेनिस्टिक यथार्थवाद। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म; वैष्णव और शैव मतों की मूर्तियाँ भी मिलती हैं।

धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष मूर्तियाँ, लेकिन मुख्य विषय में बुद्ध और जातक की जीवन कहानियाँ सम्मिलित हैं।

उपयोग की गई — सामग्री — नीला-धूसर बलुआ पत्थर और धूसर

बलुआ पत्थर।

चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर सफे द संगमरमर — संरक्षण कुषाण कुषाण सातवाहन

विकास का क्षेत्र उत्तर पश्चिम सीमा जिसमें तक्षशिला, पेशावर और बामियान जैसे स्थान सम्मिलित हैं।

यमुना नदी के तट पर फला-फूला। कृष्णा-गोदावरी घाटी में विकसित।

[UPSC 2021]

उल्लेखनीय स्थल: अमरावती, गोली, वेंगी, नागार्जुनीकोंडा और घंटासला।

बुद्ध मूर्तिकला की विशेषताएँ

- आध्ययात्मिक बुद्ध
- लहराते बाल
- कम अलंकरण
- लंबे कान और चौड़ा माथा
- योगी मुद्रा में बुद्ध, आँखें आधी बंद।
- सिर पर उभार बुद्ध की सर्वज्ञता को दर्शाता है।
- भगवान बुद्ध के सिर के चारों ओर प्रभामंडल
- मुस्कुराते हुए बुद्ध
- चेहरा मांसल और ऊर्जावान।
- बुद्ध पद्मासन में बैठे हैं और दो बोधिसत्वों - पद्मपाणि और वज्रपाणि से घिरे हुए हैं।
- गांधार छवि के समान उभार।
- बुद्ध के सिर के चारों ओर प्रभामंडल को ज्यामितीय पैटर्न से सजाया गया है।
- बुद्ध की व्यक्तिगत विशेषताओं पर कम जोर।
- मूर्तियाँ सामान्य रूप से बुद्ध की जीवन कहानियों और जातक कथाओं को दर्शाती हैं।

• **अन्य मूर्तियाँ:** नलगिरि (पागल हाथी) को वश में करना और राजकुमार राहुल की अपने पिता बुद्ध को भेंट करना।

चित्र: गांधार शैली चित्र: मथुरा शैली चित्र: अमरावती शैली अमरावती स्तूप

• साँची स्तूप की तरह, अमरावती स्तूप में भी एक वेदिका के भीतर एक प्रदक्षिणापथ संलग्न है।

• गुंबददार स्तूप संरचना उभरी नक्काशीदार स्तूप मूर्तिकला स्लैब से ढकी हुई है, जो एक अनूठी विशेषता है।

• यद्यपि अमरावती स्तूप में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्माण गतिविधि के प्रमाण मिलते हैं लेकिन इसका सबसे अच्छा विकास पहली और दूसरी शताब्दी ईस्वी में हुआ था।

दक्षिण भारत के बौद्ध स्मारक

• वेंगी में कई स्तूप स्थल हैं, जैसे- जगय्यपेट्टा, अमरावती, भट्टीप्रोलू, नागार्जुनकोंडा, गोली आदि। अमरावती में एक महाचैत्य है।

• बुद्ध की मूर्तियाँ आंध्र प्रदेश के अमरावती, नागार्जुनकोंडा और गुंटापल्ले में पाई जाती हैं। (गुंटापल्ले एलुरु के पास एक चट्टान को काटकर बनाया गया गुफा स्थल है)।

• विशाखापत्तनम के निकट अनाकापल्ले में चट्टानों को काटकर बनाए गए स्तूपों की खुदाई की गई है।

• कर्नाटक के गुलबर्गा जिले में सन्नति अब तक उत्खनन किया गया सबसे बड़ा स्तूप स्थल है। अन्य मौर्यकालीन मूर्तियाँ

• महाराष्ट्र में पिथलखोरा गुफाओं (पश्चिमी घाट की सतमाला श्रृंखला) से बौना यक्ष।

• नागार्जुनकोंडा में इक्ष्वाकु ओं द्वारा निर्मित स्तूप।

• गोली (पहली शताब्दी ईस्वी) के वेसंतरा जातक में बुद्ध को उनके पिछले जन्म में राजकुमार वेसंतरा के रूप में दर्शाया गया है, जो दान में अपना सब कुछ देने से कभी नहीं थकते थे।

• कार्ले की नक्काशी जो कि पहली शताब्दी ई.पू. की है।

गुप्तकालीन मूर्तियाँ

• भारत में मूर्तिकला का शास्त्रीय युग गुप्त काल के दौरान शुरू हुआ।

• अमरावती और मथुरा की प्रारंभिक शास्त्रीय मूर्तिकला का तार्किक परिणाम गुप्त मूर्तिकला है।

  ◦ गुप्तकालीन मूर्तियों ने अपनी प्लास्टिसिटी मथुरा से और लालित्य अमरावती से प्राप्त की।

  ◦ भरहुत, अमरावती, सांची और मथुरा की कला और अधिक एकीकृत हो गई।

• पारंपरिक केंद्र मथुरा, मुख्य कला उत्पादन स्थल बना रहा, जबकिसारनाथ और कौशाम्बी भी 5वीं और 6ठी शताब्दी ईस्वी में कला उत्पादन के महत्त्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरे।

सारनाथ मूर्तिकला विद्यालय

• मानव मूर्ति गुप्तकालीन मूर्तिकला की धुरी थी।

• इसने अपनी मूर्तियों में क्रीम रंग के बलुआ पत्थर और धातु का उपयोग किया।

• सारनाथ में बुद्ध की प्रतिमाओं में सादा पारदर्शी आवरण है वहीं दूसरी ओर मथुरा की बुद्ध प्रतिमाओं में चुन्नट वाले आवरण का चित्रण है।

• बुद्ध के सिर के चारों ओर के प्रभामंडल में बहुत कम अलंकरण है। मूर्तियाँ

• मथुरा से बुद्ध की लाल बलुआ पत्थर की एक छवि जिसमें उनका दाहिना हाथ अभयमुद्रा में है।

• धर्मचक्रप्रवर्तन मुद्रा (उपदेश देने का भाव) में विज्रपर्यंका में बैठे दिखाया गया था।

• धातु मूर्तिकला में साढ़े सात फीट ऊं चे सुल्तानगंज बुद्ध (बिहार) सम्मिलित हैं।

मंदिर मूर्तिकला

इस काल में भारतीय मंदिर के विशिष्ट तत्व उभर कर सामने आये।

• देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) के मंदिरों से शेषशायी विष्णु के बड़े पैनल और उदयगिरि (मध्य प्रदेश) और अजंता के मंदिरों के प्रवेश द्वार पर वराह मूर्तियों के उत्कृष्ट नमूने हैं।

• अहिच्छत्र (उत्तर प्रदेश) में एक शिव मंदिर में मगरमच्छ और कछुए पर क्रमशः खड़ी गंगा और यमुना की यथार्थ आकार की टेराकोटा मूर्तियाँ हैं, जो भगवान शिव की सेविकाएँ हैं।

मध्यकालीन मूर्तियाँ

मध्यकालीन युग मेंविशाल अलंकरणके साथमूर्तियाँ और अधिकजटिलहो गईं।

पल्लव

• काँची के पल्लव शासकों के संरक्षण में एक कलात्मक आंदोलन सफल हुआ जो बहुत महत्त्वपूर्ण था।

• कुछ मूर्तियों में महाबलीपुरम में सात अखंड रथ, उभरी हुई नक्काशी में महिषासुरमर्दिनी, गिरिगोवर्धन पैनल, अर्जुन की तपस्या या गंगा का अवतरण, त्रिविक्रम विष्णु, गजलक्ष्मी, अनातसयनम और भैंस के सिर वाले राक्षस के साथ भीषण युद्ध में लगी महान देवी दुर्गा सम्मिलित हैं।

• पल्लव काल में भी एक समृद्ध कांस्य मूर्तिकला परंपरा है, जैसे अर्धपर्यंका आसन (एक पैर लटका हुआ) में शिव की कांस्य मूर्ति।

चोल

• ये पल्लवों के उत्तराधिकारी बने और 9वीं से 13वीं शताब्दी ईस्वी तक दक्षिण भारत पर शासन किया।

• चोलों की मूर्तियाँ तंजावुर के बृहदेश्वर मंदिर में मौजूद थीं।

• **अन्य मूर्तियाँ:** 11वीं शताब्दी में शिव की गजसुरसामहामूर्ति के रूप में नक्काशी और 13वीं सदी की मूर्ति जिसमें भूदेवी या पृथ्वी देवी को विष्णु की छोटी पत्नी के रूप में दर्शाया गया है।

• चोलों के पास कांस्य मूर्तियों की एक समृद्ध परंपरा है और चोल रानी सेम्बियान महादेवी एक प्रतिष्ठित संरक्षक थीं।

नटराज मूर्ति

• यह चोल काल की एक कांस्य मूर्ति है जिसमें भगवान शिव अपने दाहिने पैर पर संतुलन बनाए हुए हैं और उसी पैर से अज्ञान के राक्षस अपस्मार को दबा रहे हैं।

• वह अपने बाएं पैरकोभुजंगासनसीता मुद्रा में उठाते हैं, जो तिरोभाव का प्रतिनिधित्व करता है, यह भक्त के मन/हृदय से माया या भ्रम के पर्दे को हटा रहा है।

• उनकी चार भुजाएँ फैली हुई हैं और मुख्य दाहिना हाथ अभय हस्त मुद्रा में है वहीं दूसरी ओर ऊपरी दाहिने हाथ में डमरू है।

• ऊपरी बाएँ हाथ में ज्वाला है वहीं दूसरी ओर मुख्य बायाँ हाथ डोला हस्त में है और जो दाहिने हाथ के अभय हस्त के साथ जुड़ता है।

• उनके बाल दोनों तरफ उड़ते हुए गोलाकार ज्वाला माला या आग की माला को स्पर्श करते हैं।

राष्ट्रकूट

8वीं शताब्दी के मध्य में राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों से सत्ता छीन ली।

• एलोरा के कैलाश मंदिर (मंदिर का निर्माण राजा कृष्ण प्रथम ने करवाया था) में शिव की पार्वती से विवाह, रावण द्वारा कैलाश पर्वत को हिलाना, दशावतार भैरव, नृत्य करते शिव और विष्णु की मूर्तियाँ सम्मिलित हैं।

• **एलीफे टा गुफाएँ:** मूर्तियों मेंनटराज, सदाशिव, अर्धनारीश्वर और महेशमूर्ति सम्मिलित हैं।

  ◦ महेशमूर्ति के तीन सिर हैं जो एक ही धड़ सेनिकलते हैं - केंद्रीय सिर में मुख्य शिव आकृति है और अन्य दो भैरव और उमा हैं, जो भगवान शिव के तीन अलग-अलग स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चंदेल

• उन्होंने 950 से 1100 ईस्वी तक शासन किया औरमध्य भारत मेंविशाल मंदिरों का निर्माण किया।

• उन्होंने खजुराहो में कंदरिया महादेव मंदिर जैसे मंदिरों कानिर्माण कराया।

• मानवीय बनावट को पतले लम्बे आकृतियों और रैखिक विवरणों परकाफी जोर देते हुए गढ़ा गया था।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: गुप्तकालीन मूर्तियाँ



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — गुप्तकालीन मूर्तियाँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मानवीय बनावट को पतले लम्बे आकृतियों और रैखिक विवरणों परकाफी जोर देते हुए गढ़ा गया था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: गुप्तकालीन मूर्तियाँ • सारनाथ मूर्तिकला विद्यालय • मंदिर मूर्तिकला • मध्यकालीन मूर्तियाँ • पल्लव | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1100

पाल और सेन

• बिहार और बंगाल में पाल शासक आस्था से बौद्ध थे और उन्होंने नालंदा और विक्रमशिला जैसे शिक्षा केंद्रों को बहुत प्रोत्साहित किया जहां स्तूपों और मठों ने मूर्तिकला के विकास के लिए पर्याप्त अवसर दिए।

- कांस्य मूर्तिकला में मनोहारी त्रिभंग मुद्रा में चार भुजाओं वाला अवलोकितेश्वर है।
- पश्चिम बंगाल में महानद से नदी की देवी गंगा की प्रतिमा मिली है।

• पाल परंपरा 12वीं शताब्दी मेंसेना शासकों के अधीन तब तक जारी रही जब तक कि इस्लामी शासकों ने देश पर कब्ज़ा नहीं कर लिया।

पूर्वी गंगा राजवंश

उन्होंने 7वीं से 13वीं शताब्दी तक ओडिशा पर शासन किया। उनकी मूर्तियों ने शालीनता और शक्ति की परंपराओं को बरकरार रखा।

• उड़ीसा के मंदिरों में कई खूबसूरत महिलाओं के चित्र हैं जिन्हें नायिकाएँ कहा जाता था।

• मूर्तियाँ भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क के मंदिरों की दीवारों पर पाई जा सकती हैं। कोणार्क का सूर्य मंदिर इसे 12वीं सदी के मध्य में नरसिंहवर्मन ने बनवाया था और यह सूर्य देवता को समर्पित था। इसकी कल्पना सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले, विशाल पहियों वाले ,एक विशाल पत्थर के रथ के रूप में की गई है।

• मंदिर के जगमोहन के चबूतरे पर विभिन्न संगीत वाद्यंत्र बजाते हुए सभी दिशाओं की ओर मुख करके दैवीय संगीतकार स्थापित किये गए हैं।

होयसल

उन्होंने 12वीं शताब्दी की शुरुआत में मैसूर क्षेत्र में शासन किया।

• सजावट सूक्ष्म विवरणों से युक्त थी। मानव शरीर की संचलन या लालित्य की अपेक्षा अलंकरण पर अधिक जोर दिया गया।

• मूर्तियाँ फूहड़, छोटी और अत्यधिक अलंकृत थीं।

• हेलेबिड और बेलूर के मंदिरों में उदाहरण देखे जा सकते हैं जहां मूर्ति पत्थर में लेसवर्क की तरह दिखती है। गोवर्धन पर्वत को उठाए हुए भगवान कृष्ण की नक्काशी इसका एक और उदाहरण है।

विजयनगर

विजयनगर के शासकों ने 1336 से 1565 ई. तक शासन किया और चोल और चालुक्य कला परंपराओं को जारी रखा।

• ताड़पत्री, हम्पी, काँचीपुरम आदि स्थानों पर मंदिर बनवाए और इन मंदिरों में नक्काशी उनके मूर्तिकला कौशल को दर्शाती है।

• रामायण और कृष्ण बाल लीला के कथात्मक रूप उनके पसंदीदा विषय थे।

• विजयनगर शासकों ने मूर्तिकारों से अपने उत्कृष्ट मूर्तियाँ भी बनवाए, जैसे चिदंबरम मंदिर में कृष्णदेवराय की प्रतिमा और तिरुपति में कृष्णदेवराय और उनकी रानियों की आदमकद कांस्य मूर्तियाँ।

• कृष्णदेवराय के शासनकाल के दौरान गोपुरा और मदुरै के मीनाक्षी मंदिर के दरबार में कई मूर्तियाँ उत्कीर्ण की गईं।

• **मदुरै और तंजावुर के नायक:** पशु रूपांकनों को महत्त्व प्राप्त हुआ और उन्हें सूक्ष्म विवरण के साथ उके रा गया है। उदाहरणों में त्रिचिनापल्ली में श्रीरंगम मंदिर की मूर्तियाँ सम्मिलित हैं।

• हालाँकि पत्थर की मूर्तियों की परंपराएँ जारी रहीं लेकिन मुगल काल के दौरान इसमें कोई खास प्रगति नहीं देखी गई। ब्रिटिश शासन के दौरान मूर्तिकारों को कोई उचित संरक्षण नहीं दिया गया और भारतीय कला की पूरी परंपरा में लगभग ठहराव की स्थिति आ गई।

लोक परंपरा और मूर्तिकला

भारतीय मूर्तिकला परंपरा पर प्रमुख लोक प्रभाव

• **प्रकृति पूजा और स्थानीय देवता:** भारत के कई हिस्सों में लोक परंपराओं में प्रकृति, उर्वरता और स्थानीय देवताओं के प्रति भक्ति एवं आराधना शामिल है। ये प्रभाव मूर्तियों में प्रकृति, देवी-देवताओंऔर उर्वरता के चित्रण में देखे जा सकते हैं। उदाहरण: यक्ष, यक्षिणी और शालभंजिका यक्षिणी (साँची स्तूप) जैसी प्रजनन आकृतियों का चित्रण।

• **पूर्वजों की पूजा और प्रतीकवाद:** लोक मूर्तियों में पूर्वजों से संबंधित रूपांकन या जीवन चक्र, प्रकृति और फसल के प्रतीकात्मक चित्रण शामिल होते थे। उदाहरण: स्थानीय मंदिरों की मूर्तियों में ग्राम देवताओं या पूर्वजों के विभिन्न चित्रणों में दिखाई देने वाली प्रतीकात्मकता।

• **क्षेत्रीय लोक कला शैलियाँ:** विभिन्न क्षेत्रों ने स्थानीय रीति-रिवाजों, विश्वासों और सामग्रियों से प्रभावित होकर मूर्तिकला में अपनी अनूठी कलात्मक शैलियों का योगदान दिया। उदाहरण: नटराज जैसी चोल कांस्य मूर्तियाँ नृत्य और संगीत की जीवंत परंपराओं को दर्शाती हैं, जो धार्मिक आराधना को स्थानीय कलात्मक प्रथाओं के साथ जोड़ती हैं।

• **एनिमिज्म और आइकॉनोग्राफी:** प्रारम्भिक समय मे एनिमिज्म ने एक केंद्रीय भूमिका निभाई थी, जिसमें पशुओं, देवताओं और प्राकृतिक रूपों की मूर्तियाँ पवित्र स्थानों में दिखाई देती थीं। उदाहरण: प्रारंभिक पत्थर की नक्काशी में अशोक के सिंह स्तंभ से शेर और पशुओं को दर्शाया जाता था।

अयोध्यया के राम मंदिर में रामलला की मूर्ति कृष्ण शिला से बनाई गई है, जो काले ग्रेनाइट के पत्थर पर उत्कीर्ण है। और यह लगभग 2.5 अरब वर्ष पुराना है। मूर्ति 51 इंच लंबी है और इसका वजन 200 किलोग्राम है, जो भगवान राम को पाँच वर्ष के बच्चे के रूप में खड़ी मुद्रा में दर्शाती है। मूर्ति को मैसूर के प्रसिद्ध मूर्तिकार "अरुण योगीराज" ने बनाया है।

मुख्य विशेषताएँ :

• **सामग्री:** कृष्ण शिला, काला ग्रेनाइट, 2.5 अरब वर्ष से अधिक पुराना।

• **आसन:** खड़े हुए, बाल्यावस्था में राम का प्रतिनिधित्व करते हुए।

• **मूर्तिकार:** अरुण योगीराज द्वारा निर्मित।

• **विवरण:** आगम शास्त्र का पालन करते हुए, शांत भाव, विस्तृत हस्त और पारंपरिक पोशाक के साथ जटिल नक्काशी।

भारतीय चित्रकला

4 प्रारंभिक मानव, गुफाओं में रहने वालों की तरह, अपनी सौंदर्यपरक संवेदनशीलता, रचनात्मकता को व्यक्त करने तथा अपने आश्रय स्थलों को अधिक रंगीन और सुंदर बनाने अथवा अपने दैनिक जीवन का दृश्य रिकॉर्ड करने के लिए चित्रकला का उपयोग करते थे।

प्रागैतिहासिक शैलचित्र

भारतमेंशैलचित्रोंकीप्रारंभिक खोज1867-68मेंमिर्जापुरजिले के सोहागीघाट में पुरातत्त्वेत्ता आर्कि बोल्ड कार्लाइल द्वारा की गई थी।

• भारत में सबसे पुरानी पेंटिंग उच्च पुरापाषाण काल की मानी जाती है।
• प्रारंभिक प्रागैतिहासिक चित्र मध्य प्रदेश की भीमबेटका गुफाओं में पाए गए थे।
  ◦ इन गुफाओं की खोज 1957-58 में प्रख्यात पुरातत्त्विद्वी.एस. वाकणकर द्वारा की गई थी।
  ◦ इसे 2003 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
  ◦ इन प्रागैतिहासिक चित्रों को निम्नलिखित तीन प्राथमिक चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है– उत्तर पुरापाषाण काल (40,000- 10,000 ईसा पूर्व)

• शैलाश्रय (Rock shelter) गुफाओं में क्वॉर्टजाइट की दीवारों का उपयोग प्रागैतिहासिक चित्रों के लिए किया गया था।

चित्र: उत्तर पुरापाषाण काल में पशु आकृतियाँ

• **प्राथमिक रंजक (pigments):** गेरू (हेमेटाइट से), चूने और पानी का मिश्रण; कैल्सेडोनी पत्थर से हरा रंग; चूना पत्थर से सफेद।

• उत्तर पुरापाषाण युग के चित्र हरी और गहरी लाल रेखाओं से बनाए गए हैं, जिनमें विशाल पशु आकृतियों, जैसे बाइसन, हाथी, बाघ, गैंडा, वराह के अलावा छड़ी जैसी मानव आकृतियाँ सम्मिलित हैं।

• मानव आकृतियों में लाल रंग से शिकारियों को और हरे रंग से नर्तकों को दर्शाया गया है।

मध्यपाषाण

काल (10,000-4000 ईसा पूर्व)

• इस युग में लाल रंग का प्रयोग प्रमुखता से हुआ।

• उत्तर पुरापाषाण काल की तुलना में आम तौर पर छोटे आकार के चित्र।

• इस काल के चित्रों में, प्रमुख रूप से समूह में शिकार करना, चराई के दृश्य और घुड़सवारी गतिविधियों के चित्रण सम्मिलित हैं। सामुदायिक नृत्य एक सामान्य विषय प्रदान करते हैं।

• जानवरों को प्राकृतिक शैली में वहीं दूसरी ओर मनुष्यों को केवल शैलीगत तरीके से चित्रित किया गया ।

ताम्रपाषाण

काल

• हरे और पीले रंगों का उपयोग करते हुए चित्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

• **प्रमुख विषय:** युद्ध के दृश्य; घोड़ों और हाथियों पर सवार पुरुषों के असंख्य चित्रण, जिनमें से कुछ धनुष और तीर से सुसज्जित हैं, जो संघर्ष के लिए तत्परता का संकेत देते हैं।

सामान्य रूप से चट्टानों पर बनाईजाने वालीप्राचीन शैलकला को शैलोत्कीर्ण (Petroglyphs) कहा जाता है।

• अन्य आदिम चित्रकलाएँ-
  ◦ मध्य भारत की कैमूर रेंज, विंध्य पहाड़ियों में भीमबेटका, मिर्जापुर, पंचमढ़ी जैसे स्थानों पर गुफा की दीवारों पर।
  ◦ सिंधु घाटी के मिट्टी के बर्तन (चित्रित मृद्भांड: मोहनजोदड़ो में खोजे गए, जो काले रंग से रंगे हुए थे और पौधों और ज्यामितीय पैटर्न के रूपांकनों से सुसज्जित थे) प्राप्त हुए हैं।
  ◦ इन चित्रों में जंगली जानवरों, युद्ध जुलूसों और शिकार जैसे आदिम दृश्यों को दर्शाया गया है।

• लाखोंउडियार शैलाश्रय कुमाऊँ की पहाड़ियों (उत्तराखंड) में सुयाल नदी के किनारे स्थित हैं।

चित्र: (a) हाथों में हाथ डाले नृत्य करते हुए लोग (लखुडियार, उत्तराखंड); (b) लहरदार लकीरें (लखुडियार, उत्तराखंड)

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: भारतीय चित्रकला

1. **भारतीय चित्रकला**
2. **प्रागैतिहासिक शैलचित्र**
3. **मध्यपाषाण**
4. **ताम्रपाषाण**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारतीय चित्रकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: चित्र: (a) हाथों में हाथ डाले नृत्य करते हुए लोग (लखुडियार, उत्तराखंड); (b) लहरदार लकीरें (लखुडियार, उत्तराखंड)

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारतीय चित्रकला • प्रागैतिहासिक शैलचित्र • मध्यपाषाण • ताम्रपाषाण • चित्र | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1957, 2003

IUC विशेष स्मृति सूत्र #5: बौद्ध संगीतियाँ: स्थान एवं शासक

ट्रिक: 'राजा-महाराजा आजा, वैशाख में सबका काल है, पटाओ मत आशिक, कुंवर जी कंगाल हैं' — 1. राजगृह (अजातशत्रु), 2. वैशाली (कालाशोक), 3. पाटलिपुत्र (अशोक), 4. कुंडलवन (कनिष्क)।

- लाखोउडियार का अर्थ है- 'एक लाख गुफाएँ'।
- इन आश्रयों में पेंटिंग को तीन श्रेणियों में बाँटा गया है: मानव आकृतियाँ, जानवर और ज्यामितीय पैटर्न।
- इस्तेमाल किए जाने वाले रंगों में सफे द, काला और लाल गेरू सम्मिलित हैं।
- **प्रधान दृश्य:** हाथ पकड़कर नृत्य करती मानव आकृतियाँ, जो एक आवर्ती विषय है।
- इसमें सबसे पहले काले रंग , उसके बाद लाल गेरू और अंत में सफे द रंग से चित्रों का अधिरोपण किया जाता था।

• नरसिंहगढ़ प्रागैतिहासिक चित्रकला
- यह मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले में स्थित है।
- इन चित्रों में चितकबरे हिरणों की खालों को सूखता हुआ दिखाया गया है, जो इस बात को दर्शाता है कि प्रारंभिक मानव ने कपड़ों और आश्रय के लिए चर्मशोधन की कला में महारत हासिल कर ली थी।
- कुछ चित्रों में हार्प जैसे संगीत वाद्यंत्रों का चित्रण किया गया है।
- इसमें सर्पिल, असम समान्तर चतुर्भुज(rhomboids) और वृत्त जैसी जटिल ज्यामितीय आकृतियाँ देखी जा सकती हैं।

• जोगीमारा और सीताबेंगा गुफाएँ
- यह छत्तीसगढ़ की रामगढ़ पहाड़ियों में स्थित हैं और इनमें 1000 ईसा पूर्व की पेंटिंग सम्मिलित हैं।

• घोड़ासर और कोहबौर शैल कला स्थल
- यह छत्तीसगढ़ में स्थित है।
- चितवा डोंगरी स्थल में गधे पर सवार एक चीनी व्यक्ति, ड्रैगन की तस्वीरें और कृषि चित्र हैं।

• **छत्तीसगढ़ के अन्य स्थल:** लिमदरिहा, ऊगड़ी और सीतालेखनी।

• **ओडिशा में प्रारंभिक गुफा चित्र:** गुडहांडी शैल आश्रय और योगिमाथा शैल आश्रय।

अन्य स्रोत:

इसमें पाँचवीं सदी के ग्रंथ, विष्णुधर्मोत्तर पुराण के तीसरे खंड में चित्रसूत्र अध्याय शामिल है, जो भारतीय कला, विशेषकर चित्रकला का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

• यह ग्रंथ छवि-निर्माण की कला का परिचय देता है जिसे 'प्रतिमा लक्षण' के नाम से जाना जाता है, जो चित्रकला के सिद्धांतों को रेखांकित करता है।

चित्रकला के प्रमुख तत्त्व:

• वात्स्यायन ने अपनी पुस्तक कामसूत्र में चित्रकला के छह आवश्यक घटकों को सूचीबद्ध किया है।

• 'मुद्राराक्षस' नामक नाटक में विशाखदत्त द्वारा चित्रकला शैलियों और उनकी विशिष्ट विशेषताओं पर चर्चा की गई है।

• **काउका पिटक:** व्यक्तिगत फ्रेमयुक्त चित्रों के लिए उल्लेखनीय।

• **दिघला पिटक:** अपनी विस्तारित स्क्रॉल शैली की पेंटिंग के लिए प्रसिद्ध।

• **यम पिटक:** स्टैंडअलोन, पृथक कलाकृतियों पर जोर देता है। भित्ति चित्र भारत में दसवीं शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर दसवीं शताब्दी ईस्वी तक भित्तिचित्रों का एक समृद्ध इतिहास मिलता है। भित्ति चित्र मूल रूप से ठोस संरचनाओं या दीवारों पर बनाई गई कलाकृतियाँ हैं।

• भारतीय दीवार चित्र बनाने की प्रक्रिया का वर्णन पाँचवीं से छठी शताब्दी ईस्वी के संस्कृत ग्रंथ विष्णुधर्मोतरम्के एक विशेष अध्याय में किया गया है।

• एक बौद्ध ग्रंथ, विनय पिटक में चित्रित आकृतियों और सजावटी पैटर्न से सजे चित्र कक्षों के साथ आनंद गृहों का उल्लेख है। इसमें महाराष्ट्र की अजंता चित्रकला का भी उल्लेख है।

स्थान

• **प्रमुख स्थल:** अजंता, अरमामलाई गुफा व सित्तनवासल गुफाएँ (तमिलनाडु), रावण छाया रॉक शेल्टर (ओडिशा), बाघ गुफाएँ (मध्य प्रदेश) तथा एलोरा में कैलाश मंदिर।

• **अन्य स्थल:** कासरगोड में अनंत पद्मनाभ मंदिर में अनंत; लेपाक्षी मंदिर में किरातार्जुनिया के एक दृश्य में शिव द्वारा सूअर का पीछा करना; ग्यारहवीं शताब्दी में तंजावुर में चोल राजा राजराज और दरबारी कवि करुवर डेवर; तंजावुर में शिव द्वारा त्रिपुरासुर का वध; मट्टनचेरी महल में रामायण पैनल के एक दृश्य में राम द्वारा रावण की पराजय और थक्काला में पद्मनाभपुरम महल में आदि।

अजंता चित्रकला

अजंता की गुफाएँ लगभग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पाँचवीं शताब्दी ईस्वी तक बनाई गई थीं।

प्रमुख विशेषताएँ :

• किन्नरों, विद्याधरों और गंधर्वों की दैवीय आकृतियों को चित्रों और मूर्तियों में दर्शाया गया है।

• **सामान्य विषय:** जातक कथाएँ, बुद्ध के जीवन की घटनाएँ, अवदान, और वनस्पतियों और जीवों से प्रेरित जटिल सजावटी डिजाइन।

  ◦ कुछ पेंटिंग, जैसे- सिंहला अवदान, महाजनका जातक और विधुरपुंडिता जातक, गुफा की पूरी दीवार को कवर करती हैं।

• **सामान्य शैली:** गुफा की दीवारें भित्तिचित्रों और फ्रे स्को पेंटिंग (गीले प्लास्टर पर पेंटिंग) का मिश्रण दर्शाती हैं। ये कलाकृतियाँ टेम्पेरा शैली का उपयोग करती हैं अर्थात्यह रचना के लिए रंगद्रव्य का उपयोग करती हैं।

• **रंग:** वनस्पति और खनिज रंगों को पेंटिंग माध्यम के रूप में उपयोग किया जाता है। आकृति की रूपरेखा के लिए लाल गेरू और आकृति के लिए भूरा, काला या गहरा लाल।

• **चित्रों की संरचनात्मकता:**

  ◦ ये आकृतियाँ पश्चिमी भारत की मूर्तियों के समान भारी हैं।
  ◦ इसमें हाथों के इशारों से भावनाओं को व्यक्त किया जाता है।
  ◦ प्रत्येक दृश्य में सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को केंद्रीयता दी गई है।
  ◦ चित्रों में प्रत्येक महिला का विशिष्ट के श विन्यास है।

महत्त्वपूर्ण गुफाएँ और उनकी चित्रकला — गुफा — क्रमांक 1

• महाजनक जातक और उमग जातक के दृश्य छठी और सातवीं शताब्दी के मध्य से संबंधित हैं।

• वज्रपाणि (रक्षक और मार्गदर्शक, बुद्ध की शक्ति का प्रतीक), जो अपने दाहिने हाथ में वज्र रखता है और मुकुट पहनता है।

चित्र: बोधिसत्व पद्मपाणि-गुफा नं. 1 (अजंता, गुप्त काल)

• मंजुश्री (बुद्ध के ज्ञान की अभिव्यक्ति)

• पद्मपाणि (अवलोकितेश्वर) (बुद्ध की करुणा का प्रतीक) पाँचवीं शताब्दी के अंत का है। बोधिसत्व ने अपने दाहिने हाथ में पद्म (कमल) धारण किया हुआ है।

[UPSC 2017]

गुफा क्रमांक 4

गुफा के संरक्षक: मथुरादास।

• बरामदे की पिछली दीवार अवलोकितेश्वर के लिटनी पैनल को प्रदर्शित करती है।

• गुफा में धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में चित्रित एक विशाल बुद्ध प्रतिमा है।

गुफा क्रमांक 9

और 10

- शद्दंत जातक की सबसे पुरानी अस्तित्वान चित्रकारी, पहली शताब्दी ईस्वी के आस-पास की है।
- इन गुफाओं के भित्ति चित्र शुंग काल से संबंधित हैं।
- छद्दंत जातक का चित्रण किया गया है। गुफा क्रमांक 16 गुफा के संरक्षक: वराहदेव (गुफा संख्या 16 के संरक्षक), यह वाकाटक राजा हरिषेण के प्रधानमंत्री थे।
- द डाइंग प्रिंसेस (मरणासन्न राजकुमारी) पाँचवीं शताब्दी ईस्वी की शुरुआत की पेंटिंग है।

गुफा क्रमांक 26

सबसे प्रमुख बुद्ध प्रतिमा महापरिनिर्वाण प्रतिमा है।

- महापरिनिर्वाण छवि के पास मार -विजय मूर्तिकला–
- यह मन की उस उथल-पुथल का प्रतीक है जिससे बुद्ध ज्ञान प्राप्ति के समय गुजरे थे।
- बुद्ध, भूमिस्पर्श मुद्रा में बैठे हैं। अन्य गुफा चित्र बाघ गुफाएँ
- इसमें बौद्ध भित्ति चित्र हैं और यह मध्य प्रदेश के धार जिले के पास स्थित हैं। ये डिजाइन, निष्पादन और सजावट के मामले में अजंता गुफाओं से काफी मिलते-जुलते हैं।
- गुफा संख्या 4 को रंग महल के नाम से जाना जाता है, और यहाँ भित्ति चित्र बौद्ध जातक कथाओं को दर्शाते हैं।

बादामी गुफाएँ

यह कर्नाटक में स्थित हैं। ये भित्ति चित्र अजंता और बाघ की परंपराओं के अनुसार छठी-सातवीं शताब्दी ईस्वी के हैं।

- चालुक्यों ने बादामी में चित्रकला में वाकाटक शैली को अपनाया। बादामी में विष्णु को समर्पित एक गुफा मंदिर में चित्र प्राप्त हुए हैं। इनमें कई चित्र विष्णु के अवतारों के हैं।
- इनके चित्रण में चालुक्य राजाओं, जैन संतों द्वारा सांसारिक जीवन त्यागने, शिव और पार्वती, पौराणिक घटनाओं और विभिन्न देवताओं के दृश्य सम्मिलित हैं।
- **गुफा संख्या 3:** भित्तिचित्र में हंस पर बैठे चार भुजाओंवाले ब्रह्मा को दिखाया गया है।
- **गुफा संख्या 4:** चित्रकला में पुलके शी प्रथम के पुत्र और मंगलेश के बड़े भाई कीर्तिवर्मन को अपनी पत्नी और सामंतों के साथ महल में बैठे हुए, एक नृत्य प्रदर्शन देखते हुए दर्शाया गया है।

सित्तनवासल:

यह तमिलनाडु में अवस्थित हैं। ये भित्ति चित्र पहली शताब्दी ईसा पूर्व से दसवीं शताब्दी ईस्वी के हैं। इन्हें 'अरिवारकोविल' अथवा 'अरहतों के मंदिर' के रूप में भी जाना जाता है।

- चट्टानों को काटकर बनाए गए ये गुफा मंदिर जैन धर्म-विषयक चित्रकला के लिए प्रसिद्ध हैं।
- ये बाघ और अजंता की चित्रकला से काफी मिलते-जुलते हैं।
- इसका प्रधान विषय जैन समवसरण या समोशरण ('सभी के लिए शरण') है, जो तीर्थंकर का एक दैवीय उपदेश कक्ष है।
- प्रारंभ में इसे पल्लव राजा महेंद्रवर्मन प्रथम (580-630 ई.) द्वारा उत्खनित माना जाता था। यद्यपि, अब इस गुफा-मंदिर को पांड्य राजाओंमारन सेंडन (654-670 ई.) और अरिके सरी मारवर्मन (670-700 ई.) के शासनकाल का माना जाता है।

एलोरा चित्रकला

हिंदू, बौद्ध और जैन गुफा मंदिरों की खुदाई आठवीं और दसवीं शताब्दी के मध्य की गई थी।

- भित्ति चित्र पाँच गुफाओं में मौजूद हैं, मुख्य रूप से गुफा संख्या 16, यानी कैलाश मंदिर में।

• यहाँ 12 बौद्ध गुफाएँ हैं जिनमें वज्रयान बौद्ध धर्म से जुड़ी कई छवियाँ हैं, जिनमें तारा, महामयूरी, अक्षोभ्य, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ आदि मूर्तियाँ सम्मिलित हैं।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: महत्त्वपूर्ण गुफाएँ और उनकी चित्रकला

1. **महत्त्वपूर्ण गुफाएँ और उनकी चित्रकला**
2. **गुफा**
3. **क्रमांक 1**
4. **क्रमांक 4**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — महत्त्वपूर्ण गुफाएँ और उनकी चित्रकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: यहाँ 12 बौद्ध गुफाएँ हैं जिनमें वज्रयान बौद्ध धर्म से जुड़ी कई छवियाँ हैं, जिनमें तारा, महामयूरी, अक्षोभ्य, अवलोकितेश्वर, मैत्रेय, अमिताभ आदि मूर्तियाँ सम्मिलित हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: महत्त्वपूर्ण गुफाएँ और उनकी चित्रकला • गुफा • क्रमांक 1 • क्रमांक 4 • क्रमांक 9 | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2017, 630 ई, 670 ई, 700 ई

प्रमुख विशेषताएँ :

• **संरचना:** यह अजंता की अधिक खुली शैली के विपरीत थी।

• **गुफा संख्या 14:** ब्राह्मण आस्था की एकमात्र दो मंजिला गुफा है।

• अन्य चित्रों में देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु का चित्रण, भगवान शिव और उनके अनुचरों के दृश्य आदि सम्मिलित हैं।

भित्ति चित्रकला

चोल कला (तंजौर पेंटिंग) चोलों ने तंजौर, दारासुरम और गंगईकोंडचोलपुरम में मंदिर निर्माण करवाए।

विषय-वस्तु:

• भगवान शिव से संबंधित चित्रकला, जिनमें कैलाश में शिव, त्रिपुरांतक के रूप में शिव, नटराज के रूप में शिव, आदि सम्मिलित हैं।

• इसमें संरक्षक राजराजा और उनके गुरु कुरुवर (तंजावूर, ग्यारहवीं शताब्दी) का चित्रण है।

चोल चित्रकला:

• नार्थमलाई और मलयादिपट्टी में प्रारंभिक चोल चित्रकला के अंश हैं।

• पेरियापुराणम की घटनाओं को लघुचित्रों के रूप में दारासुरम मंदिर के गर्भगृह की दीवार के आधार पर चित्रित किया गया है।

• तंजौर के बृहदीश्वर मंदिर में योग-दक्षिणामूर्ति के रूप में शिव की समृद्ध चोल पेंटिंग है।

• तंजौर के राजराजेश्वर मंदिरों की नृत्यरत आकृतियाँ 11वीं शताब्दी की शुरुआत की हैं।

ये चित्रकला दक्षिण भारतीय परंपरा की शैली को प्रदर्शित करती है और पल्लव (चोलों से पहले) तथा विजयनगर (चोलों के बाद) काल के लिए एक कड़ी के रूप में मौजूद है।

पल्लव

चालुक्य राजाओं के बाद आए पल्लव राजा उल्लेखनीय तौर पर कला संरक्षक थे।

• महेंद्रवर्मा प्रथम ने पनामलाई, मंडागपट्टू और काँचीपुरम में मंदिर बनवाए।

• मंडागपट्टू के शिलालेख में महेंद्रवर्मन प्रथम का उल्लेख जिन उपाधियों के साथ किया गया है उनमें सम्मिलित हैं– विचित्रचित्त (जिज्ञासु मस्तिष्क), चित्रकारपुली (कलाकारों के बीच बाघ), चैत्यकारी (मंदिर निर्माता), जो कला गतिविधियों में उसकी रुचि को दर्शाते हैं।

• काँचीपुरम मंदिर की चित्रकारी को पल्लव राजा राजसिम्हा द्वारा संरक्षण दिया गया था।

• **अरमामलाई गुफा चित्र (वेल्लोर के पास, तमिलनाडु):** इन गुफाओं को आठवीं शताब्दी ईस्वी के दौरान एक जैन मंदिर में बदल दिया गया। दीवारें और छतें चित्रों से सज्जित हैं, जो अष्टथिक पालकों (आठ कोनों की रक्षा करने वाले देवता) और जैन धर्म से संबंधित कहानियों को दर्शाती हैं।

• **रावण छाया शैलाश्रय सीताबिनजी, उड़ीसा):** इस शैलाश्रय पर फ्रेस्को चित्र पल्लव काल के हैं।

विजयनगर के भित्ति चित्र

विजयनगर चित्रकला पहले की चोल और पांड्य परंपराओं का ही विस्तार थी।

• इस शैली के प्रारंभिक चरण को 14वीं शताब्दी के त्रिची के निकट तिरुपराकुंरम में चित्रों द्वारा दर्शाया गया है।

• हम्पी में विरुपाक्ष मंदिर के मंडप की छत पर राजवंशीय इतिहास और रामायण तथा महाभारत की कहानियों को दर्शाने वाले चित्र हैं।

  ◦ **भित्ति चित्र:** इसमें आध्ययात्मिक गुरु ऋषि विद्यारण्य (जिन्होंने हरिहर और बुक्का को विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के लिए प्रेरित किया) की शोभायात्रा; त्रिपुरांतक, नरसिम्हा के चित्र और गिरिजा कल्याण का दृश्य है।

• आंध्र प्रदेश के लेपाक्षी में वीरभद्र मंदिर में विष्णु के अवतारों और रामायण, महाभारत के धार्मिक आख्यानों तथा अन्य धर्मनिरपेक्ष विषयों को दर्शाने वाली चित्रकला है।

  ◦ उत्तर मध्ययुगीन कार्यों में सूअर का शिकार द्वि-आयामी चित्रकला की विशेषता है।

नायक चित्रकला

17वीं और 18वीं शताब्दी में नायकों ने थिरुपराकुंरम, श्रीरंगम और तमिलनाडु के तिरुवरूर में कलात्मक परंपरा को जारी रखा।

• **नायक पेंटिंग की विषय-वस्तु:** इसमें कृष्ण-लीला के दृश्यों के साथ-साथ महाभारत और रामायण के प्रसंगों को दर्शाया गया है। थिरुपराकुंरम में वर्धमान महावीर के जीवन के दृश्यों को दर्शाने वाले चित्र (14वीं और 17वीं शताब्दी) हैं।

• नायक चित्रकला को विजयनगर शैली का विस्तार माना जाता है। यह छोटे क्षेत्रीय संशोधनों और समावेशन को प्रदर्शित करती है।

केरल भित्तिचित्र

16वीं से 18वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, केरल के चित्रकारों ने एक विशिष्ट चित्रात्मक भाषा और तकनीक विकसित की, जिसमें नायक और विजयनगर शैली के तत्त्व सम्मिलित थे।

• इन्होंने कथकली और कलाम एझुथु (केरल की आनुष्ठानिक फर्श चित्रकला) जैसी स्थानीय परंपराओं से प्रेरणा ली।

• कलाकारों ने चित्रित कथाओं के लिए मौखिक परंपराओं और रामायण व महाभारत के स्थानीय संस्करणों से प्रेरणा ली।

लघु चित्रकारी

11वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, ताड़ के पत्तों और कागज पर लघु चित्रों के रूप में अभिव्यक्ति की एक नई पद्धति उभरी।

लघु चित्रकारी की विशेषताएँ

• पेंटिंग का आकार 25 वर्ग इंच से अधिक नहीं होना चाहिए।

• इन चित्रों के लिए पारंपरिक टेम्पेरा तकनीक का उपयोग किया गया।

• मानव आकृतियों को सामान्य रूप से एक साइड प्रोफाइल में दर्शाया जाता है, जिसमें उभरी हुई आँखें, नुकीली नाक और पतली कमर जैसी प्रमुख विशेषताएँ प्रदर्शित होती हैं।

• **उपयोग की गई वस्तुएँ:** ताड़ का पत्ता, कागज, लकड़ी और कपड़ा।

भारत में लघु चित्रकला के शुरुआती उदाहरण पूर्वी भारत के पालों के अधीन बौद्धर्म पर निष्पादित धार्मिक ग्रंथों और 11वीं-12वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान पश्चिमी भारत में निष्पादित जैन ग्रंथों के चित्रण के रूप में मौजूद हैं।

पाल शैली (पाल स्कूल) 11वीं और 12वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान पूर्वी भारत के पालों की सचित्र पांडुलिपियों में इस शैली की पेंटिंग के शुरुआती उदाहरण मिलते हैं।

चित्र: लोकेश्वर, अष्टसहस्त्रिका प्रज्ञापारामिता (पाल शासन काल 1050 ई.)

- 750 ईस्वी से 1150 ईस्वी तक पालों ने बौद्ध ग्रंथों को अधिकतर ताड़ के पत्तों या चर्मपत्र कागज जैसी सामग्रियों पर चित्रित किया।
- **उल्लेखनीय चित्रकार:** धिम्मन और विटपाल। विशेषताएँ
- चित्रकला में बौद्ध चित्रण का प्रभुत्व था।
- 'अष्टसहस्रिका प्रज्ञापारमिता', पाल बौद्ध ताड़पत्र पांडुलिपि का एक उदाहरण है। इसे 'बुद्धि की पूर्णता' (Perfection of Wisdom) के रूप में भी जाना जाता है।
  - इसका निर्माण ग्यारहवीं शताब्दी में राजा रामपाल के शासनकाल के दौरान नालंदा मठ में किया गया था।
- इन चित्रों में एकल आकृतियाँ दिखाई देती हैं, वहीं दूसरी ओर समूह-संयोजन की अपेक्षाकृत दुर्लभता मिलती है।

अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट

इसे जैन स्कूल ऑफ आर्ट तथा पश्चिमी भारतीय चित्रकला शैली के रूप में भी जाना जाता है, जो गुजरात, राजस्थान और मालवा के क्षेत्र में प्रचलित थी।

- पश्चिमी भारत में कलात्मक गतिविधि जैन धर्म से प्रभावित थी क्योंकि इसे गुजरात के चालुक्यों या सोलंकियों द्वारा संरक्षण दिया गया था, जिन्होंने गुजरात तथा राजस्थान और मालवा के कुछ हिस्सों पर शासन किया था।
- इन चित्रों पर जैन छवि-चित्रण का प्रभुत्व था।
- जैन चित्रकला का विकास 'शास्त्रदान' (किताबों का दान) की अवधारणा से हुआ। मठ के पुस्तकालयों या 'भंडारों' को सचित्र पेंटिंग दान करना दान के एक महान कार्य के रूप में देखा जाता था।
- उदाहरण– कल्पसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, संग्रहणी सूत्र और 15वीं शताब्दी की कालकाचार्य कथा।
- **पश्चिमी भारतीय चित्रकला पर फारसी प्रभाव:** 15वीं शताब्दी के दौरान फारसी चित्रकला शैली ने पश्चिम भारतीय चित्रकला शैली को प्रभावित करना शुरू किया।

लघु चित्रकला के अन्य उदाहरण

- निमत नामा पांडुलिपि (पाक कला पुस्तक) मालवा में चित्रकला की एक नई प्रवृत्ति को दर्शाती है। इसकी शुरुआत मालवा के गयासुद्दीन खिलजी (1469-1500 ई.) के शासनकाल के दौरान हुई थी।
- **'कुल्हादार समूह' (प्रारंभिक 16वीं शताब्दी):** इस समूह में 'चौरपंचासिका', 'गीत गोविंद', 'भागवत पुराण', और 'रागमाला' जैसे विभिन्न ग्रंथों के चित्र सम्मिलित हैं।
- मुल्ला दाऊद द्वारा रचित अवधी रोमांस 'लौर चंदा' की दो पांडुलिपियाँ फारसी और भारतीय शैलियों का मिश्रण दर्शाती हैं।

इनकी रचना 1530 से 1540 ईस्वी के बीच की गई थी।

मुगल शैली (1560-1800 ई.) यह शैली भारतीय और सफाविद फारसी चित्रकला परंपराओं का मिश्रण है।

सामान्य विषय-वस्तु

- इसमें ईश्वर को शासक का महिमागान करते हुए व धार्मिक विषयों को छोड़कर शासकों के जीवन को प्रदर्शित करते हुए दर्शाया गया है, जिसमें शिकार के दृश्य, ऐतिहासिक घटनाएँ तथा दरबार से संबंधित पेंटिंग सम्मिलित हैं।
- प्रकृति के विस्तृत अवलोकन के साथ प्रकृतिवाद शामिल है। सामान्य तकनीक
- फोरशॉर्टनिंग की तकनीक प्रस्तुत की गई, जिससे वस्तुएँ वास्तव में जितनी थीं, उससे अधिक निकट और छोटी दिखाई देने लगीं।
- यह छायांकन और परिप्रेक्ष्य जैसी तकनीकों के साथ यूरोपीय कला से प्रभावित थी।
- **बाबर का प्रभाव:** बाबर के युद्धों ने चित्रकला के विकास को बाधित किया। उन्होंने फारसी कलाकार बिहजाद का समर्थन किया।

हुमायूँ कालीन चित्रकला

• वह सफविद कलाकार परंपराओं से प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने मीर सैयद अली और अब्द अस समद जैसे प्रखर कलाकारों को आमंत्रित किया।

• इन्होंने 'निगारखाना' नामक एक चित्रकला कार्यशाला की नींव रखी और 'हमजानामा' परियोजना की शुरुआत की। यह हमजा के साहसिक कार्यों की कहानी है।

अकबर कालीन चित्रकला

उन्होंने पेंटिंग और दस्तावेज लिखने के लिए तस्वीरखाना नाम से एक नए विभाग की स्थापना की।

• **दरबारी चित्रकार:** दसवंत, मिस्किना, नन्हा, कन्हा, बसावन, मनोहर, दौलत, मंसूर, के सू, भीम गुजराती, धर्मदास, मधु, सूरदास, लाल, शंकर गोवर्धन और इनायत।

• उन्होंने भारतीय कलाकारों को सम्मान दिया, जिसने मुगल चित्रकला में 'भारतीय प्रभाव' की शुरुआत की।

• यूरोपीय चित्रकला को अकबर के दरबार में पुर्तगाली पुजारी लेकर आए।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट

मुख्य परीक्षा दृष्टि: यूरोपीय चित्रकला को अकबर के दरबार में पुर्तगाली पुजारी लेकर आए।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: अपभ्रंश स्कूल ऑफ आर्ट • लघु चित्रकला के अन्य उदाहरण • सामान्य विषय-वस्तु • हुमायूँ कालीन चित्रकला • अकबर कालीन चित्रकला | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1150, 1469, 1500, 1530, 1540*

चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ

• 3डी आकृतियों और फोरशॉर्टनिंग तकनीकों का अनुप्रयोग तथा उनके चित्रों में कैलीग्राफी का समावेश।

• लोक कला (आम लोगों के जीवन) से दरबारी कला (दरबारी जीवन के दृश्य) में विस्थापन।

जहाँगीर का काल

• इस काल के चित्र सचित्र पांडुलिपियों से एल्बमों में परिवर्तित हो गए, जिसमें व्यक्तिगत चित्रों में प्रकृतिवाद पर जोर दिया गया। जहाँगीर स्वयं एक कुशल कलाकार माने जाते थे। **[UPSC 2019]**

• उनके समय में पोर्ट्रेट पेंटिंग और जानवरों की पेंटिंग का विकास हुआ।

• कलाकृतियों में दरबार के दृश्य,व्यक्ति चित्र और पक्षियों, जानवरों तथा फू लों का अध्ययन शामिल है।

• 1603-10 के बीच निर्मित पांडुलिपियाँ अयार-ए-दानिश (ज्ञान की कसौटी) और अनवर-ए-सनावली थीं, दोनों पशु आधारित नीति पुस्तकेंथीं।

• **प्रमुख चित्रकार:** आका रिजा, अबुल हसन, उस्ताद मंसूर, बिशन दास, मनोहर, गोवर्धन, बालचंद, दौलत, मुखलिस, भीम और इनायत।

• लोकप्रिय मुगल चित्रों में रज्म-नामा की एक शृंखला, रसिकप्रिया (1610-1615) की एक शृंखला तथा रामायण (1610 ईस्वी) की एक शृंखला शामिल है।

शाहजहाँकालीन चित्रकला

• इसमें कृत्रिम तत्त्वों को शामिल किया गया और यूरोपीय प्रभाव से प्रेरित अप्राकृतिक स्थिरता को प्रस्तुत किया गया।

• चित्रांकन पर विशेष ध्यान दिया गया तथा विभिन्न पांडुलिपियों का चित्रण किया गया।

• चित्रांकन के लिए चारकोल के उपयोग को हतोत्साहित किया और पेंसिल स्केचिंग को बढ़ावा मिला।

• पूर्वर्तियों की तुलना में चमकीले रंग पट्टिका को प्राथमिकता देने के साथ ही चित्रों में सोने और चाँदी के उपयोग में वृद्धि की।

• **प्रसिद्ध कलाकार:** बिचिटर, चैतरमन, अनूप चत्तर, समरकंद के मोहम्मद नादिर, इनायत और मकर।

• **पांडुलिपियाँ:** सादी के गुलिस्तान और बुस्तान की प्रतिलिपि तथा 1657 में शाहजहाँनामा।

• औरंगजेब का काल उसने चित्रकला की शैली को प्रोत्साहित नहीं किया, जिसके कारण मुगल चित्रकला का ह्रास होने लगा।

• कलात्मक गुणवत्ता में कमी आई तथा दरबारी चित्रकारों का प्रांतीय दरबारों में प्रवास बहादुर शाह कालीन चित्रकला: इनके काल में पूर्व गौरव की वापसी का संकेत मिला और बेहतर कलात्मक गुणवत्ता प्रदर्शित हुई। आगे चलकर 1712 ई. के बाद एक बार फिर परवर्ती मुगलों के अधीन यह चित्रकला नष्ट होने लगी।

महत्त्वपूर्ण पांडुलिपियाँ

• **तूतीनामा या तोते की कहानियाँ:** अब्दुस समद खान और मीर सैयद अली ने इसके निर्माण में योगदान दिया।

• **हमजा-नामा चित्रण (1560 के दशक में पूर्ण हुआ):** मुगल चित्रकला की परिष्कृत और विकसित शैली।

• पांडुलिपियों में सादी का गुलिस्तान (1567), अनवरी-सुहावली (दंतकथाओं की एक पुस्तक, 1570) और एक अन्य सादी का गुलिस्तान (1581), जिनकी नकल मुहम्मद हुसैन अल-कश्मीरी ने फतेहपुर सीकरी में भी प्रयोग की है।

• अन्य उल्लेखनीय पांडुलिपियों में रज्म-नामा (अर्थात् 'युद्ध की पुस्तक'; महाभारत का फारसी अनुवाद), जामी का बहरिस्तान (1595), दरब-नामा,अकबर-नामा(1600),तारीख-ए-अल्फी(1596), 16वीं शताब्दी के अंतिम दशक में बाबर-नामा, तवारीख-ए-खानदान-ए- तैमूरिया, और जोग वशिष्ठ (1602) सम्मिलित हैं।

क्षेत्रीय शैलियाँ (17वीं-19वीं शताब्दी) राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला शैली सहित उप-शाही शैली ने अपनी भारतीय जड़ों को कायम रखा और अधिक प्राकृतिक मुगल शैली के विपरीत, रंगीन चित्रों को प्राथमिकता दी।

सामान्य क्षेत्रीय चित्रकला के प्रमुख विषय

• रामायण, महाभारत जैसे भारतीय महाकाव्यों सेप्रेरणा; भागवत, शिव पुराण जैसे पुराण; जयदेव की गीत गोविंद, भानुदत्त की रसमंजरी, अमरूशतक और रागमाला जैसी संस्कृत प्रेम कविताएँ; लोकगीत व संगीत के विषय।

रागमाला चित्रकला

यह रागमाला अर्थात् 'रागों की माला' पर आधारित मध्ययुगीन भारत के चित्रों की एक श्रृंखला है, जो विभिन्न भारतीय संगीत रागों को चित्रित करती है। यह मध्यकालीन भारत में कला, कविता और शास्त्रीय संगीत के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती है। ये पेंटिंग 16वीं और 17वीं शताब्दी में शुरू हुई और अब इन्हें पहाड़ी रागमाला, राजस्थान या राजपूत रागमाला, दक्कनी रागमाला तथा मुगल रागमाला के नाम से जाना जाता है।

विशेषताएँ:

• रागमाला में छह प्रमुख राग हैं– भैरव, दीपक, श्री, मालकौश, मेघ और हिंडोला।

• इस श्रृंखला की कई पेंटिंग विशिष्ट हिंदू देवी-देवताओं को रागों के साथ जोड़ती हैं, जैसे भैरव को शिव के साथ और श्री को देवी के साथ।

• प्रत्येक पेंटिंग रंग के माध्यम से एक राग को व्यक्त करती है तथा नायक और नायिका को एक विशेष मनोदशा में दर्शाती है।

राजस्थानी चित्रकला शैली

यह रियासतों में, मुख्य रूप से आधुनिक राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में चित्रकला फली-फूली।

राजस्थानी कला का विकास

• यह राजपूत चित्रकला शैली से संबद्ध है।

• सल्तनतकालीन दरबारों में 'गंगा-जमुनी' सांस्कृतिक संगम ने राजस्थानी चित्रकला के विकास को प्रभावित किया।

• 16वीं सदी में 'पश्चिम भारतीय' और 'चौरपंचाशिका' शैलियों ने 17वीं सदी की चित्रकला शैलियों के लिए एक मंच तैयार किया।

• मुगल कलाकारों के राजस्थान पलायन करने से चित्रकला की उल्लेखनीय शैलियों का उद्भव हुआ, जैसे– मालवा, मेवाड़, बूंदी-कोटा, आमेर-जयपुर, बीकानेर, मारवाड़ और किशनगढ़।

राजस्थानी शैली की विशेषताएँ

• इसमें पेंटिंग्स 'वास्लिस' पर तैयार की जाती थीं, जो हाथ से बने कागजों की परतदार, पतली शीट होती थी। इन्हें वांछित मोटाई के लिए एक साथ चिपकाया जाता था।

• **मुगल प्रभाव:** बेहतर आरेखण तकनीक और आकृतियों तथा वृक्षों में प्रकृतिवाद के तत्त्वों का समावेश।

• **मालवा:** यह जैन पांडुलिपियों और चौरपंचाशिका पांडुलिपि चित्रों की शैलियों का एक संयोजन प्रस्तुत करता है। इसकी विषय-वस्तुरामायण, भागवत पुराण, अमरूशतक, रसिकप्रिया, रागमाला और बारामासा से ली गई है।

• **मेवाड़:** मेवाड़ स्कूल की उत्पत्ति प्रायः निसारदीन द्वारा 1605 के रागमाला चित्रों के एक सेट से जुड़ी हुई मानी जाती है।

• उत्तरवर्ती काल के दौरान इसमें 'तमाशा' पेंटिंग प्रदर्शित की गई, जो दरबारी समारोहों और शहर के दृश्यों को प्रदर्शित करती थी।

आमेर-जयपुर

प्रायः ऐसा माना जाता है कि चित्रकला के एक स्कूल की शुरुआत आमेर राज्य की पुरानी राजधानी आमेर में हुई थी। बाद में 18वीं शताब्दी में कलात्मक गतिविधियों का केंद्र नई राजधानी जयपुर स्थानांतरित हो गया।

सवाई राजा जय सिंह (1699-1743) उन्होंने 1727 में आमेर से हटकर जयपुर शहर की स्थापना की। उनके शासनकाल के दौरान, जयपुर स्कूल ने काफी विकास किया और धीरे-धीरे यह एक एक विशिष्ट इकाई बन गया।

• उन्होंने सुरतखाना (पेंटिंग विभाग) को पुनर्गठित किया, जो पेंटिंग बनाने और संग्रहीत करने का स्थान था।

• उन्होंने राधा और कृष्ण की थीम पर कई पेंटिंग बनाईं।

• **सवाई प्रताप सिंह (1779-1803):** इनके समय में प्रमुख मुगल प्रभाव कम होने लगा। उन्होंने मुगल और स्वदेशी सौंदर्यशास्त्र का मिश्रण करते हुए एक अनूठी जयपुर शैली की शुरुआत की।

मारवाड़

इस स्कूल में जोधपुर, बीकानेर (राठौड़) और जैसलमेर (भाटीस) जैसे क्षेत्र सम्मिलित हैं।

• बीकानेर की तरह, जोधपुर भी मुगलों के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों के कारण समृद्ध हुआ।

• मारवाड़ स्कूल की छत्रछाया में किशनगढ़ स्कूल और बूंदी स्कूल प्रमुख शैलियाँ हैं।

किशनगढ़

किशनगढ़ चित्रकला सबसे अधिक शैलीबद्ध राजस्थानी लघुचित्रों में से एक है।

• मान सिंह (1658-1706) के संरक्षण में, किशनगढ़ दरबार में एक विशिष्ट कलात्मक शैली का उद्भव हुआ।

• इस शैली की विशेषता थी- मानव आकृतियों को लम्बा करने की प्रवृत्ति; हरे रंग के प्रति लगाव; तथा मनोरम परिदृश्यों को प्राथमिकता देना।

• कृष्ण लीला विषय किशनगढ़ कला का प्राथमिक केंद्र बिंदु बन गया। बणी ठणी सावंत सिंह (उपनाम नागरी दास) की कृष्ण और राधा पर आधारित भक्ति कविता, बिहारी जस चंद्रिका, निहाल चंद की बणी ठणी चित्रकला का आधार बन गई। इस प्रकार, यह कविता और चित्रकला के मिश्रण का प्रतिनिधित्व करती है। यह लंबी कमल जैसी आँखों, पतले होंठ और नुकीली ठुड्डी जैसी विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाती है। **[UPSC 2018]**

बूंदी चित्रकला शैली

यह बूंदी और कोटा की जुड़वाँ रियासतों से जुड़ी है, जिन्हें सामूहिक रूप से हडोती के नाम से जाना जाता है। 17वीं शताब्दी में यह अपने चरम पर थी।

चित्र: बणी-ठणी

• बूंदी चित्रकला के प्रारंभिक चरण को 1591 की 'बूंदी रागमाला' द्वारा दर्शाया गया है। इसमें फारसी शिलालेख थे।

• **विषय-वस्तु:** शिकार-थीम वाली कलाकृतियाँ, शाही जुलूस और कृष्ण की कहानियाँ।

बीकानेर

बीकानेर की चित्रकला शैली मुगल शैली से प्रभावित थी। बीकानेर की एक अनूठी प्रथा में कलाकारों के छायाचित्रों को शामिल किया जाता था, और शिलालेखों के साथ उनकी वंशावली का विवरण भी दिया जाता था। ऐसे कलाकारों को 'उस्तास' या 'उस्ताद' शीर्षक दिया जाता था।

पक्ष राजपूत शैली

(17वीं-18वीं शताब्दी) मुगल शैली (16वीं-18वीं शताब्दी) प्रकार प्रारंभ में भित्तिचित्र और फ्रेस्को रूपों पर आधारित थी। बाद के काल में लघु चित्रकला शैली प्रमुख हो गई।

यह फारसी लघु चित्रकला शैली पर आधारित है।

विषय-वस्तु

सामान्य रूप से भक्तिपूर्ण या धार्मिक प्रकृति की होती है।

यह सामान्य रूप से मुगल सम्राट और उनके परिवार को दर्शाती है। शाही धूमधाम औरप्रदर्शन, लड़ाई व शिकार के दृश्य भी बहुत लोकप्रिय हैं।

विशिष्टता इसमें कमल, मोर और हंस जैसे हिंदू प्रतीकों का उपयोग किया जाता है।

इसके चित्रों मेंमौजूद व्यक्ति पर अथवा वृक्षों, ऊँटों व बाजों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: राजस्थानी शैली की विशेषताएँ

1605	1699	1743	1727
राजस्थानी शैली की विशेषताएँ	आमेर-जयपुर	मारवाड़	किशनगढ़

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — राजस्थानी शैली की विशेषताएँ

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इसके चित्रों मेंमौजूद व्यक्ति पर अथवा वृक्षों, ऊँटों व बाजों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: राजस्थानी शैली की विशेषताएँ • आमेर-जयपुर • मारवाड़ • किशनगढ़ • बूंदी चित्रकला शैली | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1605, 1699, 1743, 1727, 1779

IUC विशेष स्मृति सूत्र #6: नागर मंदिर स्थापत्य के प्रमुख अंग

ट्रिक: 'जगती पर मंडप, गर्भगृह के ऊपर शिखर और आमलक पर कलश' — पंचायतन् शैली में मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा होता है (जैसे- खजुराहो कंदरिया महादेव)।

पहाड़ी शैली — परिचय

• 17वीं-18वीं शताब्दी के दौरान कश्मीर और पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के निकटवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों में चित्रकला की एक उत्कृष्ट शैली का उद्भव हुआ। इन राज्यों की चित्रकला को सामूहिक रूप से पहाड़ी पेंटिंग कहा जाता है।

• यह मुगल शैली से भीप्रभावित थी। हालाँकि ये नज़रिया, विषय, रंग-चयन में मुगल चित्रकला से भिन्न थी और जनसाधारण से सीधे जुड़ी थी।

बसोहली शैली:

• 17वीं शताब्दी में जम्मू और कश्मीर के बसोहली की पहाड़ी शैली की चित्रकला प्रकृति में लघु थी, जो प्रारंभिक चरण का प्रतिनिधित्व करती थी।

• इसका विस्तार चंबा और कुल्लू जैसे अन्य पहाड़ी राज्यों तक हुआ, जिससे स्थानीय विविधताएँ सामने आईं।

• 1690 से 1730 के दशक तक एक नई शैली उभरी जिसे गुलेर-कांगड़ा चरण के नाम से जाना जाता है।

• अंततः यह चरण कांगड़ा शैली के निर्माण का कारण बना। रामायण का प्रभाव

• संस्कृत महाकाव्य, रामायण बशोली और कुल्लू में पहाड़ी कलाकारों का पसंदीदा ग्रंथ था। 'शांगरी' के नाम पर चित्रों के एक विशिष्ट सेट ने बशोली और बिलासपुर शैलियों के प्रभाव को प्रदर्शित किया।

• **चित्रकला की गुलेर शैली:** यह बशोली शैली से एक महत्त्वपूर्ण बदलाव को दर्शाती है, जो पहाड़ी चित्रकला में गुलेर-कांगड़ा चरण की शुरुआत का प्रतीक है।

18वीं सदी का कांगड़ा स्कूल

• यह 18वीं शताब्दी की अंतिम तिमाही के दौरान उभरा, जो पहाड़ी चित्रकला के तीसरे चरण का प्रतिनिधित्व करता है।

• यह गुलेर शैली से विकसित हुआ और इसने अपनी मुख्य विशेषताओं, जैसे-आरेखण में कुशलता और प्रकृतिवाद को बरकरार रखा।

• कांगड़ा शैली कांगड़ा, गुलेर, बशोली, चंबा, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू, नूरपुर, कुल्लू, मंडी क्षेत्रों और गढ़वाल सहित विभिन्न स्थानों में फली-फू ली।

• 19वीं सदी की शुरुआत में इसेमहाराजा रणजीत सिंह और सिख अभिजात वर्ग का संरक्षण मिला।

विषय-वस्तु

• इसमें गीत गोविंद, भागवत पुराण, बिहारीलाल की सतसई और नल दमयंती सम्मिलित थे।

• कृष्ण के प्रेम दृश्य एक प्रमुख विषय थे, विशेषकर रास पंचाध्ययायी का चित्रण, जो कृष्ण के प्रति गोपियों के गहन प्रेम को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

• एक अन्य प्रसिद्ध श्रृंखला में 'बारह महीनों' को दर्शाया गया है, जो मानवीय भावनाओं पर प्रत्येक महीने के प्रभाव को दिखाता है।

दक्कनी स्कूल (डेक्कन स्कूल)

• यह 16वीं और 17वीं शताब्दी में भारत के दक्षिणी पठारी क्षेत्र में चित्रकला के विशिष्ट स्कूलों के रूप में विकसित हुआ।

• अहमदनगर शैली और अन्य दक्कनी शैलियों पर फारसी प्रभाव था। अहमदनगर अहमदनगर स्कूल ऑफ पेंटिंग की उत्पत्ति अहमदनगर के हुसैन निजाम शाह प्रथम (1553-1565) के शासनकाल का जश्न मनाने वाली कविताओं की एक श्रृंखला से मानी जाती है। इस पांडुलिपि को 'तारीफ-इन-हुसैन शाही' के नाम से जाना जाता है।

बीजापुर

इसे अली आदिल शाह प्रथम (1558-80 ई.) और उनके उत्तराधिकारी इब्राहिम द्वितीय (1580-1627 ई.) द्वारा संरक्षण दिया गया था।

• 'नजूम-अल-उलूम' (विज्ञान के सितारे) नामक एक विश्वकोश को 1570 ई. में अली आदिल शाह प्रथम के शासनकाल में लघु चित्रों के साथ चित्रित किया गया था।

  ◦ लेपाक्षी भित्ति चित्रों का प्रभाव महिला आकृतियों के चित्रण में स्पष्ट है।

  ◦ सिंहासन पर सुनहरे रंग, फूल वाले पौधों और अरबीके उपयोग मेंफारसी प्रभाव लक्षित होता है।

• इब्राहीम द्वितीय (1580-1627 ई.) ने रागमाला चित्रकला का निर्माण करवाया।

गोलकुंडा

गोलकुंडा के मुहम्मद कुली कुतुब शाह (1580-1611) के समय की पाँच आकर्षक कलाकृतियों का समूह (1590 ई.) गोलकुंडा कृति के रूप में पहचानी जाने वाली सबसे प्रारंभिक पेंटिंग है।

• **अन्य उल्लेखनीय उदाहरण:** 'मैना पक्षी के साथ महिला' कलाकार मुहम्मद अली की एक सूफी कविता (1605-15 ईस्वी) की पांडुलिपि है।

• **हैदराबाद:** इसकी उत्पत्ति 1724 ई. में मीर कमरुद्दीन खान (चिन कुलिक खान) निजाम-उल-मुल्क द्वारा आसफ जाही राजवंश की स्थापना के साथ हुई। इस पर मुगल प्रभाव था।

तंजौर शैली

इसका उद्भव मराठों द्वारा तंजावुर नायकों की हार और 18वीं शताब्दी के अंत के समय और 19वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद हुआ। इसे भारत सरकार द्वारा भौगोलिक संकेतक (GI tag) प्राप्त है।

- 18वीं शताब्दी के दौरान, मराठा शासकों नेइस स्कूल को बहुत समर्थन और संरक्षण दिया और मराठा राजवंश के महाराजा सर्फोजी द्वितीय के संरक्षण में यह अपने चरम पर पहुँचा।

विशेषताएँ

- इसकीविषय-वस्तुमें पक्षी, जानवर, इमारतें औरविभिन्नमुद्राओंमेंमुस्कुराते हुए कृष्ण के चित्र सम्मिलित हैं।
- इसमें प्रमुखता से स्वर्ण-पत्र और शंक्वाकार मुकुटों का उपयोग किया गया है।
- पलागाई पदम (काँच और लकड़ी) पर निर्मित, उत्तर भारतीय प्राथमिकताओं से हटकर कपड़े और चर्मपत्र के विपरीत, रत्नों और कटे हुए काँच से सजाया गया।
- **महत्त्वपूर्ण पेंटिंग:** इसमें राम के राज्याभिषेक का चित्रणिकया गया है।

मैसूर चित्रकला

- यह मैसूर प्रांत के शासकों द्वारा प्रायोजित की गई चित्रकला शैली थी। और ब्रिटिश काल के दौरान भी इसको संरक्षण मिलता रहा।
- **तकनीक:** सफेद सीसा पाउडर, गैम्बोज और गोंद के मिश्रण 'गेसो पेस्ट' का प्रयोग, जो चमकदार पृष्ठभूमि के साथ एक अनूठा आधार बनाता था।
- तंजौर और मैसूर दोनों चित्रकलाओं की उत्पत्ति एक समान मानी जाती है, जो प्रारंभ में विजयनगर चित्रकला से और बाद में नायक चित्रकला से उत्पन्न हुई।

आधुनिक चित्रकला

भारतीय कला में आधुनिक काल की शुरुआत प्रायः 1857 के आस-पास भारतीय चित्रकला (लघु चित्रकला के विस्तार) के रूप में मानी जाती है। जब कलाकार पश्चिमी प्रभावों और आधुनिकीकरण के संपर्क में आए, जिससे भारतीय कला में महत्त्वपूर्ण बदलाव हुए।

कंपनी चित्रकला और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

यह उस शैली को संदर्भित करता है जो विभिन्न भारतीय शहरों में तब उभरी जब 18वीं शताब्दी के दौरान स्थानीय भारतीय कलाकारों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों की अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए अपनी पारंपरिक तकनीकों को अपनाया।

विशेषताएँ

- राजपूत, मुगल और अन्य भारतीय शैलियों के तत्त्वों को यूरोपीय प्रभावों के साथ जोड़ना।
- पानी वाले रंगों, रैखिक परिप्रेक्ष्य और छायांकन तकनीकों का उपयोग।
- **विषय-वस्तु:** सामाजिक अशांति और मानवीय दुर्दशा; 'तांत्रिक' में भारतीय दर्शन और तत्त्वमीमांसा; अतियथार्थवाद और कल्पना में बढ़ती रुचि।
- **बाजार पेंटिंग्स:** यह भारत में यूरोपीय समागम से प्रभावित थी और इसने रोमन और ग्रीक प्रभावों को अपनाया। यह बंगाल और बिहार क्षेत्रों में प्रमुख थी, जिसमें यूरोपीय पृष्ठभूमि के विपरीत भारतीय बाजारों का चित्रण था।

बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग

बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट एक कला आंदोलन और शैली थी। हालाँकि यह कलकत्ता (बंगाल) में शुरू हुई लेकिन इसने कला में राष्ट्रवादी भावनाओं को दर्शाते हुए पूरे भारत में अपना प्रभाव बढ़ाया। इसे पुनर्जागरण स्कूल या पुनरुत्थानवादी स्कूल भी कहा जाता है।

- इसका नेतृत्व अबनींद्रनाथ टैगोर (1871-1951) ने किया था तथा यह ब्रिटिश प्रशासक और कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल ईबी हैवेल (1861-1934) द्वारा समर्थित था।

• उन्होंने कंपनी स्कूल ऑफ पेंटिंग के प्रभाव और औपनिवेशिक कला स्कूलों में प्रचलित यूरोपीय शैक्षणिक शैली को खारिज करते हुए मुगल और पहाड़ी लघुचित्र जैसे पारंपरिक भारतीय कला रूपों को अपनाया।

महत्त्वपूर्ण चित्रकार और उनके कार्य

• अबनींद्रनाथ टैगोर को उनकी 'अरेबियन नाइट' श्रृंखला से वैश्विक पहचान मिली।

• उन्होंने पश्चिमी भौतिकवादी प्रभावों का मुकाबला करते हुए भारतीय कला में स्वदेशी मूल्यों को शामिल किया।

• उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'भारत माता' और विभिन्न मुगल-थीम वाली पेंटिंग्स सम्मिलित हैं।

• नंदलाल बोस का दांडी मार्च के दौरान गांधीजी का वाइट-ऑन-ब्लैक रेखाचित्र सुप्रसिद्ध है।

• भारत के मूल संविधान दस्तावेज पर प्रकाश डाला। राजा रवि वर्मा (1848-1906)

• उनके आधुनिक चित्रकला स्कूल को पश्चिमी तकनीकों और विषयों को शामिल करने के कारण प्रसिद्धि मिली। केरल से संबद्ध राजा रवि वर्मा को प्रायः 'आधुनिक भारतीय कला का जनक' कहा जाता है।

• उन्होंने दक्षिण भारतीय चित्रकला तत्त्वों को पश्चिमी शैलियों और रंगों के साथ जोड़ा।

• उनकी कुछ सबसे प्रसिद्ध कृतियों में 'लेडीज इन द मूनलाइट', 'शकुंतला', 'दमयंती', और 'स्वान' सम्मिलित हैं। उनकी पेंटिंग्स में रामायण के दृश्य दिखाए गए हैं।

चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली

इसे यूरोपीय क्यूबिस्ट आंदोलन से प्रेरणा मिली। इसकी विशेषता वस्तुओं को तोड़ना, विश्लेषण करना और पुनः जोड़ना था। एम. एफ. हुसैन भारत के प्रसिद्ध क्यूबिस्ट कलाकारों में से एक थे।

लोक चित्रकला — मधुबनी चित्रकला या मिथिला चित्रकला

• इसका नाम प्राचीन विदेह और राजकुमारी की जन्मस्थली, मिथिला से लिया गया है। लोककथाओं के अनुसार, इसकी उत्पत्ति उस समय सेमानी जाती है जब राजकुमारी सीता का विवाह भगवान राम से हुआ था।

• यह पारंपरिक रूप सेमिथिला (बिहार) के गाँवों मेंमहिलाओं द्वारा की जाती थी। विशेषताएँ

• इसकी विशेषता चमकीले रंग हैं। इन्हें गाय के गोबर और मिट्टी लेपित आधार पर चावल के लेप और वनस्पतियों के रंगों का उपयोग करके दीवारों पर चित्रित किया जाता था। लेकिन समय के साथ, यह आधार हस्तनिर्मित कागज, कपड़े और कैनवास पर भी किया जाने लगा है।

• **विषय-वस्तु:** भागवत पुराण और रामायण के प्रसंग, शिव-पार्वती की कहानियाँ तथा राधा और कृष्ण की रास-लीला।

• इस शैली मेंरिक्त स्थान नहीं रखाजाता है अतः वे पूरे स्थान को सजावटी रूप से प्रकृति के रंग से भर देते हैं।

• छाया प्रभाव न होने के कारण यह चित्रकला द्वि-आयामी है।

• यह दोहरी पंक्ति का किनारा, गहरे रंगों का प्रयोग, अलंकृत पुष्प प्रतिरूप और अतिरंजित मुख मुद्राओं को दर्शाती है।

• मधुबनी चित्रकला को भौगोलिक संकेतक (GI tag) प्राप्त है।

• बिहार की टिकुली कला के डिजाइन में अक्सर मधुबनी रूपांकन देखने को मिलता है।

ओडिशा के पट्टचित्र

पट्टचित्र 'नाम संस्कृत के शब्द 'पट्ट', (कैनवास या कपड़ा), और 'चित्र', (picture) से लिया गया है। ओडिशा का रघुराजपुर पट्टचित्र कला के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: मैसूर चित्रकला

1. मैसूर चित्रकला
2. आधुनिक चित्रकला
3. बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग
4. महत्त्वपूर्ण चित्रकार और उनके कार्य

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — मैसूर चित्रकला

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पट्टचित्र 'नाम संस्कृत के शब्द 'पट्ट', (कैनवास या कपड़ा), और 'चित्र', (picture) से लिया गया है। ओडिशा का रघुराजपुर पट्टचित्र कला के केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: मैसूर चित्रकला • आधुनिक चित्रकला • बंगाल स्कूल ऑफ पेंटिंग • महत्त्वपूर्ण चित्रकार और उनके कार्य • चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *1857, 1871, 1951, 1861, 1934*

विशेषताएँ

- यह लोक कला के प्रमुख प्रभाव के साथ शास्त्रीय और लोक तत्त्वों का मिश्रण प्रदर्शित करता है।
- पट्टचित्र पेंटिंग के लिए आधार सामग्री उपचारित कपड़ा है। कलाकृति हेतु जीवंत रंग बनाने के लिए प्राकृतिक स्रोतों का उपयोग किया जाता है।
- इसमें लाल या पीले रंग में रूपरेखा बनाने के लिए ब्रश का इस्तेमाल किया जाता है। इसकी पृष्ठभूमि जटिल पर्णसमूह और पुष्प रूपांकनों से सजी होती है।
- अंतिम रेखाएँ खींचे जाने के बाद, इसे चमकदार फिनिश देने के लिए सतह पर लाह/लाख (lacquer) लगाया जाता है।
- **विषय-वस्तु:** जगन्नाथ और वैष्णव पंथों तथा शक्ति और शैव पंथों से प्रेरित।
- ताड़ के पत्तों पर चित्रित पट्टचित्र को 'तालपट्टचित्र' कहा जाता है। बंगाल की पटुआ कला इसका इतिहास लगभग एक हजार साल पुराना है।प्रारंभ में यह एक ग्रामीण परंपरा के रूप में उभरी। इसमें चित्रकारों ने मंगल काव्य या हिंदू देवताओं से संबंधित शुभ कहानियों को दर्शाया है।
- आम तौर परस्क्रॉल या 'पट' पर बनाए गए और स्क्रॉल पेंटर्स को 'पटुआ' के नाम से सुप्रसिद्ध है। इसमें कपड़े का उपयोग आधार सामग्री के रूप में किया जाता है।
- अधिकांश पटुआ मुस्लिम हैं और इनकी पारंपरिक कलाकृतियों में हिंदू मिथकों का चित्रण मिलता है।

पैतकर पेंटिंग या स्क्रॉल

यह झारखंड के एक छोटे से गाँव अमादुबी की पारंपरिक स्क्रॉल पेंटिंग है। यह अपनी कथा परंपरा और प्रदर्शन के लिए जानी जाती है।

संथाल पेंटिंग

ये पेंटिंग्स दीवारों पर कथात्मक स्क्रॉल के साथ-साथ आनुष्ठानिक छवियों के रूप में होती हैं। इन दीवार चित्रों में, संथाल महिलाओं द्वारा बनाए गए अधिकांश रूपांकन ज्यामितीय आकृतियाँ, जानवर और पक्षी हैं। इसके सभी उपकरण और रंग सामग्रियां स्वदेशी प्रक्रिया द्वारा बनाई जाती हैं।

आंध्र प्रदेश की कलमकारी पेंटिंग **[UPSC 2015]**

कलमकारी शब्द की उत्पत्ति फारसी शब्द कलम (Pen) औरकारी (शिल्प कौशल) से हुई है।

विशेषताएँ

- इसमें कैनवास के रूप में सूती कपड़े और रंगों के रूप में वनस्पति रंगों के साथ कलम का उपयोग किया जाता है। छवियाँ मुक्तहस्त तरीके से खींची जाती हैं।
- **विषय-वस्तु:** प्रमुख तौर पर हिंदू पौराणिक कथाओं से प्रेरित।
- **प्राथमिक केंद्र:** आंध्र प्रदेश राज्य में श्रीकलाहस्ति और मछलीपट्टनम।
- इस कला को 2013 में भौगोलिक संकेतक (जीआई टैग) प्राप्त हुआ। महाराष्ट्र की वर्ली चित्रकला इसका नाम वर्ली जनजाति के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने 2500-3000 ईसा पूर्व की प्राचीन कलात्मक परंपरा को बरकरार रखा। यह मध्य प्रदेश के भीमबेटका भित्तिचित्रों से मिलती-जुलती है।

विशेषताएँ

• इसमें मिट्टी, शाखाओंऔर गाय के गोबर के मिश्रण से पृष्ठभूमि का लाल गेरुआ रंग बनाया जाता है।

• पेंटिंग के लिए सफेद रंजक (गोंद और चावल पाउडर का मिश्रण) का इस्तेमाल किया जाता है।

• **तकनीक:** त्रिकोण, वृत्त और वर्ग जैसी सरल ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग मनुष्यों या जानवरों को दर्शाने के लिए किया जाता है; दोत्रिभुज सिरे पर जुड़े हुए हैं, जिनमें वृत्त उनके सिरों को दर्शाते हैं।

विषय-वस्तु

• केंद्रीय रूपांकन में एक 'चौकट' या 'चौक' है जो मछली पकड़ने, शिकार, खेती, नृत्य, जानवरों, पेड़ों और त्योहारों से संबंधित दृश्यों के चित्रण से घिरा हुआ है।

• उर्वरता की देवी पालाघाट और पुरुष देवताओं को मानव रूप में दर्शाया गया है।

• इन्हें सफेद पोस्टर रंग का उपयोग करके लाल या काले पृष्ठभूमि वाले कपड़े पर चित्रित किया जाता है।

• दीवार पेंटिंग सामान्य रूप से फसल त्योहारों और शादियों जैसे शुभ अवसरों पर ही बनाई जाती हैं।

थांगका पेंटिंग

ये पेंटिंग बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बनाई गई हैं।

• इसे एक सफेद सूती कैनवास पर चित्रित किया जाता था, जो पृष्ठभूमि के रूप में काम करता था।

• इसमें इस्तेमाल किए जाने वाले रंग प्राकृतिक स्रोतों जैसेवनस्पति रंगों या खनिज रंगों से प्राप्त किए जाते थे।

• यह सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश जैसे क्षेत्रों में प्रचलित है।

बिहार की मंजूषा या अंगिका पेंटिंग

• इसकी उत्पत्ति बिहार के भागलपुर क्षेत्र से हुई है और इसे वैकल्पिक रूप से अंगिका कला के नाम से सुप्रसिद्ध है। यहाँ 'अंग' महाजनपद क्षेत्रों में से एक का प्रतीक है।

• इसमें साँप का रूपांकन किया जाता है, जिसके कारण इन्हें 'स्नेक पेंटिंग' उपनाम दिया गया है।

• **प्राथमिक कैनवास:** जूट के डब्बों और कागज पर बनाया जाता है। राजस्थान की फड़ स्क्रॉल पेंटिंग

• यह एक धार्मिक कला है, जो स्थानीय देवताओं को प्रदर्शित करती है।

• बड़ी आँखों और गोल चेहरे वाली आकृतियों, शोभायात्राओं और उत्सवों के दृश्यों को चित्रित करती है।

• इसे लंबे कपड़े पर वनस्पति रंगों का उपयोग करके तैयार किया जाता है, जिसे 'फड़' के नाम से जाना जाता है।

तेलंगाना की चेरियाल स्क्रॉल पेंटिंग

• यह नक्काशी कला परंपरा से संबंधित है। 2007 में इसकला को जीआई टैग प्रदान किया गया था।

• यह आकार में विशाल हो सकती है और इनकी ऊँचाई 45 फीट तक हो सकती है।

• स्क्रॉल, बैलाडीर समुदाय द्वारा कॉमिक्स या गाथागीत की भांति एक सतत कहानी को दर्शाते हैं।

• यह हिंदू महाकाव्यों और पौराणिक कथाओं के इर्द-गिर्द घूमते हैं। ओडिशा की सौरा पेंटिंग

• यह वर्ली पेंटिंग के समान है और सौरा जनजाति द्वारा निर्मित है।

• आनुष्ठानिक महत्त्व के साथ दीवार भित्तिचित्रों के रूप में है।

• मानव आकृतियाँ एक विशिष्ट ज्यामितीय और छड़ी जैसी हैं।

• **प्रयुक्त सामग्री:** प्राकृतिक स्रोतों (खनिज और पौधे) से बनाए गए रंग। पिथौरा पेंटिंग

• यह पेंटिंग गुजरात के पंचमहल क्षेत्र और पड़ोसी राज्य मध्य प्रदेश के झाबुआ के राठवा भीलों द्वारा बनाई जाती है।

- यह घरों की दीवारों परविशेष अवसरों को चिन्हित करने के लिए बनाई जाती है।
- ये बड़े दीवार चित्र हैं, जो घुड़सवार के रूप में चित्रित देवताओं की पंक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

गुजरात की माता-नी-पचेड़ी

- अहमदाबाद में, देवी माँ पंथ से संबंधित कपड़े पर माता-नी-पचेड़ी पेंटिंग मन्नत के प्रसाद के रूप में बनाई जाती है।
- यह पेंटिंग नवरात्रों के दौरान बनाई जाती है।
- वाघारी समुदाय खास तौर पर इन पचेड़ियों को चित्रित करने के लिए जाना जाता है। इनमें केवल पुरुष ही चित्रकारी करते हैं; महिलाओं को पवित्र अनुष्ठान करने की अनुमति नहीं है।

साँझी

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश के गाँवों में अविवाहित युवा लड़कियाँ नवरात्रि के दौरान पूजी जाने वाली देवी साँझी की प्रतिमा तैयार करती हैं।

- चूँकि ये चित्र शाम के समय बनाए जाते हैं, इसलिए इन्हें 'सांझी' या 'संज्ञा' या 'चंद्र तरैया' नाम दिया जाता है।

चित्रकथी पेंटिंग

मध्यकालीन महाराष्ट्र तथा आंध्र और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में लोगों का एक वर्ग चित्रकथी के नाम से जाना जाता था।

- ये एक गाँव से दूसरे गाँव की यात्रा करते थे और इन एकल कागज़ पर चित्रित चित्रों की मदद से लोगों को पौराणिक कहानियाँ सुनाते थे।
- चित्रकथी पट्ट की विषय-वस्तु रामायण और महाभारत या पौराणिक किं वदंतियों से प्रेरित थी।

कालीघाट पेंटिंग

ये पेंटिंग पटुआ के नाम से जाने जाने वाले विशेष स्क्रॉल चित्रकारों द्वारा बनाई जाती है, जिन्होंने कोलकाता जाकर मुख्य रूप से कालीघाट मंदिर के आस-पास अपनी दुकानें स्थापित कीं जहाँ देवी काली की पूजा की जाती है।

पिछवाई

पिछवाई पेंटिंग कपड़े पर बनाईजाती है। यह राजस्थान के नाथद्वारा में श्रीनाथजी की स्थापित प्रतिमाओं के लिए चित्रित पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है। इसकी विषय-वस्तु में कृष्ण का जीवन, ऋतुएँ आदि सम्मिलित हैं।

गंजीफा कार्ड

'गंजीफा' शब्द का शाब्दिक अर्थ है धन-धान्य की संपदा है।

- पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले के बिष्णुपुर के कलाकारों ने 14वीं शताब्दी में ताश के पत्तों का एक विशेष सेट तैयार किया, जिसे गंजीफा कार्ड के नाम से जाना जाता है। यह वर्तमान समय के ताश के पत्तों का विकल्प है।
  - उन्होंने भगवान विष्णु के दस अवतारों का चित्रण किया।
- हुमायूँनामा और अबुल फजल की आईने-अकबरी जैसी पुस्तकों में इसके ऐतिहासिक संदर्भ मिलते हैं।
- ये कार्ड ओडिशा, महाराष्ट्र और मैसूर में भी पाए जाते हैं।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: गुजरात की माता-नी-पचेड़ी



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — गुजरात की माता-नी-पचेड़ी

मुख्य परीक्षा दृष्टि: ये कार्ड ओडिशा, महाराष्ट्र और मैसूर में भी पाए जाते हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: गुजरात की माता-नी-पचेड़ी • साँझी • चित्रकथी पेंटिंग • कालीघाट पेंटिंग • पिछवाई

भारत में नृत्य शैलियाँ

5 भरतमुनि का नाट्य शास्त्र

• यह नृत्य पर ज्ञात सबसेप्रारंभिक ग्रंथ है जिसमें नाटक, नृत्य और संगीत सम्मिलित हैं। इसकी रचना दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच हुई थी। इसे पाँचवाँ वेद (नाट्य वेद) भी माना जाता है। इसमें नृत्य शैलियों, मुद्राओं, भावनाओं, आभूषणों, मंच और दर्शकों का वर्णन है।

• यह विभिन्न वेदों के तत्त्वों को एकीकृत करता हैजिसमें ऋग्वेद से पाठ्य (शब्द), यजुर्वेद से अभिनय (भाव-भंगिमा), सामवेद से गीत (संगीत) और अथर्वेद से रस (भावनाएँ) सम्मिलित हैं।

करण: 108 हस्त मुद्राएँ (जिन्हें करण के नाम से जाना जाता है) भारतीय शास्त्रीय नृत्य का अभिन्न अंग हैं और भरतमुनि द्वारा नाट्यशास्त्र में इनका विस्तृत विवरण दिया गया है। ये मुद्राएँ हस्त मुद्राओं(हाथों के इशारे), अंगिका (शारीरिक चेष्टाओं) और संचारी (संक्रमण) भावों का संयोजन हैं।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य में तांडव और लास्य:

• **तांडव:**
  ◦ तीव्र, गतिशील और पुरुषत्व आधारित ।
  ◦ भगवान शिव के सृजन और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य से संबंधित।
  ◦ शक्तिवान गतियों तथा मजबूत पैरों की विशेषता।
  ◦ ऊर्जा, वीरता और दिव्य शक्ति का प्रतीक ।

• **लास्य:**
  ◦ सुंदर, सरल और स्त्रैण।
  ◦ देवी पार्वती के कोमल और भावपूर्ण नृत्य से संबंधित।
  ◦ सरल, प्रवाहपूर्ण गतियों और अभिव्ययंजक संकेतों की विशेषता।
  ◦ सुंदरता, प्रेम और आध्ययात्मिक भक्ति का प्रतीक । तांडव और लास्य एक साथ ऊर्जा और सौंदर्य को संतुलित करते हैं, जीवन के द्वंद्व को मूर्त रूप प्रदान करते हैं, साथ ही भारतीय शास्त्रीय नृत्य को लय एवं भावना से समृद्ध करते हैं।

नृत्य के रूप

भरत और नंदिके श्वर, नृत्य को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में, मानव शरीर का उपयोग करने वाली एक कला के रूप में देखते हैं।

• नाट्य शास्त्र के अनुसार भारतीय शास्त्रीय नृत्य के दो प्राथमिक रूप हैं:
  ◦ **तांडव:** यह नृत्य पुरुष पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, जो लय और गति पर अधिक जोर देता है।
  ◦ **लास्य:** यह नृत्य स्त्री की विभिन्न छवियों का प्रतिनिधित्व करता है, जो लावण्य, भाव, रस और अभिनय को दर्शाता है।

अभिनय में अंगिका (शरीर और अंग), वाचिका (गीत और भाषण), आहार्य (पोशाक और श्रृंगार) तथा सात्विक (चित्तवृत्ति और भावावेश) के माध्यम से अभिव्यक्ति शामिल है।

- अभिनय दर्पण (नंदिके श्वर द्वारा नृत्य पर ग्रंथ) के अनुसार, नृत्य के तीन रूप माने जाते हैं:
  - नाट्य, नाटकीय तत्त्व पर जोर देता है।
  - नृत्य अभिव्यक्ति है, जो किसी विषय या विचार का अर्थ बताता है।
  - शुद्ध नृत्य है, जो मनोदशा या अर्थ से रहित है। नृत्य और नाट्य को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए, नर्तकियों द्वारा नवरस को प्रकट करना चाहिए।

नवरस में सम्मिलित हैं- प्रेम (श्रृंगार), आनंद (हास्य), करुणा (करुण), वीरता (वीर), क्रोध (रौद्र), भय (भयानक), घृणा (वीभत्स), आश्चर्य (अद्भुत) और शांति (शांत)।

भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ

संगीत नाटक अकादमी के अनुसार भारत में8 शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ पाईजाती हैं। यद्यपि, संस्कृति मंत्रालय ने 9 शास्त्रीय नृत्य शैलियों की पहचान की है जिनमें पूर्वी भारत का छऊ नृत्य भी शामिल है।

भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

- 19वीं सदीकी शुरुआत में राजा सर्फोजी द्वारा समर्थित तंजौर चौकड़ी (पोन्नय्या, चिन्नय्या, शिवानंद, वडिवेलु) ने समकालीन भरतनाट्यम प्रदर्शनों की फेहरिस्त को आकार दिया। अत: इसे तंजौर नाट्यम के नाम से भी जाना जाता है।
- यह एक एकल नृत्य है जहाँ नर्तक, प्रवृति (Movement) और अभिनय के माध्यम से साहित्य को व्यक्त करता है।
- इसे एकहार्य शैली में भी प्रदर्शित किया जाता है जहाँ एक नर्तक एक ही प्रदर्शन में कई भूमिकाएँ निभाता है।

देवदासियों की विरासत: मंदिरों को उपहार में दी गईंऔर देवताओं से ब्याही गई लड़कियाँ, जिन्हें देवदासियाँ कहा जाता था, वे मंदिर प्रांगणों में प्रसंग के साथ भरतनाट्यम करती थीं।

प्रदर्शन का ढंग:

भरतनाट्यम प्रदर्शन निम्नानुसार एक संरचित स्वरूप का पालन करते हैं:

- प्रदर्शन की शुरुआत देवताओं के आह्वान के साथ होती है।
- **अलारिप्पु (फू लों का खिलना):** यह प्रदर्शन का पहला अंश है जो ध्वनि अक्षरों के उच्चारण के साथ शुद्ध नृत्य का मिश्रण करता है।
- जतीस्वरम कर्नाटक संगीत के राग पर आधारित एक विशुद्ध लघु नृत्य कृति है। इसमें साहित्य (शब्दों) का अभाव है और इसमें अदावु सम्मिलित हैं, जो विशुद्ध नृत्य अनुक्रम (नृत्त) हैं।
- शब्दम, जो जातीस्वरम का अनुसरण करता है, शब्दों के माध्यम से व्यक्त किया गया नाटकीय अंश है।
- इसके बाद वर्णम का प्रदर्शन किया जाता है जिसमें नृत्त और नृत्य दोनों के अवयव शामिल होते हैं। नर्तक अपने तालबद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए दो गतियों पर जटिल तालबद्ध स्वरूप को प्रस्तुत करता है।
- अभिनय का उपयोग साहित्य पद्धतियों को चित्रित करने के लिए किया जाता है, जो नर्तक के अभिनय कौशल और नृत्यकला की रचनात्मकता को प्रदर्शित करता है।
  - एक सामान्य रचना में कीर्तनम (जोर से पाठ करना), कृतिस (संगीत पर जोर), पदम और जावलिस सम्मिलित हैं। कीर्तनम और कृतियों में भक्ति प्रसंग है वहीं दूसरी ओर पदम और जवालिस प्रेम के प्रसंगों के इर्द-गिर्द घूमते हैं।
- **तिल्लाना:** यह प्रदर्शन का समापन करता है। यह साहित्य की कुछ पंक्तियों के साथ एक संगीतमय शब्दांश के साथ एक जीवंत नृत्य है।
- प्रदर्शन दिव्य आशीर्वाद का आह्वान करते हुए मंगलम के साथ समाप्त होता है। विशेषताएँ
- भरतनाट्यम की अधिकांश गतिविधियाँ नाचती हुई लौ के समान होती हैं। अत: इसे 'अग्नि नृत्य' कहा जाता है।
- तांडव और लास्य पर समान जोर दिया गया है जिसमें 'मुद्रा' पर महत्त्वपूर्ण जोर दिया गया है।
  - प्रमुख मुद्राओं में से एक है 'कटका मुख हस्त' (तीन उंगलियाँ 'ओम' का प्रतीक बनने के लिए जुड़ी होती हैं)।
- इस नृत्य में, प्रदर्शन के दौरान घुटने अधिकतर मुड़े होते हैं और वजन पैरों पर समान रूप से वितरित होता है।

• संगत में एक गायक, मृदंगम वादक, वायलिन वादक या वीणा वादक, बांसुरी वादक और झांझ वादक शामिल होते हैं।

• नट्टुवनार प्रदर्शन का समन्वय करते हुए नृत्य पाठ का संचालन करता है। भरतनाट्यम में अरंगेत्रम एक नर्तक के पहले प्रदर्शन को संदर्भित करता है, जो उनके प्रशिक्षण के पूरा होने और एक पेशेवर नर्तक के रूप में उनके करियर की शुरुआत का प्रतीक है।

भरतनाट्यम को प्रसिद्धि दिलाने वाले और बढ़ाने वाले: यामिनी कृष्णमूर्ति, लक्ष्मी विश्वनाथन, पद्मा सुब्रमण्यम, मृणालिनी साराभाई, मल्लिका साराभाई, रुक्मिणी देवी अरुंडेल आदि।

कथकली (केरल) कथकली को 'पूर्व की गाथा' भी कहा जाता है।

• गायन प्रस्तुति अच्छाई और बुराई के बीच अविनाशी संघर्ष का वर्णन करती है।

• कथकली गीतों के लिए प्रयुक्त भाषा मणिप्रवलम है, जो मलयालम और संस्कृत का मिश्रण है।

• इसका विकास प्राचीन केरल के विभिन्न समाजिक तथा धार्मिक नाट्य रूपों से हुआ है जिनमें चकियारकुथु, कू डियाट्टम, कृष्णट्टम और रामनाट्टम सम्मिलित हैं।

कलात्मक एकीकरण

• कथकली नृत्य, संगीत, अभिनय और कहानी कहने की कला को संकलित करता है, जो प्राथमिक रूप से भारतीय महाकाव्यों के अनुरूप है और अभिनय के चार पक्षों को जोड़ती है।

• नर्तक गाए गए छंदों (पदम) का अनुसरण करते हुए तार्किक क्रम में व्यवस्थित रूप से हस्त मुद्राओं(हाथ के इशारों) और चेहरे के भावों का उपयोग करके संवाद करते हैं।

• कथकली के लिए शाब्दिक मार्गदर्शन बलराम भारतम और हस्तलक्षण दीपिका में देखने को मिलता है।

• कथकली कहानियाँ, जिन्हें अट्टकथा के नाम से जाना जाता है महाकाव्यों और काल्पनिक कथाओं से ली गई हैं।

दृश्य कला और शृंगार: पोशाक और शृंगार विस्तार रूप से किया जाता है और जिसका उद्देश्य नाट्य शास्त्र के दिशा-निर्देश का पालन करते हुए एक अलौकिक प्रभाव पैदा करना है।

• विभिन्न पात्रों के लिए मुकुट के साथ-साथ विस्तृत चेहरे का शृंगार किया जाता है। चट्टी बनाने के लिए चावल का लेप और नींबू का मिश्रण लगाया जाता है, जो एक विशिष्ट सफे द चेहरे का शृंगार है।

हरा रंग कुलीनता, दिव्यता और सदाचार को दर्शाता है। नाक के पास लाल धब्बे रॉयल्टी का संकेत देते हैं। काले रंग का प्रयोग बुराई को दर्शाने के लिए किया जाता है। पीला रंग साधु-संतों और महिलाओं के लिए है। सफे द दाढ़ी उच्च चेतना और दिव्यता वाले प्राणियों को इंगित करती है। पूरी तरह से लाल चेहरा बुराई का संकेत देता है।

विशेषताएँ

• कथकली प्रदर्शन में पात्रों को मोटे तौर परसात्विक, राजसिक और तामसिक प्रकारों में विभाजित किया जाता है। इनके अलावा मिनुक्कू जैसे छोटे पात्र भी हैं जो महिलाएँ और ऋषि हैं।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: प्रदर्शन का ढंग

1. **प्रदर्शन का ढंग**
2. **कलात्मक एकीकरण**
3. **देवदासियों की विरासत**
4. **अलारिप्पु (फू लों का खिलना**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्रदर्शन का ढंग

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कथकली प्रदर्शन में पात्रों को मोटे तौर परसात्विक, राजसिक और तामसिक प्रकारों में विभाजित किया जाता है। इनके अलावा मिनुक्कू जैसे छोटे पात्र भी हैं जो महिलाएँ और ऋषि हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्रदर्शन का ढंग • कलात्मक एकीकरण • देवदासियों की विरासत • अलारिप्पु (फू लों का खिलना • तिल्लाना

IUC विशेष स्मृति सूत्र #7: अजंता बनाम एलोरा गुफाएँ

ट्रिक: 'अजंता केवल बौद्ध (29 गुफाएँ, वाघोरा नदी), एलोरा तीनों धर्म (34 गुफाएँ: 1-12 बौद्ध, 13-29 हिंदू, 30-34 जैन)' — राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने कैलाश मंदिर (गुफा 16) बनवाया।

• सामने तेल से भरे एक बड़े-से दीपक के साथ एक साधारण मंच का उपयोग किया जाता है। मंच पर दो लोगपर्दा पकड़ते हैं जिन्हें तीरासीला कहा जाता है।

• कथकली चेहरे की मांसपेशियों, अंगुलियों, आंखों, हाथों और कलाइयों सहित पूरे शरीर का बड़े पैमाने पर उपयोग करती है। शरीर का भार पैरों के बाहरी किनारों पर पड़ता है, जो थोड़े झुके हुए और घुमावदार होते हैं।

◦ किसी भी अन्य नृत्य शैली में भौंहों, नेत्रगोलक (Eyeballs) और निचली पलकों की गति का उपयोग नहीं किया जाता जैसा कि कथकली में किया जाता है।

कथकली में कलासम (अष्ट कलासम) शुद्ध नृत्य अनुक्रम है जो अभिनेता को उछलना, फुर्ती से घूमना, कूदना और तालबद्ध समन्वय की विशेषता के साथ अपने कौशल का प्रदर्शन करने की अनुमति देता है।

प्रदर्शन का ढंग

• मूलतः यह पूर्ण-रूपेण पुरुष मंडलियों का एक प्रदर्शन है। यह सामान्य रूप से खुले रंगमंच (आकाश के तत्त्वों को प्रतीक द्वारा प्रस्तुत करना) में प्रदर्शित किया जाता है।

• यह संध्यया काल में ढोल, छेंड़ा और मद्दला की निरंतर ध्वनि के साथ किया जाता है।

• प्रदर्शन की शुरुआत के लिकोट्टु से होती है, जो दर्शकों का ध्यान आकर्षित करता है। उसके बाद तोदियम होता है, जो भगवान का आशीर्वाद पाने के लिए एक भक्ति गीत है।

• इसके बाद पुरप्पाडु, एक शुद्ध नृत्त मुद्रा और संगीतकार और ढोल वादक अपने कौशल का प्रदर्शन करते हुए मेलाप्पाडा के साथ मनोरंजन करते हैं।

• मिनुक्कू के अतिरिक्त तिरानोक्कू मंच पर सभी पात्रों के प्रवेश का प्रतीक है।

• तदुपरांत इलाकियाट्टम किया जाता है, जहाँ नर्तक चरित्र-चित्रण के अभिनय में अपनी उत्कृष्टता प्रदर्शित करते हैं।

• पूरे प्रदर्शन के दौरान, नर्तक कूडियाट्टम में संलग्न रहते हैं। संगीतकारों द्वारा गाए गए पदमों का अनुसरण करते हुए अभिनय करना इसमें शामिल होता है।

संगीत और वादक मंडली

• कथकली संगीत केरल के पारंपरिक सोपना संगीत का अनुसरण करता है, जो गर्भगृह की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर अष्टपदी का आनुष्ठानिक गायन है।

• इसमें कर्नाटक रागों और तालों को भी शामिल किया गया है।

• वादक मंडली में चेंडा, मद्दलम, चेंगिला, इलाथलम, इडक्का और शंखु जैसे वाद्यंत्र सम्मिलित हैं।

प्राचीन चित्रण-वर्णलेखन (Ancient Depictions) और युद्ध कलाएँ (मार्शल आर्ट्स) का प्रभाव

• केरल में मंदिर की मूर्तियाँ और 16वीं शताब्दी के मट्टनचेरी मंदिर के भित्तिचित्र वर्गाकार और आयताकार मूल स्थितियों वाले नृत्य दृश्यों को प्रदर्शित करते हैं।

• नर्तकों की शारिरिक भंगिमाएँ और नृत्यकला के स्वरुप, जो कलारीपयट्टु (केरल की प्रारंभिक युद्ध कलाएँ) से प्रेरित है।

कथकली को 1930 के दशक में मुकुंद राजा के संरक्षण में प्रसिद्ध मलयाली कवि वी.एन. मेनन द्वारा पुनर्जीवित किया गया था। इसको प्रसिद्धि दिलाने और लोकप्रियता देने वालों में गुरु कुंचू कुरुप, गोपी नाथ, कोट्टाकल शिवरामन, रीता गांगुली आदि सम्मिलित हैं।

कथक (उत्तर प्रदेश) प्रारंभ में यह एक मौखिक परंपरा के रूप में शुरू हुआ था जहाँ कथाकार ने महाकाव्यों, मिथकों और किं वदंतियों पर आधारित कहानियाँ सुनाईं। बाद में कहानी कहने की क्षमता को बढ़ाने के लिए मूक-अभिनय और हाव-भाव करने को भी इसमें जोड़ा गया।

• वैष्णव पंथ और भक्ति आंदोलन के उदय ने इसमें गीत और संगीत रूपों की एक नई श्रृंखला जोड़ी।

• रासलीला (संगीत, नृत्य और कथा के संयुक्त अवयव) मुख्य रूप से ब्रज क्षेत्र (पश्चिमी यूपी) में कथाकारों के बुनियादी मूक-अभिनय और हाव-भाव करने को विस्तार प्रदान करती है।

• **मुगल प्रभाव:**

◦ मुगलों के अधीन यह धीरे-धीरे मंदिर प्रांगण से शाही दरबार में स्थानांतरित हो गया।

- इसे अत्यधिक शैलीबद्ध (Highly Stylized) किया गया और इसे मनोरंजन के एक रूप में देखा जाने लगा। इसने अपनी वर्तमान विशेषताएँ हासिल कर लीं और एक विशिष्ट शैली के साथ एक नृत्य शैली के रूप में विकसित हुई।
- नृत्य (अभिव्यक्ति) और भाव (मनोदशा) पर अधिक जोर दिया गया जिससे नृत्य में शोभा, अभिव्यक्ति और कामुकता जुड़ गई।
- फारसी वेशभूषा और नृत्य की शैलियों ने भी इसे प्रभावित किया।

• 19वीं सदी में नवाब वाजिद अली शाह (लखनऊ घराना) के संरक्षण की अवधि को कथक का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

प्रदर्शन के ढंग

• इस तकनीक में क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर अक्ष के साथ शरीर के भार का समान वितरण शामिल है।

• मूल अवस्था में एक सीधी मुद्रा शामिल होती है जिसमें एक हाथ सिर से ऊँचा होता है और दूसरा कंधे के स्तर तक फैला होता है। शरीर में कोई विक्षेप या तीव्र मोड़ या घुमाव का उपयोग नहीं होता है।

• शुद्ध नृत्य (नृत्य) पर जोर देते हुए पैरों के प्रयोग से एक प्रभावशाली पद्धति का उपयोग किया जाता है।

- इसमें, पूरे पैर का संपर्क सबसे महत्त्वपूर्ण है जहाँ केवल पैर के अंगूठे या गेंद का उपयोग किया जाता है उनका कार्य सीमित होता है।
- शरीर के ऊपरी या निचले हिस्से में कोई विक्षेपण नहीं है और तेज मोड़ या घुमाव का कोई उपयोग नहीं है।

• इस नृत्य के प्रदर्शन की शुरुआत "थाट" से होती है जिसमें गर्दन, भौंहों और कलाइयों की सौम्य गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।

• इसके बाद एक औपचारिक प्रवेश होता है जिसे "अमद" (प्रवेश) और "सलामी" (अभिवादन) कहा जाता है।

• लयबद्ध अक्षरों कोसुनाने के लिए नर्तक, संबंधित गतिविधियों को क्रियान्वित करने से पहले रुकते हैं।

• **लयबद्ध बनावट और संगीत:**

- कथक का नृत्य भाग "नगमा" पर प्रस्तुत किया जाता है।
- जुगलबंदी नर्तक और ढोलवादक (पखावज बजाने वाला) के बीच का एक प्रतिस्पर्धी खेल है।

• **मूक भाव-भंगिमा का भाग (नृत्य या अभिनय):** ये छोटे कथात्मक अंश हैं जिनमें ध्रुपद संगीत के साथ कृष्ण के जीवन के प्रसंगों को दर्शाया जाता है। अन्य गीतों में ठुमरी, भजन और दादरा सम्मिलित हैं जिनमें संगीत पर आधारित और हाव-भाव से व्याख्या की गई काव्य पंक्तियाँ शामिल हैं।

कथक की अनूठी पहचान

• यह मुस्लिम संस्कृति से जुड़ा एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है और इसकी जड़ें हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय संगीत में गहराई से जुड़ी हुई हैं।

• कथक और हिंदुस्तानी संगीत एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए समानांतर रूप से विकसित हुए हैं।

• **प्रसिद्ध कथक कलाकार:** कथक को प्रसिद्धि दिलाने वालों में बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, दमयंती जोशी आदि शमिल हैं।

मणिपुरी शैली (मणिपुर) इसकी जड़ें धार्मिक अनुष्ठानों, त्योहारों और देवी-देवताओं की पौराणिक कहानियों से जुड़ी हुई हैं, जैसे शिव और पार्वती के नृत्य।

• राजा भाग्यचंद्र के शासनकाल में ही मणिपुर के लोकप्रिय रासलीला नृत्य की उत्पत्ति हुई थी।

• 15वीं शताब्दी में वैष्णववाद के आगमन के साथ मणिपुरी नृत्य को ख्याति मिली।

• रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शांतिनिके तन में इस नृत्य शैली की शुरुआत करके इसे पुनर्जीवित किया।

विशेषताएँ

• मणिपुरी नृत्य का विषय गोपियों, राधा और कृष्ण की कहानियों के इर्द-गिर्द घूमता है।

• **पोशाक:** मणिपुरी शैली में एक कढ़ाईदार अकड़न युक्त स्कर्ट, एक मुलायम सफे द मलमल की स्कर्ट, एक गहन मखमली ब्लाउज और एक पारंपरिक सफे द घूंघट शामिल है।

- कृष्ण की पोशाक में एक पीली धोती, एक गहरे रंग की मखमली जैके ट और एक मोर पंख का मुकुट शामिल है।

• इसमें पुरुषोचित एवं स्त्रीत्व पहलुओं का देखने को मिलता है। नृत्य का पुरुषोचित पहलू - चोलोम संकीर्तन परंपरा काएक हिस्सा है। संकीर्तन के दौरान पुरुष नर्तक पुंग और करताल वाद्यंत्र बजाते हैं। **[UPSC 2017]**

• लयबद्ध जटिलताओं को सामान्य रूप से नजरअंदाज कर दिया जाता है क्योंकि नर्तक लय को बेहतर बनाने के लिए घुंघरू नहीं पहनते हैं।

• इसमें एक आवश्यक आसन नाग बंध मुद्रा शामिल है जिसमें शरीर '8' के आकार में वक्रों के माध्यम से जुड़ा होता है।

• प्राथमिक संगीत वाद्यंत्र पुंग (या मादीपुरी शास्त्रीय ड्रम), पेना (एक तार वाला वाद्यंत्र), झांझ और बांसुरी हैं जो स्वर गायन के साथ आते हैं। रास, संकीर्तन और थांग-ता मणिपुरी नृत्य से प्रभावित हैं।

• रास नृत्य शैली को पाँच प्रमुख भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जिनमें से चार विशिष्ट मौसमों से जुड़े हैंवहीं दूसरी ओर पाँचवाँ वर्ष के किसी भी समय प्रस्तुत किया जा सकता है। मणिपुरी रास में मुख्य पात्र राधा, कृष्ण और गोपियाँ हैं।

• संकीर्तन, कीर्तन के रूप में किया जाने वाला सामूहिक गायन, नृत्य के साथ होता है।

• **थांग-ता (मार्शल आर्ट नृत्य परंपरा):** नर्तक वास्तविक लड़ाई के दृश्यों को चित्रित करने के लिए तलवारों, भालों और ढालों का उपयोग करते हैं।

प्रसिद्ध कलाकार: झावेरी बहनें- नयना, सुवर्णा, रंजना और दर्शना, गुरु बिपिन सिंघा, आदि।

ओडिसी (ओडिशा) नाट्य शास्त्र में ओधरा मगध शैली का आधुनिक ओडिसी के एक अग्रदूत के रूप में उल्लेख किया गया है।

• ओडिसी अपनीकामुक और गीतात्मक प्रकृति, प्रेम, जुनून और दिव्यता के मिश्रण के लिए जाना जाता है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: कथक की अनूठी पहचान

1. **कथक की अनूठी पहचान**
2. **लयबद्ध बनावट और संगीत**
3. **प्रसिद्ध कथक कलाकार**
4. **पोशाक**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कथक की अनूठी पहचान

मुख्य परीक्षा दृष्टि: ओडिसी अपनीकामुक और गीतात्मक प्रकृति, प्रेम, जुनून और दिव्यता के मिश्रण के लिए जाना जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कथक की अनूठी पहचान • लयबद्ध बनावट और संगीत • प्रसिद्ध कथक कलाकार • पोशाक • प्रसिद्ध कलाकार | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2017

• यह जल के अवयवों का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण है।

• पहले महरी (मूल रूप से मंदिर नर्तक) ओडिसी के संरक्षक थे लेकिन बाद में शाही दरबार में सेवायोजन (Employment) के कारण यह नृत्य शैली ख़राब हो गई।

• गोटीपुआ (महिलाओं के वेश में युवा लड़के) को नृत्य शैली मेंप्रशिक्षित किया गया। उन्होंने मंदिरों और सामान्य मनोरंजन के लिए भी नृत्य किया।

साक्ष्य और विकास

• उदयगिरि और खंडगिरि (भुवनेश्वर, ओडिशा के पास) की गुफाओं में पुरातात्विक साक्ष्य पाए गए।

• कोणार्क का सूर्य मंदिर अपने नाट्य मंडप (नृत्य कक्ष) में नृत्य की गतिविधियों को प्रदर्शित करता है।

प्रमुख गतिविधि और शैली

• भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आसनों और मुद्राओं का उपयोग करने में यह भरतनाट्यम के समान है।
  ◦ इसे "गतिशील मूर्तिकला" के नाम से सुप्रसिद्ध है क्योंकि नर्तक अपने शरीर से जटिल ज्यामितीय आकृतियाँ और ढाँचा बनाते हैं।
  ◦ 'त्रिभंग मुद्रा' अर्थात्शरीर का त्रि-आयामी मुड़ा हुआ रूप इस नृत्य शैली में सहज है। **[UPSC 2013]**

• भाव-भंगिमा चौक (पुरुषत्व) और त्रिभंगा (स्त्रीत्व) मुद्राओं के आस-पास केंद्रित हैं।
  ◦ संतुलित शरीर के वजन के साथ चौक एक वर्ग जैसा दिखता है।
  ◦ त्रिभंग गर्दन, धड़ और घुटनों पर विक्षेपण प्रदर्शित करता है।

• पैर की गति हवा में या जमीन पर सर्पिल या गोलाकार प्रतिरुप का अनुसरण करती है, जो नृत्य की जटिलता और सटीकता को प्रदर्शित करती है।

• **हाथ के इशारे दोहरी भूमिका निभाते हैं:** नृत्य में सजावटी अलंकरण और नृत्य में संचार का साधन।

प्रदर्शन के विभिन्न ढंग

ओडिसी प्रस्तुति के एक व्यवस्थित क्रम का पालन करता है जिससे वांछित भावनात्मक अभिव्यक्ति (रस) सुनिश्चित होती है।

- **मंगलाचरण (आह्वान):** प्रदर्शन मंगलाचरण के साथ शुरू होता है जहाँ नर्तक फूलों के साथ प्रवेश करता है और उन्हें पृथ्वी पर अर्पित कर देता है। यह अंश भगवान, गुरु और दर्शकों को अभिवादन करने वाले एक नृत्त अनुक्रम के साथ समाप्त होता है।
- **बाटू (मूल नृत्य):** यह मौलिक नृत्य तकनीक का अनुसरण करता है, जो पुरुषत्व और स्त्रीत्व के द्वंद्व पर जोर देता है। यह बटुके श्वर भैरव या शिव की स्तुति में किया जाता है।
- **पल्लवी (अलंकरण):** यह संगीत और गतिविधियों का पुष्पन और अलंकरण है। नृत्य जटिल पैटर्न बनाता है, जोताल संरचना के भीतर लयबद्ध विविधताओं को प्रकट करता है।
- **अभिनय (भावनात्मक कहानी):** नर्तक जयदेव, उपेन्द्र भांजा और गोपाल कृष्ण की रचनाओं पर भी प्रदर्शन करते हैं।

जयदेव के गीत गोविंद की अष्टपदी ओडिसी में प्रदर्शित की जाती है। यह नायक-नायिका भाव (नायक-नायिका भावना) और काव्यात्मक समृद्धि का उदाहरण है।

- **मोक्ष (मुक्ति):** यह एक समापन भाग है जिसमें कई पल्लवी खंड और अभिनय-आधारित एकांश उपस्थित होते हैं।
- **संगीत और पोशाक:**
  - ओडिसी वादक-समूह में एक पखावज वादक (अक्सर गुरु), एक गायक, एक बांसुरी वादक, एक सितार या वायलिन वादक और एक मंजीरा वादक शामिल होते हैं। इसके साथ ही हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के भी वादक होते हैं।
  - देवदासियों या महरियों की परंपरा को आगे बढ़ाते हैं जिनका लक्ष्य नृत्य के माध्यम से मुक्ति (मोक्ष) है, जो कला के आध्ययात्मिक संबंध की पुष्टि करता है।

प्रसिद्धि दिलाने वाले प्रमुख व्यक्तित्व: गुरु पंकज चरण दास, गुरु के लू चरण महापात्र, सोनल मानसिंह आदि।

कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश) इस नृत्य शैली का नाम आंध्र के गाँव कुसेलवपुरम से लिया गया है। यह मूल रूप से कलाकारों के एक समूह द्वारा गाँव-गाँव जाकर प्रस्तुत किया जाता था जिन्हें कुसेलवास के नाम से जाना जाता था।

- यह पृथ्वी के अवयवों का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण है।
- यह 19वीं सदी तक गाँवों तक ही सीमित रहा तब बालासरस्वती और रागिनी देवी ने इस नृत्य शैली को पुनर्जीवित किया।
- 17वीं शताब्दी में, एक वैष्णव कवि सिद्धेंद्र योगी ने यक्षगान की कुचिपुड़ी शैली की शुरुआत की और भामाकलापम की रचना की। उन्होंने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने के लिए कुचिपुड़ी गाँव के युवा ब्राह्मण लड़कों को प्रशिक्षित किया।
- 1675 ई. में अब्दुल हसन तनाशाह (गोलकुंडा के नवाब) ने इस कला को अपनाने वाले ब्राह्मण परिवारों को अग्रहारम के रूप में कुचिपुड़ी का गाँव प्रदान किया।
- 20वीं सदी के मध्य तक यह नृत्य एक विशिष्ट एकल शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में उभरा। इस प्रकार, अब कुचिपुड़ी के दो रूप हैं: पारंपरिक संगीत नृत्य-नाटिका और एकल नृत्य।
  - एकल नृत्य में मंडुका शब्दम (मेंढक की कहानी), जल चित्र नृत्यम (नृत्य करते समय नर्तक अपने पैरकी उंगलियों सेफर्श पर चित्र बनाता है) आदि सम्मिलित हैं।

कुचिपुड़ी एकल गायन की संरचना

- इसके पाठ भागवत पुराण की कहानियों पर आधारित हैं लेकिन उनका विषय धर्मनिरपेक्ष है। इसमें शृंगार रस की प्रधानता है।
- प्रदर्शन में सोल्लकथ या पटाक्षरा (नृत्य भाग, जहाँ शरीर को हिलाया जाता है) और कावुत्वम्स (नृत्य भाग जिसमें व्यापक कलाबाजी है) किया जाता हैं।
- **प्रदर्शन के ढंग:**
  - नृत्य की शुरुआत देवताओं के आह्वान से होती है। उसके बाद नृत्य होता है जिसमें गैर-कथा और अमूर्त नृत्य शामिल होता है जिसमें जतीस्वरम शामिल होता है।
  - उसके बाद अगला शब्दम है, जो “दशावतार” जैसे इष्ट के साथ एक कथात्मक प्रदर्शन है।
  - “भामाकलापम” से सत्यभामा के प्रवेश तक कथा खंड को सफल बनाती है।
  - इसके बाद गायन शुद्ध नृत्य-अभिनय में बदल जाता है जिसमें साहित्यिक और संगीतमय रूप जैसे पदक, जाविल, श्लोकम उपस्थित होते हैं।
  - प्रदर्शन सामान्य रूप से तरंगम के साथ समाप्त होता है जहाँ कृष्ण-लीला-तरंगिनी के अंश गाए जाते हैं।
    - पीतल की थाली पर खड़े होकर नर्तक पैरों को शकत-वदनम पद में बंद कर लेता है और सिर पर पानी का एक घड़ा रखकर कलाबाजी कौशल प्रदर्शित करता है।
- **संगीत:**

- कुचिपुड़ी नृत्य शास्त्रीय कर्नाटक संगीत के साथ होता है।
- एक मृदंग वादक, एक वायलिन या वीणा वादक और एक झांझ वादक वाद्य समूह का संचालन करता है और "सोलुकट्टस" (लय शब्दांश) का पाठ करता है।

प्रसिद्ध कलाकार: राधा रेड्डी और राजा रेड्डी, यामिनी कृष्णमूर्ति, इंद्राणी रहमान आदि।

सत्रिया (असम) इसकी उत्पत्ति 15वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान वैष्णव आस्था को बढ़ावा देने के लिए शंकरदेव के प्रयासों से हुई थी। ये गीतशंकरदेव की रचनाएँहैंजिन्हें'बोरगीत' के नाम से जाना जाता है।

- असमिया नृत्य और नाटक के नव-वैष्णव निधि को वैष्णव मठों द्वारा पोषित और संरक्षित किया गया है जिन्हें सत्र के नाम से भी जाना जाता है।

[UPSC 2014]

- इस नृत्य शैली को इसके धार्मिक चरित्र और सत्रों के साथ जुड़ाव के कारण उपयुक्त रूप से सत्रिया नाम दिया गया है।

- नव-वैष्णव आंदोलन से पहले असम में दो नृत्य शैलियाँ प्रचलित थीं - ओजापाली और देवदासी।
- बिहू और बोडो जैसे विभिन्न असमिया लोक नृत्यों से भी प्रेरणा ली गई जिसमें हाथों के साझे इशारे और लयबद्ध शब्दांश सम्मिलित थे।

विशेषताएँ

- यह संगीत, नृत्य और नाटक का मिश्रण है, जिसे 'भोकोट' नाम से जाने जाने वाले पुरुष भिक्षुओं द्वारा अपने दैनिक अनुष्ठानों या यहाँ तक कि त्योहारों पर समूहों में प्रस्तुत किया जाता है।
- सत्रिया नृत्य गायन और नृत्य पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जिसमें भाषण और संवाद पर न्यूनतम जोर दिया जाता है।
- खोल (ड्रम), झांझ (मंजीरा) और बांसुरी उपयोग किए जाने वाले प्राथमिक वाद्यंत्र हैं।
- **वेशभूषा:**
  - 'धोती' और 'पगुरी' (पगड़ी) चादर पुरुष नर्तकों द्वारा पहनी जाती है।
  - महिलाएँ रेशम से बने पारंपरिक असमिया आभूषण, 'घुरी' और 'चादर' काँची या कमर का कपड़ा पहनती हैं।
- इसमें लास्य और तांडव दोनों तत्त्वों का समावेश है।
- यह नृत्य हस्त मुद्रा, पैरों का उपयोग, आहार्य (वेशभूषा) और संगीत को नियंत्रित करने वाले सुपरिभाषित सिद्धांतों का पालन करता है।
- **परंपरा में दो अलग-अलग धाराएँ सम्मिलित हैं:**
  - भाओना - यहगायन-भयानर नाचसे शुरू होकर खरमनार नाचतक प्रदर्शनों की सूची से संबंधित है।
  - चाली, राजघरिया चाली, झुमुरा, नाडु भंगी आदि, स्वतंत्र नृत्य समूह हैं। चाली की विशेषता शालीनता और लावण्य है, वहीं झुमुरा शक्ति और प्रभावशाली सौन्दर्य का परिचय देता है।

अंकिया नट

शंकरदेव के नाटकों के प्रदर्शन को लोकप्रिय रूप से अंकिया नट या अंकिया भाओना के नाम से जाना जाता है।

- अंकिया नट की रचना भक्ति के प्रचार-प्रसार के लिए की गई थी।
- यह नृत्त, नृत्य और नाट्य को मिलाकर बनाया गया एक नाट्य रूप है।

प्रसिद्ध कलाकार: जतिन गोस्वामी, घनकांत बोरा, कृष्णाक्षी कश्यप, आदि। मोहिनीअट्टम (केरल) यह एक शास्त्रीय एकल नृत्य शैली है जिसका नाम हिंदू पौराणिक कथाओं में दिव्य जादूगरनी 'मोहिनी' के नाम पर रखा गया है।

यह वायु के अवयवों का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: अंकिया नट



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — अंकिया नट

मुख्य परीक्षा दृष्टि: यह वायु के अवयवों का प्रतीक द्वारा प्रस्तुतीकरण है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: अंकिया नट • प्रदर्शन के ढंग • संगीत • प्रसिद्ध कलाकार • वेशभूषा | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2014

इस नृत्य शैली की उत्पत्ति एक पौराणिक कहानी से जुड़ी है जहाँ समुद्र मंथन और भस्मासुर के वध के दौरान भगवान विष्णु ने असुरों को लुभाने के लिए मोहिनी का रूप धारण किया था।

- **ऐतिहासिक संदर्भ:** व्यवहारमाला (मझमगलम नारायणन नाम्पुतिरी द्वारा) और घोषयात्रा (कवि कुंजन नांबियार द्वारा)।
- महाराजा कार्तिका तिरुनल और महाराजा स्वाति तिरुनल (18वीं-19वीं शताब्दी ईस्वी) ने नृत्य को इसके वर्तमान शास्त्रीय प्रारूप में संरचित किया।
- नांगियार औरनांबियार समुदाय की महिलाएँ अभी भीमंदिर परिसर के भीतर प्रदर्शन करके इस परंपरा को संरक्षित करती हैं।

विशेषताएँ

- यह कथकली की शक्ति के साथ भरतनाट्यम की शालीनता और लावण्य को प्रदर्शित करता है।
- अचानक झटके या छलांग के बिना सुंदर, नाजुक शरीर की गतिविधियाँ और चेहरे के सूक्ष्म भाव ही इस नृत्य की विशेषता है।
  - यह लास्य शैली से संबंधित है, जो स्त्रीत्व, कोमलता और शोभा पर जोर देती है।
  - पैरों का प्रयोग धीरे-धीरे और बिना थपथपाए किया जाता है।
- हाथ के इशारों और मुखाभिनय पर जोर दिया जाता है जिसमें चेहरे के सूक्ष्म भाव शामिल होते हैं।
  - हाव-भाव को हस्तलक्षण दीपिका, नाट्य शास्त्र, अभिनय दर्पण और बलरामभारतम जैसे ग्रंथों से उधार लिया गया है।
- **प्राकृतिक और यथार्थवादी अभिव्यक्तियों से निकटता:** हाव-भाव और चेहरे के भाव नाटकीय या कठोर पारंपरिक (नाट्यधर्मी) के विपरीत, प्राकृतिक (ग्राम्य) और यथार्थवादी (लोकधर्मी) शैलियों के साथ अधिक संरेखित होते हैं।
- सुनहरे रंग के बनावटी जरी वस्त्र के साथ सफे द और धूमिल सफेद साड़ी इसमे पहनी जाती है।
- चेहरे पर कोई विस्तृत शृंगार नहीं और नर्तकी अपने टखनों पर घंटियों (घुंघरू) के साथ चमड़े का पट्टा पहनती है।
- 'अटावाकुल या अटावुस' चालीस बुनियादी नृत्य गतिविधियों का एक संग्रह है।
- इस नृत्य में प्रयुक्त होने वाले संगीत वाद्यंत्र झांझ, वीणा, ढोल, बांसुरी आदि हैं।

प्रसिद्ध कलाकार: सुनंदा नायर, कलामंडलम क्षेमवती, माधुरी अम्मा, जयप्रभा मेनन आदि।

भारतीय नृत्य शैलियों का राज्यवार विवरण

आंध्र प्रदेश: ढिम्सा, कोलाट्टम, बुट्टा बोम्मलु।

अरुणाचल प्रदेश: पोनुंग (आदि जनजाति द्वारा किया जाने वाला फसल नृत्य), टापू नृत्य (अरन के त्योहार के दौरान केवल पुरुषों द्वारा किया जाने वाला युद्ध नृत्य), पक्कू इतु (अपातानी जनजाति; पौधों की रक्षा के लिए लगे पक्षियों और बच्चों के बीच खेले जाने वाले खेल को दर्शाता है), रिखमपाड़ा (नयिशी जनजाति)।

असम: ओजा-पाली, बिहू, बागुरुम्बा (बोडो लोगों का पारंपरिक नृत्य), झुमुरा होबजनाई।

बिहार: बिरहा, जाट-जाटिन, जोगीरा, चैती।

छत्तीसगढ़: सैला (फसल कटाई के बाद का नृत्य), सुवा या सूवा (तोता नृत्य), गौर मारिया (बस्तर)।

गोवा: तरंगामेल (दशहरा और होली के अवसरों पर किया जाने वाला प्रदर्शन), घोडेमोदनी (शिग्मो के त्योहारों के दौरान किया जाने वाला मार्शल आर्ट और घोड़ा नृत्य का मिश्रण), पेर्नी जागोर (प्राचीन मुखौटा नृत्य, गणतंत्र दिवस परेड 2016), रानामाले, रोम्टा मेल, फुगड़ी।

गुजरात: टिपपानी, रथवानी घेर, डांडिया रास, ढोलो राणो, सिद्धियों का धमाल, शिकार नृत्य, घेरिया नृत्य और आलेनी-हालेनी।

हरियाणा: फाग (किसानों का नृत्य), स्वांग, धमाल।

हिमाचल प्रदेश: दांदरास, छरबा, छम छनक।

झारखंड: मर्दानी झूमर, पाइका नृत्य, सरायके ला छऊ नृत्य।

कर्नाटक: यक्षगान (यक्ष का गीत), डोल्लू कुनिथा, वीरागसे, उम्मट-आट, बयालता, कामसले, हुलिवेशा (टाइगर नृत्य), बूटा कोला (कंतारा फिल्म), गारुडी गोम्बे, जूडु हलिगी। **[UPSC 2014]**

केरल: चक्यार कूथु, नांग्यार कूथु, कुटियाट्टम (यूनेस्को द्वारा मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत की उत्कृष्ट कृति के रूप में मान्यता प्राप्त), पंडयानी, और थुल्ल।

मध्य प्रदेश: स्वांग, जवारा, मटकी, बरेदी, नौरता, अहिराई, भगोरिया और परधौनी।

महाराष्ट्र: धनगरी गाजा, लावणी, पोवाड़ा नृत्य।

मणिपुर: थांग-ता, कार्तल चोलोम या सिम्बल नृत्य, जगोई, थाबल चोंगबा, टंडनन फीचक (फसल नृत्य) और लाई चिंगथोकपा। लाई हराओबा उत्सव/नृत्य का एक रूप है जो मणिपुर में सभी शैलीबद्ध नृत्यों का आधार बनता है। **[UPSC 2018]**

मेघालय: नोंगक्रेम, चाड लाहो, चाड सुकरा (बुवाई उत्सव), चाड प्लियांग या 'प्लेट डांस', अजेमा रोआ (गारो), चाम्बिल मोआ और नेप्सेपग्रिका।

मिजोरम: चेराव, छीह लाम, सो लाकिया, खुल्लम।

नागालैंड: आलुयट्टु, अगुर्शिकुकुला, बटरफ्लाई डांस, चांगाई डांस, लेशालाप्टु, मोडसे, मोन्योआशो, सदल के काई, मोयाशाई, खुपीलीली, ज़ेलियांग डांस, चांग लो।

ओडिशा: दलखाई नृत्य, मयूरभंज छऊ, डंडा यात्रा, रानापा और घुमुरा नृत्य।

पंजाब: भांगड़ा, गिद्दा, लुड्डी, जुल्ली, गतका।

राजस्थान: भवई, घूमर, कालबेलिया और तेरह ताली।

सिक्किम: भूटिया नृत्य, लेप्चा नृत्य, सिंघी छम।

तमिलनाडु: कराकाट्टम, कुम्मी, कोलाट्टम, मयिल अट्टम, पोइक्कल कुदिराई अट्टम, थेरु कुथु, ओट्टन कुथुप, सेवई अट्टम।

तेलंगाना: पेरिनी शिवतांडवम और चिंदु भागवतम।

त्रिपुरा: होजा गिरी, धमैल, मैमाता, गरिया, लेबांग बोमानी, संगराईमोघ नृत्य, चॉन लैम, मोसाक सुमानी फीफिट लैम, वाइखोंग लैम, लैम-लैम और दार-लैम और खोंगिलाम नृत्य।

उत्तराखंड: लंगविर नृत्य, चंफुली, छोलिया नृत्य, चांचरी नृत्य, कुमाऊं का झोड़ा नृत्य और हुरकिया बौल।

पश्चिम बंगाल: पुरुलिया छऊ , गौड़ीय नृत्य, अलकप, रवीन्द्र नृत्य, ढली, रायबेंशे, ब्रताचारी, काली नाच, बाउल नृत्य।

लद्दाख: जाब्रो, तुखस्तान्मो, शोंडोल, शॉन और कोशन। भारतीय शास्त्रीय नृत्य संबंधी महत्त्वपूर्ण ग्रंथ ग्रंथ लेखक समयावधि विवरण नाट्यशास्त्र भरत मुनि 200 ईसा पूर्व – 200 ईस्वी प्रदर्शन कलाओं पर आधारभूत ग्रंथ, जिसमें नृत्य, नाटक, और संगीत सम्मिलित हैं। "रस" और "अभिनय" की अवधारणाओं का परिचय।

अभिनय दर्पण नंदिके श्वर 4वीं – 5वीं सदी — ईस्वी

शास्त्रीय नृत्य में उपयोग होने वाले संकेतों, चेहरे के भावों और शारीरिक गतियों पर विस्तृत ग्रंथ।

कविराजमार्ग राजा अमोघवर्ष 9वीं सदी ईस्वी कर्नाटक में भारतीय नृत्य की प्रारंभिक परंपराओं के संदर्भ शामिल।

अभिनवभारती अभिनवगुप्त 10वीं सदी ईस्वी नाट्यशास्त्र पर टिप्पणी, रस सिद्धांत के दार्शनिक पहलुओं पर गहन चर्चा।

दशरूपक धनंजय 10वीं सदी ईस्वी नाटक सिद्धांत पर चर्चा, जिसमें नृत्य भी शामिल है और नाटकों एवं प्रदर्शन की संरचना पर ध्यान केंद्रित।

संगीत रत्नाकर सारंगदेव 13वीं सदी ईस्वी संगीत और नृत्य पर व्यापक ग्रंथ, जिसने कर्नाटक और हिंदुस्तानी परंपराओं को प्रभावित किया।

नाट्य दर्पण श्री रामकृष्ण 16वीं सदी ईस्वी नृत्य रूपों की बारीकियों को समझाने वाला ग्रंथ, जिसमें तकनीकी शब्दावली और प्रदर्शन पद्धतियाँ शामिल।

नृत्त रत्नावली पंडरिक विठ्ठल 16वीं सदी ईस्वी नृत्त (शुद्ध नृत्य) के तकनीकी पहलुओं पर विस्तृत जानकारी।

बलरामभरतम राजा राम वर्मा 18वीं सदी ईस्वी केरल का एक ग्रंथ, जो नाट्य और भक्ति (भक्ति) के बीच संबंध पर केंद्रित है।

नाट्य शास्त्र प्रकाशिका तंजौर चतुष्टय 19वीं सदी ईस्वी भरतनाट्यम की संरचना और प्रारूप को संहिताबद्ध किया, जिसने आधुनिक प्रदर्शन को प्रभावित किया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: अभिनय दर्पण नंदिके श्वर 4वीं – 5वीं सदी

1. ईस्वी	**2. मिजोरम**
3. नागालैंड	**4. ओडिशा**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — अभिनय दर्पण नंदिके श्वर 4वीं – 5वीं सदी

मुख्य परीक्षा दृष्टि: नाट्य शास्त्र प्रकाशिका तंजौर चतुष्टय 19वीं सदी ईस्वी भरतनाट्यम की संरचना और प्रारूप को संहिताबद्ध किया, जिसने आधुनिक प्रदर्शन को प्रभावित किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: ईस्वी • मिजोरम • नागालैंड • ओडिशा • पंजाब

IUC विशेष स्मृति सूत्र #8: गांधार बनाम मथुरा बनाम अमरावती कला

ट्रिक: 'गांधार नीली-धूसर ग्रीक-रोमन (कुषाण), मथुरा लाल बलुआ पत्थर स्वदेशी (तीनों धर्म), अमरावती सफेद संगमरमर कथात्मक (सातवाहन)'।

भारतीय संगीत

6 भारतीय संगीत का इतिहास

- सिंधु घाटी सभ्यता के स्थलों से सात छेद वाली बाँसुरी और रावणहत्था (एक तार वाद्यंत्र) सहित कई संगीत वाद्यंत्र मिले हैं। जिससे ज्ञात होता है कि संगीत भारतीय उपमहाद्वीप में आध्यऐतिहासिक काल से ही रचा बसा है।
- संगीत कला का पहला वास्तविक उल्लेख 500 ईसा पूर्व में पाणिनि द्वारा किया गया था।
- भरत के नाट्यशास्त्र (200 ईसा पूर्व और 200 ईसवी) में संगीत सिद्धांत का पहला संदर्भ मिलता है।
  - इसमें 22 कुंजियों या श्रुतियों का उल्लेख किया गया है।
  - नाट्यशास्त्र में सप्तक (सात स्वरों का समूह), विभिन्न राग, ताल और संगीत वाद्यंत्रों की जानकारी सम्मिलित हैं।
  - दो मानक सप्तकों को मान्यता दी गई और उन्हें ग्राम कहा गया।
  - प्रत्येक ग्राम से सहायक स्वर प्राप्त होते हैं, जिन्हें मूर्च्छना कहा जाता है।
- वैदिक साहित्य

- ऋग्वेद के स्तोत्र को ऋचा कहा जाता था।
- यजुर्वेद में धार्मिक मंत्र मिलते हैं।
- सामवेद में राग खरहर प्रिया के सभी सात स्वर सम्मिलित हैं।
- गांधर्व वेद या संगीत का विज्ञान, सामवेद का एक उपवेद है।
- ऐतरेय आरण्यक में वाद्यंत्र वीणा के भागों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।
- जैमिनी ब्राह्मण में नृत्य और संगीत का उल्लेख किया गया है।कौषीतकी ब्राह्मण में नृत्य, गायन और वाद्य संगीत के मिश्रण का एक कला के रूप में उल्लेख किया गया है।

• उत्तर वैदिक काल के दौरान, संगम एक प्रकार का अनुष्ठानिक संगीत था जिसमें स्तोत्रों का जाप शामिल होता था जिन्हें सामान्य रूप से संगीत में पिरोया जाता था। महाकाव्यों को एक कथात्मक प्रकार के संगीत में पिरोया जाता था जिसे जातिगायन (Jatigayan) कहा जाता था।

• इलंगो आदिगल (दूसरी शताब्दी) द्वारा लिखित शिलप्पादिकारम में भी संगीत के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

• मतंग मुनि (छठी-आठवीं शताब्दी) द्वारा रचित बृहद्देशी में नाद, श्रुति, स्वर, तान आदि जैसे पहलुओं की व्याख्या की गई है।

• 11वीं सदी में संगीत मकरंद ग्रंथ की रचना नारद नंद ने की थी, इसमें 93 रागों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है तथा उन्हें स्त्रीलिंग और पुल्लिंग रूपों में वर्गीकृत किया गया है।

• सारंगदेव द्वारा रचित संगीत रत्नाकर (13वीं शताब्दी) में लगभग 264 रागों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसमें असंख्य श्रुतियों को पहचाना, चिह्नित और वर्गीकृत किया गया है।

भारतीय संगीत के तत्त्व

भारतीय संगीत तीन मुख्य स्तंभों: राग, ताल और स्वर पर आधारित है।

• **स्वर:** इसका मुख्य अभिप्राय संगीत रचना में 'तान' या 'स्वरों की तीव्रता' से है। बाईस स्वरों में से बारह स्वरों को स्वर-स्थान कहा जाता है और शेष स्वर रागों में बजाए जाते हैं।

• **राग:** यह धुन (Melody) के आधार का प्रतीक है।

• **ताल:** यह लय (Rhythms) के आधार का प्रतीक है। ताल, संगीतमय लय में भारत के विशिष्ट योगदानों में से एक है। ताल चक्रीय रूप से व्यवस्थित समय इकाइयों की एक प्रणाली है। लघु, गुरु और प्लुत काल विभाजन की मूलभूत इकाइयाँ हैं।

अन्य तत्त्व

• **रस:** गायन और वादन से उत्पन्न होने वाले भाव, रस कहलाते हैं। जैसे: श्रृंगार रस।

• **थाट:** यह रागों के विभिन्न समूहों में वर्गीकरण से जुड़ी प्रणाली है।

जैसे: बिलावल, असावरी आदि।

• **समय:** प्रत्येक राग के गायन का एक निश्चित समय होता है। संगीत रूप उन्हें दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया गया है: अनिबद्ध (खुला या मुक्त) और निबद्ध (बंद या बँधा हुआ) संगीत।

• अनिबद्ध संगीत वह है जो सार्थक शब्दों और ताल तक सीमित नहीं है। यह एक मुक्त संगीत है। इसका सर्वोत्तम रूप आलाप है।

• **निबद्ध संगीत:** सबसे पहला ज्ञात निबद्ध संगीत प्रबंध गीति है। जयदेव का गीत गोविंद सबसे प्रसिद्ध प्रबंध है।

राग मौसम समय मनोदशा — भैरव प्रत्येक मौसम में भोर शांति — हिंडोल वसंत सुबह युवा रोमांस — दीपक ग्रीष्म रात करुणा — मेघ वर्षा देर रात साहस — श्री शीत शाम खुशी — मालकोश शीत मध्यरात्रि वीरता

शास्त्रीय संगीत

समय के साथ, भारतीय शास्त्रीय संगीत के दो अलग-अलग संप्रदाय विकसित हुए हैं:

• हिंदुस्तानी संगीत (भारत के उत्तरी भाग में, बनारस, ग्वालियर, आगरा, किराना, जयपुर घराना आदि।)

• कर्नाटक संगीत (भारत के दक्षिणी भाग, अधिकांशतः कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और केरल तक सीमित) हि दुस्तानी संगीत

• हरिपाल के 'संगीत सुधाकर' (14वीं शताब्दी ई.) में पहली बार कर्नाटक और हिंदुस्तानी शब्दों का उल्लेख मिला है।

• हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति अमीर खुसरो के समय से मानी जा सकती है, उन्होंने विशिष्ट वाद्यंत्रों पर संगीत प्रस्तुत करने की प्रथा को बढ़ावा दिया। उन्होंने नए रागों की शुरुआत की और उन्हें सितार तथा तबले का आविष्कारक माना जाता है।

विशेषताएँ

• इस संगीत पद्धति में शुद्ध स्वर सप्तक को अपनाया गया, जिसे प्राकृतिक स्वरों के सप्तक (अष्टक) के रूप में भी जाना जाता है।

• प्राचीन समय में यह गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक प्रसारित होता था।

• इसे तबला, सारंगी, सितार, बाँसुरी, वीणा और संतूर पर बजाया जाता है।

• इसकी दस प्रमुख गायन शैलियाँ हैं - ध्रुपद, खयाल ,टप्पा, चतुरंग, तराना, सरगम, ठुमरी और रागसागर, होरी और धमार।

हि दुस्तानी संगीत की प्रमुख शैलियाँ ध्रुपद

• ध्रुपद में राग का काव्यात्मक रूप के साथ सटीक और व्यवस्थित विस्तार शामिल है।

• यह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सबसे प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ शैलियों में से एक है तथा इसका संदर्भ नाट्यशास्त्र में मिलता है। इसकी उत्पत्ति वैदिक स्तोत्रों और मंत्रों (सामवेद) के जाप से मानी जाती है।

• ध्रुपद के दो भाग हैं, अनिबद्ध खंड और संचारी ध्रुपद।

• ग्वालियर के राजा मान सिंह तोमर ने ध्रुपद के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई।

  ◦ सम्राट अकबर के दरबार में तानसेन, बाबा गोपाल दास और हरिदास के अधीन यह अपने चरम पर पहुँच गया।

  ◦ ध्रुपद के अन्य प्रस्तावक बैजू बावरा और स्वामी हरिदास थे।

• आलाप, रचित छंदों से पहले प्रस्तुत किया जाता है, जो सामान्य रूप से प्रदर्शन का सबसे लंबा भाग होता है। ध्रुपद संस्कृत मंत्रों से लिए गए पवित्र संस्कृत अक्षरों का उपयोग करके आलाप की धीमी, ध्यानपूर्ण प्रस्तुति पर जोर देता है।

[UPSC 2012]

संगीत घराने का तात्पर्य:

• घराना हिंदुस्तानी संगीत में सामाजिक संगठन की एक प्रणाली है, जो संगीतकारों या नर्तकियों को एक विशिष्ट संगीत शैली का प्रशिक्षण देने, वंशावली और उसके प्रति समर्पण के माध्यम से एक साथ जोड़ता है। यह संगीत की एक व्यापक विचारधारा को भी दर्शाता है।

• **प्रमुख घराने:** ग्वालियर घराना, आगरा घराना, जयपुर अतरौली घराना, रामपुर सहसवान घराना।

• वाणियों/बानियों के आधार पर ध्रुपद गायन को चार रूपों में विभाजित किया जा सकता है: डागर घराना, दरभंगा घराना, बेतिया घराना, तलवंडी घराना।

खयाल

इसका श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है और इसे "बंदिश" भी कहा जाता है।

यह दो से आठ पंक्तियों वाले संक्षिप्त गीतों के संग्रह पर आधारित होता है। खयाल में एक संक्षिप्त पाठ होता है और यह एक विशिष्ट राग और ताल में रचा जाता है।

यद्यपि, इसमें जरूरत के अनुसार बदलाव करने की गुंजाइश होती है।

• गीत के प्रमुख विषय राजाओं की स्तुति, ऋतुओं का वर्णन, भगवान कृष्ण की लीलाएँ, दिव्य प्रेम आदि होते हैं। यह ध्रुपद से भी अधिक गीतात्मक होता है।

• **खयाल के प्रमुख घराने:** किराना (अवध), ग्वालियर, आगरा, पटियाला और भिंडीबाजार घराने।

• पंडित भीमसेन जोशी किराना घराने के उन्नायक थे। उन्होंने मियाँ की तोड़ी और भीमपलासी जैसे रागों का प्रयोग किया। उन्हें वर्ष 2008 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उन्हें प्रसिद्ध वीडियो "मिले सुर मेरा तुम्हारा" के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।

• ग्वालियर घराना सबसे पुराना होने के कारण सभी घरानों की जननी माना जाता है।

तराना

• इसके लिए लय अत्यंत आवश्यक है। धुन इसका आधार होती है।

• इसे तीव्र गति से गाया जाता है और इसमें बहुत सारे शब्द शामिल होते हैं। ठु मरी

• इसकी शुरुआत 18वीं शताब्दी में पूर्वी उत्तर प्रदेश, मुख्य रूप से लखनऊ और बनारस में हुई थी।

• यह संवेदनात्मक और रोमांटिक गायन शैली है, जिसे कभी-कभी "भारतीय शास्त्रीय संगीत का गीत" (The lyric of Indian classical music) कहा जाता है।

• अधिकांश संगीत रचनाएँ प्रेम, विरह और भक्ति से संबंधित होती हैं औरब्रज भाषा में लिखी जाती हैं।

• **अनूठी विशेषता:** भगवान कृष्ण और राधा की कथाएँ।

• खयाल संगीत कार्यक्रम आम तौर पर ठुमरी गायन के साथ समाप्त होता है।

• **तीन प्रमुख ठुमरी घराने हैं:** बनारस, लखनऊ और पटियाला।

• बेगम अख्तर ठुमरी शैली की सबसे प्रख्यात गायिकाओं में से एक थीं। टप्पा

• इसके लिए लय अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

• उत्तर-पश्चिम भारत में ऊँट सवारों के लोक गीत, 18वीं शताब्दी के अंत में इसके विकास का स्रोत थे।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: शास्त्रीय संगीत

1. शास्त्रीय संगीत	**2. संगीत घराने का तात्पर्य**
3. खयाल	**4. तराना**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — शास्त्रीय संगीत

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उत्तर-पश्चिम भारत में ऊँट सवारों के लोक गीत, 18वीं शताब्दी के अंत में इसके विकास का स्रोत थे।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: शास्त्रीय संगीत • संगीत घराने का तात्पर्य • खयाल • तराना • प्रमुख घराने | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2012, 2008

गजल

• यह विरह या प्रिय की मौत के कारण होने वाली पीड़ा के साथ-साथ उस पीड़ा के बावजूद प्रिय के सौंदर्य की एक काव्ययात्मक प्रस्तुति है।

• 12 से अधिक अशआर या शेर गजल में नहीं होते हैं।

• अमीर खुसरो गजल लिखने की कला को समझाने वाले सबसे पहले लोगों में से थे।

• **गजल से जुड़ी प्रसिद्ध हस्तियाँ:** मिर्जा गालिब, मुहम्मद इकबाल, रूमी (13वीं शताब्दी), काजी नजरूल इस्लाम आदि। कर्नाटक संगीत कर्नाटक संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक रूप हैजिसकी उत्पत्ति दक्षिण भारत में हुई थी।

कर्नाटक संगीत में विभिन्न रचनाएँ

गीतम: सबसे सरल प्रकार की संगीत रचना को गीतम कहा जाता है। इसमें बहुत ही सहज और मधुर संगीत प्रवाह तथा बहुत ही सरल संरचना होती है।

सुलादी: सुलादी, गीतम की तुलना में उच्च कोटि के होते हैं, लेकिन ये भक्ति विषयक होते हैं।

विलंबिता, मध्य और द्रुपता तीन गतियाँ हैं, जिनमें सुलादी की रचना की जाती है।

स्वराजति: वे वर्णम सीखने के लिए पूर्व संकेतक हैं। इसे तीन भागों में विभाजित किया गया है: पल्लवी, अनुपल्लवी, और चरणम।

वर्णम: यह उत्कृष्ट संगीत कौशल का एक उदाहरण है, जिसमें उस राग का प्रत्येक परिभाषित तत्त्व शामिल होता है जिस पर यह आधारित होता है।

जतिस्वरम: इसमें कोई गीत या शब्द नहीं होता है और यह संगीत संरचना में स्वराजति के समान है। यह नृत्य संगीत श्रेणी के अंतर्गत आता है।

कीर्तनम: कीर्तनम भक्ति भाव पूर्ण होता है। यह एकल गायन और समूह गायन दोनों के लिए उपयुक्त है। पल्लवी, अनुपल्लवी और चरण वर्गों का उपयोग करने वाले पहले कीर्तन संगीतकार पंद्रहवीं शताब्दी के तलपकम संगीतकार थे।

कृति: यह संगीत की एक बहुत ही उन्नत शैली है। इस रूप में राग और भाव के समृद्ध और विविध रंग सामने आते हैं। कृति के तीन मूल और आवश्यक अंग पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणम हैं।

पद: पद तमिल और तेलुगु में लिखी गई अकादमिक रचनाएँ हैं। संगीत विषादपूर्ण और धीमी गति वाला होता है। गीत और संगीत के बीच सामंजस्य से संगीत स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता है। अंतर भक्ति और बहिर शृंगार द्वारा प्रस्तुत मधुरा भक्ति इसका प्रमुख विषय होता है।

जावली: वह रचना जो हल्के शास्त्रीय संगीत की श्रेणी में आती है, जावली कहलाती है।

तिल्लाना: तिल्लाना एक लघु और तीव्र रूप है। यह मुख्य रूप से एक नृत्य शैली है, लेकिन अपनी तीव्रता और आकर्षक संगीत के कारण, इसे कभी-कभी संगीत समारोहों में समापन संगीत के रूप में स्थान मिलता है।

पल्लवी: यह रचनात्मक संगीत रचना का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। पल्लवी शब्द के पहले तीन शब्द पदम (शब्द); लयम (समय); और विन्यासम (भिन्नताएँ) हैं।

तानम: यह राग अलापना शाखा से संबंधित है जिसमें आकर्षक लय होती है। इसमें आकर्षक पैटर्न और लयबद्ध प्रवाह होता है। "अनंतम" शब्द को कुशलतापूर्वक मधुर संगीत के पैटर्न में शामिल किया गया है।

प्रमुख समर्थक (Proponents)

• अन्नमाचार्य, जिन्हें अन्नमय्या के नाम से जाना जाता है, 15वीं सदी के संगीतकार, संगीत रचनाकार और एक हिंदू संत थे। वह संकीर्तन नामक गीतों की रचनाकरने वाले सबसे पहले ज्ञात भारतीय संगीतकार हैं। उनके भक्तिपूर्ण संकीर्तन, विष्णु के एक रूप वेंकटेश्वर की स्तुति में रचित थे। उनकी रचनाओं को अध्ययात्म (आध्ययात्मिक) और शृंगार (रोमांटिक) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। वह अपने युग में अस्पृश्य जातियों के प्रति सामाजिक कलंक का विरोध करने वाले पहले कुछ लोगों में से एक थे। **[UPSC 2018]**

• **पुरंदर दास (16वीं शताब्दी):** कर्नाटक संगीत के पितामह के रूप में जाने जाते हैं, उनकी रचनाएँ भगवान कृष्ण की स्तुति में थीं। उनकी प्रसिद्ध रचना दास साहित्य है।

• **क्षेत्रेय (17वीं शताब्दी):** भगवान कृष्ण की स्तुति में उनके तेलुगु पदम विशेषकर भरतनाट्यम और कुचिपुड़ी प्रदर्शनों में आज भी गाए जाते हैं।

• **भद्राचल रामदासु (17वीं शताब्दी):** तेलुगु कवि थे जो भगवान राम की स्तुति में लिखते थे।वह एक प्रसिद्ध वाग्गेयकारा (गीत रचनेके साथ-साथ उन्हें संगीत में पिरोने वाले) थे।

• **वेंकटमाखिन (17वीं शताब्दी):** उन्होंने चतुर्दंडीप्रकाशिका की रचना की, जिसमें उन्होंने रागों को वर्गीकृत करने की मेलाकर्ता प्रणाली की शुरुआत की।

• कर्नाटक संगीत की रचनाओं का श्रेय तीन संगीतकारों को दिया जा सकता है जिन्होंने 1700 से 1850 ईसवी तक अनेक रचनाएँ लिखीं। वे थे त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर और श्याम शास्त्री।

  ◦ त्यागराज ने हजारों भक्ति रचनाएँ लिखीं, जिनमें से ज्यादातर तेलुगु में और राम की स्तुति में थीं, जिनमें सबसे लोकप्रिय “नागुमोमु”, पंचरत्न कृतियाँ और उत्सव संप्रदाय कृतियाँ थीं। **[UPSC 2018]**

  ◦ **मुथुस्वामी दीक्षितर:** उन्होंने हिंदू देवताओं से संबंधित संस्कृत में रचनाएँ लिखी। उन्होंने वीणा वादन किया और अलंकारों के प्रयोग पर जोर दिया।

  ◦ **श्याम शास्त्री:** त्रिमूर्ति में सबसे बुजुर्ग थे, उनकी तेलुगु रचनाएँ देवी कामाक्षी की स्तुति मेंहैं। उन्होंने स्वरजाति संगीत शैलीकी शुरुआत की।

• **19वीं सदी के कुछ उल्लेखनीय संगीतकार थे:** महा वैद्यनाथ अय्यर, पटनम सुब्रह्मण्य अय्यर और रामनाद श्रीनिवास आयंगर।

• सुब्बाराम दीक्षितार द्वारा वर्ष 1904 में रचित संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी पिछली शताब्दियों के संगीत, संगीतकारों और संगीत रचनाकारों के बारे में जानकारी के लिए एक प्रमाण के रूप में कार्य करती है।

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच समानताएँ

• संगीत के दोनों रूपों का विकास सामान्य धार्मिक और आध्ययात्मिक विषयों के साथ वैदिक परंपरा के साथ-साथ संस्कृत भाषा लिपियों से प्रभावित था।

• स्वर, राग और ताल के मूल तत्त्व दोनों के आधार के रूप में काम करते हैं।

• दोनों की केंद्रीय धारणा राग है।

• मधुर संगीत दोनों शैलियों की मुख्य विशेषता है। हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत की तुलना पहलू/पक्ष हिंदुस्तानी संगीत कर्नाटक संगीत भौगोलिक उत्पत्ति उत्तर और मध्य भारत। दक्षिणी भारत (तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल)।

ऐतिहासिक प्रभाव फारसी, इस्लामी और मुगल परंपराओं से अत्यधिक प्रभावित।

इसकी जड़े प्राचीन हिंदू परंपराओं और संस्कृत ग्रंथों में निहित हैं।

बाह्य प्रभाव न्यूनतम।

बल या केंद्रित रागों के सुधार और उनके अन्वेषण या खोजों पर बल। पूर्व-रचित खंडों (कृति) और जटिल कृति ।

प्रमुख ग्रंथ संगीतरत्नाकर, राग दर्पण। चतुर्दंडी प्रकाशिका, स्वरमेल कलानिधि।

प्रमुख शैलियाँ खयाल, ध्रुपद, ठुमरी, टप्पा, तराना। कृति, वर्णम, पदम, जावली, और तिल्लाना प्रदर्शन शैली धीमा और विस्तृत राग का विस्तार (अलाप)। निर्धारित खंडों में सुधार के साथ उच्च संरचित रचनाएँ (जैसे, कल्पना स्वर, राग अलापना)।

अलंकरण का उपयोग मींड (फिसलन) और गमक (दोलन) जैसे सूक्ष्म अलंकरण का उपयोग।

भारी और जटिल अलंकरण जैसे गमक (दोलन) और ब्रिघा (तीव्र स्वर)।

राग प्रणाली व्याख्या में क्षेत्रीय विविधता वाले राग कम हैं। 72 मेलकर्ता रागों (Melakarta Ragas) और असंख्य जन्य रागों (Janya Ragas) की एक संरचित प्रणाली।

ताला प्रणाली सरल लयबद्ध चक्र या क्रम,जिन्हें प्रायः आशु रचना अर्थात्तात्कालिकता के साथ प्रदर्शित किया जाता था।

जटिल लयबद्ध क्रम या पैटर्न और क्रमपरिवर्तन के साथ अत्यधिक जटिल ताल प्रणाली।

भाषा हिंदी, ब्रज भाषा, उर्दू और फ़ारसी में गीत। गीत प्रमुख तौर पर संस्कृत, तेलुगु, तमिल और कन्नड़ में हैं।

यंत्र और उपकरण सितार, तबला, सरोद, सारंगी, शहनाई, हारमोनियम। वीणा, मृदंगम, वायलिन, बांसुरी, घटम, कंजीरा।

आश्रय/संरक्षण मुगल दरबारों और क्षेत्रीय राजाओं के अंतर्गत फला-फूला।

मंदिरों और भक्ति प्रसंगों में इसका प्रचलन बढ़ा, परवर्ती काल में इसे संगीत समारोहों के लिए अनुकूलित किया गया।

सांस्कृतिक विषय-वस्तु/थीम प्रेम, प्रकृति और दार्शनिक विषयों के साथ धर्मनिरपेक्षता और भक्ति पर केंद्रित।

प्रमुख तौर पर भक्ति, पौराणिक कथाओं, देवताओंऔर आध्ययात्मिकता पर केंद्रित।

हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच अंतर — हिंदुस्तानी संगीत कर्नाटक संगीत

• इसे थाट में विभाजित किया गया है। इसमें कुल 6 राग हैं।

• संगीत प्रणाली के अंतर्गत विभिन्न घराने हैं।

• वाद्य और गायन पर समान जोर दिया जाता है।

• जरूरत के अनुसार बदलाव करने की अधिक गुंजाइश होती है।

• मुख्य फोकस रागों पर है।

• अफगान, फारसी और अरबी तत्वों से प्रभावित है।

• परंपरागत रूप से बाँसुरी, वायलिन, तबला, सारंगी, सितार और संतूर का उपयोग किया जाता था।

• मेलाकर्ता राग और जन्य राग में विभाजित किया गया है।

• घराने जैसी कोई अवधारणा नहीं है।

• स्वर संगीत पर अधिक जोर दिया जाता है।

• बदलाव करने की कम गुंजाइश होती है।

• मुख्य फोकस ताल पर है।

• यह स्वदेशी तत्त्वों पर आधारित है।

• परंपरागत रूप से बाँसुरी, वायलिन, वीणा, मृदंगम और मैंडोलिन का उपयोग किया जाता था।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के बीच अंतर

मुख्य परीक्षा दृष्टि: परंपरागत रूप से बाँसुरी, वायलिन, वीणा, मृदंगम और मैंडोलिन का उपयोग किया जाता था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: हिंदुस्तानी संगीत कर्नाटक संगीत

लोक संगीत

लोक संगीत जनता की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है और अद्वितीय संदेश देता है। उनमें अक्सर महत्त्वपूर्ण अनुष्ठानों और ऐतिहासिक घटनाओं पर चर्चा शामिल की जाती है।

लोक संगीत विशेष विवरण लोक संगीत विशेष विवरण बाउल (पश्चिम बंगाल) बाउल संप्रदाय द्वारा गाया जाता है, जिसमें भक्ति और सूफी दोनों प्रभाव हैं।

रसिया गीत

(उत्तर प्रदेश) भगवान कृष्ण की मनोहर लीलाओं पर आधारित ब्रज क्षेत्र के गीत।

वनावन (जम्मू और कश्मीर) विवाह समारोहों के दौरान गाया जाता है। आल्हा (उत्तर प्रदेश) बुंदेलखंड की गाथा, जिसमें आल्हा और ऊदल की वीरता का वर्णन किया जाता है।

भाखा (जम्मू और कश्मीर) फसल कटाई के समय ग्रामीणों द्वारा भाखा गाया जाता है।

घसियारी गीत (उत्तराखंड) यह उन महिलाओं द्वारा गाया जाता है जिन्हें अपने मवेशियों के लिए घास लाने के लिए दूर-दराज के जंगलों में जाना पड़ता है।

पनिहारी (राजस्थान) पानी की कमी के बारे में गीत गाए जाते हैं।

रोमांटिक और घरेलू विषय।

पै (Pai) (मध्य प्रदेश) अच्छे मानसून और फसल के लिए गीत। सैरा नृत्य प्रस्तुत किया जाता है।

डाँडिया (गुजरात) वृंदावन की होली के दृश्यों तथा कृष्ण और राधा की लीला से जुड़ा है। यह नवरात्रि की शाम का एक विशेष नृत्य है।

पंडवानी (छत्तीसगढ़) भीम को नायक मानकर महाभारत की कहानियाँ।

तीजन बाई एक प्रसिद्ध उन्नायक हैं।

मांड (राजस्थान) अर्द्ध-लोक, अर्द्ध-शास्त्रीय शैली। ये गीत राजपूत शासकों की महिमा गाने वाले भाटों के बारे में हैं। मशहूर गाना के सरिया बालम।

दसकठिया (ओडिशा) इसका नाम "काठी" या "राम ताली" नामक एक अद्वितीय संगीत वाद्यंत्र से लिया गया है, प्रस्तुति के दौरान लकड़ी के ताली का उपयोग किया जाता है।

लावणी (महाराष्ट्र) ढोलकी पर पारंपरिक नृत्य और गीत प्रस्तुत किया जाता है।

खुबक एशी (मणिपुर) एक गीत जिसके साथ तालियाँ बजती हैं।

पोवाड़ा (महाराष्ट्र) इन गाथाओं में शिवाजी के गौरवशाली अतीत की घटनाओं और उनके वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन होता है।

औगरी हेन्गेन, हेजिंग

हिराओ (मणिपुर) वे क्रमशः सृजन का गीत और अनुष्ठानिक गीत हैं, जो लाई हरोबा उत्सव के अंतिम दिन गाए जाते हैं।

भावगीते

(कर्नाटक और महाराष्ट्र) विषयों में प्रकृति, प्रेम और दर्शन सम्मिलित हैं।

यह गजल के समान है।

खोंगजोम पर्व (मणिपुर) इसमें वर्ष 1891 में ब्रिटिश सेना और मणिपुरी सेना के बीच लड़ी गई खोंगजोम की लड़ाई का संगीतमय वर्णन होता है।

मांडो (गोवा) भारतीय और पश्चिमी संगीत परंपराओं का अनोखा मिश्रण।

चाय हिया (मिजोरम) चपचार कूट उत्सव के दौरान गाया जाता है।

बिहू गीत (असम) नव वर्ष और और बसंत ऋतु के आगमन से संबंधित हैं।

हेरिलेउ (नागालैंड) युद्ध गीत

टिकिर (असम) इस्लाम की शिक्षाओं का प्रतीक है। तीज गीत (राजस्थान) विषय-वस्तु शिव और पार्वती के मिलन, मानसून के जादू, हरियाली आदि के इर्द-गिर्द घूमती है।

अम्मानईवारी (तमिलनाडु) चोल सम्राट की प्रशंसा में गाया गया। बुर्राकाठा (आंध्र प्रदेश) गाथागीत का अत्यधिक नाटकीय रूप।

विल्लू पट्टू (तमिलनाडु) इसे धनुष गीत भी कहा जाता है। कोलनल्लू (आंध्र प्रदेश) कोलाट्टम के नाम से भी जाना जाता है।

"डाँडिया" के समान है।

वीरगासे (कर्नाटक) दशहरा जुलूस के दौरान गाया जाता है भूत गीत (केरल) मायावी आत्माओं, भूत-प्रेतों को दूर भगाने के लिए गाया जाता है।

- लामन (कुल्लू घाटी, हिमाचल प्रदेश); कजरी (उत्तर प्रदेश); नेउलेउ (नागालैंड); नियोगा (अरुणाचल प्रदेश); सैकुटी जाई (मिजोरम); सना लमोक (मणिपुर); बसंत गीत (उत्तराखंड); जा-जिन-जा
- (अरुणाचल प्रदेश); सोहर (उत्तर प्रदेश); पंखिड़ा (राजस्थान); लोटिया (राजस्थान); ओवी (महाराष्ट्र और गोवा); बारहामासा (उत्तराखंड); छकरी (कश्मीर)।

शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण

समय के साथ-साथ शास्त्रीय और लोक, दोनों तत्त्व एक साथ मिल गए, जिससे संगीत के नए-नए रूप विकसित हुए।

सुगम संगीत: इस शैली में शास्त्रीय और लोक तत्त्वों का मिश्रण होता है। इसमें निम्नलिखित शामिल है:

- **भजन:** यह उत्तर भारत में भक्ति गायन का सबसे लोकप्रिय रूप है, इसकी उत्पत्ति भक्ति आंदोलन से हुई है। देवी-देवताओं के जीवन की कथाएँ या महाभारत और रामायण की कथाएँ भजनके लिए लोकप्रिय विषय हैं। मध्यकाल में भजन के प्रमुख उन्नायक मीराबाई, तुलसीदास, सूरदास, कबीर आदि थे।
- **शबद:** शबद के विकास और लोकप्रियता में गुरु नानक और उनके शिष्य मरदाना ने निर्णायक भूमिका निभाई।
- **कव्वाली:** ये अल्लाह या पैगंबर मुहम्मद अथवा किसी अन्य सूफी या इस्लामी संत की प्रशंसा हेतु भक्ति गीत हैं। कव्वाली एक ही राग से बनी होती है और आम तौर पर उर्दू, पंजाबी या हिंदी में लिखी जाती हैं। इनका प्रदर्शन सामान्य रूप से सूफी दरगाहों में किया जाता है।
- **सुगम संगीत के अन्य प्रकार:**
  - **अभंग (महाराष्ट्र):** भगवान विठोबा की स्तुति में गाया जाता है।
  - **कीर्तन (पश्चिम बंगाल):** गीत गोविंद ने कीर्तन गायन और नृत्य को प्रेरित किया।
  - **भटियाली (पश्चिम बंगाल):** नाव चालकों द्वारा गाया जाता है, इसका मूल विषय प्रकृति है।
  - **तेवरम (तमिलनाडु):** आड्यार जैसे शैव समुदायों द्वारा गाया जाता है।
- **रबींद्र संगीत:** यह शास्त्रीय तत्त्वों और बंगाली लोक शैलियों का मिश्रण है जो रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा निर्मित संगीत का पुनःसृजन करता है। इसके प्रमुख तत्त्वों में देशभक्ति की भावना शामिल है।
- **हवेली संगीत:** इसका विकास राजस्थान और गुजरात में हुआ। वर्तमान में पुष्टिमार्ग संप्रदाय या वह समुदाय जो पुष्टिमार्ग को मोक्ष का मार्ग मानता है, द्वारा गाया जाता है।
- **गण संगीत:** एक प्रकार का फ्यूजन संगीत, जो समूह या कोरस में गाया जाता है। इसके मुख्य विषयों में देशभक्ति और समाज में व्यप्त कुरीतियों का विरोध शामिल होता है। वंदे मातरम् एक गण संगीत है।

संगीत वाद्यंत्र

विभिन्न वाद्यंत्रों को ध्वनि उत्पत्ति के आधार पर, नाट्य शास्त्र के अनुसार संगीत वाद्यंत्रों को चार मुख्य समूहों में वर्गीकृत किया गया है:

1. तत्वाद्य या कॉर्डोफोन- तार वाद्यंत्र

• वह वाद्यंत्र जिसमें कोई तांत (तंत्री) या तार, ध्वनि उत्पन्न करने के लिए कंपन करता है, तत्वाद्य यंत्र कहलाता है। तनी हुई डोरी को दबाने या खींचने से ये कंपन उत्पन्न होते हैं।

• तत्वाद्य यंत्र को दो व्यापक श्रेणियों में विभाजित किया गया है– उँगुलियों से बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र (Plucked) (सितार, वीणा और तंबूरा) और धनुष (Bow) से बजाए जाने वाले (सारंगी, इसराज और वायलिन)।

• कमाइचा, पश्चिम राजस्थान के मंगनियारों द्वारा बजाया जाने वाला एक धनुषाकार वीणा है।

2. सुषिर वाद्य या एयरोफोन- पवन वाद्यंत्र

• सुषिर वाद्य समूह में खोखले स्तंभ में हवा फूँ ककर ध्वनि उत्पन्न की जाती है। स्वर की तीव्रता वायु मार्ग को नियंत्रित करके निर्धारित की जाती है और वाद्यंत्र में बने छिद्रों को खोलने और बंद करने के लिए उँगलियों का उपयोग करके राग बजाया जाता है।

• ध्वनि उत्पन्न होने के आधार पर पवन वाद्य को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

- **बाँसुरी:** पंडित हरिप्रसाद चौरसिया भारत के प्रसिद्ध बाँसुरीवादक हैं।
- शहनाई और नादस्वरम जैसे रीड वाद्यंत्र। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान एक प्रसिद्ध शहनाई वादक थे।

3. अवनद्ध वाद्य या मेम्ब्रेनोफोन - ताल वाद्यंत्र

• अवनद्ध वाद्य श्रेणी के वाद्यंत्रों में, मिट्टी या धातु के बर्तन या लकड़ी के ढोल अथवा फ्रेम पर खींची गई जानवर की खाल पर प्रहार करके ध्वनि उत्पन्न की जाती है।

• सिंधु सभ्यता स्थलों से प्राप्त मुहरों में गर्दन से लटके हुए क्षैतिज नगाड़ा बजाते हुए पुरुषों की आकृतियाँ दिखाई देती हैं।

• नगाड़ों को उनके आकार और संरचना के साथ-साथ बजाने की स्थिति और स्थान के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इनमेंऊर्ध्वका (तबला और चेंदा), अंक्य (मृदंगम, पखावज), अलिंग्य (डफली) और डमरू सम्मिलित हैं।

4. घन वाद्य या इडियोफोन - ठोस वाद्यंत्र

• यह ठोस वाद्यंत्रों से संबंधित शैली है, जिन्हें किसी ट्यूनिंग की आवश्यकता नहीं होती है।

• इन्हेंइडियोफोन वाद्यंत्र भीकहा जाता है। घनवाद्य के सबसे लोकप्रिय उदाहरण मंजीरा, जलतरंग, काँच-तरंग, झाँझ, खरताल आदि हैं।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण

1. शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण
2. संगीत वाद्यंत्र
3. सुगम संगीत
4. भजन

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इन्हेंइडियोफोन वाद्यंत्र भीकहा जाता है। घनवाद्य के सबसे लोकप्रिय उदाहरण मंजीरा, जलतरंग, काँच-तरंग, झाँझ, खरताल आदि हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: शास्त्रीय और लोक संगीत का मिश्रण • संगीत वाद्यंत्र • सुगम संगीत • भजन • शबद

IUC विशेष स्मृति सूत्र #9: हिंदुस्तानी संगीत के प्रमुख घराने

ट्रिक: 'ग्वालियर सबसे प्राचीन, किराना स्वर-प्रधान (भीमसेन जोशी), आगरा नोम-तोम, पतियाला तान-प्रधान (बड़े गुलाम अली खाँ), बनारस ठुमरी (गिरिजा देवी)'।

भारतीय धर्म एवं दर्शन

हि दू धर्म के विभिन्न संप्रदाय वैष्णव धर्म वासुदेव-भागवत पंथ, जिसका उद्भव गुप्त काल के दौरान हुआ था, तेजी से बढ़ता गया और उसने विष्णु और नारायण जैसे अन्य वैदिक और ब्राह्मण देवताओं को अपने में समाहित कर लिया।

- भागवतवाद, जो मूल रूप से बौद्ध धर्म और जैन धर्म के समकालीन था, की उत्पत्ति उस विचारधारा से हुई जो उपनिषदों से शुरू हुई थी। यह गुप्त काल के दौरान अपने चरम पर पहुँच गया और सबसे लोकप्रिय संप्रदाय बन गया।
- उत्तर-गुप्त काल से इस भक्ति पंथ का नाम वैष्णव हो गया, जिसमें अवतारों के सिद्धांत पर जोर दिया गया था।
- यह आंदोलन ईश्वर के साकार रूप, मुख्य रूप से राम और कृष्ण की भक्ति पर आधारित था।
- अलवार के नाम से जाने जाने वाले वैष्णव कवि-संतों ने विष्णु के लिए एकनिष्ठ भक्ति (एकात्मिका भक्ति) का प्रचार किया। उनके गीतों को सामूहिक रूप से 'प्रबंध' के नाम से जाना जाता है।

वैष्णव धर्म के अंतर्गत प्रमुख संप्रदाय — संप्रदाय विशेषताएँ

वारकरी संप्रदाय z ये विठोबा के रूप में भगवान विष्णु की पूजा करते हैं। ये महाराष्ट्र के पंढरपुर में विठोबा के मंदिर के आस-पास ही केंद्रित रहे।

- उनकी वार्षिक तीर्थयात्रा को वारी कहा जाता है। वारकरी अपने संतों की पादुकाओं को समाधि से पंढरपुर तक पालकी में ले जाते हैं।
- तीर्थयात्रा के दौरान रंगन और धावा जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। रंगन में एक पवित्र घोड़ा तीर्थयात्रियों की पंक्तियों के बीच से दौड़ता है, तीर्थयात्री उससे निकलने वाले धूल के कणों को पकड़ने की कोशिश करते हैं और उन्हें अपने माथे पर लगाते हैं।
- इस संप्रदाय के प्रमुख संतों में ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम सम्मिलित हैं। रामानंदी संप्रदाय z यह हिंदू धर्म के अंतर्गत सबसे बड़ा वैरागियों का समूह है। इन वैष्णव भिक्षुओं को रामानंदी, वैरागी या बैरागी के नाम से जाना जाता है।
- वे अद्वैत विद्वान रामानंद की शिक्षाओं का पालन करते हैं।
- वे विष्णु के दस अवतारों में से एक, राम की पूजा करते हैं।
- वे प्रमुख तौर पर गंगा के मैदानों के आस-पास बसे हुए हैं।
- वे ध्यान करते हैं और कठोर तपस्या करते हैं, लेकिन वे यह भी मानते हैं कि मोक्ष प्राप्त करने के लिए भगवान की कृपा जरूरी है। ब्रह्म संप्रदाय z यह संप्रदाय भगवान विष्णु, परम-ब्रह्म या ब्रह्मांड के सृजनकर्ता से जुड़ा हुआ है।
- इसके संस्थापक माधवाचार्य थे।
- चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित गौड़ीय वैष्णववाद, ब्रह्म संप्रदाय से जुड़ा है।
- इस्कॉन मंदिर इसी संप्रदाय से संबंधित है। पुष्टि मार्ग संप्रदाय z इस संप्रदाय की भक्ति, भगवान कृष्ण के प्रति पवित्र प्रेम पर आधारित है। उनका सिद्धांत है कि अंतिम सत्य केवल और केवल ब्रह्म है।
- इसकी स्थापना 1500 ई. के आस-पास वल्लभाचार्य ने की थी। निंबार्क संप्रदाय z इसे हंस संप्रदाय या कुमार संप्रदाय या सनकादि संप्रदाय के नाम से भी जाना जाता है।
- इसके अनुयायी राधा और कृष्ण की पूजा करते हैं। शैव धर्म पाणिनि ने शिव-उपासकों के एक समूह को शिव-भागवत कहा है।
- दक्षिण में शैव आंदोलन 63 संतों की गतिविधियों के कारण फला-फूला, जिन्हें नयनार कहा जाता है।
- नयनार सभी जातियों से से संबंध रखते थे और उनके तमिल गीतों को तेवरम कहा जाता था, जिन्हें द्रविड़ वेद भी कहा जाता था।

शैव धर्म के अंतर्गत विभिन्न संप्रदाय — संप्रदाय विशेषताएँ

नाथपंथी z ये गोरखनाथ और मत्स्येंद्रनाथ की शिक्षाओं का पालन करते हैं और शिव के एक रूप आदिनाथ की पूजा करते हैं।

- ये हठ योग साधना करते हैं; भिक्षु लंगोटी और धोती पहनते हैं और शरीर पर राख लगाते हैं।
- नाथपंथी कभी भी एक ही स्थान पर लंबे समय तक नहीं रहते हैं अर्थात ये यायावर समूह हैं। जब वे चलना बंद कर देते हैं, तो वे एक पवित्र अग्नि जलाते हैं जिसे धूनी कहा जाता है।
- इन्हें सिद्ध सिद्धांत के नाम से भी जाना जाता है। लिंगायत संप्रदाय

• यह एक विशिष्ट शैव परंपरा है, लिंगायत लिंग के रूप में भगवान शिव की पूजा के माध्यम से एके श्वरवाद में विश्वास करते हैं।

• इसकी स्थापना 12वीं सदी में बसवन्ना ने की थी।

• यह संप्रदाय वेदों के अधिकार को नकारता है साथ ही जाति व्यवस्था को भी अस्वीकार करता है।

• इसे वीरशैववाद के नाम से भी जाना जाता है।

• इस संप्रदाय ने पुनर्जन्म के सिद्धांत पर भी सवाल उठाया। **[UPSC 2016]** दशनामी संन्यासी ये प्रमुख तौर पर अद्वैत वेदांत परंपरा से जुड़े होते हैं और आदि शंकराचार्य के शिष्य हैं। उन्हें 'दश नाम संन्यासी' भी कहा जाता है क्योंकि उन्हें 10 समूहों में विभाजित किया गया है।

अघोरी z अघोरी, भैरव के रूप में प्रकट शिव के अनन्य भक्त हैं।

• अघोरी अद्वैतवादी हैं जो श्मशान घाट पर साधना के माध्यम से पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति पाने का प्रयास करते हैं।

• अघोरी अपने जीवन से बंधनों को हटाने में विश्वास करते हैं, जो कामुक सुख, क्रोध, लालच, आसक्ति, भय और घृणा हैं।

• वे अत्यधिक तामसिक अनुष्ठानों में लिप्त रहते हैं। सिद्धर या सिद्ध

• सिद्ध में तमिलनाडु के सभी संत, चिकित्सक, कीमियागर (Alchemists) और रहस्यवादी शामिल होते हैं।

• वे प्राणायाम के साथ-साथ विशेष गुप्त रसायनों के माध्यम से आध्ययात्मिक पूर्णता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्राणायाम उनके द्वारा ली जाने वाली साँसों की संख्या को काफी कम कर देता है।

• सिद्धरों को वरम (Varmam) कासंस्थापक भी मानाजाता है। वरम आत्मरक्षा हेतु एक मार्शल आर्ट के साथ-साथ चिकित्सा उपचार भी है।

• सिद्ध एके श्वरवादी होते हैं और मूर्तिपूजा की निंदा करते हैं। **[UPSC 2016]** हिंदूधर्म के अन्य उप छोटे संप्रदाय

• **शाक्त:** यह स्त्रीत्व और देवी को सर्वोच्च मानता है। यह तंत्र की विभिन्न उप-परंपराओं के लिए जाना जाता है।

• **स्मार्त:** यह पुराणों की शिक्षाओं पर आधारित है। स्मार्त पाँच देवताओं की घरेलू पूजा में विश्वास करते हैं जिनमें शामिल पाँच देवताओं– शिव, शक्ति, गणेश, विष्णु और सूर्य को समान माना जाता है।

• **श्रौत:** यह केरल के अति रूढ़िवादी नंबूदिरी ब्राह्मणों से संबंधित है। वे दर्शन की 'पूर्व-मीमांसा' विचारधारा का पालन करते हैं और यज्ञ करने को महत्त्व देते हैं। भारतीय दर्शन के संप्रदाय भारत में दर्शन का उदय जीवन और अस्तित्व के रहस्य की समीक्षा के रूप में हुआ था।

• उत्तर वैदिक काल के दौरान ही आत्मा की वास्तविक प्रकृति और ब्रह्मांडीय सिद्धांत या ब्रह्म (परम ब्रह्म/वास्तविक यथार्थ) के बारे में निश्चित विचार और सिद्धांत विकसित हुए थे।

दर्शन और धर्म

• दर्शन ने यर्थार्थ का सही दृष्टिकोण प्रदान किया, वहीं दूसरी ओर धर्म ने जीवन का मार्गदर्शन किया।

• दर्शन सिद्धांत था और धर्म अभ्यास। इस प्रकार प्राचीन भारत में दर्शन और धर्म, एक-दूसरे के पूरक थे। दर्शन के रूढ़िवादी संप्रदाय इस संप्रदाय का मानना था कि वेद सर्वोच्च प्रकट धर्मग्रंथ हैं जिनमें मोक्ष का रहस्य छिपा हुआ है।

• हालांकि इसके समर्थकों ने वेदों की प्रामाणिकता पर प्रश्न नहीं उठाया।

• उनके छह उप-संप्रदाय थे, जिन्हें षड्दर्शन कहा जाता था।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: शैव धर्म के अंतर्गत विभिन्न संप्रदाय

1. शैव धर्म के अंतर्गत विभिन्न संप्रदाय
2. संप्रदाय विशेषताएँ
3. दर्शन और धर्म
4. शाक्त

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — शैव धर्म के अंतर्गत विभिन्न संप्रदाय

मुख्य परीक्षा दृष्टि: उनके छह उप-संप्रदाय थे, जिन्हें षड्दर्शन कहा जाता था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: शैव धर्म के अंतर्गत विभिन्न संप्रदाय • संप्रदाय विशेषताएँ • दर्शन और धर्म • शाक्त • स्मार्त | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2016

संप्रदाय विशेषताएँ

सांख्य प्रतिपादक: कपिल (उन्होंने सांख्य सूत्र भी लिखा)।

• यह संप्रदाय मानता है कि यथार्थ दो सिद्धांतों से बना है– 1. पुरुष (पुरुष) मात्र चेतना है और इसे संशोधित या परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

2. प्रकृति (स्त्री) तीन गुणों– सत्व, रजस और तमस से बनी है। प्रकृति इन तीन गुणों की संतुलन की स्थिति है।

• यह संप्रदाय पुरुष और प्रकृति के माध्यम से ब्रह्मांड के निर्माण की व्याख्या करता है।

• यह द्वैतवाद में विश्वास करता है, अर्थात् आत्मा और पदार्थ (तत्व) का अलग-अलग अस्तित्व है।

• यह संप्रदाय ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है। यद्यपि, पुनर्जन्म और आत्मा का देहांतरण इस संप्रदाय में अंतर्निहित हैं।

• यह संप्रदाय मानता है कि आत्म-ज्ञान मोक्ष की ओर ले जाता है। **[UPSC 2013]**

योग प्रतिपादक: पतंजलि (उन्होंने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में योगसूत्र भी लिखा)।

• योग का शाब्दिक अर्थ है दो प्रमुख सत्वों का मिलन (Union of the two principal entities)।

• योग क्रियाएँ शरीर, मन और इंद्रियों को नियंत्रित करती हैं। योग दर्शन को मुक्ति प्राप्त करने का एक साधन माना जाता है।

• यह मुक्ति निम्नलिखित माध्यमों से प्राप्त की जा सकती है– यम: आत्म नियंत्रण; नियम: नियमों का पालन; आसन: स्थिर मुद्राएँ; प्राणायाम: श्वास नियंत्रण; प्रत्याहार: सांसारिक वस्तुओं के प्रति आकर्षित न होने के लिए अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखना; धर्म: मन को स्थिर करना; ध्यान: चुनी हुई वस्तु पर ध्यान केंद्रित करना; समाधि: मन और परमात्मा का विलय।

• योग एक गुरु और मार्गदर्शक के रूप में, ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है।

न्याय प्रतिपादक: गौतम (वे न्याय सूत्र के लेखक हैं)।

• यह संप्रदाय मोक्ष प्राप्त करने के लिए तार्किक चिंतन में विश्वास करता है।

• यह दर्शन ईश्वर को ब्रह्मांड का निर्माणकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता मानता है।

वैशेषिक प्रतिपादक: कणाद

• यह ब्रह्मांड के निर्माण की प्रक्रिया को समझाने के लिए परमाणु सिद्धांत अर्थात्पदार्थ में परमाणुओंऔर अणुओं के संयोजन का उपयोग करता है।

• इसका मानना है कि ब्रह्मांड की सभी वस्तुएँ पाँच तत्त्वों से मिलकर बनी हैं– पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश।

• वैशेषिक संप्रदाय ब्रह्मांड के यथार्थवादी और वस्तुनिष्ठ दर्शन पर विचार करता है।

• उनका मानना है कि ईश्वर मार्गदर्शक सिद्धांत है और ब्रह्मांड का निर्माण और विनाश एक चक्रीय प्रक्रिया है।

• इस संप्रदाय का मानना है कि जीवों को कर्म के नियम के अनुसार पुरस्कार या दंड मिलता है।

• वे यह भी मानते हैं कि मुक्ति ही मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है।

पूर्व मीमांसा प्रतिपादक: जैमिनी

• इस दर्शन का मानना है कि वेदों में जो लिखा है वह त्रुटिहीन है।

• जैमिनी दो प्रकार के ज्ञान को स्वीकार करते हैं, अर्थात्प्रत्यक्ष (तत्काल ज्ञान) और परोक्ष (मध्यवर्ती ज्ञान)। परोक्ष ज्ञान के पाँच स्रोत हैं: अनुमान, उपमान (तुलना), शब्द (मौखिक साक्ष्य), अर्थापत्ति (धारणा) और अनुपलब्धि (अप्रत्यक्षण)।

• मीमांसा ईश्वर के अस्तित्व के बारे में मौन है।

• कर्मकांड करने से मोक्ष संभव है, लेकिन वैदिक कर्मकांडों के औचित्य और तर्क को समझना भी जरूरी है।

• यह मुक्ति के साधन के रूप में कर्म के सिद्धांत पर जोर देता है। उत्तर मीमांसा (वेदांत)

मुख्य प्रस्तावक: इसके प्रमुख प्रवर्तक बादरायण हैं, अन्य शंकराचार्य और रामानुज।

• वेदांत दो शब्दों से बना है - वेद और अंत, जिसका अर्थ है वेदों का अंत।

• यह संप्रदाय उपनिषदों में वर्णित जीवन दर्शन का समर्थन करता है।

• इस दर्शन का आधार सबसे पुराना ग्रंथ बादरायण का ब्रह्मसूत्र था।

• वेदांत का मूल संदेश यह है कि प्रत्येक क्रिया को बुद्धि द्वारा नियंत्रित किया जाना चाहिए, जिसे विवेकशील क्षमता कहा जाता है।

• वेदांत दर्शन ने कर्म के सिद्धांत को विश्वसनीयता प्रदान की और पुनर्जन्म के सिद्धांत में विश्वास किया।

वेदांत के उप-संप्रदाय

• शंकराचार्य (अद्वैत वेदांत)/अद्वैतवाद– शंकराचार्य ने ब्रह्म को निर्गुण माना है। अद्वैत का लक्ष्य आत्मज्ञान तथा आत्मा और ब्रह्म की पूर्ण समझ प्राप्त करना है। यह दर्शन मानता है कि आत्मा और ब्रह्म का ज्ञान, मुक्ति की ओर ले जाता है।

• रामानुज (विशिष्टाद्वैत)– यह दर्शन ब्रह्म को कुछ गुणों से युक्त मानता है।विशिष्टाद्वैवाद दर्शन ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति को मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग मानता है। रामानुज, शंकराचार्य से केवल इस अर्थ में भिन्न हैं कि वे जीव या व्यक्ति की आत्मा को शरीर से भिन्न इकाई मानते हैं और ये इकाइयाँ संख्या में अनंत हैं। जब तक यह एक शरीर में सीमित है, तब तक उसका ईश्वर के साथ एकाकार नहीं हो सकता।

• माधवाचार्य (द्वैत)/द्वैतवाद– यह शंकराचार्य के अद्वैतवाद के विपरीत है। माधवाचार्य का मानना था कि दुनिया एक भ्रम (माया) नहीं है बल्कि भिन्नताओं से भरा यथार्थ है तथा आत्मा और ब्रह्म के बीच अंतर है। उनका कहना है कि जीव या आत्माएँ भक्ति और भगवान की कृपा से मुक्ति प्राप्त कर सकती हैं।

• निंबार्क (द्वैताद्वैत)/विभेदक अद्वैतवाद या द्वैतवादी अद्वैतवाद– उनका मानना है कि जगत और आत्मा परमात्मा के ही रूप हैं। ये जगत और आत्मा, परमात्मा (ब्रह्म) से भिन्न हैं। ये सभी परमात्मा के सहारे ही जीवित रह सकते हैं। अर्थात ये अलग-अलग हैं लेकिन परस्पर आश्रित हैं।

• वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैत)/शुद्ध अद्वैतवाद– उन्होंने वेदांत सूत्र और भगवद गीता पर टिप्पणियाँ लिखीं। उनके लिए, ब्रह्म (परमात्मा) श्रीकृष्ण थे, जिन्होंने स्वयं को आत्मा और पदार्थ के रूप में प्रकट किया। परमात्मा और आत्मा अलग-अलग नहीं बल्कि एक ही हैं। उन्होंने शुद्ध अद्वैतवाद पर जोर दिया। उनके दर्शन को पुष्टिमार्ग (अनुग्रह का मार्ग) के नाम से सुप्रसिद्ध है और उनके संप्रदाय को रुद्रसंप्रदाय कहा जाता है।

दर्शन का नास्तिक संप्रदाय

नास्तिक दर्शन, वेदों की मौलिकता में विश्वास नहीं करता है साथ ही ईश्वर के अस्तित्व पर भी प्रश्न उठाता है। यह संप्रदाय तीन प्रमुख उप-संप्रदायों में विभाजित है– बौद्धर्म, जैन धर्म और लोकायत।

चार्वाक या लोकायत दर्शन

माना जाता है कि स्वयं बृहस्पति ने इस दर्शन की आधारशिला रखी थी।

• इस दर्शन का उल्लेख वेदों और बृहदारण्यक उपनिषद में मिलता है।

• इसने जीवन के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया और इसे जनता का दर्शन (Philosophy of the Masses) भी कहा जाता है।

• इस दर्शन ने मोक्ष प्राप्त करने की आवश्यकता के विरुद्ध तर्क दिया तथा ब्रह्म और ईश्वर के अस्तित्व को भी नकार दिया।

• इस संप्रदाय ने पृथ्वी पर ईश्वर के प्रतिनिधियों, पुरोहित वर्ग के खिलाफ भी तर्क दिया। इसके अनुसार ब्राह्मण अपने अनुयायियों से उपहार (दक्षिणा) प्राप्त करने के लिए झूठे अनुष्ठानों का निर्माण करते हैं।

• यह संप्रदाय ईथर (आकाश) को पाँच आवश्यक तत्त्वों में से एक नहीं मानता क्योंकि इसे अनुभूति (Perception) के माध्यम से अनुभव नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह दर्शन अन्य चार तत्त्वों (अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी) में विश्वास करता है।

• इस संप्रदाय का तर्क है कि इसके अतिरिक्त कोई अन्य जगत नहीं है, अत: मृत्यु ही मनुष्य का अंत है और सुख ही जीवन का अंतिम उद्देश्य होना चाहिए। उन्होंने 'खाओ, पियो और मौज करो' का सिद्धांत प्रतिपादित किया।

श्रमण संप्रदाय

श्रमण शब्द का अर्थ है– वह जो तपस्या करता है अर्थात्तपस्वी। विभिन्न श्रमण संप्रदाय निम्नलिखित हैं:– (1) जैन धर्म, (2) बौद्ध धर्म, (3) चार्वाक, (4) आजीवक, (5) अज्ञान।

आजीवक:

• इस संप्रदाय की स्थापना पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व में मक्खलि गोसाल द्वारा की गई थी।

- श्रावस्ती को आजीवकों का केंद्र माना जाता था।
- यह संप्रदाय पूर्ण नियतिवाद के नियति (भाग्य) सिद्धांत के इर्द-गिर्द घूमता है। इसका मानना है कि कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है और सब कुछ पूर्व निर्धारित है।
- आजीवकों ने बिना कपड़ों और भौतिक संपत्ति के एक साधारण तपस्वी जीवन व्यतीत किया।
- आजीवक संप्रदाय के समर्थक कर्म में विश्वास नहीं करते थे तथापि वे आत्मा के अस्तित्व में विश्वास करते थे।
- उन्होंने वेदों के प्रमाण को अस्वीकार कर दिया।
- बिंदुसार इसके अनुयायियों में से एक था। अशोक के सातवें स्तंभ शिलालेख में आजीवकों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। अज्ञान
- वे अति संशयवाद में विश्वास करते थे।
- उनका मानना था कि प्रकृति के बारे में ज्ञान प्राप्त करना असंभव है और यदि यह संभव भी है, तो मोक्ष प्राप्ति के लिए यह अनुपयोगी है।
- इस संप्रदाय के अनुसार, 'अज्ञानता सर्वोत्तम है'।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: वेदांत के उप-संप्रदाय



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — वेदांत के उप-संप्रदाय

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इस संप्रदाय के अनुसार, 'अज्ञानता सर्वोत्तम है'।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: वेदांत के उप-संप्रदाय • दर्शन का नास्तिक संप्रदाय • चार्वाक या लोकायत दर्शन • श्रमण संप्रदाय • आजीवक

पारसी धर्म

पारसी धर्म की स्थापना जरथुस्त्र या जोरोस्टर ने आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में फारस में की थी।

- इसके सिद्धांत जेंद अवेस्ता में निहित हैं।
- पारसी समुदाय के लोग शवों को गिद्धों के भक्षण के लिए खुले में रख देते हैं।
  - इन खुली जगहों को ढाकमा (Dhakma) या 'टावर्स ऑफ साइलेंस' (Towers of Silence) कहा जाता है और इन्हें खाने वाले गिद्धों को ढाकमा नाशिनी कहा जाता है।
- उनके अग्नि मंदिरों (Fire Temples) को आतश बेहराम (Atash Bahram) कहा जाता है।
- वे सामान्य रूप से पारसी और ईरानी के रूप में जाने जाते हैं और ज्यादातर मुंबई, गोवा और अहमदाबाद (पश्चिमी भारत) में रहते हैं।

ईसाई धर्म

- ईसाई धर्म की स्थापना ईसा मसीह ने यरूशलेम में की थी। कालांतर में यह दुनिया का सबसे बड़ा धर्म बन गया।
- ईसाई धर्म का मूल दर्शन यह है कि ईश्वर एक है और उसी ने ब्रह्मांड का निर्माण किया है।
- **ईसाई धर्म की पवित्र त्रिमूर्ति:** ईसाई लोग पवित्र त्रिमूर्ति की पूजा करते हैं – पिता (ईश्वर), पुत्र (यीशु) और पवित्र प्रेतात्मा अर्थात आत्मा के रूप में ईश्वर (Holy ghost)।
- ईसाइयों की पवित्र पुस्तक बाइबिल हैजिसके दो भाग हैं– 'द ओल्डटेस्टामेंट' और 'द न्यू टेस्टामेंट'
- उनकी दो मुख्य प्रथाएँ हैं–
  - **ईसाई दीक्षा/बैप्टिज़्म (Baptism):** कोई बच्चा या व्यक्ति चर्च की सेवा में प्रवेश करता है।

- **परम प्रसाद/यूहरिस्ट (Eucharist):** ईश्वर के साथ रोटी खाना और दाखमधु (शराब) पीना जो ईश्वर के साथ एकता का प्रतीक है।

यहूदी धर्म

यह विश्व के सबसे पुराने धर्मों में से एक है और इसके अनुयायियों को यहूदी कहा जाता है।

- यह धर्म, ईसाई धर्म और इस्लाम से भी पहले का है, इन दोनों धर्मों ने यहूदी दर्शन से बहुत कुछ उधार लिया है।
- यह एक एके श्वरवादी धर्म है। उनके धार्मिक ग्रंथ को तौरात (Torah) कहा जाता है और वे एलियाहु-हनवी (Eliyahu-Hanavi) नामक धार्मिक सेवाओं का पालन करते हैं जिसमें एलिय्याह पैगंबर (Elijah the Prophet) का शुक्र अदा किया जाता है।

इस्लाम

इस्लाम की उत्पत्ति सातवीं शताब्दी ईस्वी में अरब प्रायद्वीप में हुई थी।

- अल्लाह द्वारा भेजे गए, हजरत मूसा औरइब्राहीम ईसा आदि जैसे पैगंबरों की लंबी कतार में पैगंबर मुहम्मद आखिरी पैगंबर थे।

पैगंबर मुहम्मद

- पैगंबर मोहम्मद का जन्म 571 ईस्वी में अरब के कुरैश कबीले में हुआ था। वह 622 ईस्वी में मक्का से मदीना चले गए और यहीं से हिजरी संवत्की शुरुआत हुई।
- पैगंबर की मक्का वापसी की यात्रा वह पवित्र मार्ग है जो हज बन गया और प्रत्येक मुसलमान को अपने जीवनकाल में एक बार यह तीर्थयात्रा करनी होती है।

इस्लाम के सिद्धांत

- इस्लाम समानता, भाईचारे और एक अल्लाह (ईश्वर) के अस्तित्व की बात पर बल देता है।
- इसके पाँच मूलभूत सिद्धांत हैं– तौहीद (अल्लाह में विश्वास), नमाज (दिन में पाँच बार), रोजा (रमजान के महीने में उपवास), जकात (दान देना) और हज (मक्का की तीर्थयात्रा)।
- **इस्लाम के विभिन्न संप्रदाय:** यद्यपि इस्लाम में विभिन्न संप्रदाय हैं, लेकिन दो प्रमुख उप-विभाजन हैं–
  - शिया– उनका दावा है कि पैगंबर के दामाद अली उनके उत्तराधिकारी थे।
  - सुन्नी– उनका मानना है कि उत्तराधिकारी पैगंबर के करीबी लोगों में से होना चाहिए और जो अबू बक्र जैसे उनके शुरुआती अनुयायी ही थे।
- यद्यपि, भारत में अधिकांश मुसलमान सुन्नी हैं, कुछ स्थानों पर शिया मुसलमान भी मौजूद हैं।
- **इस्लाम की पवित्र पुस्तक:** कुरान, पैगंबर की मृत्यु से पहले संकलित की गई थी।

सूफ़ीवाद से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण शब्द — शब्द विवरण

तारिका सूफी संप्रदाय या आध्ययात्मिक मार्ग; सूफी अनुयायियों द्वारा अपनाई जाने वाली शिक्षाओं, प्रक्रियाएँ और अनुष्ठानों की एक प्रणाली।

शेख़ सूफीवाद में एक आध्ययात्मिक मार्गदर्शक या गुरु जो शिष्यों को आध्ययात्मिक ज्ञान की ओर ले जाता है।

दरवेश सूफी संप्रदाय का एक सदस्य जो तप में संलग्न रहता है और आध्ययात्मिक प्रक्रियाओं के माध्यम से ईश्वर के निकटता की खोज करता है।

ज़िक्र ईश्वर के स्मरण का अभ्यास, जिसमें दिव्य नामों या प्रार्थनाओं की पुनरावृत्ति शामिल होती है।

फ़ना ईश्वर के प्रति स्वयं का पूर्ण समर्पण; सूफीवाद में अंतिम आध्ययात्मिक लक्ष्य, जहाँ व्यक्तिगत अहंकार विलीन हो जाता है।

बाटा सूफियों द्वारा अनुभव की गई आध्ययात्मिक आत्म-विभोर की स्थिति, जो ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति और जुड़ाव के परिणामस्वरूप होती है।

समा आध्ययात्मिक परमानंद प्राप्त करने के लिए भक्ति की स्थिति में संगीत, कविता सुनने या जप करने की सूफी प्रथा।

वली "ईश्वर का मित्र"; सूफीवाद में एक संत जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने ईश्वर से उच्च स्तर की निकटता प्राप्त कर ली है।

मुराकाबा सूफीवाद में ध्यान का एक रूप, जहां अभ्यासकर्ता ईश्वर के साथ अपने संबंध को गहरा करने के लिए आंतरिक रूप से ध्यान केंद्रित करते हैं।

सिलसिला आध्ययात्मिक वंश या उत्तराधिकार की एक शृंखला, जिसके माध्यम से सूफीवाद की शिक्षाएँ आगे बढ़ाई जाती हैं।

हिक्मा दिव्य बुद्धि या ज्ञान, जो अक्सर सूफी शिक्षाओं से जुड़ा होता है।

कव्वाली भक्तिपूर्ण सूफी संगीत और गायन का एक रूप, जो खास तौर पर दक्षिण एशिया में लोकप्रिय है, जिसका उपयोग ईश्वर के प्रति प्रेम व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

एहसान सूफीवाद में आस्था और भक्ति का उच्चतम स्तर, जहां कोई इस तरह पूजा करता है मानो ईश्वर को देख रहा हो और ईश्वर उसे देख रहा है।

रुह सूफ़ी शिक्षाओं में आत्मा या रूह को प्रत्येक व्यक्ति के भीतर एक दिव्य चिंगारी के रूप में देखा जाता है जो उन्हें ईश्वर से जोड़ती है।

जलाल ईश्वर की "महिमा", सूफी विचारधारा में ईश्वर की अत्यधिक शक्ति और महानता को संदर्भित करता है।

जमाल ईश्वर की "सुंदरता", सूफी रहस्यवादियों द्वारा अनुभव किए गए ईश्वर के प्रेम, सुंदरता और सौम्यता पर बल देती है।

सिख धर्म

सिक्खों का ऐसा मानना है कि ईश्वर ने गुरु नानक को उनके धर्म के बारे में बताया था। ईश्वर निराकार, निर्भय, और जन्म-मृत्यु से परे है। सामान्य रूप से सिखों के दस गुरु माने जाते हैं। माना जाता है कि गुरुनानक की आत्मा सभी गुरुओं में रची बसी हुई है। इस प्रकार, सभी गुरुओं में एक ही आत्मा का वास था।

सिख धर्म के सिद्धांत

- मानवीय अस्तित्व का अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना हैऔर इसेमूर्तियों या पुस्तकों की पूजा से नहीं, बल्कि सम्यक विश्वास, सम्यक उपासना और सम्यक आचरण से प्राप्त किया जा सकता है।
- गुरु नानक ने सामूहिक उपासना के माध्यम से अपने अनुयायियों के सामुदायिक जीवन को नियंत्रित किया। उन्होंने सामुदायिक रसोई (लंगर) जैसे उपासना के नए रूप भी विकसित किए।
- उन्होंने अपने अनुयायियों से संन्यासी जीवन जीने के लिए नहीं कहा, बल्कि एक आदर्श व्यक्ति की तरह जीवन जीने के लिए कहा, जो मेहनत करके अपना घर चलाता है तथा संगत और कीर्तन में शामिल होता है।
- सिख धर्म का मानना है कि व्यक्ति संगीत के माध्यम से समाधि प्राप्त कर सकता है। सिख धर्म के गुरु
- गुरु नानक दस सिख गुरुओं में से पहले गुरु थे।
- दूसरे सिख गुरु, गुरु अंगद ने गुरुमुखी लिपि विकसित की थी।
- पाँचवें गुरु, गुरु अर्जन देव ने सिखों को तीन चीजें दीं–
  - आदि ग्रंथ, जिसमें पाँच गुरुओंऔर अन्य सहयोगी संतों की वाणी शामिल है।
  - मानकीकृत गुरुमुखी लिपि, जिसमें आदि ग्रंथ सबसे पहले लिखा गया था।
  - अमृतसर में हरमंदिर साहब या स्वर्ण मंदिर और अकाल तख्त का स्थान निर्धारित किया और उसकी नींव रखी।
- छठे गुरु, गुरु हरगोबिंद, आध्ययात्मिक (पीरी) और लौकिक (मीरी) सत्ता की प्रतीक दो तलवारों को धारण करने वाले पहले व्यक्ति थे।
  - उन्होंने दैनिक व्यापार और रक्षा के लिए अकाल तख्त और लोहगढ़ किले का निर्माण कराया।
- दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा (सिख योद्धा समुदाय) की स्थापना की।
  - उन्होंने सिखों को पाँच प्रतिज्ञाएँ लेने के लिए भी कहा, अर्थात्के श (लंबे बाल और दाढ़ी), कंघा (कंघी), कड़ा (एक धातु का कड़ा), कृपाण (एक तलवार) और कच्छा (घुटने से थोड़ा ऊपर तक फैला हुआ अधोवस्त्र) धारण करना।
  - उन्होंने आगे यह घोषणा की कि उनकी मृत्यु के बाद गुरु ग्रंथ साहिब ही सिखों के गुरु होंगे।
- गुरु ग्रंथ साहिब में सिख गुरुओं की शिक्षाओं के अलावा, रामानंद, नामदेव, कबीर और शेख फरीद जैसे कई भक्ति कवियों और सूफी संतों के दोहे भी सम्मिलित हैं।

पंज प्यारे (Panj Pyare): यह शब्द पाँच प्यारों के लिए प्रयोग किया जाता है, अर्थात्वे लोग जिन्हें गुरु गोबिंद सिंह के मार्गदर्शन में खालसा (सिख धर्म का भाईचारा) में दीक्षित किया गया था।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: सिख धर्म

1. सिख धर्म
2. सिख धर्म के सिद्धांत
3. पंज प्यारे (Panj Pyare

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — सिख धर्म

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पंज प्यारे (Panj Pyare): यह शब्द पाँच प्यारों के लिए प्रयोग किया जाता है, अर्थात्वे लोग जिन्हें गुरु गोबिंद सिंह के मार्गदर्शन में खालसा (सिख धर्म का भाईचारा) में दीक्षित किया गया था।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: सिख धर्म • सिख धर्म के सिद्धांत • पंज प्यारे (Panj Pyare

IUC विशेष स्मृति सूत्र #10: यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (प्रमुख)

ट्रिक: 'वैदिक जप, रामलीला, कुटियाट्टम, छऊ, कालबेलिया, संकीर्तन, नवरोज, कुंभ मेला, दुर्गा पूजा (2021) और गरबा नृत्य (2023)'।

भारतीय साहित्य एवं भाषा — भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — संस्कृत साहित्य — वैदिक साहित्य

वेद संबद्ध ब्राह्मण संबद्ध अरण्यक संबद्ध उपनिषद ऋग्वेद ऐतरेय ब्राह्मण, कौषीतकि ब्राह्मण ऐतरेय आरण्यक, कौषीतकि आरण्यक ऐतरेय उपंनिषद, कौषीतकि उपनिषद यजुर्वेद तैत्तिरीय ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण तैत्तिरीय आरण्यक, बृहदारण्यक आरण्यक बृहदारण्यक उपनिषद, तैत्तिरीय उपनिषद सामवेद जैमिनीय ब्राह्मण, कौथुम ब्राह्मण आरण्यक (सामवेद का) छान्दोग्य उपनिषद, के न उपनिषद अथर्वेद गोपथ ब्राह्मण आरण्यक (अथर्वेद का) प्रश्नों उपनिषद, मुंडक उपनिषद, मांडूक्य उपनिषद वेद: वेद चार हैं।

- ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है, इसमें विभिन्न देवताओं और प्राकृतिक शक्तियों को समर्पित स्तोत्र सम्मिलित हैं।
- सामवेद मुख्य रूप से धार्मिक अनुष्ठानों और यज्ञों के दौरान गाए जाने वाले मंत्रों और धुनों का संग्रह है। इसलिये इसे 'भारतीय संगीत का जनक' भी कहा जाता है।
- यजुर्वेद अनुष्ठानों और यज्ञों से संबंधित है।
- अथर्वेद में उपचार और सुरक्षा सहित दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़े कई मंत्र, तंत्र और जादू-टोना सम्मिलित हैं। अथर्वेद से जुड़े हुए 'मुंडकोपनिषद' ग्रंथ में 'सत्यमेव जयते' शब्द का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है।

शास्त्रीय संस्कृत साहित्य

- **पुराण:** पुराणों को वेदों के सत्य को स्पष्ट करने और समझाने के लिए लिखा गया था। 18 प्रमुख पुराण हैं जिनके नामों की खोजतीसरी शताब्दी ई. के बाद हुई। इन महापुराणों की लोकप्रियता ने एक अन्य उप-शैली, उपपुराण या लघु पुराण को जन्म दिया।
- **ब्राह्मण ग्रंथ:** यह वेदों की कर्मकांडीय या अनुष्ठानिक व्याख्या करते है।
- **आरण्यक:** यह वेदों की गूढ़ एवं रहस्यपरक व्याख्या करते है।
- **उपनिषद:** यह वेदों की दार्शनिक व्याख्या करते है। इन्हें 'वेदांत' भी कहा जाता है।
- **महाकाव्य:** ये लंबे काव्य हैं जिनमें आम तौर पर वीर गाथाओं का वर्णन है, जो प्राय: पौराणिक कथाओं या ऐतिहासिक घटनाओं से ली गई हैं, जैसे-रामायण और महाभारत।

महाभारत: इसका संकलन वेद व्ययास ने संस्कृत में किया था।

- प्रारंभ में, इसमें 8,800 छंद थे और इसे जय संहिता (विजय की कहानी) कहा जाता था, और बाद में कुल छंद बढ़कर 24,000 हो गए तथा प्रारंभिक वैदिक कबीलों के नाम पर इसका नाम 'भारत' रखा गया।
- वर्तमान संस्करण में 1,00,000 छंद हैं जो 10 अध्यायों में विभाजित हैं, जिन्हें 'पर्व' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें भागवत गीता नामक एक महत्त्वपूर्ण हिंदू ग्रंथ भी शामिल है।

रामायण: इसका पहला संस्करण ऋषि वाल्मिकी ने संकलित किया जिसे प्राय: आदिकाव्य कहा जाता है, जो दर्शाता है कि यह अपनी तरह का पहला काव्य है। इसे सात खंडों में विभाजित किया गया है।

संस्कृत नाटक

• **राजतरंगिणी:** कल्हण नेराजतरंगिणी की रचना 12वीं सदी के मध्य मेंकी थी जिसमें कश्मीर के राजाओं का एक सजीव चित्रण है। इस ग्रंथ में कर्कोटा, वर्मन और यशस्कर राजवंश का उल्लेख है।

• **कथासरित्सागर:** इसकी रचना सोमदेव द्वारा 11वीं शताब्दी ई. में की गई थी। इसे 'कहानियों की धाराओं का महासागर (Ocean of the Streams of Stories)' भी कहा जाता है। इस ग्रंथ में तत्कालीन कश्मीर के त्रासदीपूर्ण इतिहास को दर्शाया गया है।

कालिदास की रचनाएँ

कालिदास (380-415 ई.) गुप्त काल (चंद्रगुप्त द्वितीय के समकालीन) के प्रसिद्ध संस्कृत कवि और नाटककार थे।

अभिज्ञानशाकुंतलम् इसमें शकुंतला और राजा दुष्यंत की कथा है।

विक्रमोर्वशीयम्

इसमें उर्वशी और राजा विक्रम के प्रेम और मिलन की कथा है।

मालविकाग्निमित्रम्

• शुंग राजा अग्निमित्र और दासी मालविका की प्रेम कथा है।

• इसमें पुष्यमित्र शुंग द्वारा किए गए राजसूय यज्ञ का विवरण है।

रघुवंश

इसमें भगवान राम के वंश अर्थात्रघु वंश का वर्णन है।

कुमारसंभव

इसमें शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिके य के जन्म का चित्रण है।

मेघदूत यह दूत के रूप में बादल की यात्रा पर केंद्रित है।

• **शूद्रक (पाँचवीं शताब्दी ईस्वी):** उन्होंने मृच्छकटिकम् (मिट्टी की छोटी गाड़ी), वीणावासवदत्ता और भाण (एक लघु एकांकी एकालाप) की रचना की है।

मृच्छकटिकम् एक संस्कृत सामाजिक नाटक है। यह चारुदत्त नामक एक व्यापारी की कहानी है जो वसंतसेना नामक एक अमीर वेश्या के प्रेम में पड़ जाता है। **[UPSC 2003]**

मृच्छकटिकम्के पहले चार अंक वस्तुत: भास के अधूरे नाटक चारुदत्तम के संबंधित अंकों की नकल हैं।

• **भास (दूसरी-तीसरी शताब्दी ईस्वी):** उन्होंने 13 नाटक लिखे जो 20वीं शताब्दीकी शुरुआत में खोजे गए। इनमें सबसे लो कप्रिय नाटकस्वप्नवासवदत्ता है जिसमें कौशांबी के राजा उदयन और वासवदत्ता (अवंती की राजकुमारी) के प्रेमाख्यान का वर्णन है।

• भास द्वारा रचित उरुभंग, भीम के साथ युद्ध और उसके बाद की दुर्योधन की कहानी है।

• **उत्तर-रामचरितम्:** यह भवभूति द्वारा रचित सात अंकों का संस्कृत नाटक है। इसमें भगवान राम के वनवास से लौटने के बाद के जीवन का चित्रण है।

• **मुद्राराक्षस:** विशाखदत्त (चौथी शताब्दी ईस्वी) द्वारा रचित संस्कृत नाटक है, इसमें चाणक्य की सहायता से राजा चंद्रगुप्त मौर्य के सत्ता में आने का वर्णन है।

• **देवी चंद्रगुप्तम:** यह विशाखदत्त द्वारा रचित एक राजनीतिक नाटक है। यह नाटक राजा रामगुप्त द्वारा घेराबंदी के दौरान अपनी रानी ध्रुवदेवी को आक्रमणकारी शत्रु शक को सौंपने के निर्णय के बारे में है।

देवी चंद्रगुप्तम से प्रत्यक्षत: लिया गया एक फारसी नाटक 11वीं शताब्दी की पांडुलिपि मजमल-उत-तवारीख में पाया गया है।

हर्ष की रचनाएँ — रत्नावली

यह राजकुमारी रत्नावली और राजा उदयन के चरित्र पर केंद्रित एक संस्कृत नाटक है। इस नाटक में होली उत्सव का आरंभिक दस्तावेजी संदर्भ मिलता है।

नागनंद

यह एक संस्कृत नाटक है जिसमें एक दैवीय जादूगर राजकुमार जिमुतवाहन और उनके द्वारा नागाओं की रक्षा के लिए किये गए निःस्वार्थ कार्य का वर्णन है।

- इस पाठ में नंदी छंद के भीतर बुद्ध का आह्वान भी शामिल है। प्रियदर्शिका यह एक संस्कृत नाटक है जिसमें राजा उदयन और सम्राट दृधवर्मन की पुत्री प्रियदर्शिनी के मिलन का उल्लेख है।

गीत गोविंद (12वीं शताब्दी): इसकी रचना जयदेव ने की थी और इसमें कृष्ण और राधा के प्रेम का वर्णन है।

विष्णु शर्मा की पंचतंत्र और नारायण पंडित की हितोपदेश जैसी उपदेशात्मक दंतकथाएँ शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का हिस्सा हैं, जो व्यायवहारिक ज्ञान और सलाह प्रदान करती हैं।

संस्कृत में बौद्ध धर्मग्रंथ

- अश्वघोष द्वारा रचित 'बुद्धचरित' दूसरी शताब्दी के प्रारंभ का है। यह गौतम बुद्ध के जीवन पर लिखा गया एक महाकाव्य है।
- महाविभाष शास्त्र 150 ई. में लिखा गया एक महायान ग्रंथ है जिसमें अन्य गैर-बौद्ध दर्शनों की भी चर्चा है।
- कमल सूत्र को 'सद्धर्म पुंडरीक सूत्र' के नाम से भी जाना जाता है। यह महायान बौद्ध धर्म का एक प्रमुख ग्रंथ है।
- अभिधर्मोक्ष की रचना वसुबंधु ने की थी। इसमें अभिधर्म पर चर्चा (कानून पर टीकाएँ) शामिल है।
- उदानवर्ग में बुद्ध और उनके शिष्यों के उपदेशों का संकलन है। संस्कृत में जैन ग्रंथ
- **उपमितिभव प्रपंच कथा:** इसकी रचना सिद्धरासी ने 906 ई. में की थी और इसे प्रायः 'उपमिति भव की कथा' कहा जाता है।
- तत्त्वार्थ-सूत्र की रचना उमास्वाति ने दूसरी से पाँचवीं शताब्दी ईस्वी के दौरान की थी। इसमें तर्क , ज्ञानमीमांसा, नैतिकता और खगोल विज्ञान जैसे विषयों का वर्णन है। दिगंबर और श्वेतांबर दोनों संप्रदायों ने इस ग्रंथ को स्वीकार किया है।
- शांतिनाथ चरित्र 16वें तीर्थंकर शांतिनाथ से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण जैन ग्रंथ है, जो संस्कृत में लिखा गया है और यूनेस्को के वैश्विक धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- आदिपुराण की रचना दिगंबर भिक्षु जिनसेन ने की है। इसमें पहले बाईस तीर्थंकरों के जीवन का वर्णन है।
- समंतभद्र (दिगंबर विद्वान) की कृतियाँ
  - रत्नकरंड श्रावकाचार
  - आप्तमीमांसा एक ग्रंथ है, इसमें यथार्थ के जैन दृष्टिकोण की चर्चा है, जो सर्वज्ञानी की अवधारणा और उसके गुणों से संबंधित है।
- आचार्य जिनसेन (दिगंबर साधु) की कृति- महापुराण और हरिवंशपुराण। पालि और प्राकृत साहित्य उत्तर-वैदिक युग में साहित्य का विस्तार संस्कृत से आगे बढ़कर प्राकृत और पालि भाषाओं में भी लिखा जाने लगा। बौद्धों और जैनियों द्वारा रचित धार्मिक ग्रंथों की रचना में दोनों भाषाओं को प्रमुखता मिली।

बौद्ध साहित्य

बौद्ध साहित्य को मोटे तौर पर विहित/शास्त्रीय और गैर-विहित/अशास्त्रीय (Canonical and Non-canonical) साहित्य में वर्गीकृत किया गया है।

विहित साहित्य

बौद्ध साहित्य में'त्रिपिटक/तिपिटक' शामिल है, जोपालि मेंलिखे गएहैं। ये तीन भागों में विभाजित है–

- विनय पिटक में मठ संबंधी नियम और बौद्ध भिक्षुओं के आदेश सम्मिलित हैं। इसकी रचना उपालि ने की थी।
- सुत्त पिटक बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रह है। दीर्घ निकाय और खुद्दक निकाय इससे संबंधित महत्त्वपूर्ण निकाय है। इसे बुद्ध के शिष्य आनंद द्वारा संकलित किया गया है

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: कुमारसंभव

1. कुमारसंभव
2. हर्ष की रचनाएँ
3. रत्नावली
4. नागनंद

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कुमारसंभव

मुख्य परीक्षा दृष्टि: सुत्त पिटक बुद्ध की शिक्षाओं का संग्रह है। दीर्घ निकाय और खुद्दक निकाय इससे संबंधित महत्त्वपूर्ण निकाय है। इसे बुद्ध के शिष्य आनंद द्वारा संकलित किया गया है

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कुमारसंभव • हर्ष की रचनाएँ • रत्नावली • नागनंद • संस्कृत में बौद्ध धर्मग्रंथ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2003, 150 ई, 906 ई

• अभिधम्म पिटक में नैतिकता, मनोविज्ञान या ज्ञान के सिद्धांत से संबंधित विभिन्न विषयों को स्पष्ट किया गया है। मोगलिपुत्रतिस्स द्वारा रचित।

• **बौद्ध गैर-विहित साहित्य:** बौद्ध गैर-विहित साहित्य का एक प्रमुख उदाहरण 'जातक' है। जातक कथाओं में बुद्ध के पिछले जन्मों का वर्णन है।

बौद्ध ग्रंथ

दीपवंश z यह ईसा पूर्व तीसरी-चौथी शताब्दी में अनुराधापुर (श्रीलंका) में लिखा गया था।

• इसमें श्रीलंका में बौद्ध धर्म का ऐतिहासिक विवरण है और बुद्ध की श्रीलंका यात्रा व बुद्ध के अवशेषों का वर्णन है।

मिलिंद-पन्हो इस पुस्तक में मेंडर (या मिलिंद) और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच दार्शनिक संवाद का उल्लेख है।

महावंश z यह तीसरी-चौथी शताब्दी ईसा पूर्व का एक श्रीलंकाई पालि वृत्तांत है।

• इसमें दक्षिण एशिया के विभिन्न साम्राज्यों का ऐतिहासिक विवरण है।

महावस्तु इसमें संस्कृत, पालि और प्राकृत में लिखी गई जातक और अवदान कथाएँ सम्मिलित हैं।

ललितविस्तार

सूत्र ('पूर्ण नाटक') यह एक महायान ग्रंथ है, इसमें सारनाथ में बुद्ध के पहले उपदेश तक उनके जीवन से संबंधित विभिन्न कथाओं का वर्णन है।

उदान यह सबसे पुराने थेरवाद ग्रंथों में से एक है और इसमें 'अंधे आदमी और हाथी' की कहानी शामिल है।

बोधि वंश यह दसवीं शताब्दी ईस्वी में श्रीलंका में पालि में उपतिस्स द्वारा लिखा गया एक गद्य-काव्य है।

विशुद्धिमग्ग यह पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में श्रीलंका में बुद्धघोष द्वारा लिखा गया एक थेरवाद ग्रंथ है। इसमें बुद्ध की विभिन्न शिक्षाओं पर चर्चा शामिल है।

• **सर्वास्तिवाद विनय:** यह संघभूति द्वारा रचित है जो, एक भारतीय बौद्ध भिक्षु जिन्होंने चौथी शताब्दी ईस्वी के अंत में चीन की यात्रा की थी।

[UPSC 2024]

जैन साहित्य

जैन साहित्य आम तौर परप्राकृत, अर्ध मागधी, संस्कृत आदि में लिखा गया है।

उन्हें जैन आगम या अगम नामक विहित या धार्मिक ग्रंथों और गैर-विहित साहित्यिक कृतियों में विभाजित किया गया है।

जैन आगम प्राकृत में लिखे गए विहित धार्मिक ग्रंथ हैं जिनमें जैन तीर्थंकरों की शिक्षाएँ सम्मिलित हैं।

• प्रारंभ में, गणधरों-महावीर के प्रमुख अनुयायियों-ने उन्हें संकलित किया था।

• वर्तमान अंग (आगमों का एक उपसमूह) को पाँचवीं शताब्दी के मध्य में गुजरात केवल्लभी में आयोजित श्वेतांबर संप्रदाय के भिक्षुओं की एक परिषद में पुन: संकलित किया गया।

• दिगंबर आगम को अस्वीकार करते हैं।

• आगम में 46 ग्रंथ सम्मिलित हैं– 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्णकसूत्र, 4 मूलसूत्र, 6 छेदसूत्र और 2 चूलिकासूत्र।

• 12 अंग हैं– आचारांग सूत्र; सूत्रकृतांग; स्थानांग सूत्र; समवायंग सूत्र; व्याख्याप्रज्ञाप्ति या भगवती सूत्र; उपासकदशांग; अंतकृत्दशा; अनुत्तरोपपातिक दशा; प्रश्नव्ययाकरणानि; विपाकाश्रुत; और दृष्टिवाद।

प्राकृत जैन कृतियाँ

गाथा सप्तशती इसमें 700 छंद हैं, जिसमें राजा हाल द्वारा रचित 44 छंद भी सम्मिलित हैं। अन्य छंदों की रचना महिला कवयित्रियों ने की। इसे प्राय: 'कामसूत्र' के विपरीत माना जाता है।

उवसग्गहरं स्तोत्र इसकी रचना आचार्य भद्रबाहु ने की थी। यह तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की आराधना है।

कल्पसूत्र यह एक श्वेतांबर धार्मिक ग्रंथ है जो आंशिक रूप से गद्य में और आंशिक रूप से पद्य में लिखा गया है।

कालकाचार्य

कथा इसमें श्वेतांबर संप्रदाय के महान जैन मुनि कालकाचार्य और उनकी बहन की कथा है।

आचार्य कुंदकुंद की कृतियाँ

• समयसार में कर्म, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष जैसी जैन अवधारणाओं की व्याख्या की गई है।

• नियमसार में मोक्ष के मार्ग की चर्चा की गई है। जैन ग्रंथ भगवती सूत्र को भगवान महावीर की जीवनी माना जाता है।

पारसी साहित्य

जेंदा-अवेस्ता धार्मिक मान्यताओं, प्रथाओंऔर मार्गदर्शन पर आधारित विविध लेखों का संकलन है। यह अवेस्तान में लिखा गया था, जो संस्कृत से संबंधित भाषा है और अब विलुप्त हो चुकी है।

डेनकार्ड (DENKARD): इसे पारसी धर्म का विश्वकोश माना जाता है और इसमें विभिन्न पुस्तकों का संकलन है। इसकी रचना दसवीं शताब्दी ई. में हुई थी।

बुंदाहिशं (BUNDAHISHN): यह ग्रंथ धार्मिक सृजनवाद सिद्धांत के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

सिख साहित्य

आदि ग्रंथ: इसे पाँचवें गुरु, गुरु अर्जन देव के तत्वावधान में 1604 इस्वी में भाई गुरदास द्वारा गुरुमुखी लिपि में लिखा गया था। यह गुरु ग्रंथ साहिब का पूर्वर्ती है और इसमें सिख गुरुओंतथा भक्ति और सूफी परंपराओं के पंद्रह भगतों की शिक्षाएँ सम्मिलित हैं।

गुरु ग्रंथ साहिब: यह आदि ग्रंथ का विस्तार है जिसका कार्य वर्ष 1678 में दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह के तत्वावधान में किया गया। इसे सिखों का 11वाँ और अंतिम आध्ययात्मिक गुरु माना जाता है।

• यह गुरुमुखी लिपि और 'संत भाषा' में लिखा गया है। संतभाषा में पंजाबी, अपभ्रंश, हिंदी, ब्रजभाषा, संस्कृत, खड़ीबोली और फारसी के शब्द सम्मिलित हैं।

• इस ग्रंथ में रामानंद, नामदेव, रविदास, परमानंद, सैन, सूरदास, कबीर और बाबा फरीद जैसे तेरह भक्ति संतों की शिक्षाएँ सम्मिलित हैं, जिन्हें 'भगत' या भक्त कहा जाता है।

दशम ग्रंथ: यह गुरु गोबिंद सिंह द्वारा लिखित भजनों का संकलन है। इस संकलन में दंतकथाएँ और पौराणिक कहानियाँ सम्मिलित हैं, जिनमें कुछ भजन दैनिक प्रार्थनाओं का हिस्सा हैं जिन्हें 'नितनेम' के नाम से जाना जाता है।

जन्मसाखियाँ: इन पुस्तकों में गुरु नानक (प्रथम गुरु) के जीवन के बारे में पौराणिक कहानियाँ हैं।

अरदास गुरुद्वारों में दैनिक अनुष्ठानों के दौरान की जाने वाली प्रार्थना है। इन्हें गुरु ग्रंथ साहिब के खुलने और बंद होने के दौरान पढ़ा जाता है।

द्रविड़ साहित्य

द्रविड़ साहित्य में तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाएँ सम्मिलित हैं, जो सभी संस्कृत से प्रभावित हैं।

तमिल साहित्य

प्रारंभिक शास्त्रीय तमिल साहित्य को संगम साहित्य कहा जाता है। संगम शास्त्रीय साहित्य (Sangam Classics) में 473 कवियों द्वारा लिखी गई 18 रचनाएँ (आठ गीत संग्रह और दस लंबी कविताएँ) सम्मिलित हैं, इन कवियों में 30महिलाएँ थीं। संगम साहित्य में मुख्य रूप से दो कवि संप्रदाय हैं–

- अहम्व्यक्तिपरक प्रेमकाव्य है जो प्रेमी की व्यक्तिपरक भावनाओं से संबंधित है।
- पुरम वस्तुनिष्ठ और जनकाव्य है जो सभी प्रकार की भावनाओं से संबंधित है, मुख्य रूप से राजाओं के पराक्रम और गौरव, तथा अच्छाई और बुराई के विषय से सम्बंधित है।

संगम साहित्य में वर्ण के सामाजिक वर्गीकरण का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इसमें अराशर (राजा), वैशियार (व्यापारी) और वेल्लार (किसान) का उल्लेख किया गया है। **[UPSC 2022]**

संगम साहित्य को मोटे तौर पर दो समूहों में वर्गीकृत किया गया है– कथात्मक और उपदेशात्मक।

कथात्मक (आख्यान) उपदेशात्मक

- इन ग्रंथों में मेलकणक्कु , या अठारह प्रमुख रचनाएँ सम्मिलित हैं, जिनमें एट्टुथोगई, आठ लंबी कविताओं का संग्रह, और पत्तुप्पातु, दस छोटी कविताओं का संग्रह शामिल हैं।
- ये कथात्मक ग्रंथ वीरगाथा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिसमें नायकों और युद्धों का महिमामंडन किया जाता है, साथ ही दक्षिण भारत में राज्य निर्माण की प्रक्रिया के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करते है।
- इन ग्रंथों मेंकिल्लकणक्कु , या तिरुकुरल और नलदियार सहित अठारह लघु रचनाएँ सम्मिलित हैं।
- इन रचनाओं में राजाओं औरसमाजके लिएआचार संहिता निर्धारित की गई है तथा ये विभिन्न सामाजिक वर्गों और व्यवसायों पर प्रकाश डालते हैं।

संगम साहित्यिक संग्रह में कई महत्त्वपूर्ण रचनाएँ सम्मिलित हैं, जिनमें तोलकाप्पियम, एट्टुथोगई, पत्तुप्पात्तु, पाथिनेनकिलकणक्कुतथा शिलप्पादिकारम और मणिमेखलई महाकाव्य प्रमुख हैं।

तोलकाप्पियम्: यह सबसे प्रारंभिक तमिल साहित्यिक कृति थी, जिसकी रचना ऋषि तोलकाप्पियार या तोल्कप्पियम पेरियाथर ने की थी। यह प्रारंभिक तमिल काव्य को समझने के लिए एक व्यायाकरण ग्रंथ है।

तोलकाप्पियम्को तीन पुस्तकों में विभाजित किया गया है– एलुट्टातिकारम (तमिललिपि और स्वरविज्ञान से संबंधित),सोल्लातिकारम(तमिलव्ययाकरण और आकृति विज्ञान पर केंद्रित), और पोरुलातिकारम (साहित्य की विषय वस्तु पर प्रकाश डालती है)।

एट्टुथोगई: यह शास्त्रीय तमिल काव्य संग्रह है, और 'एट्टुथोगई' का अंग्रेजी में अनुवाद 'एट एंथोलॉजीज' (Eight Anthologies) है। इसके आठ संकलन– ऐंगुरुनूरू, नारिनई, अगनानूरू, पुराणनूरू, कुरुन्थोगई, कलिथोगई, परिपादल और पदिरूप्पात्तु हैं।

पत्तुप्पात्तु या दस लंबी कविताओं में निम्नलिखित सम्मिलित हैं– कुरिन्सिप्पातु, पोरुनाररुप्पातई, सिरुपानारुप्पातई, पेरुम्पनारुप्पातई, मदुरैक्कांसी, मलाइपतुकातम, पट्टिनाप्पलाई, मुल्लाइप्पात्तु, नेतुनलवतई और तिरुमुरुकररुप्पातई।

पाथिनेन्किल्कणक्कुमें अठारह ग्रंथ सम्मिलित हैं जिनमें प्रेम, नैतिकता, युद्ध और प्राचीन तमिल समाज की सामान्य जीवन शैली सहित कई विषय शामिल हैं।

शिलप्पादिकारम:इसकी रचनाइलंगों अडिगल ने कीथी। यहप्रेम (कोवलन और कन्नगी की प्रेम कहानी), विश्वासघात और न्याय की कहानी है जो तीन कंतम या पुस्तकों में संकलित है।

- इस ग्रंथ में जैन दर्शन के भाव भी सम्मिलित हैं।

मणिमेखलई: यह एक शास्त्रीय तमिल महाकाव्य है जिसे तमिल साहित्य के पाँच महान महाकाव्यों में गिना जाता है।

- इसकी रचना कवि सत्तनार ने की थी और यह प्रसिद्ध तमिल महाकाव्य शिलप्पादिकारम का उत्तर ग्रंथ था।

• इसमें बौद्ध धर्म से संबंधित विषयों को प्रमुखता से शामिल किया गया है। मलयालम साहित्य भक्ति आंदोलन के उन्नायक एषुत्तच्छन् (Ezhuthachan) मलयालम साहित्य के जनक हैं।

• कोकासंदिसन मलयालम साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण कृति है।

• भास कौटिल्य राजनीति और अर्थशास्त्र पर प्राचीन भारतीय ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' पर एक टीका है।

• रामचरितम्की रचना 13वीं शताब्दी में प्राचीन मलयालम कवि चीरामन ने की थी। इस काव्यकृति में भगवान राम और उनके साहसिक कार्यों का वर्णन है।

तेलुगु साहित्य

नन्नय (11वीं शताब्दी) को तेलुगु का पहला कवि माना जाता है। यद्यपि, विजयनगर काल के दौरान तेलुगु साहित्य अपने चरम पर पहुँच गया था।

तेलुगु साहित्य की कुछ प्रमुख रचनाएँ

• **उत्तरहरिवंशम्:** इसकी रचना राजा बुक्का प्रथम के प्रसिद्ध दरबारी कवि नचना सोमनाथ ने की थी।

• **मनु चरित्र:** इसकी रचना अल्लासानि पेद्दाना (जिसे आंध्र कविता पितामहदु के नाम से भी जाना जाता है) ने की थी।

• **पारिजातपहारनमु:** इसकी रचना नंदी थिम्मन ने की थी।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: द्रविड़ साहित्य



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — द्रविड़ साहित्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पारिजातपहारनमु: इसकी रचना नंदी थिम्मन ने की थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: द्रविड़ साहित्य • तमिल साहित्य • कथात्मक (आख्यान) उपदेशात्मक • तेलुगु साहित्य • तेलुगु साहित्य की कुछ प्रमुख रचनाएँ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2022

• **पांडुरंग महात्म्यम्:** इसकी रचना तेनाली रामकृष्ण (एक दरबारी विदूषक और कवि जिनके बारे में कहा जाता है कि उनका राजा कृष्ण देवराय के साथ घनिष्ठ संबंध था) ने की थी।

• **वसुचरित्रम् और नरसाभूपालेयमु:** इसकी रचना रामराज भूषणुडु (जिन्हें भट्टुमूर्ति के नाम से भी जाना जाता है) ने की थी।

• **नलोपाख्यानमु:** इसकी रचना हरिश्चंद्र ने की थी।

• **राजशेखरचरित्र:** इसकी रचना मदय्यागरी मल्लाना ने कीथी। इसमें अवंती साम्राज्य के राजा राजशेखर के प्रेम और युद्ध का वर्णन है।

• **रामभूदयामु:** इसकी रचना अय्यालाराजू रामभद्रुडु ने की थी।

• नन्नया, टिक्कन और प्रगदा ने मिलकर ने तेलुगु महाभारत की रचना की। कृष्णदेवराय एक महान विद्वान और साहित्य के संरक्षक थे।

• उनके दरबार में आठ निपुण तेलुगु कवि रहते थे, जिन्हें सामूहिक रूप से 'अष्टदिग्गज' कहा जाता था।

• उन्होंने हरिदास (एक तमिल कवि) और मल्लनार्य, चतु विट्ठलनाथ और थिम्मन जैसे कन्नड़ कवियों को संरक्षण दिया।

• अपने कलिंग अभियान के दौरान, उन्होंने अमुक्तमाल्यद की रचना की, जिसमें उनके सपने में आए भगवान विष्णु का वर्णन है।

• उन्होंने कृष्ण देव रायण दिनाचारी (कन्नड़ में) और मदालसा चरित्र, सत्यवदु परिणय, रसमंजरी, और जाम्बवती कल्याण सहित संस्कृत ग्रंथों की रचना भी की।

कन्नड़ साहित्य

जैन विद्वानों ने कन्नड़ साहित्य में प्रमुख भूमिका निभाई।

कन्नड़ साहित्य की कुछ प्रमुख रचनाएँ

- **धर्मनाथ पुराण:** यह माधव द्वारा 15वें तीर्थंकर के जीवन पर लिखा गया था।
- **धर्म परीक्षे:** इसकी रचना उरित्त विलास ने की थी, इसमें जैन शिक्षाओं का वर्णन है।
- **कविराजमार्ग:** इसकी रचना एक शक्तिशाली राष्ट्रकूट राजा नृपतुंग अमोघवर्ष प्रथम ने की थी।
- **हरिश्चंद्र काव्य और सोमनाथ चरित:** इनकी रचना हरिश्वर ने की थी।
- **हरिवंशभ्युदय और जीव संबोधन:** इनकी रचना बंधुवर्मा ने की थी।
- **जगन्नाथविजय:** इसकी रचना रुद्र भट्ट ने की थी।
- **मदन विजय या कब्बीगारा कावा:** इसकी रचना अंडय्या ने की थी। यह एक लोकप्रिय ग्रंथ था क्योंकि यह पहला पूर्णतः कन्नड़ ग्रंथ था, जिसमें कोई भी संस्कृत शब्द नहीं था।
- **शब्दमणिदर्पण:** यह के सिरजा द्वारा रचित एक व्ययाकरण ग्रंथ है।
- **सूक्तिसुधार्णव:** यह मल्लिकार्जुन द्वारा रचित काव्य संग्रह है।
- **तोरवे रामायण:** इसकी रचना नरहरि ने की थी और यह पूरी तरह से कन्नड़ में लिखी गई थी। यह वाल्मिकी रामायण से प्रेरित पहली राम कथा थी।
- **जैमिनी भरत:** इसकी रचना लक्ष्मीशा ने की थी और इसे कामता-कारिकुतवन-चैत्र (कर्नाटक आम के बगीचे का झरना) भी कहा जाता है।
- **हदिबदेय धर्म (एक धर्मपरायण पत्नी का कर्तव्य):** इसकी रचना होनम्मा (एक कन्नड़ कवयित्री) ने की थी।
- कन्नड़ लेखक मस्ती वेंकटेश ने कन्नड़ लघुकथा का विकास किया। कन्नड़ भाषा के 'रत्नत्रय' या 'तीन रत्नों' में निम्नलिखित सम्मिलित हैं–
- पम्पा (नौवीं-दसवीं शताब्दी ई.)
- पम्पा को कन्नड़ भाषा का जनक भी कहा जाता है।
- उनकी दो सबसे प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ आदिपुराण (चंपू शैली रचित) और विक्रमार्जुन विजय हैं।
- वह कविता में रस की महारत के लिए जाने जाते हैं और वह चालुक्य अरिके सरी के दरबार में थे।
- पोन्ना (नौवीं-दसवीं शताब्दी ई.) नेप्रसिद्ध ग्रंथ शांति पुराण की रचना की।
- रन्ना (दसवीं-11वीं शताब्दी ई.) ने प्रसिद्ध ग्रंथ अजित पुराण की रचना की।

मध्यकालीन साहित्य — फारसी साहित्य — दीवान (फारसी काव्य संग्रह), नुह — सिपिहर, और देवल रानी-खिज्र

खाँ (दुखद प्रेम काव्य) इनकी रचना अमीर खुसरो देहलवी ने की थी।

तारीख-ए-फिरोज शाही इसे जियाउद्दीन बरनी ने लिखा था।

तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) बाबर

हुमायूँनामा गुलबदन बेगम (हुमायूँ की सौतेली बहन)।

आईने अकबरी और अकबरनामा दरबारी इतिहासकार अबुल फजल पद्मावत मलिक मुहम्मद जायसी शाहजहाँनामा इनायत खाँ ताज-उल-मासिर हसन निज़ामी (दिल्ली सल्लतनत का पहला सरकारी संकलन) कुल्लियात (छंद संग्रह) मीर जाफर जतल्ली पादशाहनामा अब्दुल हामिद लाहौरी रज्मनामा (युद्ध की किताब) यह सम्राट अकबर के आदेश पर महाभारत का पहला फारसी अनुवाद था।

सियासतनामा निजामुलमुल्क तुसी इक्ता व्यवस्था का वर्णन योग वशिष्ठ का फारसी में अनुवाद निजामुद्दीन पानीपती ने अकबर के शासनकाल में किया था। **[UPSC 2022]**

उर्दू साहित्य

- उर्दू का विकास फारसी और संस्कृत के मेल से हुआ। अमीर खुसरो ने उर्दू के प्रारंभिक चरण में इसके विकास में योगदान दिया।
- उर्दू मुख्य रूप से हिंदी व्ययाकरण और फारसी लिपि का अनुसरण करती है।
- अहमदनगर, गोलकुंडा, बीजापुर और बरार के बहमनी राज्यों में इसके उपयोग के कारण इसे शुरू में दक्कनी (दक्षिणी) कहा जाता था।
- प्रख्यात उर्दू कवियों में मिर्जा गालिब, सौदा, दर्द और मीर तकी मीर सम्मिलित हैं।
- 20वीं सदी में, इकबाल एक प्रख्यात उर्दू साहित्यकार बन गए, उन्हें 'सारे जहाँ से अच्छा' के लिए जाना जाता है।

हिंदी और उसकी बोलियाँ और संबंधित साहित्य

पृथ्वीराज रासो यह पहली हिंदी पुस्तक थी और इसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन एवं चुनौतियों का वर्णन किया गया है।

रामचरितमानस, दोहावली, गीतावली और विनय पत्रिका इनकी रचना तुलसीदास ने की थी।

सूर सागर इसकी रचना सूरदास ने की थी, और इसमें कृष्ण की बाल्यावस्था और गोपियों के साथ किशोरावस्था के प्रसंग हैं। (ब्रज भाषा में) आधुनिक साहित्य हिंदी साहित्य अंधेर नगरी भारतेंदु हरिश्चंद्र (आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक) द्वारा रचित एक राजनीतिक व्ययंग्य है।

भारत दुर्दशा भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा रचित एक प्रसिद्ध राष्ट्रवादी कृति है।

सत्यार्थ प्रकाश (1875) स्वामी दयानंद सरस्वती गोदान और बड़े भैया मुंशी प्रेमचंद अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ और पथ के साथी महादेवी वर्मा बंगाली साहित्य बंगाली में कई प्राचीन और मध्यकालीन साहित्यिक कृतियाँ, जैसे मंगल काव्य, उन्नीसवीं सदी से पहलेमौजूद थीं, लेकिन यह व्यापक रूप सेप्रकाशित नहीं हुई थीं।

दुर्गेश नंदिनी (1965) इसकी रचना बंकिम चंद्र चटर्जी ने की थी।

आनंद मठ

(1882) यह उपन्यास बंकिम चंद्र चट्टोपाध्ययाय द्वारा लिखा गया था, और हमारा राष्ट्रगीत (वंदे मातरम्) इसी उपन्यास से लिया गया है।

गीतांजलि (1913) इसकी रचना रबींद्रनाथ टैगोर ने की थी।

राजस्थानी साहित्य

विभिन्न बोलियाँ मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य की विशेषता हैं और काल्पनिक लेखन के दो प्राथमिक रूप हैं– डिंगल और पिंगल। राजस्थानी कहानियाँ मौखिक रूप से औरवीरकाव्य, या विजयी काव्य गाकर सुनाने वाले भाटों द्वारा प्रसारित की जाती थीं।

कश्मीरी साहित्य

प्रारंभिक मध्य काल के दौरान, जब भक्ति आंदोलन का विकास हो रहा था, तब कश्मीरी भाषा की पहलीमहिला कवयित्री लाल देद (एक शैव रहस्यवादी) का उदय हुआ।

पंजाबी साहित्य

- पंजाबी साहित्य मुख्य रूप से दो प्रमुख लिपियों में रचा गया – फारसी और गुरुमुखी।
- गुरु गोबिंद सिंह ने पंजाबी में सवैये नामक काव्य लिखा था।
- स्थानीय पंजाबी साहित्य प्रेमकथाओंऔर महाकाव्यों पर केंद्रित है, जैसे फजल शाह द्वारा रचित सोहनी-महिवाल, हाशिम शाह द्वारा रचित सस्सी-पुन्नू और वारिस शाह द्वारा रचित हीर-रांझा।
- बाबा फरीद और बुल्ले शाह का सूफी काव्य, जिसे काफीस के नाम से जाना जाता है, लोकप्रिय गायन के माध्यम से जनता और शासकों द्वारा काफी पसंद किया गया।
- आधुनिक पंजाबी साहित्य राष्ट्रवादी लेखन से प्रभावित था, जिसका उदाहरण भगत सिंह की प्रसिद्ध कृति रंग दे बसंती चोला है।

मराठी साहित्य

• सबसे पुरानी ज्ञात मराठी कृति 13वीं शताब्दी की है, जिसकी रचना संत ज्ञानेश्वर ने की थी, उन्होंने कीर्तन की शुरुआत कीथी और भगवत गीता पर एक विस्तृत टीका लिखी थी।

• 13वीं-14वीं सदी की महिला लेखिका जनाबाई सबसे पहली ज्ञात महिला मराठी लेखिका हैं।

• 16वीं शताब्दी के प्रसिद्ध संत एकनाथ ने भागवत पुराण और रामायण पर टीकाएँ लिखीं और स्थानीय भाषा में प्रसिद्ध कृतियों की रचना की।

• राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान, बाल गंगाधर तिलक ने मराठी में क्षेत्रीय समाचार पत्र के सरी का प्रकाशन किया।

• ज्योतिबा फुले द्वारा लिखी गई गुलामगिरी 19वी सदी की महत्त्वपूर्ण रचना है।

भारतीय भाषाएँ एवं उनका प्रभाव

विभिन्न संस्कृतियों ने अपनी भाषाएँ और विशाल साहित्यिक परंपराएँ विकसित की हैं, जो समकालीन संस्कृति, जीवन शैली, समाज और राजनीति के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

भारत की आधिकारिक भाषा एवं संवैधानिक प्रावधान

• **अनुच्छेद 343** (1) में उल्लेख है, 'भारतीय संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होगी।'
  ◦ 'जब तक संसद अन्यथा निर्णय न ले, संविधान लागू होने के 15 वर्ष बाद अर्थात् 26 जनवरी 1965को राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का उपयोग बंद हो जाएगा।

• 1963 के राजभाषा अधिनियम ने देवनागरी लिपि में हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया, वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी का सहायक राजभाषा का दर्जा बरकरार रखा गया।

• भारतीय संविधान प्रत्येक राज्य को राज्य-स्तरीय पत्राचार के लिए अपनी राजभाषा चुनने की अनुमति देता है।

हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।

• 2011 की जनगणना के अनुसार, लगभग 44% लोग अपनी मातृभाषा के रूप में हिंदी बोलते हैं।

• अंग्रेजी और मंदारिन के बाद हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा भी है।

• भारत की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बंगाली है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: हिंदी और उसकी बोलियाँ और संबंधित साहित्य

1875	1965	1882	1913
आनंद मठ	राजस्थानी साहित्य	कश्मीरी साहित्य	पंजाबी साहित्य

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — हिंदी और उसकी बोलियाँ और संबंधित साहित्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: भारत की दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बंगाली है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: आनंद मठ • राजस्थानी साहित्य • कश्मीरी साहित्य • पंजाबी साहित्य • मराठी साहित्य | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1875, 1965, 1882, 1913, 1963

IUC विशेष स्मृति सूत्र #11: द्रविड़ मंदिर स्थापत्य का विकास क्रम (पल्लव)

ट्रिक: 'महेश ने नरसिंह के साथ राज और नंदू को देखा' — महेंद्रवर्मन शैली (मंडप), नरसिंहवर्मन/मामल्ल शैली (रथ मंदिर), राजसिंह शैली (शोर मंदिर), नंदिवर्मन शैली।

आठवीं अनुसूची के अंतर्गत सूचीबद्ध भाषाएँ

वर्तमान में, भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ सम्मिलित हैं।

प्रारंभ में 14 भाषाओं को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था– असमिया, हिंदी, मलयालम, पंजाबी, तेलुगु, बंगाली, कन्नड़, मराठी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, कश्मीरी, उड़िया और तमिल।

21वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम 1967 द्वारा सिंधी को जोड़ा गया।

71वें संशोधन अधिनियम द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को जोड़ा गया।

92वें संशोधन अधिनियम द्वारा बोडो, मैथिली, डोगरी और संथाली को जोड़ा गया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- न तो संविधान और न ही कोई अधिनियम भारत की राष्ट्रभाषा को परिभाषित करता है।
- राज्यों की राज भाषाएँ जो आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं हैं–
- त्रिपुरा- कोकबोरोक; पुद्दुचेरी- फ्रें च; मिजोरम- मिजो; नागालैंड और मेघालय- अंग्रेजी।

भारत में शास्त्रीय भाषाएँ

2004 में, भारत सरकार ने भाषाओं को 'भारत में शास्त्रीय भाषाओं' के रूप में वर्गीकृत करने के लिए मानदंड स्थापित किए। इन मानदंडों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं–

- **उच्च पुरातनता:** भाषाओं में 1500-2000 वर्षों तक फैले प्रारंभिक ग्रंथ या अभिलिखित इतिहास होना चाहिए।
- **प्राचीन साहित्य:** भाषा में प्राचीन साहित्य का भंडार होना चाहिए जिसे बोलने वालों की विभिन्न पीढ़ियों द्वारा महत्त्व दिया गया हो।
- **मौलिकता:** साहित्यिक परंपरा को किसी अन्य भाषा समुदाय से उधार नहीं लिया जाना चाहिए।
- **विशिष्टता:**शास्त्रीय भाषा और साहित्य को आधुनिक रूपों या शाखाओं से अलग होना चाहिए , यहाँ तक कि असंततता भी प्रकट करनी चाहिए।

भारत की शास्त्रीय भाषाएँ

भारत सरकार ने साल 2004 में 'भारत की शास्त्रीय भाषाओं' का दर्जा देना शुरू किया था। वर्तमान में छ: भाषाओं को वर्ष 2004- 2014 तक शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया जो इस प्रकार हैं-

- तमिल (2004)
- संस्कृत (2005)
- तेलुगु (2008)
- कन्नड़ (2008)
- मलयालम (2013) और
- उड़िया (2014) इसके अतिरिक्त केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पाँच और भाषाओं को "शास्त्रीय" भाषा का दर्जा दिये जाने को स्वीकृति दी है, जिससे देश की सांस्कृतिक रूप से महत्त्वपूर्ण भाषाओं की सूची में विस्तार हो गया है। इस विस्तार के माध्यम से 6 भाषाओं के अलावा इसमें 5 नई भाषाएँ मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को भी शामिल की गई हैं।

- **जनगणना 2011 और भारतीय भाषाएँ:** वर्ष 2011 में प्राप्त कुल अपरिष्कृत आँकड़े/रॉ रिटर्न (Raw Returns) के अनुसार भारतीय भाषाओं की संख्या लगभग 19,569 थे। युक्तिसंगतीकरण प्रक्रिया के माध्यम से हुए जनगणना में मातृभाषाओं के अपरिष्कृत आँकड़ें प्राप्त किए गए, युक्तिसंगत मातृभाषाओं की कुल संख्या 2,843 थी।

- मातृभाषाओं के युक्तिसंगत नामों को अन्य भाषाओं या बोलियों के साथ भाषाई संबंध या संबद्धता के उचित स्थानों पर रखा गया ताकि वर्गीकरण प्रक्रिया के माध्यम से संगठित और वर्गीकृत पैटर्न के प्रकाशन में उनकी अंतिम प्रस्तुति हो सके। वर्ष 2011 में वर्गीकृत मातृभाषाओं की कुल संख्या 1,369 थी। कुल 1474 मातृभाषाओं को 'अवर्गीकृत' (Unclassified) माना गया, जिनकी भाषाई रूप से पूर्णत: पुष्टि नहीं हो पाई थी।

- 10,000 या उससे अधिक वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत वर्गीकृत मातृभाषाओं को भाग A और भाग B में उपयुक्त भाषाओं के अंतर्गत समूहीकृत किया गया। भाग A में, भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाओं को रखा गया। अनुसूचित भाषाओं (Scheduled Languages) की कुल संख्या 22 थी जिसमें 123 मातृभाषाएँ शामिल थी। भाग B में, उन भाषाओं को शामिल किया गया है जिन्हें आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया और इसमें 99 भाषाएँ

सम्मिलित हैं। जनगणना 2011 के अनुसार, 147 मातृभाषाओं को 99 गैर-अनुसूचित भाषाओं (Non-Scheduled Languages) के अंतर्गत समूहीकृत किया गया था।

• "अन्य" (Others) नामक एक और श्रेणी थी जिसमें 10,000 से कम आबादी वाली 373 वर्गीकृत मातृभाषाएँ और 1474 अवर्गीकृत मातृभाषाएँ शामिल थी जिन्हें किसी भी भाषा के अंतर्गत समूहीकृत नहीं किया गया था। द्विभाषावाद (Bilingualism) और त्रिभाषावाद (Trilingualism) के आधार पर जनसंख्या, द्विभाषावाद और त्रिभाषावाद आयु और लिंग के आधार पर जनसंख्या, द्विभाषावाद और त्रिभाषावाद, शिक्षा स्तर और लिंग के आधार पर जनसंख्या के आँकड़े क्रमशः तालिका C17, C18 और C19 में प्रकाशित किए गए।

लाभ

• **अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार:** शास्त्रीय भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वानों को प्रतिवर्ष दो प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त होते हैं।

• **उत्कृष्टता केंद्र:** 'शास्त्रीय भाषाओं में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र' की स्थापना।

• **शिक्षा पीठ:** विश्विद्यालय अनुदान आयोग से ऐसी भाषाओं के प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए केंद्रीय विश्विद्यालयों में शास्त्रीय भाषाओं के लिए विशिष्ट संख्या में शिक्षा पीठ बनाने का अनुरोध किया है।

भारत की प्राचीन लिपियाँ

प्राचीन लिपियाँ भारत में भाषा और पत्राचार को रिकॉर्ड करने में महत्त्वपूर्ण रही हैं। ब्राह्मी और खरोष्ठी दो प्रमुख प्राचीन लिपियाँ हैं, जिन्होंने विभिन्न आधुनिक लिपियों के विकास को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

प्राचीन लिपियाँ विशेषताएँ और महत्त्व — ब्राह्मी लिपि

• इसे देवनागरी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, उड़िया, असमिया और बंगाली सहित कई आधुनिक भारतीय लिपियों का पूर्वर्ती मानाजाता है।

• यह बायीं से दायीं ओर लिखी जाती है। ग्रंथ लिपि

• छठी शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक दक्षिण भारत के तमिलनाडु और केरल में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था।

• संस्कृत और मणिप्रवालम लिखने के लिए उपयोग की गई थी।

• यह एक ब्राह्मी लिपि है, जो तमिलनाडु में ब्राह्मी से विकसित हुई है, तथा मलयालम, तिगलारी और सिंहली लिपियों की पूर्वर्ती है। गुप्त लिपि

• गुप्त साम्राज्य से संबंधित थी और संस्कृत के लिए उपयोग की गई थी।

• इसकी उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई।

• इससे विभिन्न लिपियों की उत्पत्ति हुई, जिनमें नागरी, शारदा, सिद्धम, देवनागरी, गुरुमुखी (पंजाबी के लिए), असमिया, बंगाली और तिब्बती लिपियाँ सम्मिलित हैं।

गुरुमुखी लिपि

• इसे 16वीं शताब्दी के दौरान गुरु अंगद द्वारा मानकीकृत किया गया था और इसे शारदा लिपि से लिया गया था।

• संपूर्ण गुरु ग्रंथ साहिब गुरुमुखी लिपि में लिखा गया है और इसे सामान्य रूप से सिखों और हिंदुओं द्वारा पंजाबी भाषा के लिए उपयोग किया जाता है।

सिंधु लिपि सिंधु घाटी सभ्यता द्वारा बनाई गई एक लिपि है, जिसमें प्रतीकों का समावेश है, लेकिन आज तक इसे नहीं पढ़ा जा सका है।

खरोष्ठी लिपि

• इसे ब्राह्मी की सहोदरी लिपि माना जाता है और इसका उपयोग प्राचीन गांधार में गांधारी प्राकृत और संस्कृत लिखने के लिए किया जाता था।

• जेम्स प्रिंसेप इसे पढ़ने में सफल रहे।

• इसमें रोमन अंकों के समान अंक सम्मिलित हैं।

• अधिकांशतः दायीं से बायीं ओर लिखी जाती है, लेकिन कुछ शिलालेख बायीं से दायीं ओर दिशा दर्शाते हैं। मोडी लिपि

• ऐतिहासिक रूप से, इसका उपयोग मराठी और अन्य भाषाओं को लिखने के लिए किया जाता था।

• 20वीं शताब्दी तक जब देवनागरी का प्रचार हुआ तब तक यह मराठी की आधिकारिक लिपि थी।
• ज्ञात हो कि इसका उपयोग उर्दू, कन्नड़, गुजराती, हिंदी और तमिल के लिए किया गया था। शारदा लिपि
• इसका विकास आठवीं शताब्दी के आसपास हुआ और इसे अबीगुडा शैली में लिखा गया था।
• प्रारंभ में इसका उपयोग संस्कृत और कश्मीरी के लिए किया गया, लेकिन बाद में कश्मीर तक ही सीमित रही।
• वर्तमान में, कश्मीरी पंडित समुदाय द्वारा औपचारिक उद्देश्यों के अलावा इसका उपयोग शायद ही कभी किया जाता है। उर्दू लिपि
• यह फारसी वर्णमाला को संशोधित करके दायीं से बायीं ओर लिखी जाती है।
• इसका फारसी-अरबी लिपि की नास्तालिक शैली के विकास पर काफी प्रभाव पड़ा था।
• इसके विस्तारित रूप 'शाहमुखी' को पंजाबी और सरायकी जैसी अन्य इंडो-आर्यन भाषाओं को लिखने के लिए उपयोग किया जाता है। वट्टेलुत्तु लिपि
• इसका विकास तमिल-ब्राह्मी से हुआ था और अबीगुडा शैली में लिखी जाती थी।
• इसका उपयोग ग्रंथी, पल्लव और तमिल लिपि लिखने के लिए किया जाता था। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन (National translation Mission) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन स्थापना: मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा वर्ष 2008 में शुरू किया गया।

उद्देश्य: भारतीय भाषाओं के बीच साहित्यिक और विद्वत्तापूर्ण कार्यों के अनुवाद को बढ़ावा देना।

केंद्रित क्षेत्र:

• विज्ञान, साहित्य, इतिहास, दर्शन आदि के ग्रंथों का अनुवाद करना।
• भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करना और ज्ञान तक पहुँच को बढ़ाना।
• बहुभाषिकता और अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना।

विशेष लक्षित भाषाएँ: संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल प्रमुख भारतीय भाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

कार्यान्वयन: विश्विद्यालयों और भाषाई निकायों के सहयोग से केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL) द्वारा संचालित।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: प्राचीन लिपियाँ विशेषताएँ और महत्त्व

1. प्राचीन लिपियाँ विशेषताएँ और महत्त्व
2. ब्राह्मी लिपि
3. गुरुमुखी लिपि
4. खरोष्ठी लिपि

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — प्राचीन लिपियाँ विशेषताएँ और महत्त्व

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कार्यान्वयन: विश्विद्यालयों और भाषाई निकायों के सहयोग से केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL) द्वारा संचालित।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: प्राचीन लिपियाँ विशेषताएँ और महत्त्व • ब्राह्मी लिपि • गुरुमुखी लिपि • खरोष्ठी लिपि • केंद्रित क्षेत्र | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2008

नेशनल डिक्शनरी ऑफ इंडियन लेंग्वेज (National Dictionary of Indian Languages)

स्थापना: वर्ष 2008 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा शुरू किया गया।

उद्देश्य: भारतीय भाषाओं के लिए व्यापक शब्दकोश संकलित करना, भाषाई विरासत को संरक्षित करना और भाषा के विकास को बढ़ावा देना।

केंद्रित:

• इसमें आठवीं अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल किया गया है।
• इसमें शब्दों के अर्थ, व्युत्पत्ति और उपयोग सम्मिलित हैं।

कार्यान्वयन: केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान (CIIL), मैसूरु द्वारा प्रबंधित। मिशन भाषिणी (Mission Bhasini)

• **स्थापना:** इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY), भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया।

• **उद्देश्य:** ऐसी भाषा प्रौद्योगिकियों को विकसित करना और बढ़ावा देना जो भारतीय भाषाओं के लिए डिजिटल समावेशन को सक्षम बनाएगी, डिजिटल अर्थव्यवस्था तक पहुँच और भागीदारी को बढ़ावा देगी।

• **प्रमुख केंद्रित क्षेत्र:**

  ◦ **भाषा उपकरणों का विकास:** भारतीय भाषाओं में वाक्पहचान, अनुवाद और टेक्स्ट-टू-स्पीच के लिए उपकरणों को विकसित करना।

  ◦ **भाषा संसाधन विकास:**भाषा प्रौद्योगिकियों के विकास को बढ़ावा देने के लिए भारतीय भाषाओं के लिए कॉर्पोरा, लेक्सिकॉन और डेटासेट निर्मित करना।

  ◦ **बहुभाषी डिजिटल सामग्री:** सरकारी सेवाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य सार्वजनिक क्षेत्रों में बहुभाषी संचार को सुविधाजनक बनाना।

  ◦ **AI और NLP एकीकरण:** भारतीय भाषाओं में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (NLP) समाधानों को सक्षम करना।

• **कार्यान्वयन:** इस परियोजना का कार्यान्वयन C-DAC (उन्नत कंप्यूटिंग विकास केंद्र) और अन्य हितधारकों द्वारा राज्य सरकारों, अनुसंधान संगठनों और उद्योग भागीदारों के सहयोग से किया जा रहा है।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (National mission for Manuscripts)

स्थापना: संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आरंभ वर्ष: 2003 उद्देश्य: भारत की प्राचीन पांडुलिपियों को सूचीबद्ध, संरक्षित और डिजिटलीकृत करके उनका संरक्षण और संवर्धन करना तथा उनकी सुरक्षा और उन तक पहुँच को सुनिश्चित करना।

मुख्य केंद्रित क्षेत्र:

• **संरक्षण:** उचित संरक्षण और पुनरुद्धार/नवीनीकरण तकनीकों (Restoration Techniques) के माध्यम से पांडुलिपियों की सुरक्षा करना।

• **सूचीकरण और दस्तावेज़ीकरण:** शोध और सार्वजनिक उपयोग के लिए उन्हें अधिक सुलभ बनाने हेतु पांडुलिपियों का एक व्यापक डेटाबेस निर्मित करना।

• **डिजिटलीकरण:** क्षति को रोकने और व्यापक पहुँच हेतु उन्हें ऑनलाइन उपलब्ध कराने के लिए पांडुलिपियों का डिजिटलीकरण करना।

• **क्षमता निर्माण:** संस्थानों, शोधकर्ताओं और कार्य में शामिल व्यक्तियों को पांडुलिपि संरक्षण, संरक्षण और डिजिटलीकरण में प्रशिक्षण प्रदान करना।

• **जागरूकता और अनुसंधान:** पांडुलिपियों के संरक्षण और संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के महत्त्व के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना।

• **कार्यान्वयन:** पुस्तकालयों, अभिलेखागारों, संग्रहालयों और शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) द्वारा प्रबंधित।

भारत के विदेशी यात्रियों का विवरण

यात्री यात्रा की अवधि मूल देश यात्रा वृत्तान्त मेगस्थनीज 302-298 ईसा पूर्व ग्रीस मौर्य साम्राज्य में सेल्यूकस का राजदूत; "इंडिका" का लेखक, जिसमें मौर्य प्रशासन और समाज के बारे में जानकारी दी गई फाह्यान (फ़ैक्सियन) 399-414 ई. चीन एक बौद्ध भिक्षु जिसने गुप्त काल के दौरान भारत की यात्रा की; बौद्ध धर्म की स्थिति और चंद्रगुप्त द्वितीय के प्रशासन के बारे में लिखा।

ह्वेन सांग (ह्वेन सांग) 629-645 ई. चीन एक बौद्ध विद्वान जिसने हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया; इसका लेख "सी-यू-की" भारतीय धर्म, राजनीति और भूगोल के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

इब्नबतूता 1333-1341 ई. मोरक्को मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के दौरान भारत आने वाला एक मुस्लिम यात्री; उसकी कृति "रिहला" सल्तनत काल के दौरान भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का वर्णन करती है।

अलबरूनी 1017-1030 ई. फारस (ईरान) एक विद्वान और यात्री जिसने भारतीय संस्कृति, धर्म और विज्ञान का अध्ययन किया, भारतीय दर्शन, खगोल विज्ञान और समाज के बारे में “किताब अल-हिंद" लिखी मार्को पोलो 1271-1293 ई. वेनिस (इटली) एक वेनिस व्यापारी जिसने चीन के युआन वेनिस (इटली) राजवंश के तहत भारत की यात्रा की; उनकी पुस्तक “द ट्रैवल्स ऑफ मार्को पोलो" भारतीय उपमहाद्वीप के उस समयकाल का विवरण देती है।

निकोलो डी कोंटी 1419-1444 ई. वेनिस (इटली) एक वेनिस व्यापारी जिसका यात्रा वृत्तान्त भारतीय वाणिज्य और भारत में 15वीं सदी के राज्यों की स्थितियों पर केंद्रित हैं।

टैवर्नियर (जीन-बैप्टिस्ट) 1630-1660 ई. फ्राँस एक फ्रांसीसी यात्री और जौहरी जोमुगल साम्राज्य के दौरान भारत आया था; इसकी कृति “ट्रैवल्स इन इंडिया" भारत की संपत्ति, समाज और मुगल दरबार का विस्तृत विवरण देती है।

विलियम लोगान 1836-1877 ई. यूनाइटेड किंगडम एक ब्रिटिश सिविल सेवक जिसने केरल के मालाबार क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का दस्तावेजीकरण अपने “मालाबार मैनुअल" में किया।

थॉमस रो 1615-1619 ई. यूनाइटेड किंगडम मुगल दरबार में अंग्रेजी राजदूत; इसका लेख “द एम्बेसी ऑफ सर थॉमस रो" सम्राट जहांगीर के दरबार के बारे में जानकारी देता है फ्रांसिस बुकानन-हैमिल्टन 1806-1814 ई. यूनाइटेड किंगडम एक ब्रिटिश सर्जन और यात्री जिसने मैसूर साम्राज्य का दौरा किया और भारत के भूगोल, इतिहास और संस्कृति पर विस्तार से लिखा।

रिचर्ड बर्टन 1850-1860 ई. यूनाइटेड किंगडम एक अंग्रेजी खोजकर्ता जिसने भारत में व्यापक रूप से यात्रा की; इसके कार्यों में “पूर्वी अफ्रीका में पहला कदम" और "द बुक ऑफ द स्वॉर्ड" सम्मिलित हैं।

हर्मन ओल्डेनबर्ग

1860-1910 ई. जर्मनी एक विद्वान जिसने भारतीय बौद्ध धर्म के बारे में लिखा और “धम्मपाद" जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का अनुवाद किया।

जीन डे थेवेनॉट 1666-1668 ई. फ्राँस एक फ्रांसीसी राजनयिक और यात्री जिसने औरंगजेब के शासनकाल के दौरान मुगल भारत की स्थिति का वर्णन किया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: हर्मन

1. हर्मन

2. ओल्डेनबर्ग

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — हर्मन

मुख्य परीक्षा दृष्टि: जीन डे थेवेनॉट 1666-1668 ई. फ्राँस एक फ्रांसीसी राजनयिक और यात्री जिसने औरंगजेब के शासनकाल के दौरान मुगल भारत की स्थिति का वर्णन किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: हर्मन • ओल्डेनबर्ग | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1333, 1341, 1271, 1293, 1419

भारत के प्रमुख नाट्यरूप

और कठपुतली कला रंगमंच के रूप भारत में नाट्य (रंगमंच) कला की शुरुआत एक कथा कला (Narrative Art) के रूप में हुई; इसके अंतर्गत संगीत, नृत्य और अभिनय तीनों गतिविधियाँ सम्मिलित हैं। इसका प्रदर्शन धार्मिक त्योहारों, मेलों, सभाओंऔर अनुष्ठानों के अवसर पर किया जाता है। रंगमंच के कलाकार समाज के आम लोगों के सामाजिक दृष्टिकोण, धारणाओं और शास्त्रीय तत्वों को समाहित करते हैं।

भारत में नाट्य शैली की परंपरा

- सीताबेंगा और जोगीमारा गुफाओं (छत्तीसगढ़) में खुदाई से प्राप्त अवशेष दुनिया की सबसे पुरानी रंगभूमि (Amphitheatres) का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- नाट्यशास्त्र नाट्यकला पर पहला औपचारिक ग्रंथ है।
- नाट्यशास्त्र के अंतर्गत शास्त्रीय संस्कृत साहित्य के सभी पहलुओं को एक साथ दर्शाने के लिए दस प्रकार के नाटक रूपों को शामिल किया गया है।
- ऋग्वेद काल के दौरान आयोजित किए जाने वाले यज्ञ समारोहों के दौरान खेले जाने वाले नाटकों का प्रमाण मिलता है।

शास्त्रीय संस्कृत नाटक (Classical Sanskrit Theatre)

- संस्कृत शब्द ‘नाटक’ की उत्पत्ति, मूल शब्द ‘नट’ से हुई है, जिसका अर्थ नर्तक होता है।
- नाटक के लिए उपयोग किए जाने वाले अन्य शब्द– रूपक, दृश्यकाव्य और प्रेक्षाकाव्य हैं।
- प्राचीन भारत में सामान्यत: दो प्रकार के नाटक होते थे–
  - **लोकधर्मी:** इसके अंतर्गत दैनिक जीवन के यथार्थवाद का चित्रण प्रस्तुत किया जाता था।
  - **नाट्यधर्मी:** ये पारंपरिक नाटक थे जिनमें अधिक शैलीबद्ध वर्णन और प्रत्यक्ष प्रतीकवाद को प्रदर्शित किया जाता था।
- शास्त्रीय संस्कृत नाटक में आनुष्ठानिक प्रगति–
  - नाटक की शुरुआत पूर्व-राग (नाटक से पहले के अनुष्ठान) से होती है।
  - इसके बाद, सफे द वस्त्र धारण किए हुए मंच प्रबंधक और निर्देशक देवता की पूजा करते थे और उनका आशीर्वाद ग्रहण करते हैं।

- उसके बाद नायिका को बुलाया जाता है और सूत्रधार (मंच प्रबंधक और निर्देशक) नाटक के समय और स्थान की घोषणा करता है।
- सूत्रधार ही नाटककार के विषय में संक्षिप्त परिचय भी देता है।
- इसमें मंच दो मंजिला हुआ करते थे (ऊपरी मंजिल आकाशीय क्षेत्र और निचली मंजिल स्थलीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती थी)।
- नाटक के प्रभाव को अधिक प्रभावी बनाने के लिए पर्दों का प्रयोग किया जाता था।
- मुखौटों का प्रयोग नहीं किया जाता था।

• संस्कृत नाटकों में पात्र तीन प्रकार के होते थे, जो क्रमशः नायक, नायिका और विदूषक के रूप में देखे जा सकते हैं।

• **प्रमुखसंस्कृत नाटक:** अश्वघोष(सारिपुत्रप्रकरण);विशाखदत्त(मुद्राराक्षस); कालिदास (मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वषीयम् और अभिज्ञानशाकुंतलम); भवभूति (उत्तररामचरित्र और महावीरचरित्र); हर्षवर्धन (रत्नावली); शूद्रक (मृच्छकटिकम्)।

कू डियाट्टम

कू डियाट्टम (Koodiyattam) भारत के केरल राज्य का एक प्राचीन संस्कृत रंगमंच (Sanskrit Theater) है, जिसे यूनेस्को ने मानवता की मौखिक और अमूर्त विरासत (Oral and Intangible Heritage of Humanity) की उत्कृष्ट कृति के रूप में मान्यता प्रदान की है। इसके मुख्य पहलुओं में सम्मिलित हैं:

• **उद्भव:** केरल के मंदिरों में विकसित, प्राचीन संस्कृत नाटकों पर आधारित।

• **प्रदर्शन:** इसमें विस्तृत हाव-भाव, चेहरे के भाव और गायन सम्मिलित हैं।

• **भाषा:** मलयालम के तत्वों के साथ, मुख्य रूप से संस्कृत में।

• **अभिनेता/नायक:** पुरुष नायक (चाक्यार) हाथ के हाव-भाव और चेहरे के भावों के लिए कठिन कठोर प्रशिक्षण।

• **संलग्न साज:** मिझावु और कोरल गायन का समावेश किया जाता है।

• **वेशभूषा:** पूर्ण श्रृंगार और पारंपरिक पोशाक के साथ पात्रों को दर्शाते हुए, सुसंपन्न/अलंकृत।

• **विषय:** मुख्य रूप से धार्मिक और पौराणिक, प्रायः महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों से संबंधित।

• **यूनेस्को द्वारा मान्यता:** वर्ष 2001 में यूनेस्को ने अपने सांस्कृतिक महत्त्व के लिए कूडियाट्टम को मान्यता प्रदान की।

लोक नाट्य (FOLK THEATRE) लोक नाटक सामाजिक मानदंडों, मान्यताओं और रीति-रिवाजों सहित स्थानीय जीवनशैली के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। इसमें ग्रामीण जड़ें और ग्रामीण जन-जीवन का विस्तृत वर्णन होता था। इस नाट्य शैली का विकास 15वीं-16वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान हुआ, इनका विकास भक्ति से संबंधित विषयों के साथ हुआ, हालाँकि बाद के दौर में ये नाटक धर्मनिरपेक्ष हो गए थे।

भारत के लोकनाट्य

भांड पाथेर (कश्मीर)

• नाटक में हँसी उत्पन्न करने के लिए व्ययंग्य, वाक् -चातुर्य और हास्यानुकरण का उपयोग किया जाता है।

• इसमें संगीत के लिए सुरनई, नगाड़ा और ढोल जैसे वाद्यंत्रों का उपयोग किया जाता है।

• अभिनेता मुख्य रूप से कृषक समुदाय से संबंधित होते हैं, ये अपनी जीवन शैली, आदर्शों और संवेदनशीलता को दर्शाने का प्रयास करते हैं।

भाओना (असम)

• यह असम के अंकिया नाट की प्रस्तुति है, जिसमें असम, बंगाल, उड़ीसा, मथुरा और बृंदावन की सांस्कृतिक झलक दिखाई देती है।

• सूत्रधार कहानी को संस्कृत में आरंभ करता है, जो ब्रजबोली या असमिया भाषा के रूप में परिवर्तित की गई होती है। भवाई (गुजरात)

• यह प्रमुख तौर पर कच्छ और काठियावाड़ क्षेत्रों में प्रचलित है।

• इसमें भक्ति और प्रेम भावनाओं का मिश्रण दिखाई देता है, जो एक विशिष्ट सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का निर्माण करता है। बुर्रा कथा (आंध्र प्रदेश)

• यह एक मौखिक कथावाचन है जिसमें एक मुख्य कलाकार या कथावाचक और दो वंथा या सह-कलाकार शामिल होते हैं जो लय और कोरस की अभिव्यक्ति के लिए मुख्य कलाकार का साथ देते हैं।

• बुर्रा प्रदर्शन के दौरान इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्रकार का ताल वाद्यंत्र होता है। चवित्तु नाटकम् (केरल)

• यह केरल में एक लोकप्रिय ईसाई कला रूप है।

• इसका विकास 17वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान हुई थी।

• इसे स्टैम्पिंग ड्रामा के नाम से भी जाना जाता है।

• इसमें कलाकार फर्श पर पैर से थाप लगाता है। दशावतार (कोंकण और गोवा)

• कलाकार भगवान विष्णु के दस अवतारों का चित्रण करते हैं।

• ये उन्नत व आकर्षक मेकअप का उपयोग करते हैं और लकड़ी एवं कागज की लुगदी से बने मुखौटे पहनते हैं। दसकठिया (ओडिशा)

• इसके अंतर्गत दो कथावाचक होते हैं– गायक (मुख्य गायक) और पालिया (सह-कथावाचक) होते हैं, जो मुख्य रूप से शिव और अन्य देवताओं की कथा सुनाते हैं।

• कथा के साथ-साथ कठिया नामक लकड़ी के वाद्यंत्र का इस्तेमाल धुन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। गरोडास (गुजरात)

• यह 'गरोड़ा' समुदाय का एक लोकप्रिय कला-रूप है।

• इसमें रोमांस और वीरता की कहानियाँ प्रस्तुत करने के लिए पेंटेड चित्रों का उपयोग किया जाता है। करियिला (हिमाचल प्रदेश)

• यह एक खुला रंगमंच है।

• इसका प्रदर्शन रात्रि के समय पर किया जाता है और इसमें छोटे नाटकों और प्रहसनों की एक श्रृंखला को शामिल किया जाता है। कुटियाट्टम (केरल)

• इसकी जड़ें संस्कृत नाट्य परंपराओं में हैं।

• इसमें अलग-अलग पात्र शामिल होते हैं, जिनमें चाक्यार (अभिनेता), नांबियार (वाद्यवादक), नांग्यार (महिला भूमिकाएँ), सूत्रधार (कथावाचक) और विदूषक हैं।

• इसे यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में सूचीबद्ध किया गया है। कृष्णअट्टम (केरल)

• इसकी उत्पत्ति 17वीं शताब्दी के दौरान कालीकट के राजा मानवदा के संरक्षण में हुई थी।

• इसका प्रदर्शन लगातार आठ दिनों तक किया जाता है, इसमें आठ नाटक सम्मिलित हैं। कुरुवंजी (तमिलनाडु)

• प्रथम कुरुवंजी की रचना तिरुकुटराजप्पा कवियार द्वारा की गई थी।

• इसका मूल विषय एक प्रेम में पड़ी हुई नायिका के इर्द-गिर्द घूमता है।

• इसे भरतनाट्यम के साथ नृत्य बैलेट (Dance Ballet) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। मुदियेट्टु (केरल)

• इसका प्रदर्शन वृश्चिकम (नवंबर-दिसंबर) के दौरान और मुख्य रूप से काली मंदिरों में किया जाता है।

• यह देवी के चढ़ावे के रूप में कार्य करता है और असुर दारिका पर देवी भद्रकाली की विजय को चित्रित करता है।

• प्रदर्शन में सात पात्र शामिल होते हैं, जिनमें- शिव, नारद, दारिका, दानवेंद्र, भद्रकाली, कुली और कोइम्बिदार इत्यादि हैं, जो सभी श्रृंगार से सुसज्जित होते हैं।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारत के लोकनाट्य

मुख्य परीक्षा दृष्टि: प्रदर्शन में सात पात्र शामिल होते हैं, जिनमें- शिव, नारद, दारिका, दानवेंद्र, भद्रकाली, कुली और कोइम्बिदार इत्यादि हैं, जो सभी श्रृंगार से सुसज्जित होते हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारत के लोकनाट्य

IUC विशेष स्मृति सूत्र #12: भक्ति आंदोलन के प्रमुख संप्रदाय व सिद्धांत

ट्रिक: 'शंकर अद्वैत, रामानुज विशिष्टाद्वैत, मध्व द्वैत, निम्बार्क द्वैताद्वैत, वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत' — पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य थे।

ओजा-पाली (असम)

• यह मनसा या नाग देवी के त्योहार से जुड़ा हुआ है।

• ओजा मुख्य कथावाचक है, और पाली गायक-वृंद (chorus) के सदस्य हैं। पोवाड़ा (महाराष्ट्र)

• इसमें अफजल खाँ के खिलाफ शिवाजी के साहसिक कारनामों को दर्शाया जाता है।

• इसे गोंडाली और शाहिर नाम से जाने-जाने वाले लोक गायकों द्वारा गाया जाता है। रासलीला (उत्तर प्रदेश)

• यह भगवान कृष्ण की कथाओं पर आधारित है।

• ऐसा माना जाता है कि शुरुआती नाटक नंद दास ने लिखे थे।

• इसमें गद्य संवादों को गीतों और दृश्यों के साथ जोड़ा जाता है। स्वांग (पंजाब और हरियाणा)

• प्रारंभ में, यह संगीत-आधारित था लेकिन धीरे-धीरे इसके संवादों में गद्य को भी शामिल कर लिया गया।

• स्वांग की दो शैलियाँ रोहतक और हाथरस में मौजूद हैं, जिनमें क्रमशः हरियाणवी (बांगरू) और ब्रज भाषाएँ सम्मिलित हैं। तमाशा (महाराष्ट्र)

• अन्य रंगमंच रूपों के विपरीत, इसमें नायिका (मुर्की) द्वारा नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है।

• इसके अंतर्गत विभिन्न भावनाओं को चित्रित करने के लिए शास्त्रीय संगीत, पैरों की चपल गति और सुस्पष्ट भाव-भंगिमाओं को शामिल किया गया है।

थेरुकुथु (तमिलनाडु)

• यह भरपूर फसल पैदावार को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

• इसके मूल में द्रौपदी के जीवन पर आधारित आठ नाटकों के चक्र को शामिल किया जाता है। विल्लू पट्टू (डेक्कन)

• यह संगीत नाटक का एक रूप है।

• इसके अंतर्गत रामायण की कथाएँ सुनाई जाती हैं। यक्षगान (कर्नाटक)

• यह एक खुला रंगमंच है।

• इसके अंतर्गत महाभारत और रामायण के प्रमुख प्रसंगों को प्रस्तुत किया जाता है।

अन्य नाट्य शैलियाँ: माच (मध्य प्रदेश); नकल/भांड (पंजाब); नौटंकी (उत्तर प्रदेश); पगति वेशालु (तेलंगाना और आंध्र प्रदेश); पढ़यनि (केरल); ताल-मद्दले (कर्नाटक); बयालता (कर्नाटक)।

भारत की कठपुतली कला

भारत को कठपुतली कला का उद्गम स्थल माना जाता है, देश के विभिन्न हिस्सों में कठपुतली कला के कई रूपों, विषयों और शैलियों को प्रदर्शित किया जाता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

• हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के उत्खनन स्थलों से कठपुतलियाँ मिली हैं जिनमें कोटर जड़े हुए थे।

• इसका उल्लेख शिलप्पादिगारम (पहली-दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास रचित) में मिलता है।

• नाट्यशास्त्र में मानव रंगमंच के निर्माता-सह-निर्देशक के रूप में सूत्रधार (सूत्रधारक) का उल्लेख है।

वर्गीकरण: भारत में कठपुतली कला को मोटे तौर पर चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। धागा पुतली (मैरियोनेट्स) (String Puppets (Marionettes) कठपुतली का प्रदर्शन करने वाला कठपुतली के हाथ, सिर और शरीर के पिछले हिस्से में छोटे-छोटे छिद्रों में धागा बाँधकर उन्हें चलाता है। उनके जोड़युक्त अंग होते हैं जिसकी वजह से कठपुतलियाँ काफी लचीली होती हैं और अधिक मुखर दिखाई पड़ती हैं।

• कठपुतलियाँ लकड़ी से बनाई जाती हैं, और उन्हें जीवंत दिखाने के लिए तेल के रंग लगाए जाते हैं।

• अंगों को लकड़ी के छोटे पाइपों से बनाया जाता है, शरीर को रंग-विरंगे और चमकीलें पोशाकों से सजाया जाता है और इन कठपुतलियों को जिवंत रूप देने के लिए छोटे-छोटे आभूषणों से सजाया जाता है।

कठपुतली (राजस्थान)

• कठपुतली शब्द 'काठ' यानी लकड़ी और 'पुतली' यानी गुड़िया से मिलकर बना है।

• लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनाई गई ये कठपुतलियाँ बड़ी गुड़िया की तरह दिखाई देती हैं, इन कठपुतलियों को मध्यकालीन राजस्थानी शैली के पोशाक पहनाए जाते हैं।

• इन कठपुतलियों को लंबा लहँगा पहनाया जाता है और इनके पैर नहीं होते हैं।

• चेहरे की विशिष्ट विशेषताओं में अंडाकार चेहरा, बड़ी आँखें, धनुषाकार भौहें और बड़े होंठ हैं।

• कठपुतली कला का प्रदर्शन करते समय अत्यधिक नाटकीय क्षेत्रीय संगीत प्रस्तुत किया जाता है।

कुंडेही (ओडिशा)

• ओडिशा की कठपुतलियाँ हल्की लकड़ी से बनाई गई होती हैं और उनके पैर नहीं होते हैं, लेकिन वे लंबी स्कर्ट पहनती हैं।

• उनमें अधिक जोड़ होते हैं और इसलिए वे अधिक बहुमुखी और स्पष्ट होती हैं और इन कठपुतलियों को चलाने में आसानी होती है।

• कठपुतली चलाने वाले सामान्यतः त्रिकोणीय आकार की एक लकड़ी का सहारा (Prop) लेते हैं, जिसमें ऊपर-नीचे करने के लिए धागे जुड़े होते हैं।

• इन कठपुतलियों की वेशभूषा, जात्रा जो कि एक पारंपरिक नाटक है के अभिनेताओं द्वारा पहनी जाने वाली वेशभूषा से मिलती-जुलती है।

• कठपुतलियों के प्रदर्शन के दौरान साथ में दिया जाने वाला संगीत क्षेत्रीय होता है और यह ओडिसी से प्रेरित होता है। गोम्बयेट्टा (कर्नाटक)

• गोम्बयेट्टा कठपुतली की आकृतियाँ अत्यधिक शैलीबद्ध होती हैं।

• इन कठपुतलियों के पैरों, कंधों, कोहनी, कूल्हों और घुटनों पर जोड़ होता है। इन कठपुतलियों को एक प्रोप से बँधे पाँच से सात धागों द्वारा संचालित किया जाता है।

• इन कठपुतलियों को क्षेत्र के पारंपरिक नाट्यरूप यक्षगान के पात्रों की तरह शैलीबद्ध और डिजाइन किया गया है। गोम्बयेट्टा कठपुतली कला का प्रदर्शन यक्षगान नाटकों के प्रसंगों पर आधारित होता है।

• कठपुतली की कुछ अधिक जटिल गतिविधियों को एक समय में दो से तीन कठपुतली कलाकारों द्वारा संचालित किया जाता है। बोम्मलट्टम (तमिलनाडु)

• बोम्मालट्टम कठपुतलियाँ सभी पारंपरिक भारतीय कठपुतलियों में सबसे बड़ी, सबसे भारी और सबसे मुखर हैं, जिनकी लंबाई 4.5 फीट और वजन तकरीबन 10 किलोग्राम तक होता है।

• बोम्मालट्टम में छड़ पुतली और धागा पुतली दोनों का मिश्रण होता है।

• ये कठपुतलियाँ लकड़ी की बनी हुई होती हैं, और इनका संचालन धागों के माध्यम से किया जाता है।

• ये धागे लोहे के छल्ले से बँधे हुए होते हैं। यह छल्ला कठपुतली के सिर पर मुकुट की तरह पहनाया जाता है। कुछ कठपुतलियों के हाथ जोड़युक्त होते हैं, जिन्हें छड़ों के माध्यम से संचालित किया जाता है।

• बोम्मालट्टम, नाटक में विस्तृत प्रारंभिक कार्यक्रम होते हैं जिन्हें चार भागों में विभाजित किया गया है–

  ◦ विनायक पूजा
  ◦ कोमली
  ◦ अमणट्टम
  ◦ पुसेनकणट्टम छाया कठपुतली (Shadow Puppet) छाया कठपुतलियाँ चपटी आकृतियाँ की होती हैं, जो चमड़े से काटकर बनाई जाती हैं। चमड़े का शोधन करके उन्हें पारभासी बनाया जाता है। इन कठपुतलियों को प्रकाश के एक तीव्र स्रोत के सामने लाया जाता है।

प्रकाश और पर्दे के मध्य हेरफेर से छायाकृतियाँ बनती हैं।

तोगलु गोम्बयेट्टा (कर्नाटक)

• तोगलु गोम्बयेट्टा कठपुतलियाँ अधिकांशतः आकार में छोटी होती हैं।

• तोगलु गोम्बयेट्टा कठपुतलियों की एक अनूठी विशेषता सामाजिक स्थिति के आधार पर कठपुतली के आकार में भिन्नता है, उदाहरण के लिए– राजाओं और धार्मिक पात्रों के लिए बड़े आकार और आम लोगों या नौकरों के लिए छोटे आकार की कठपुतलियाँ होती हैं।

थोलु या तोलु बोम्मालट्टा (आंध्र प्रदेश)

• तोलु बोम्मालट्टा कठपुतलियाँ आकार में बड़ी होती हैं और उनकी कमर, कंधे, कोहनी और घुटने जोड़युक्त होते हैं।

• वे दोनों तरफ रंगीन होती हैं। इसलिए, इन कठपुतलियों की पर्दे पर रंगीन छायाकृतियाँ बनती हैं।

• इस कठपुतली कला के प्रदर्शन के दौरान उपयोग की जाने वाली धुन क्षेत्रीय शास्त्रीय संगीत से प्रभावित होता है।

• इस कठपुतली नाटक का विषय रामायण, महाभारत और पुराणों से लिया जाता है। रावणछाया (ओडिशा)

• रावणछाया कठपुतलियाँ एक टुकड़े में होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता। इसीलिए इनके संचालन के लिए बड़ी निपुणता की आवश्यकता होती है।

• ये कठपुतलियाँ हिरण की खाल से बनाई गई होती हैं और इन कठपुतलियों के निर्माण साहसिक नाटकीय मुद्राओं में की जाती है।

• रावणछाया कठपुतलियाँ हालाँकि आकार में छोटी (<2 फीट) होती हैं, लेकिन ये बहुत ही संवेदनशील और लयबद्ध छायाकृतियाँ बनाती हैं।

• ये कठपुतालियाँ रंगीन नहीं होती हैं, इसलिए पर्दे पर अपारदर्शी छायाकृतियाँ बनाती हैं।

• मानव आकृतियों के साथ-साथ पेड़, पहाड़, रथ आदि जैसे प्रॉप का भी उपयोग किया जाता है।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 72

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मानव आकृतियों के साथ-साथ पेड़, पहाड़, रथ आदि जैसे प्रॉप का भी उपयोग किया जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 72

छड़ कठपुतलियाँ (Rod Puppets) छड़ कठपुतलियाँ वैसे तो दस्ताना-कठपुतलियों (Glove-puppets) का ही अगला चरण हैं, लेकिन सामान्यत: ये आकार में बहुत बड़ी होती हैं और आधार पर स्थित छड़ों पर आधारित होती हैं और उन्हीं के माध्यम से इनका संचालन भी किया जाता है। कठपुतली कला का यह रूप अब अधिकांशत: पश्चिम बंगाल और उड़ीसा में प्रचलित है। उड़ीसा की कठपुतलियाँ बंगाल की कठपुतलियों की अपेक्षा आकार में छोटी होती हैं।

पुतुल नाच (पश्चिम बंगाल)

- बंगाल की छड़ कठपुतलियाँ लगभग 3 से 4 फीट ऊँची होती हैं। वे लकड़ी से बनाई जाती हैं और एक विशेष क्षेत्र की विभिन्न कलात्मक शैलियों का पालन करती हैं।
- संगीत, वेशभूषा और मौखिक पाठ जात्रा नाट्य शैली का बारीकी से अनुसरण करते हैं।
- पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में छड़ कठपुतलियाँ जापान की बनराकू (Bunraku) कठपुतलियों की तरह आदमकद होती थीं। यह रूप अब लगभग विलुप्त हो चुका है।
- इन कठपुतलियों में अधिकतर तीन जोड़ होते हैं। मुख्य छड़ पर लगा सिर गर्दन से जुड़ा होता है, और अन्य छड़ों पर लगे दोनों हाथ कंधों से जुड़े हुए होते हैं।
- एक बाँस से बना हब कठपुतली कला को प्रदर्शित करने वाले कलाकार की कमर पर मजबूती से बाँधा जाता है, जिस पर कठपुतली को आधार देने वाली छड़ रखी जाती है।
- गायक कठपुतली कलाकार का साथ देने के लिए नगाड़ा, हरमोनियम और झाँझ के साथ संगीतकारों का एक समूह होता है। यमपुरी (बिहार)
- पश्चिम बंगाल और उड़ीसा की पारंपरिक छड़ कठपुतलियों के विपरीत, ये कठपुतलियाँ एक टुकड़े में होती हैं और इनमें कोई जोड़ नहीं होता है।
- इसलिए इनके संचालन के लिए अधिक निपुणता की आवश्यकता होती है। उड़ीसा की छड़ कठपुतलियाँ
- ये आकार में बहुत छोटी होती हैं।
- कठपुतली के इस रूप में छड़ और धागा कठपुतलियों के तत्वों को संयोजित किया जाता है। दस्ताना कठपुतलियाँ (Glove Puppets) दस्ताना कठपुतली को आस्तीन, हाथ या हथेली की कठपुतली के रूप में भी जाना जाता है। इनका सिर या तो कागज की लुगदी, कपड़े या लकड़ी से बना हुआ होता है, गर्दन के ठीक नीचे से दो हाथ निकले होते हैं। इस कठपुतली के शेष आकृति में एक लंबी स्कर्ट होती है।
- इसके संचालन हेतु पहली उँगली मस्तक पर रखी जाती है तथा मध्यमा उँगली और अँगूठा कठपुतली की दोनों भुजाओं को संचालित करते हैं।
- भारत में दस्ताना कठपुतलियों की परंपरा उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और केरल में लोकप्रिय है।
- उत्तर प्रदेश में, दस्ताना कठपुतली नाटक सामान्य रूप से सामाजिक विषयों को प्रस्तुत करते हैं, वहीं दूसरी ओर उड़ीसा में ऐसे नाटक राधा और कृष्ण की कथाओं पर आधारित होते हैं।
- उड़ीसा में कठपुतली कलाकार एक हाथ से ढोलक बजाता है और दूसरे हाथ से कठपुतली को संचालित करता है। संवादों के साथ-साथ अदाएँ, कठपुतली की चाल और ढोलक की थाप एक ही समय में प्रस्तुत की जाती है, जिससे एक सजीव माहौल बन जाता है।

पावाकुथु (केरल)

- इसकी उत्पत्ति 18वीं शताब्दी में केरल के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य-नाटक कथकली से प्रभावित होकर हुई।
- इस कठपुतली की ऊँचाई एक से दो फीट तक होती है, इसका सिर लकड़ी का और भुजाएँ मोटे कपड़े से जुड़ी होती हैं।
- चेहरा पेंट, गिल्डेड टिन, मोर पंख आदि से सजा हुआ होता है।
- कठपुतली को प्रदर्शित करने वाला कलाकार बैग के अंदर हाथ डालकर, सिर और हाथों को हिलाकर कठपुतली को संचालित करता है।
- प्रयुक्त संगीत वाद्यंत्रों में चेंडा, चेंगिलोआ, इलाथलम और शंख सम्मिलित हैं।
- इसके विषय रामायण या महाभारत के प्रसंगों पर आधारित होते हैं।

भारतीय हस्तशिल्प — काँच से निर्मित वस्तुएँ

• काँच के मोतियों के प्रारंभिक साक्ष्य गंगा घाटी के चित्रित धूसर मृद्भांड (लगभग 1000 ईसा पूर्व) से प्राप्त होते हैं। काँच के लिए वैदिक शब्द 'कंच' या 'कच' था।

• ब्रह्मपुरी और कोल्हापुर में काँच उद्योग के पुरातात्विक साक्ष्य मिले हैं, यह उद्योग दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी तक सक्रिय था, जो मसूर के दाने के आकार के मोतियों (Lenticular Beads) का उत्पादन करता था।

◦ इसके अतिरिक्त मास्की (दक्कन), अहार (राजस्थान), हस्तिनापुर, अहिच्छत्र (उत्तर प्रदेश), एरण और उज्जैन (मध्य प्रदेश) में भी काँच के साक्ष्य मिले हैं।

• चश्मे का उल्लेख संस्कृत ग्रंथ 'व्ययासयोगचरित्र' में मिलता है।

• मुगलों ने शीश महल जैसे अपने स्मारकों में सजावट के रूप में काँच के उपयोग को प्रोत्साहित किया।

• काँच निर्माण के वर्तमान क्षेत्रों में हैदराबाद (चूड़ी का जोड़ा), फिरोजाबाद (काँच की चूड़ियों का नगर) और सहारनपुर (पंचकोरा काँच के खिलौने) सम्मिलित हैं।
कपड़े पर हस्तशिल्प कपड़े पर बुनाई, छपाई, बँधाई और रंगाई सहित विभिन्न हस्तशिल्प विधियों का उपयोग किया जाता है।

शैली क्षेत्र विशेषताएँ — बँधनी या बँधेज राजस्थान, गुजरात, आंध्र — प्रदेश और तमिलनाडु

यह छोटी गाँठें बाँधने और सुंदर पैटर्न बनाने के लिए उन्हें अलग-अलग रंगों में रंगने की एक विधि है।

लहरिया राजस्थान इसमें लहर या लहर जैसे पैटर्न बनाए जाते हैं।

इकत तेलंगाना, ओडिशा, गुजरात

और आंध्र प्रदेश इसमें बुनाई से पहले सूत पर प्रतिरोधी रंग लगाया जाता है।

कलमकारी आंध्र प्रदेश यह वनस्पति रंगों का उपयोग करके कपड़ों पर हाथ से पेंटिंग करने की एक विधि है।

[UPSC-2015]

बाटिक कला मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल इसमें कपड़े के एक सिरे को पिघले हुए मोम और रंगों से भिगोकर बहुरंगी साड़ियाँ और दुपट्टे बनाए जाते हैं।

तनचोई बुनाई गुजरात चीनी तकनीक से प्रभावित एक सूक्ष्म लघु चित्रकला (Miniature Painting) है।

जमदानी पश्चिम बंगाल इसमें पारदर्शी पृष्ठभूमि पर अपारदर्शी पैटर्न के साथ विभिन्न शैलियों में मलमल की बुनाई की जाती है। **[UPSC-2018]**

तेलिया रूमाल आंध्र प्रदेश सूत पर तेल उपचार की एक विधि है।

भवानी जमक्कलम तमिलनाडु यह तमिलनाडु क्षेत्र में निर्मित कंबल और कालीन से संबंधित कला है। इसे जीआई टैग प्रदान किया गया है।

भारत की पारंपरिक क्षेत्रीय साड़ियाँ — साड़ी क्षेत्र विशेषताएँ

पोचमपल्ली साड़ी आंध्र प्रदेश यह अपने जटिल रूपांकनों और रंगाई की एक अनूठी इकत शैली के लिए जानी जाती है, इसमें रेशम और सूत का मिश्रण होता है।

कोसा साड़ी छत्तीसगढ़ इसे इस क्षेत्र में उत्पादित विशेष रेशम से तैयार किया जाता है।

इलकल कर्नाटक इसमें कसूती (Kasuti) कढ़ाई का उपयोग रथ और हाथी युक्त सामान्य रूपांकनों के लिए किया जाता है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: भारतीय हस्तशिल्प



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारतीय हस्तशिल्प

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इलकल कर्नाटक इसमें कसूती (Kasuti) कढ़ाई का उपयोग रथ और हाथी युक्त सामान्य रूपांकनों के लिए किया जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारतीय हस्तशिल्प • काँच से निर्मित वस्तुएँ • शैली क्षेत्र विशेषताएँ • प्रदेश और तमिलनाडु • इकत तेलंगाना, ओडिशा, गुजरात | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2015, 2018

कसावु साड़ी केरल इस साड़ी की प्रमुख विशेषता सुनहरे बॉर्डर युक्त क्रीम रंग के कपड़े से है।

चंदेरी साड़ी मध्य प्रदेश ये अपनी स्पष्ट बनावट और सुंदर कपड़े के लिए जानी जाती हैं। **[UPSC-2014]**

नौवारी साड़ी महाराष्ट्र यह एक नौ गज की साड़ी है, जिसे कस्ता (Kaashtha) साड़ी के नाम से भी जाना जाता है।

पैठानी महाराष्ट्र यह अपने विस्तृत जरी के काम और चमकीले रंगों के लिए प्रसिद्ध है।

बोमकाई साड़ी ओडिशा इकत कढ़ाई और सूक्ष्म धागे के काम वाली रेशम और सूती की साड़ियाँ।

दाबू तकनीक राजस्थान यह सूती कपड़े पर मिट्टी प्रतिरोधी हैंड ब्लॉक प्रिंटिंग है।

कोनराड साड़ी तमिलनाडु यह अपने चमकीले रंगों और पारंपरिक रूपांकनों के लिए प्रसिद्ध है।

तंचोई जरी साड़ी वाराणसी यह एक बनारसी साड़ी है जिसमें एक या दो ताने और दो से पाँच रंगों के साथ बुनाई की विधि शामिल होती है।

बालूचरी मुर्शिदाबाद — साड़ी

पश्चिम बंगाल इसमें बॉर्डर और पल्लू पर प्राचीन कहानियों को दर्शाया जाता है।

ताँत पश्चिम बंगाल यह खरी सूती और प्रिंटेड साड़ी है।

हाथी दाँत शिल्प (Ivory Crafting) भारत में हाथी दाँत शिल्प वैदिक काल से चला आ रहा है, जिसे 'दंत' कहा जाता है, जो यह दर्शाता है कि इसका स्रोत हाथी दाँत है।

हड़प्पा काल के दौरान, हाथी दाँत और उससे बने पासे जैसी वस्तुओं को तुर्कमेनिस्तान, अफगानिस्तान और फारस की खाड़ी के कुछ हिस्सों में निर्यात किया जाता था।

- पारंपरिक हाथी दाँत शिल्प केंद्रों में दिल्ली, जयपुर और पश्चिम बंगाल के कुछ भाग सम्मिलित हैं, जो कलाकृतियों, सिंगारदान जैसी वस्तुओंऔर प्रसिद्ध अंबारी हाथी का निर्माण करते हैं।
- केरल हाथी दाँत पर चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध है।
- जोधपुर हाथी दाँत की चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।
- जयपुर अपने हाथी दाँत के आकर्षक जालीदार के काम के लिए प्रसिद्ध है। टेराकोटा शिल्प
- टेराकोटा एक अर्ध-पकी हुई सिरेमिक मिट्टी है जो अपने जलरोधक और टिकाऊ गुणों के लिए जानी जाती है, जो इसे मूर्तिकला और वास्तुकला के लिए आदर्श बनाती है।
- प्राचीन पाल काल में बौद्ध विहारों में उत्कृष्ट टेराकोटा कला का प्रदर्शन किया जाता था।
- टेराकोटा शिल्प कौशल के उल्लेखनीय उदाहरणों में बांकुरा घोड़ा, पंचमुरा घोड़ा और पश्चिम बंगाल के बांकुरा जिले में टेराकोटा मंदिर सम्मिलित हैं। मिट्टी के बर्तनों की शिल्पकला मिट्टी के बर्तन बनाने का इतिहास लगभग 6000 ईसा पूर्व का है, इसके साक्ष्य मेहरगढ़ के नवपाषाण स्थल में प्राप्त हुए हैं, जो अब पाकिस्तान में है।
- दक्षिण भारत में 200-100 ईसा पूर्व के 'रूलेट पॉटरी (Roulette Pottery)' के अवशेष मिले हैं, जो मुख्य रूप से पुद्दुचेरी के पास अरिकामेडु में मिले हैं।
- इंडो-इस्लामिक परंपराओं के प्रभाव से चमकते हुए मिट्टी के बर्तनों को प्रमुखता मिली।
- प्रत्येक क्षेत्र अलग-अलग प्रकार के मिट्टी के काम में निपुण है। रंगीन मिट्टी के बर्तन खुर्जा (उत्तरप्रदेश) यहाँ रंगीन और मजबूत मिट्टी का काम होता है, जिसका उपयोग घरेलू सामान बनाने के लिए किया जाता है।

नीले मिट्टी के बर्तन जयपुर मुल्तानी मिट्टी का उपयोग मिट्टी के बर्तन बनाने में किया जाता है।

कागजी मिट्टी के बर्तन अलवर यह एक नाजुक, पतला और थोड़ा भंगुर मिट्टी का बर्तन है।

पोखरण पोखरण (राजस्थान) यह घरेलू उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाने वाला मजबूत और लंबे समय तक चलने वाला मिट्टी का बर्तन है।

डलगेट जम्मू और कश्मीर यह एक अद्वितीय चमकदार मिट्टी का बर्तन है।

सुराई पश्चिम बंगाल इसे पहिये पर नहीं बनाया जाता बल्कि चार टुकड़ों को एक साथ जोड़कर आधार बनाया जाता है।

गोपीचंदन गुजरात चंदन जैसी दिखने वाली मिट्टी का उपयोग वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।

कारीगीरी (Karigiri) तमिलनाडु यह एक खास तौर पर डिजाइन किया गया बर्तन है जिसका उपयोग अर्कोट के नवाब द्वारा किया जाता था।

धातु शिल्प

धातु शिल्प में लोहा, ताँबा और घंटा धातु (bell metal) का उपयोग करके विभिन्न धात्विक ढलाई तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

- मरोड़ी काम (Marori work) (राजस्थान) में धातु पर नक्काशी करना और राल के साथ रिक्त स्थान को भरना, जटिल डिजाइन बनाना शामिल है।
- धातु के अधिकांश काम का उपयोग बादला (Badla) जैसे बर्तन और तवे बनाने के लिए किया जाता है, जो राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में जस्ता से बने अर्ध-गोलाकार या गोल बर्तन होते हैं।
- तारकशी (राजस्थान) में धातु के आधार पर छेनी से खाँचे के पैटर्न बनाने के लिए बारीक ताँबे या पीतल के तारों का उपयोग किया जाता है।
- कोफ्तागीरी, या दमिश्कीकरण (Damascening), में गहरे रंग की सतह पर हल्के रंग की धातु जड़ना शामिल है। इसमें जयपुर और अलवर के कारीगरों ने निपुणता प्राप्त कर ली है।
- मुरादाबाद बारीक काम में माहिर है। यहाँ बारीक नक्काशी वाले बर्तन बनाने के लिए नक्काशी शैली का उपयोग किया जाता है।
- अरनमुला कन्नाडि (शाब्दिक अर्थ अरनमुला दर्पण) केरल का एक हस्तनिर्मित मिश्र धातु का दर्पण है।

कांस्य शिल्प

कांस्य शिल्प धातु शिल्प कौशल के सबसे पुराने रूपों में से एक है, मोहनजोदड़ो में मिली नर्तकी की मूर्ति इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

- मत्स्य पुराण में प्रारंभिक कांस्य ढलाई विधियों का साहित्यिक साक्ष्य मिलता है, औरनागार्जुन के रस रत्नाकर जैसे बाद के ग्रंथों मेंधातु की शुद्धता और जस्ता के आसवन विधि पर चर्चा की गई है।
- उत्तर प्रदेश के इटावा, सीतापुर, वाराणसी और मुरादाबाद जैसे केंद्रों के साथ कांस्य शिल्प, सजावटी वस्तुओं और आनुष्ठानिक वस्तुओं का उत्पादन करने का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है।

पीतल की कारीगरी केंद्र विशेषताएँ पेम्बर्थी शिल्प वारंगल जिला, तेलंगाना उत्तम शीट धातु (पीतल) कला रथों और मंदिरों को सुशोभित करती है।

ढोकरा कास्टिंग ओडिशा और पश्चिम बंगाल लॉस्ट मोम विधि (lost wax method) का उपयोग ढोकरा वस्तुओं के निर्माण के लिए किया जाता है। ढोकरा निकिल, पीतल और जस्ता की एक मिश्र धातु है।

गज तांडव केरल इसके अंतर्गत शिव की तांडव मुद्रा में नृत्य मूर्तियाँ बनाई जाती हैं।

दुर्लभ जैन

मूर्तियाँ और प्रतीक कर्नाटक यह कर्नाटक में प्राचीन जैन तीर्थ केंद्रों की आवश्य3कता को दर्शाता है।

पहलदार लैंप जयपुर और उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्से ताँबे और पीतल के दीपक विभिन्न शैलियों और आकारों में निर्मित किए जाते हैं।

चाँदी के आभूषण

फिलीग्री का काम (Filigree Work) यह चाँदी के आभूषण बनाने की एक प्रसिद्ध विधि है।

- ओडिशा चाँदी की पायल, जिसे पेनरी/पैजाम के नाम से भी जाना जाता है और बुने हुए चाँदी के आभूषण जिन्हें गुंची कहा जाता है को बनाने में अग्रणी है।
- कर्नाटक के बिदरी गाँव से शुरू हुआ बिदरी का काम (Bidri work) गहरे रंग की पृष्ठभूमि पर चाँदी का उपयोग करके अपने जटिल जड़ाई के काम, जो एक अलग प्रकार का वैषम्य (Striking Contrast) पैदा करता है, के लिए प्रसिद्ध है।

चमड़े के उत्पाद

चमड़े की टैनिंग की कला लगभग 3000 ईसा पूर्व पुरानी है, जिसमें प्रारंभ में बाघ, हिरण और बाद में ऊँट जैसे जानवरों की खाल का उपयोग किया गया था।

- राजस्थान चमड़े, मुख्य रूप से ऊँट के चमड़े का एक प्रमुख बाजार है। चमड़े का उपयोग विभिन्न प्रकार के बैग बनाने के लिए किया जाता है।
  - जयपुर और जोधपुर विशेष प्रकार के चमड़े के जूते 'मोजड़ी' के लिए प्रसिद्ध हैं।
  - बीकानेर में मनोती कला का प्रयोग किया जाता है।
  - **मनोती कला:** यह एक ऐसीविधि हैजिसमें ऊँट की खाल का प्रयोग कर सजावटी वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश में कानपुर चमड़े और टैंड उत्पादों के लिए प्रसिद्ध है।
- महाराष्ट्र अपनी कोल्हापुरी चप्पलों के लिए प्रसिद्ध है।
- चेन्नई और कोलकाता चमड़े के बैग और जूते के महत्त्वपूर्ण केंद्र हैं।
- पंजाबी जूतियाँ अपनी एप्लीक विधि (Applique Technique) के लिए प्रसिद्ध हैं, जो उनकी सुंदरता को बढ़ा देती है।

काष्ठ कला

लकड़ी भारत के व्यापक वन क्षेत्र से प्राप्त एक महत्त्वपूर्ण उत्पाद है, जिससे विभिन्न प्रकार के फर्नीचर निर्मित किए जाते हैं। शीशम की लकड़ी और देवदार की लकड़ी से विभिन्न प्रकार के उत्कृष्ट नक्काशीदार लकड़ी के फर्नीचर तैयार किए जाते हैं।

- कश्मीर लकड़ी के फर्नीचर उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र है,जिसकी परंपरा 13वीं शताब्दी से चली आ रही है। इसमें अखरोट और देवदार की लकड़ी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है।
- कश्मीरी कारीगर फर्नीचर के अलावा, क्षेत्र की ठंडी और नम जलवायु के अनुकूल लकड़ी के घर और हाउसबोट बनाने में भी कुशल हैं।
- कश्मीर की जालीनुमा आकृति का कार्य, जिनमें अच्छे-दार, खतमबंद और अजलिपिंजरा इत्यादि सम्मिलित हैं, वह अपने उत्कृष्ट शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है।
- गुजरात लकड़ी की जालीनुमा आकृतियों के कार्य के लिए एक और प्रमुख केंद्र है, जिसका उपयोग सामान्य रूप से खिड़कियों और दरवाजों पर किया जाता है।
- हिमाचल प्रदेश, जहाँ प्रचुर मात्रा में लकड़ी के संसाधनों की उपस्थिति है उसे लकड़ी के ऊपर नक्काशी का कार्य करने में उत्कृष्टता हासिल है, जो विविध प्रकार के मंदिर से संबंधित वस्तुओं, जैसे- नागबेल, कुथेरीफू ल, जाली और डोरी के रूप में दिखाई देती है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: धातु शिल्प

1. धातु शिल्प	**2. कांस्य शिल्प**
3. दुर्लभ जैन	**4. चाँदी के आभूषण**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — धातु शिल्प

मुख्य परीक्षा दृष्टि: गुजरात लकड़ी की जालीनुमा आकृतियों के कार्य के लिए एक और प्रमुख केंद्र है, जिसका उपयोग सामान्य रूप से खिड़कियों और दरवाजों पर किया जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: धातु शिल्प • कांस्य शिल्प • दुर्लभ जैन • चाँदी के आभूषण • चमड़े के उत्पाद

IUC विशेष स्मृति सूत्र #13: यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (प्रमुख क्रम)

ट्रिक: 'वेद-राम-कुटिया में छऊ-कालबेलिया और दुर्गा के साथ गरबा' — वैदिक जप (2008), रामलीला (2008), कुटियाट्टम (2008), छऊ/कालबेलिया/मुडियेट्टू (2010), कुंभ मेला (2017), दुर्गा पूजा (2021), गरबा (2023)।

- काष्ठ कला के अन्य प्रमुख केंद्र निम्नलिखित हैं– राज्य प्रयुक्त काष्ठ या लकड़ी विशेषताएँ आंध्र प्रदेश रक्तचंदन (विशिष्ट लाल चंदन नक्काशीदार गुड़िया और मूर्तियाँ।

कर्नाटक चंदन इसका उपयोग देवी-देवताओं की मूर्तियों, उपयोगी वस्तुओं और चंदन के बक्सों जैसी वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।

केरल सागौन की लकड़ी थरवाड हाउस बनाने के लिए उपयोग किया जाता है जो अपने गहरे भूरे रंग और लकड़ी के ऊपर बारीक कारीगरी संबंधी कार्यों के लिए प्रसिद्ध है।

नागालैंड कुमिसिंग नक्काशीदार वस्तुओं में लकड़ी का विशाल नगाड़ा खास तौर पर उल्लेखनीय है।

राजस्थान रोहिल्डा

(Rohilda) राजस्थान का पाली जिला पतले कटोरे और अन्य वस्तुओं का उत्पादन करता है।

महाराष्ट्र हेल और पैंगोरा — लकड़ी

रत्नागिरी में लकड़ी के रोगन का उपयोग कर कृत्रिम फल बनाए जाते हैं।

विभिन्न प्रकार के खिलौने

खिलौने और गाड़ियों के प्रारंभिक साक्ष्य हड़प्पा सभ्यता के हैं। आलमगीरपुर, अंबखेड़ी, कालीबंगन और लोथल जैसे पुरातात्विक स्थलों ने ताँबे, कांस्य और टेराकोटा से खिलौना गाड़ियाँ तैयार करने के लिए मॉडल तैयार किए हैं। इसी तरह के गाड़ी मॉडल अतरंजीखेड़ा, नागार्जुनकोंडा, सांभर, सोनापुर, उज्जैन और ब्रह्मपुरी जैसे प्रारंभिक ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त किए गए हैं।

- राजस्थान रंग-बिरंगे कपड़े की गुड़िया और भरवाँ खिलौनों के लिए प्रसिद्ध है।
- असम की पारंपरिक गुड़िया पिथ या इंडियन कॉर्क से बनाई जाती हैं।
- मैसूर और चन्नपटण लाख के लकड़ी के खिलौनों के लिए जाने जाते हैं।
- आंध्र प्रदेश मेंकोंडापल्ली लोकप्रिय अंबारी हाथी खिलौना बनाने के लिए स्थानीय कोमल लकड़ी 'पोंकी' का उपयोग करने के लिए प्रसिद्ध है।
- **एतिकोप्पका खिलौने या एतिकोप्पका बोम्मालु:** ये आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध लकड़ी से बने खिलौने हैं। इसमें लकड़ी के संरक्षण के लिए उन पर वार्निश का लेप लगाया जाता है।
- आंध्र प्रदेश की प्रसिद्ध तिरूपति गुड़िया लाल लकड़ी (रेडवुड) से बनाई जाती थी।
- किन्नल (जिसे किन्हल भी कहा जाता है) खिलौने कर्नाटक के हैं, तथा ये 15वीं और 16वीं शताब्दी के हैं।
- किन्नर खिलौनों को विजयनगर साम्राज्य के राजाओं और फिर बाद में कोप्पल के नवाब द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।
- लाइफादिबी गुड़िया मणिपुर के मैतेई समुदाय के लोगों की पारंपरिक कपड़े की गुड़िया है।

पत्थर की वस्तुएँ (Stoneware) दक्षिण भारतीय शहर पत्थर के असाधारण काम के लिए जाने जाते हैं, जिनमें बलुआ पत्थर, लाल पत्थर और ग्रेनाइट का उपयोग किया जाता है।

- मौर्य काल की जीवंत मूर्तियाँ और स्थापत्य फलक अजंता और एलोरा की चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाओं, खजुराहो की कामुक मूर्तियों तथा सांची और भरहुत में बौद्ध नक्काशी जैसे स्मारकों में देखने को मिलते हैं।
- कांगड़ा जिले के मसरूर में चट्टान को काटकर बनाया गया अखंड मंदिर पहाड़ी क्षेत्रों में एक उल्लेखनीय उदाहरण है।
- मुगल काल में पत्थर का काम संगमरमर के काम की ओर स्थानांतरित हो गया, जिसमें पितरा ड्यूरा के काम पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें संगमरमर पर रंगीन पत्थरों को जड़ा जाता है।
- राजस्थान प्रसिद्ध 'संग-ए-मरमर' या सफे द मकराना संगमरमर की खरीद का एक प्रमुख केंद्र है।
- उत्तर प्रदेश का झाँसी गहरे भूरे रंग के पत्थर संग-ए रथक से वस्तुएँ तैयार करने के लिए प्रसिद्ध है।

कढ़ाई शिल्प (Embroidery Crafts) कढ़ाई आकर्षक डिजाइन बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के धागों का उपयोग करके सुई के काम से कपड़े को सजाने की एक कला है। कढ़ाई में अन्य सामग्रियों जैसे मोती, मूँगा, सितारों आदि का भी उपयोग किया जा सकता है।

- कपड़ों को सामुदायिक कहानियों, प्राकृतिक परिवेश से उभरे रूपांकनों, धार्मिक शिलालेखों, आर्थिक स्थिति के चित्रों आदि से भी सजाया जाता है।
- भारतीय कढ़ाई में विभिन्न क्षेत्रीय शैलियाँ सम्मिलित हैं जो क्षेत्र और प्रयुक्त सामग्री के अनुसार अलग-अलग होती हैं।
- कढ़ाई के दो मुख्य प्रकार हैं– जरदोजी भारी कढ़ाई है, और कामदानी हल्की कढ़ाई है।

जरी/जरदोजी

• जरी को जरदोजी कढ़ाई के नाम से भी जाना जाता है। जरदोजी दो फारसी शब्दों से मिलकर बना है– 'जरी' का अर्थ है सोना, और 'दोजी' का अर्थ है कढ़ाई।

• इस प्रकार, कढ़ाई के काम के लिए सोने और चाँदी के धागे का उपयोग करके कढ़ाई की जाती है।

• खंडेला (राजस्थान) और जयपुर जरी के काम के लिए प्रसिद्ध हैं।

• भारत में जरी कढ़ाई की लोकप्रिय शैलियाँ सलमा सितारा, कामदानी, मीनाकारी, मोकैश, गोटा आदि हैं।

• जरी से संबंधित एक अन्य तकनीक करचोबी है, जिसकी उत्पत्ति राजस्थान में हुई है। इसमें जरी के समान धातु के धागों जैसा उभरा पैटर्न तैयार करने के लिए सूती भराई पर सपाट टाँके सिले जाते हैं।

चिकनकारी (उत्तर प्रदेश)

• चिकनकारी कढ़ाई की उत्पत्ति फारसी शब्द 'चकीन' से हुई है, जो कपड़े पर सुरुचिपूर्ण पैटर्न को दर्शाता है।

• यह कढ़ाई उत्तर प्रदेश में प्रमुखता से की जाती है, विशेषकर लखनऊ में, जो चिकनकारी केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

• इसे छाया कार्य (Shadow Work) के रूप में भी जाना जाता है, जो कपड़े के उलटे तरफ से हेरिंगबोन टाँके के माध्यम से किया जाता है, जो कपड़े के सीधे तरफ छाया प्रभाव पैदा करता है और रूपांकनों को दर्शाता है।

• यह परंपरागत रूप से सफे द मलमल के कपड़े पर सफेद धागे के साथ किया जाता है, अब इसे लिनन, जॉर्जेट, सूत इत्यादि जैसे विभिन्न प्रकार के कपड़ों पर भी किया जाने लगा है।

कांथा (बंगाल) कांथा शब्द संस्कृत से लिया गया है जिसका अर्थ है 'चीथड़े (Rags)', जिसमें पुरानी साड़ियों या धोती के सफे द सूती कपड़े को जोड़कर निचली सतह बनाई जाती है, जिसके ऊपर कई परत बनाई जाती हैं और सफे द धागे से साधारण सिलाई की जाती है।

कांथा कढ़ाई की दो श्रेणियाँ हैं– प्रथम श्रेणी में ढेर सारी सूती साड़ियों या धोतियों की परतें बनाकर कढ़ाई की जाती है।

द्वितीय श्रेणी में पुरानी सूती चादरों का उपयोग किया जाता है और उसके ऊपर टसर रेशम के धागों के साथ सचित्र कढ़ाई की जाती है।

कांथा कढ़ाई में कमल, सूर्य, चंद्रमा, चक्र, स्वास्तिक, कालका और जीवन के लिए उपयोगी वृक्षों के चित्र उके रे जाते हैं।

कसूती (कर्नाटक) कसूती महिलाओं की एक कला है।

कसूती शब्द की उत्पत्ति कै (kai) शब्द से हुई है जिसका अर्थ है हाथ और सूती का अर्थ है सूती धागा। इस प्रकार कसूतू सूती धागे की हस्तकला है।

कसूती कढ़ाई में एक ही धागे का उपयोग किया जाता है और कपड़े पर धागों की सावधानीपूर्वक गिनती की आवश्यकता होती है। गांठ रहित पैटर्न बनाए जाते हैं, जिससे कपड़े के दोनों ओर समरूपता दिखाई देती है।

कसूती कढ़ाई के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला कपड़ा इरकल साड़ी है।

गारा कढ़ाई यह भारत में पारसी समुदाय से उद्भूत एक पारंपरिक कढ़ाई शैली है। यह अपने जटिल, अति सूक्ष्म, फूलों और प्रकृति से प्रेरित डिजाइनों के लिए जानी जाती है।

शमिलामी (मणिपुर) यह मणिपुर की कढ़ाई है, और इसमें बुनाई और कढ़ाई का मिश्रण होता है।

कारचोबी (राजस्थान) कारचोबी राजस्थान की प्रसिद्ध कढ़ाई है, जिसमें जरी की धागे से उभरी हुई कढ़ाई की जाती है। इसे सूती कपड़े के ऊपर समतल टाँके से कढ़ाई की जाती है।

गोटा (राजस्थान) विस्तृत पैटर्न बनाने के लिए कपड़े पर सुनहरे जरी रिबन के छोटे टुकड़े लगाए जाते हैं और किनारों को सिल दिया जाता है।

पिछवई (राजस्थान और गुजरात) पिछवई कढ़ाई राजस्थान और गुजरात राज्यों से संबंधित है। यह लटकाने के लिए एक सुंदर और रंगीन कढ़ाई है जिसका उपयोग धार्मिक मूर्तियों की पृष्ठभूमि के रूप में किया जाता है।

बन्नी (गुजरात) यह लोहाना समुदाय द्वारा की जाने वाली कढ़ाई है। इसमें काँच के काम सहित ज्यामितीय चित्रों की कढ़ाई के लिए रेशम के सोता का उपयोग किया जाता है।

काथी कला (गुजरात) यह गुजरात की खानाबदोश रबारी जनजातियों द्वारा की जाने वाली कढ़ाई की एक शैली है।

इसमें छोटे दर्पणों से सुसज्जित चेन सिलाई का काम होता है, जो अक्सर चमकीले रंगे कपड़ों पर किया जाता है।

पटोला (गुजरात) यह गुजरात की दोहरी इकत शैली है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से रेशम साड़ियों के लिए किया जाता है। इसमें टाई-डाई के समान प्रतिरोधी रंगाई प्रक्रिया को अपनाया जाता है।

आरी (कश्मीर और गुजरात) इसे क्रू वेल नामक लंबी हुक वाली सुई का उपयोग करके चेन सिलाई के बारीक, संकेंद्रित छल्लों में बनाया जाता है और इसमें फूलों के चित्र बनाए जाते हैं।

जमावर (कश्मीर) जमावर कश्मीर में बने जटिल डिजाइन वाले शॉल हैं। इसे बेहतरीन शिल्प कौशल के लिए जाना जाता है, जिसमें आगे या पीछे का हिस्सा पता नहीं चलता है।

पश्मीना (कश्मीर) पश्मीना बढ़िया कश्मीरी ऊन और उससे बने वस्त्रों को दिया गया नाम है। ऊन चांगथांगी बकरियों से प्राप्त होती है।

यह महीन और पतली होती है, जो हल्के परिधान के लिए उपयुक्त होती है।

कशीदाकारी (जम्मू और कश्मीर) इसमें वनस्पति पैटर्न बनाने के लिए सरल चेन टाँके का उपयोग किया जाता है।

फु लकारी (पंजाब और हरियाणा) फुलकारी में हल्के रंग के कपड़े पर चमकीले रंगों के कंट्रास्ट के साथ फू लों की आकृतियों की कढ़ाई की जाती है।

कपड़े के पिछले भाग पर टाँके नुमा कढ़ाई की जाती है।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 78

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कपड़े के पिछले भाग पर टाँके नुमा कढ़ाई की जाती है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 78

बाग (पंजाब) यह फु लकारी के समान है, लेकिन कपड़े की पूरी सतह पर कढ़ाई का काम होता है।

सुजानी (बिहार) यह महीन मलमल, सामान्य रूप से लाल या सफे द रंग के कपड़े पर की जाती है। मुख्य चित्रों को विभिन्न रंगों के धागों से भरे मोटे चेन टाँके से बनाया जाता है। **[UPSC 2018]**

फू ल पत्ती का काम (उत्तर प्रदेश) इस कढ़ाई में फू लों की पंखुड़ियों और पत्तियों के चित्र बनाए जाते हैं।

मुकैश/मुके श (उत्तर प्रदेश) इसमें पूरे कपड़े पर पैटर्न बनाने के लिए पतले धातु के धागों को घुमाना शामिल है।

भारत में ब्लॉक प्रिंटिं ग

ब्लॉक प्रिंटिंग सुंदर डिजाइन बनाने के लिए लकड़ी या धातु के ब्लॉकों का उपयोग करके कपड़े को रंगने की एक कला है। कभी-कभी इसमें, लिनोलियम ब्लॉकों का भी उपयोग किया जाता है। भारत दुनिया में ब्लॉक-प्रिंटेड कपड़े के सबसे बड़े निर्माताओं और निर्यातकों में से एक है। भारत में ब्लॉक प्रिंटिंग के निम्नलिखित केंद्र हैं– गुजरात

- गुजरात में, इसप्रकार की हाथ की छपाई पेठापुर परिवारों द्वारा की जाती रही है। वे जटिल ब्लॉक बनाते हैं और मिट्टी प्रतिरोधी-मुद्रण विधि (Mud Resist-printing Method) का उपयोग करके कपड़ों को प्रिंट करते हैं। इन प्रिंटों को सौदागीरी (व्यापारी) प्रिंट कहा जाता है।
- गुजरात में धमड़का गाँव अजरख नामक ब्लॉक-प्रिंटेड कपड़े के लिए प्रसिद्ध है। अजरख में प्राकृतिक रंगों जैसे कि मजीठ की जड़ से लाल, जंग लगे लोहे के घोल से काला और नील से नीले रंग का उपयोग करके ज्यामितीय डिजाइन बनाए जाते हैं।
- कच्छ में, लोकप्रिय पैटर्न पक्षियों, जानवरों और नर्तकियों के काले और लाल डिजाइन हैं।
- अहमदाबाद और बड़ौदा की साड़ियों में लाल या नीले रंग की पृष्ठभूमि पर आम के बड़े पैटर्न होते हैं।

राजस्थान

- भारत का छिपा समुदाय अधिकांश ब्लॉक नक्काशीदार, रंगरेज और के लिए जाना जाता है। वे पक्षियों, जानवरों, मानव आकृतियों, देवी-देवताओं के रंगीन प्रिंट बनाते हैं।
- हाथ से छपाई के महत्त्वपूर्ण केंद्र जयपुर, बांगरू, सांगानेर, पाली और बाड़मेर हैं।
- सांगानेर अपने के लिको-प्रिंटेड चादरों, रजाई और साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। के लिको प्रिंटिंग में पहले आउटलाइन प्रिंट की जाती है और फिर रंग भरा जाता है।
- दू-रूखी प्रिंटिंग में कारीगर कपड़े के दोनों तरफ प्रिंट करते हैं।
- बागरू (राजस्थान का एक शहर) अपनेस्याही-बेगार और दाबू प्रिंट के लिए प्रसिद्ध है। स्याही-बेगार काले और पीले गेरू या क्रीम रंग में डिजाइन किया जाता है। दाबू प्रिंट ऐसेप्रिंट हैं, जिनमें प्रतिरोधी पेस्ट लगाकर कुछ भागों को डाई से छिदेखने को मिलता है।

पंजाब

- ब्लॉक प्रिंटिंग छिम्बा नामक कपड़ा श्रमिकों के एक समूह की कला थी।
- डिजाइन सामान्य रूप से फूल और ज्यामितीय होते थे।
- आज पारंपरिक डिजाइन विलुप्त हो गए हैं, और रासायनिक रंगों ने वनस्पति रंगों का स्थान ले लिया है।

पश्चिम बंगाल

- सेरामपुर ब्लॉक प्रिंटिंग का केंद्र है।
- यह अपने बोल्ड और चमकीले पैटर्न के लिए प्रसिद्ध है। आंध्र प्रदेश उत्कृष्ट कलमकारी पेंटिंग बनाने के लिए ब्लॉक प्रिंटिंग विधि लागू की जाती है। जैसा कि नाम से पता चलता है, कलमकारी एक कलम (कलाम) से बनाई गई कलाकृति (कारी) है। यह हाथ से बनाई गई पेंटिंग और ब्लॉक प्रिंटिंग का मिश्रण है।
- कलमकारी कला के दो प्रमुख केंद्र श्रीकालाहस्ती और मछलीपट्टनम हैं।
  - **श्रीकालाहस्ती कलमकारी:** इसमें हिंदू पौराणिक कथाओं के विषयों को पैनलों में चित्रित किया जाता है, और किनारे पर एक लिपि चित्रित की जाती है।
  - इसके सबसे लोकप्रिय चित्रों में हिंदू देवी-देवताओं के चित्र हैं। यह काम पूरी तरह से ब्रश जैसी कलम से किया जाता है।
  - **मछलीपट्टनम:** यहाँ फारसी रूपांकनों जैसे पेड़, लताएँ, फूल और पत्तियों के डिजाइन मुख्य रूप से बिस्तर की चादरों, पर्दों और कपड़ों पर बनाए जाते हैं।

फर्श के डिजाइन

विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों में फर्श के अनेक डिजाइन देखने को मिलते हैं। ये डिजाइन सामान्य रूप से धार्मिक या पारिवारिक समारोहों के दौरान तैयार किए जाते हैं। वे आमतौर पर प्राकृतिक सामग्री और रंगों का उपयोग करके हाथ से बनाए जाते हैं। कला के पारंपरिक तत्व के अनुरूप सामग्री का चयन उनकी अस्थायी प्रकृति और आसानी से मिटाए जाने की क्षमता के आधार पर किया जाता है।

- चौकपूर्ण (पंजाब, उत्तर प्रदेश) और ऐपण (हिमाचल प्रदेश) डिजाइन में वर्गों, वृत्तों और त्रिभुजों को बनाया जाता है।
- मंडाना (राजस्थान, मध्य प्रदेश) में वर्ग, षट्कोण, त्रिभुज और वृत्त के पैटर्न बनाए जाते हैं।
  - जमीन को गाय के गोबर से लेपित किया जाता है और गहरे लाल रंग (रेती के मिश्रण से) से तैयार किया जाता है।
- दक्षिण भारत में कोलम डिजाइन को तैयार करने के लिए, गीली जमीन पर पिसे हुए चावल या कुचले हुए पत्थर के छोटे-छोटे बिंदु जोड़कर डिजाइन बनाए जाते हैं।
- इसे कर्नाटक में हासे, आंध्र प्रदेश में मुग्गुलु और केरल में गोलम के नाम से भी जाना जाता है।
  - मंडप कोलम खास तौर पर विवाह समारोहों के लिए गीले चावल के पेस्ट से बनाए गए बड़े डिजाइन हैं।
  - ग्रह कोलम प्रत्येक सुबह घरों में पूजा के लिए स्थानों को पवित्र करने के लिए बनाए जाते हैं।
- झोंटी (ओडिशा) और अरीपाना (पश्चिम बंगाल, असम) के डिजाइनों में शंख, मछली, साँप और फूल जैसे शैलीगत चित्र बनाए जाते हैं।
  - ऐसे डिजाइन चाक पाउडर से बनाए जाते हैं और रंगीन पाउडर या चावल के पेस्ट से भरे जाते हैं। प्रत्येक अरीपाना डिजाइन के सामने अक्सर फूल रखे जाते हैं।

जीआई टैग (GI TAG) प्राप्त प्रमुख हथकरघा उत्पाद आंध्र प्रदेश: उप्पादा जामदानी साड़ी, वेंकटगिरी साड़ी, मंगलागिरी साड़ी और कपड़े, धर्मावरम हैंडलूम पट्टू साड़ी और पावड़ा।

गुजरात: तंगालिया शॉल, कच्छ शॉल, पाटन पटोला, राजकोट पटोला।

हिमाचल प्रदेश: कुल्लू शॉल, किन्नौरी शॉल।

जम्मू और कश्मीर: कश्मीरी पश्मीना, कानी शॉल।

कर्नाटक: नवलगुंड दुरियाँ, इलकल साड़ी, मोलकालमुरु साड़ी, उडुपी साड़ी, मैसूर सिल्क, गुलेदगुड्ड खाना।

केरल: कन्नानोर होम फर्निशिंग्स, बलरामपुरम साड़ी, कासरगोड साड़ी, कुथमपल्ली साड़ी, चेंदमंगलम धोती और सेट, मुंडु कुथमपल्ली धोती और सेट मुंडू।

मध्य प्रदेश: चंदेरी, टीकमगढ़ का बेल मेटल वेयर,।

महाराष्ट्र: सोलापुर चादर, पैठानी साड़ी, सोलापुर टेरी टॉवल, करवाथ कटि तुसार साड़ी।

मणिपुर: शफी लांफी, वांगखेई फी, मोइरांग फी।

ओडिशा: कोटपाड हैंडलूम, उड़ीसा इकत, खंडुआ साड़ी, गोपालपुर टसर, धालापत्थर परदा, संबलपुरी बँधा साड़ी, बोमकाई साड़ी, हबसपुरी साड़ी, बेरहामपुर पट्टा (फोडा कुंभा) साड़ी।

तमिलनाडु: काँचीपुरम सिल्क, भवानी जमक्कलम, मदुरै सुंगुडी, अरनी सिल्क, कोवई कोरा कॉटन साड़ी, सेलम सिल्क (सलेम वेनपट्टू के नाम से जाना जाता है)।

तेलंगाना: पोचमपल्ली इकत, गडवाल साड़ी, सिद्दीपेट गोलाबामा, नारायणपेट हैंडलूम साड़ी।

उत्तर प्रदेश: लखनऊ की चिकनकारी, मथुरा सांझी शिल्प, बनारस ब्रोके ड्स और साड़ी, मिर्जापुर हस्तनिर्मित दरी।

पश्चिम बंगाल: शांतिपुर साड़ी, बालूचरी साड़ी, धनियाखली साड़ी।

अन्य जीआई टैग: मुगा सिल्क (असम); भागलपुर सिल्क (बिहार); चंपा सिल्क साड़ी (छत्तीसगढ़); कोटा डोरिया (राजस्थान); चाखेसांग शॉल (नागालैंड)।

भारत में मृदभांडों का क्रमिक विकास

मृदभांड के प्रकार समय सीमा संस्कृति/ सभ्यता प्रमुख विशेषताएँ महत्त्व हस्तनिर्मित मृदभांड पूर्व-हड़प्पा (7000- 3000 ईसा पूर्व) मेहरगढ़ संस्कृति सरल, हस्तनिर्मित, प्रायः अलंकृत; भंडारण और भोजन पकाने के लिए उपयोग किया जाता है।

ये स्थायी जीवन और मिट्टी के साथ प्रारंभिक प्रयोग की शुरुआत के प्रतीक है।

काले मृदभांड नवपाषाण और प्रारंभिक — ताम्रपाषाण — दक्षिणी नवपाषाण — संस्कृतियाँ

हस्तनिर्मित, प्रायः पॉलिशयुक्त, सरल डिजाइन; भंडारण और दैनिक उपयोग के लिए प्रयुक्त।

ये मृद्भाण्ड दक्षिण भारत में प्रारंभिक कृषि पद्धतियों और स्थायी जीवन को दर्शाते हैं।

गेरू/गैरिक वर्णिक मृदभांड (OCP) 2000–1500 ई.पू. उत्तर हड़प्पा एवं वैदिक काल अपरिष्कृत लाल या गेरू रंग के मृद्भाण्ड; प्रायः दाह संस्कार के स्थलों से संबंधित।

हड़प्पा और वैदिक संस्कृतियों के बीच संक्रमणकालीन चरण को इंगित करते हैं।

काले और लाल मृदभांड

(BRW) ताम्रपाषाण काल (2000-1500 ईसा पूर्व) अहार-बनास, मालवा और जोर्वे संस्कृतियाँ अंदर से काले तथा बहार से लाल; ज्यामितीय डिजाइन; कृषि समुदायों से संबद्ध।

विभिन्न ताम्रपाषाण संस्कृतियों के मध्य सांस्कृतिक अंतःक्रिया को दर्शातें हैं।

लाल मृदभांड हड़प्पा सभ्यता

(2600-1900 ईसा पूर्व) सिंधु घाटी सभ्यता चाक निर्मित, अच्छी तरह से पके हुए, लाल या गेरू रंग; प्रायः काले ज्यामितीय या पशु रूपांकनों के साथ चित्रित।

मृदभांड बनाने की उन्नत तकनीक और बड़े

स्तर पर उत्पादन का संकेत।

चित्रित धूसर मृदभांड

(PGW) प्रारंभिक लौह युग (1200-600 ईसा पूर्व) वैदिक संस्कृति चित्रित ज्यामितीय पैटर्न के साथ समृद्ध रूपांकनों से निर्मित चित्रित धूसर मृदभांड; गंगा के मैदानों में पाए गए।

प्रारंभिक भारतीय-आर्यों और परवर्ती वैदिक

बस्तियों से संबद्ध।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: भारत में मृदभांडों का क्रमिक विकास



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारत में मृदभांडों का क्रमिक विकास

मुख्य परीक्षा दृष्टि: (PGW) प्रारंभिक लौह युग (1200-600 ईसा पूर्व) वैदिक संस्कृति चित्रित ज्यामितीय पैटर्न के साथ समृद्ध रूपांकनों से निर्मित चित्रित धूसर मृदभांड; गंगा के मैदानों में पाए गए।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारत में मृदभांडों का क्रमिक विकास • काले मृदभांड नवपाषाण और प्रारंभिक • ताम्रपाषाण • दक्षिणी नवपाषाण • संस्कृतियाँ | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *2000, 1500, 1900, 1200*

उत्तरी काले पॉलिश वाले

मृद्भाण्ड (NBPW) 6वीं-दूसरी शताब्दी ई.पू. मौर्य काल चमकदार काली सतह; कीमती वस्तुओं के लिए उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट मृद्भाण्ड।

शहरीकरण और मौर्य साम्राज्य के उद्भव को दर्शाते हैं।

खुरदरे मृदभांड दूसरी शताब्दी ई.पू.- दूसरी शताब्दी ई.

भारत-रोमन व्यापार दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले पतले, चाक द्वारा निर्मित मृद्भाण्ड जिन पर मुद्रांकित डिजाइन है।

यह भारत और रोमन साम्राज्य के मध्य होने वाले व्यापारिक संबंधों को दर्शाते हैं।

लाल पॉलिश वाले — मृद्भाण्ड

प्रथम शताब्दी ई.पू.- दूसरी शताब्दी ई.

सातवाहन काल, गुप्त काल चिकनी, लाल पट्टी/धारी युक्त पॉलिशदार सतह; प्राय: पकी हुई मिट्टी की मूर्तियों और मृद्भाण्डों का उपयोग किया जाता था।

व्यापारिक के न्द्रों में पाए गये, जो समुद्री और अंतर्देशीय व्यापार को दर्शाते हैं।

चाइना क्ले /चीनी मिट्टी के मृद्भाण्ड पहली-छठी शताब्दी ई. गुप्त काल विकसित सफेद मृद्भाण्ड, कभी-कभी चित्रित; औपचारिक प्रयोजनों के लिए उपयोग किए जाते थे।

गुप्त स्वर्ण युग के दौरान मृद्भाण्ड निर्माण तकनीक में परिष्कार के संकेत प्राप्त होते हैं।

चमकीले मृद्भाण्ड मध्यकालीन काल

(13वीं-18वीं शताब्दी) सल्तनत और मुगल काल रंगीन ग्लेज, पुष्प पैटर्न और फारसी प्रभाव; मुख्य रूप से सजावटी।

भारतीय कला औरवास्तुकला परफारसी और मध्य एशियाई प्रभाव प्रतिबिंबित होता है।

पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ/ टेराकोटा मूर्तियाँ सभी युगों/कालों में सिंधु घाटी से गुप्त काल तक सांचे और हाथ से दबाकर निर्मित; देवताओं, इनपर जानवरों और दैनिक जीवन के दृश्यों को दर्शाया गया।

धार्मिक प्रथाओं, सांस्कृतिक विश्वासों और कलात्मक अभिव्यक्ति को प्रतिबिंबित करती हैं।

विभिन्न कालों में विज्ञान

और प्रौद्योगिकी खगोल विज्ञान (ASTRONOMY) भारतीय खगोल विज्ञान की प्रारंभिक व्याख्याएँ बड़े स्तर पर यज्ञों को व्यवस्थित करने के लिए की गई थी। इन्हें ज्योतिष वेदांग में दर्ज किया गया है।

- आर्यभट्ट की पुस्तक आर्यभट्टीय में चार में से दो खंड खगोल विज्ञान को समर्पित हैं।
  - इस पुस्तक में खगोल विज्ञान के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जिसमें परिभाषाएँ, ग्रहों की स्थिति निर्धारित करने की विधियाँ, सूर्य और चंद्रमा की गति का विवरण और ग्रहों की गणना सम्मिलित हैं।
  - इस पुस्तक में बताया गया है कि पृथ्वी गोलाकार है और अपनी धुरी पर घूमती है। चंद्र ग्रहण तब होता है जब पृथ्वी की छाया चंद्रमा पर पड़ती है और सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा की छाया पृथ्वी पर पड़ती है।
  - 'खगोल' नालंदा की प्रसिद्ध खगोलीयप्रयोगशाला थी जहाँ आर्यभट्ट ने अध्ययन किया था।
- वराहमिहिर ने अपने ग्रंथ पंच सिद्धांतिका में खगोल विज्ञान के पाँच सिद्धांतों (अर्थात सूर्य, रोमाका, पॉलिसा, वशिष्ठ और पैतामह सिद्धांत) के प्रेक्षणों का सारांश प्रस्तुत किया।
- फिरोज शाह तुगलक ने दिल्ली में प्रेक्षण चौकियाँ (Observation Posts) स्थापित कीं, वहीं दूसरी ओर फिरोज शाह बहमनी ने हकीम हुसैन गिलानी और सैयद मुहम्मद काजिमी के मार्गदर्शन से दौलताबाद में एक वेधशाला (Observatory) स्थापित की।
- फिरोज शाह के दरबारी खगोलशास्त्री महेंद्र सूरी ने यंत्राज नामक एक अभिनव खगोलीय उपकरण का आविष्कार किया था।
- परमेश्वर और महाभास्करीय खगोलशास्त्रियों के प्रसिद्ध घराने थे।
- नीलकंठ सोमसुत्वन ने आर्यभट्ट की कृति पर एक टीका लिखी।
- कमलाकर ने खगोल विज्ञान पर इस्लामी विचारों का गहन अध्ययन किया। वे इस्लामी ज्ञान के विशेषज्ञ थे।
- जयपुर के महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी, मथुरा और जयपुर में पाँच खगोलीय वेधशालाएँ (जंतर मंतर) स्थापित कीं।

चिकित्सा

अथर्वेद में पहली बार विभिन्न रोगों, उनके इलाज और औषधियों का उल्लेख किया गया है। वैदिक काल के दौरान, अश्विनी कुमार वैद्य थे और उन्हें देवतुल्य स्थान दिया गया था। धन्वन्तरि चिकित्सा के देवता थे।

- 800 ईसा पूर्व में आत्रेय और अग्निवेश ने आयुर्वेदिक सिद्धांतों पर विचार-विमर्श किया।
- लगभग 600 ईसा पूर्व में तक्षशिला और वाराणसी, चिकित्सा एवं शिक्षा के केंद्र के रूप में उभरे।
- इस क्षेत्र के दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ, चरक द्वारा रचित चरक संहिता और सुश्रुत द्वारा रचित सुश्रुत संहिता थे।
- विज्ञान के जनक चरक ने 2500 वर्ष पहले आयुर्वेद का संकलन किया था।
- चरक संहिता में औषधीय प्रयोजनों के लिए पौधों और जड़ी-बूटियों के उपयोग के बारे में विस्तार से बताया गया है।
- इस ग्रंथ में पाचन, चयापचय और प्रतिरक्षा प्रणाली के बारे में व्यापक टिप्पणी की गई है, जिसमें इलाज की तुलना में रोकथाम पर अधिक जोर दिया गया है।
- इस ग्रंथ में आनुवंशिकी (जेनेटिक्स) के बारे में भी बताया गया है।
- सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा (सर्जरी) और प्रसूति विज्ञान (Obstetrics) की व्यायावहारिक समस्याओं से संबंधित है।
- चौथी शताब्दी ईस्वी के आस-पास शल्य चिकित्सा का एक विशिष्ट विषय के रूप में उल्लेख किया गया था, सुश्रुत ने इस विधा का नेतृत्व किया था।
- सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा को उपचार कला की सर्वोच्च उपलब्धि माना और ऑपरेशन, अस्थि सेटिंग और मोतियाबिंद सर्जरी के तरीकों के साथ-साथ 121 सर्जिकल उपकरणों का वर्णन किया।
- वे राइनोप्लास्टी (प्लास्टिक सर्जरी) व नेत्र विज्ञान (मोतियाबिंद) के विशेषज्ञ थे।
- यूनानी (180 ईसा पूर्व-10 ईस्वी में) भारत में इंडो-ग्रीक शासन के दौरान भारतीय चिकित्सा पद्धति से बहुत प्रभावित थे।

• प्रारंभिक मध्यकाल में भारत में सर्जरी को असफलताओं का सामना करना पड़ा क्योंकि रेजर से चीरा लगाने का काम नाई का कामबन गया। इस दौरान हुए कुछ घटनाक्रम इस प्रकार हैं:

• यूनानी चिकित्सा पद्धति ग्यारहवीं शताब्दी के आस-पास मुसलमानों के साथ भारत में आई। यूनानी पद्धति, तिब्बती चिकित्सा की एक महत्त्वपूर्ण प्रणाली है जो भारत में विकसित हुई।

• निदान उद्देश्यों के लिए नाड़ी और मूत्र परीक्षण किए गए।सारंगधर संहिता में दवाओं के लिए अफीम के उपयोग की सिफारिश की गई है।

• रस चिकित्सा पद्धति मुख्य रूप से बीमारियों को ठीक करने के लिए धात्विक दवाओंसहित कई खनिज दवाओं से संबंधित है।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: विभिन्न कालों में विज्ञान

1. विभिन्न कालों में विज्ञान

2. चिकित्सा

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — विभिन्न कालों में विज्ञान

मुख्य परीक्षा दृष्टि: रस चिकित्सा पद्धति मुख्य रूप से बीमारियों को ठीक करने के लिए धात्विक दवाओंसहित कई खनिज दवाओं से संबंधित है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: विभिन्न कालों में विज्ञान • चिकित्सा

IUC विशेष स्मृति सूत्र #14: भारत के प्रमुख कठपुतली रूप

ट्रिक: 'कठपुतली राजस्थान की डोरी, कुंदई ओडिशा की, पावाकुथु केरल का दस्ताना, तोलु बोम्मलता आंध्र की छाया' — डोरी (कठपुतली, बोम्मलता), छड़ (पुतुल नाच, यमपुरी), दस्ताना (पावाकुथु), छाया (तोलु बोम्मलता, रावणछाया)।

• तुहफत-उल-मोमिनीन सत्रहवीं शताब्दी में मुहम्मद मुनिन द्वारा लिखा गया एक फारसी ग्रंथ था जिसमें चिकित्सकों की राय पर चर्चा की गई है।

• अली-बिन-रब्बान ने फिरदौसु-हिकमत नामक पुस्तक में संपूर्ण यूनानी चिकित्सा पद्धति के साथ-साथ भारतीय चिकित्सा ज्ञान कासारांश प्रस्तुत किया।

• हकीम दीया मुहम्मद ने अरबी, फारसी और आयुर्वेदिक चिकित्सा ज्ञान को शामिल करते हुए, माजिने दीया नामक पुस्तक संकलित की।

• औरंगजेब को समर्पित “तिब्बी औरंगजेबी” आयुर्वेदिक स्रोतों पर आधारित है। दारा शिकोह को समर्पित नूरुद्दीन मुहम्मद की “मुसलजती-दाराशिकोही” यूनानी चिकित्सा से संबंधित है।

• सिद्ध एक क्षेत्रीय आयुर्वेदिक संस्करण है जो भारतीय तमिल संस्कृति में विकसित हुआ। इसमें धातुओं, खनिजों और रसायनों के उपयोग पर जोर दिया जाता है।

• अभिघात विज्ञान (Traumatology) और चोटों से निपटने वाली सिद्ध चिकित्सा की एक शाखा को, वर्म कहा जाता है

• कीमिया की उत्पत्ति सिद्ध पद्धति में हुई है। धातुकर्म (METALLURGY)

• सिंधु घाटी की खुदाई से उन्नत धातुकर्म प्रथाओं का पता चलता है, जो वहाँ मिले चमकते हुए मिट्टी के बर्तनों, कांस्य और ताँबे की कलाकृतियों से स्पष्ट होता है।

• वैदिक लोगों को अनाज के किण्वन, फल, चमड़े की टैनिंग और रंगाई प्रक्रियाओं का ज्ञान था।

• पहली शताब्दी ईस्वी तक, विभिन्न धातुओं(लोहा, ताँबा, चाँदी, सोना) और मिश्र धातुओं(पीतल, कांस्य) का बड़े पैमाने पर उत्पादन हो रहा था।

• कुतुबमीनार परिसर में स्थापित लौह स्तंभ, उच्च गुणवत्ता वाली मिश्र धातु तकनीक का प्रमाण है।

• कपड़ा रंगाई एक लोकप्रिय शिल्प था, जिसमें अजंता के भित्तिचित्र उच्च गुणवत्ता वाले रंगों के प्रयोग को दर्शाते हैं।

• एक उल्लेखनीय खोज मेंसुल्तानगंज (भागलपुर के पास) मेंमिली बुद्ध कीदो मीटर ऊँची कांस्य प्रतिमा शामिल है।

नौवहन (NAVIGATION)

• गुजरात के लोथल में एक स्थान पर एक डॉकयार्ड या गोदीबाड़ा (जलयान बनाने या मरम्मत करने का स्थान) के अवशेष मिले हैं, जो प्राचीन भारत में समुद्री व्यापार के फलने-फूलने का प्रमाण देते हैं।

• “युक्ति कल्पतरु” एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है जो तत्कालीन जहाज निर्माण तकनीकों के बारे में व्यापक जानकारी प्रदान करता है।

• प्राचीन भारत में, जहाजों को मुख्य रूप से दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया था: “सामान्य” या साधारण वर्ग, और “विशेष” या विशेष वर्ग।

  ◦ साधारण वर्ग को समुद्री यात्राओं के लिए डिजाइन किया गया था और इसमें दो अलग-अलग प्रकार सम्मिलित थे: “दीर्घ”, जिसमें लंबे और संकीर्ण जहाज होते थे और “उन्नत” जिसमें ऊँचे जहाज होते थे।

◦ इसके अतिरिक्त, जहाजों को उनकी लंबाई और के बिन की स्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। "सर्वमंदिर" जहाजों में पूरे डेक पर फैले के बिन होते थे, जिनका उपयोग अक्सर शाही यात्राओंऔर घोड़ों के परिवहन के लिए किया जाता था। डेक के मध्य भाग में स्थित के बिन वाले जहाजों को "मध्यमंदिर" कहा जाता था, जो सामान्य रूप से आरामदायक यात्राओं के लिए उपयोग किए जाते थे।

◦ अंत में, खास तौर पर युद्ध के लिए डिजाइन किए गए जहाजों को "अग्रमंदिर" कहा जाता था।

जीव विज्ञान (BIOLOGY)

• 13वीं शताब्दी में, हंसदेव ने "मृग-पक्षी शास्त्र" संकलित किया, जिसमें शिकार करने वाले जानवरों और पक्षियों का एक सामान्य विवरण प्रस्तुत किया गया।

• अकबर ने हाथियों और घोड़ों सहित उच्च गुणवत्ता वाले घरेलू जानवरों के प्रजनन पर ध्यान केंद्रित किया।

• **जहाँगीर की भूमिका:**

◦ जहाँगीर की कृति "तुज़ुक-ए-जहाँगीरी", में लगभग छत्तीस पशु प्रजातियों की चर्चा करते हुए पालन और संकरण (Weeding and Hybridisation) से संबंधित प्रेक्षणों और प्रयोगों का प्रलेखन किया गया है।

◦ वह एक जिज्ञासु प्रकृतिवादी भी था, उसने अपने दरबारी कारीगरों के साथ मिलकर पुष्प चित्र बनाकर लगभग 57 पौधों की प्रजातियों का प्रलेखन किया था।

◦ उसके दरबारी चित्रकार, विशेषकर मंसूर ने, जानवरों के विस्तृत और सुंदर चित्र बनाए।

रसायन विज्ञान (CHEMISTRY)

• कागज के उपयोग से पहले प्राचीन साहित्य का लेखन, सामान्य रूप से दक्षिण भारत में ताड़ पत्रों और उत्तरी क्षेत्रों में बर्च वृक्ष की छाल (भोज-पत्र पेड़ की छाल) पर संरक्षित किया जाता था।

• कागज का उत्पादन मध्यकाल में शुरू हुआ जिसके उल्लेखनीय केंद्र- कश्मीर, सियालकोट, जाफराबाद, पटना, मुर्शिदाबाद, अहमदाबाद, औरंगाबाद और मैसूर में थे।

◦ कागज बनाने कीतकनीक पूरे देश में समान थी, केवल विभिन्न प्रकार के कच्चे माल से लुगदी तैयार करने में अंतर था।

◦ मैसूर में टीपू के शासनकाल में एक अलग कारखाने में सोने की सतह वाला एक विशेष प्रकार का कागज तैयार किया जाता था।

• मुगलों को बारूद उत्पादन और आग्नेयास्त्रों में इसके उपयोग के बारे में ज्ञान था।

◦ आतिशबाजी में रॉकेट, फुलझड़ियाँ, रंगीन फ्लेयर और विस्फोटक उपकरण सम्मिलित थे।

◦ तुज़ुक-ए-बाबरी में तोपों की ढलाईकी प्रक्रिया का विवरण दिया गया है, जिसमें धातु को पिघलाकर सांचों में डाला जाता था।

• विस्फोटकों के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं का भी निर्माण किया जाता था। आइन-ए-अकबरी में अकबर के इत्र कार्यालय के नियमों का उल्लेख है, जो गुलाब-इत्र की लोकप्रियता पर प्रकाश डालता है।

• चमकदार टाइल्स और मिट्टी के बर्तन भी इस काल के उल्लेखनीय आविष्कार थे। प्राचीन और मध्यकालीन भारत में रसायन विज्ञान के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण विकास
रसायन विज्ञान का क्षेत्र मुख्य ग्रन्थ समय सीमा प्रमुख योगदानकर्ता प्रमुख योगदान रसायन विद्या (रसायन) रसरत्नाकर, रसार्णव लगभग 8वीं-12वीं शताब्दी ई. नागार्जुन, गोविंदाचार्य मूलभूत धातुओं को सोने में परिवर्तित करने की तकनीकी; पारा आधारित दवाओं और पारस मणि (Elixirs) का विकास।

धातुकर्म बृहत्संहिता (वराहमिहिर) लगभग 6वीं शताब्दी ई. अज्ञात (प्राचीन धातुकर्मी) प्रगलन, मिश्र धातु निर्माण और संक्षारण प्रतिरोध में उन्नत तकनीकें (जैसे, दिल्ली लौह स्तंभ)।

औषधीय रसायन विज्ञान चरक संहिता, सुश्रुत संहिता पहली-दूसरी शताब्दी ई. चरक, सुश्रुत क्षार, अम्ल औरकीटाणुनाशक सहित हर्बल और खनिज आधारित दवाइओं का निर्माण।

रंगाई और वस्त्र अर्थशास्त्र, बृहत्संहिता लगभग 4 शताब्दी ई.पू. – 4 शताब्दी ई.

कौटिल्य, वराहमिहिर प्राकृतिक रंगों, रंगबंधकों (Mordants) का निर्माण, तथा वस्त्रों को रंगने की तकनीकें (जैसे, नील रंगाई)।

काँच और चीनी मिट्टी एक्स्कवेशन इन तक्षशिला, हड़प्पा तीसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व हड़प्पा के कारीगर सिलिका, सीसा और क्षारीय पदार्थों का उपयोग करके काँच के मोती, रंगीन काँच और चमकदार मिट्टी के बर्तनों का उत्पादन करना।

साबुन और डिटर्जेंट पारंपरिक भारतीय प्रक्रियाएँ प्राचीन अज्ञात सफाई के लिए प्राकृतिक क्षार, रीठा (साबुन नट्स) और राख का उपयोग।

इत्र और सौंदर्य प्रसाधन गंधयुक्ति (सुगंध-विज्ञान से संबंधित ग्रंथ) लगभग 5वीं शताब्दी ई. अज्ञात सुगंधित तेलों के आसवन और सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण की तकनीकें ।

आतिशबाज़ी बनाने की विद्या कौटिल्य का अर्थशास्त्र लगभग चौथी शताब्दी ई.पू. कौटिल्य युद्ध में विस्फोटक पदार्थों और अग्नि-आधारित संकेतन विधियों के लिए व्ययंजन विधियाँ।

आसवन रसरत्नसमुच्चय लगभग 13वीं शताब्दी ई. वाग्भट्ट इत्र, तेल और औषधीय टिंचर जैसे तरल पदार्थों के आसवन की विधियाँ।

अकार्बनिक रसायन शास्त्र रसरत्नाकर लगभग 8वीं शताब्दी ई. नागार्जुन औद्योगिक और औषधीय प्रयोजनों के लिए सल्फर, पारा यौगिकों और क्षारों का निर्माण करना।

गणित (MATHEMATICS) हड़प्पा नगर नियोजन प्राचीन भारत में माप और ज्यामिति के उन्नत ज्ञान को दर्शाता है।

ग्रंथ का नाम लेखक समय सीमा प्रमुख योगदान महत्त्व शुल्व सूत्र बौधायन, आपस्तम्ब, कात्यायन लगभग 800-200 ई.पू. ज्यामितीय निर्माण के नियम, वर्गमूल की अवधारणाएँ, और π (पाई) का सन्निकटन सूत्र।

वैदिक अनुष्ठानों में वेदिका निर्माण के लिए प्रयुक्त; ज्यामिति के प्रारंभिक सिद्धांत।

आर्यभटीय आर्यभट्ट लगभग 499 ई. शून्य की अवधारणा, स्थानीय मान प्रणाली, त्रिकोणमितीय फलन और π का सन्निकटन सूत्र प्रस्तुत किया।

अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति

की नींव रखी गई।

ब्रह्मस्फुट — सिद्धांत

ब्रह्मगुप्त लगभग 628 ई. शून्य और ऋणात्मक संख्याओं की परिभाषा; द्विघात समीकरणों को हल करने के नियम।

इस्लामी और यूरोपीय गणित को प्रभावित

किया।

लीलावती भास्कर द्वितीय लगभग 1150 ई. अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और संयोजन विज्ञान (कॉम्बिनेटरिक्स) के बारे में बताया; शिक्षण के लिए काव्यात्मक समस्याओं का प्रयोग किया।

शिक्षार्थियों के लिए जटिल गणितीय

अवधारणाओं को सरलीकृत किया गया।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति

- **1. अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति**
- **2. ब्रह्मस्फुट**
- **3. सिद्धांत**
- **4. इस्लामी और यूरोपीय गणित को प्रभावित**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति

मुख्य परीक्षा दृष्टि: लीलावती भास्कर द्वितीय लगभग 1150 ई. अंकगणित, बीजगणित, ज्यामिति और संयोजन विज्ञान (कॉम्बिनेटरिक्स) के बारे में बताया; शिक्षण के लिए काव्यात्मक समस्याओं का प्रयोग किया।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: अंकगणित, बीजगणित और त्रिकोणमिति • ब्रह्मस्फुट • सिद्धांत • इस्लामी और यूरोपीय गणित को प्रभावित • शिक्षार्थियों के लिए जटिल गणितीय | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 200 ई., 499 ई, 628 ई, 1150

बीजगणित भास्कर द्वितीय लगभग 1150 ई. बीजगणित पर ध्यान केंद्रित, जिसमें रैखिक और द्विघात समीकरणों के हल सम्मिलित हैं।

पूर्व में हुए कार्यों से अलग उन्नत

बीजगणितीय सिद्धांत।

गणितसारसंग्रह महावीर लगभग 9वीं शताब्दी ई. अंकगणितीय संक्रियाओं,ज्यामिति और संयोजन विज्ञान पर परिचर्चा; व्यायवहारिक अनुप्रयोगों पर बल दिया गया।

अंकगणित और ज्यामिति में जैन गणितीय

(Jain Mathematical) योगदान को लोकप्रिय बनाया।

सिद्धान्त शिरोमणि

भास्कर द्वितीय लगभग 1150 ई. खगोल विज्ञान और गणित सहित व्यापक कार्य; बीजगणित सहित चार खंडों में विभाजित।

खगोल विज्ञान और ब्रह्माण्ड विज्ञान के साथ एकीकृत गणितीय अनुप्रयोग।

त्रिशतिका श्री धराचार्य लगभग 8वीं-9वीं शताब्दी ई. द्विघात समीकरणों को हल करने और ब्याज की गणना से संबंधित नियम शामिल किए गए।

व्यापारियों और दैनिक उपयोग के लिए व्ययावहारिक गणितीय उपकरण प्रदान किए।

गणित कौमुदी नारायण पंडित लगभग 14वीं शताब्दी ई. साइक्लिक प्रोब्लम्स,मैजिक स्क्वायर और क्रमचय/संयोजनों से संबंधितचर्चा की गई।

उन्नत संयोजन गणित और मनोरंजक — गणित

तंत्रसंग्रह नीलकंठ सोमयाजी लगभग 15वीं शताब्दी ई. ग्रहों की गणना और ज्यामिति को शामिल किया गया; आर्यभट्ट के त्रिकोणमितीय परिणामों में सुधार किया गया।

केरल की गणितीय परंपरा में खगोल

विज्ञान और गणित को शामिल किया।

करणपद्धति संगमग्राम के माधव लगभग 14वीं शताब्दी ई. π, साइन और कोसाइन (कोज्या) फलन (Cosine Functions) के लिए अनंत श्रृंखला की शुरुआत की गई।

यूरोप में उनकी औपचारिक खोज से सदियों पूर्व कैलकुलस/गणना की अवधारणा विकसित हुई।

कृषि (AGRICULTURE) उल्लेखनीय क्षेत्रीय विशिष्टताओं में पश्चिमी घाट से काली मिर्च, कश्मीर से के सर और फल, अदरक, तमिलनाडु से दालचीनी, इलायची, चंदन और केरल से नारियल सम्मिलित हैं।

- 16वीं और 17वीं शताब्दी में भारत मेंतम्बाकू , मिर्च, आलू, अमरूद, कस्टर्ड सेब, काजू और अनानास जैसे नए पौधे लगाए गए। **[UPSC-2019]**
- अन्य देशों से आए लोग नई फसलें, पेड़ और बागवानी पौधे भी अपने साथ लाए। प्रमुख फसलों में गेहूँ, चावल, जौ, बाजरा, दालें, तिलहन, कपास, गन्ना और नील सम्मिलित थे।
- मालवा और बिहार जैसे क्षेत्र पोस्ता के पौधों से अफीम उत्पादन के लिए जाने जाते थे।
- गोवा में जेसुइट्स द्वारा आम की व्यवस्थित कलम जैसी बागवानी तकनीकें शुरू की गईं।
- सिंचाई की विधियों मेंकु एँ, तालाब, नहरें, रहट, चरस (चमड़े की बाल्टियाँ) और ढेंकली (बैलों का उपयोग कर पानी निकालने का एक उपकरण) सम्मिलित थे।
  - रहट (Persian Wheel) का उपयोग आगरा क्षेत्र के आस-पास सिंचाई के लिए किया जाता था।

कृषि के विकास से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य

- नीम, राख, गोमूत्र और हर्बल मिश्रण का उपयोग करके जैविक कीट प्रबंधन विधियाँ। कृषि-पराशर (Krishi-Parashara) जैसे ग्रंथों में इन प्रक्रियाओं को उल्लेखित/ दस्तावेजीकरण किया गया है।
- अर्थशास्त्र में वर्णित वैज्ञानिक भूमि सर्वेक्षण और कराधान प्रणालियाँ। कृषि भूमि को रिकॉर्ड करने और उसका उपयोग करने के लिए कुशल तरीके ।
- उन्नत वर्षा जल संचयन तकनीकें , जिनमें बावड़ियाँ, चेक डैम और टैंक सम्मिलित हैं (जैसे, हड़प्पा युग में धोलावीरा)।
- मृदा की उर्वरता बढ़ाने हेतु गाय के गोबर, हरी खाद और कम्पोस्ट जैसी जैविक खाद का उपयोग। वृक्षायुर्वेद (Vrikshayurveda) में फलों, सब्जियों और औषधीय पौधों को उगाने की विस्तृत तकनीक।
- पौधों की उपज में सुधार के लिए ग्राफ्टिंग विधियों (Grafting Methods) की शुरुआत।
- सीढ़ीनुमा खेती हिमालयी क्षेत्रों में पहाड़ी इलाकों के अनुकूल होने और मृदा कटाव को रोकने के लिए की जाती है।

कृषि उपकरण

• कृषि दक्षता के लिए दरांती, कुदाल और उन्नत हल जैसे औजारों का विकास।

• मिश्रित कृषि को विकसित किया गया, टिकाऊ कृषि हेतु फसलों की खेती को पशुपालन के साथ एकीकृत किया गया है।

भारत में सांस्कृतिक संस्थान

और महत्त्वपूर्ण पुरस्कार भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

• भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India) संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।

• यह प्राचीन स्मारकों और पुरातात्त्विक स्थलों पर उपस्थित भौतिक विरासत के संरक्षण और उसकी सुरक्षा के लिए एक समर्पित संस्थान के रूप में कार्य करता है।

• इसका संचालन प्रमुख रूप से दो कानूनों क्रमशः प्राचीन स्मारक तथा पुरातात्त्विक स्थल और अवशेष अधिनियम,1958 एवं पुरावशेष और कला निधि अधिनियम, 1972 के तहत किया जाता है।

• भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण संग्रहालयों, उत्खनन स्थलों, पुरालेखों इत्यादि का प्रबंधन का भी कार्य करता है।

भारतीय शिल्प परिषद

• भारतीय शिल्प परिषद (Crafts Council of India) एक गैर-लाभकारी संगठन है।

• इसकी स्थापना वर्ष 1964 में कमला देवी चट्टोपाध्ययाय द्वारा भारतीय हस्तशिल्प उद्योग को समर्थन और बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया था।

• इसका मुख्यालय चेन्नई में स्थित है।

• समर्थित कला और शिल्प को प्रदर्शित करने और उसे बढ़ावा देने के लिए परिषद द्वारा 'कमला क्राफ्ट शॉप' का संचालन किया जाता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला के द्र

• यह एक स्वायत्त संगठन है।

• इसकी स्थापना वर्ष 1985 में दिवंगत प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा की गई थी।

• यह दृश्य और प्रदर्शन कलाओं सहित कला के विभिन्न रूपों के अनुसंधान, संरक्षण, प्रदर्शन और प्रसार के साथ-साथ आलोचनात्मक और रचनात्मक साहित्य को बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित संस्थान है।

ऑल इंडिया रेडियो

• ऑल इंडिया रेडियो (AIR) भारत का अग्रणी सार्वजनिक सेवा रेडियो प्रसारक है।

• इसका संचालन भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अधीन किया जाता है।

• **आकाशवाणी का आदर्श वाक्य, 'बहुजन हिताय:**बहुजन सुखाय' है।

• इसका आदर्श वाक्य दर्शकों की सेवा, शिक्षा और मनोरंजन के अपने प्राथमिक लक्ष्यों को दर्शाता है।

सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण के द्र

• यह एक स्वायत्त निकाय है।

• सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र (Centre for Cultural Resources and Training) शिक्षा को संस्कृति के साथ एकीकृत करने का कार्य करता है।

• यह एक स्वायत्त निकाय है।

• यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन आता है।

• वर्ष 1979 में, इसकी स्थापना डॉ. कपिला वात्स्यायन और श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्ययाय के प्रयासों से की गई थी।

• इसका मुख्यालय नई दिल्ली में अवस्थित है।

• भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उदयपुर, हैदराबाद और गुवाहाटी में तीन क्षेत्रीय केंद्र स्थापित किए गए हैं।

भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार

• इसकी स्थापना वर्ष 1891 मेंकलकत्ता में इंपीरियल रिकॉर्ड्स डिपार्टमेंट (IRD) के रूप में अंग्रेजों द्वारा की गई थी।

• वर्ष 1911 में, जब राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का स्थानांतरण नई दिल्ली में किया गया तो इसे भी नई दिल्ली में स्थापित कर दिया गया था।

• भारत की आजादी के बाद इसका नाम बदलकर भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India) कर दिया गया, जिसके निदेशक को संगठन का प्रमुख बनाया गया।

• अभिलेखागार का दायरा सार्वजनिक अभिलेखों, निजी कागजात/संग्रह, अनुसंधान तथा संदर्भ कार्यक्रमों और संरक्षण प्रशिक्षण के अधिग्रहण को शामिल करने के लिए विस्तारित किया गया।

• इसके क्षेत्रीय केंद्र जयपुर, भुवनेश्वर और पुदुचेरी में स्थित हैं। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद

• इसकी स्थापना मौलाना अबुल कलाम आजाद द्वारा की गई थी।

• इसकी स्थापना वर्ष 1950 के दौरान की गई थी।

• सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर ध्यान देने के लिए इसकी स्थापना संस्कृति मंत्रालय के तहत की गई थी।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: भारत में सांस्कृतिक संस्थान



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारत में सांस्कृतिक संस्थान

मुख्य परीक्षा दृष्टि: सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर ध्यान देने के लिए इसकी स्थापना संस्कृति मंत्रालय के तहत की गई थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारत में सांस्कृतिक संस्थान • भारतीय शिल्प परिषद • ऑल इंडिया रेडियो • भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1958, 1972, 1964, 1985, 1979

भारत में सांस्कृतिक संस्थान और महत्त्वपूर्ण 87

• **उद्देश्य:**
  ◦ अंतरराष्ट्रीय मित्रता को बढ़ावा देना।
  ◦ सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा।
  ◦ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना।
  ◦ भारतीय संस्कृति के नए एवं पारंपरिक पहलुओं के एकीकरण इत्यादि को बढ़ावा देना।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

• राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (National Film Development Corporation) सूचना औरप्रसारण मंत्रालय के अधीन काम करने वाला एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम (Public Sector Undertaking) है।

• इसकी स्थापना वर्ष 1975 में की गई थी।

• **उद्देश्य:**
  ◦ भारतीय फिल्म उद्योग के एकीकृत विकास को बढ़ावा देना और उसे व्यवस्थित करना।
  ◦ सिनेमा में उत्कृष्टता को बढ़ावा देना।

• वर्ष 2022 में, भारत सरकार ने राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के साथ फिल्म डिवीजन, फिल्म समारोह निदेशालय, भारतीय राष्ट्रीय फिल्म पुरालेख और भारतीय बाल फिल्म सोसायटी सहित चार फिल्म मीडिया इकाइयों के विलय की घोषणा की।

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद

- यह एक स्वायत्त संगठन है।
- इसे वर्ष 1972 में स्थापित किया गया था।
- भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (Indian Council of Historical Research) शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करता है।
- यह विश्विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वित्त पोषित है।
- यह भारत के इतिहास कोबढ़ावा देने औरसंरक्षित करने के लिए समर्पित है।
- **प्रकाशन:** इस संस्थान द्वारा इंडियन हिस्टोरिकल रिव्ययू (अंग्रेजी) और 'इतिहास' (हिंदी) जैसी पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं इसे वर्ष 1972 में स्थापित किया गया था।
  - इन पत्रिकाओं में इतिहास पर विद्वतापूर्ण शोध लेख शामिल होते हैं। राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (NATIONAL MISSION FOR MANUSCRIPTS)
- इसे वर्ष 1972 में स्थापित किया गया था।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य 'राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस' बनाना।
  - इस डेटाबेस में तकरीबन दस लाख भारतीय पांडुलिपियाँ उपस्थित होनी चाहिए, ताकि यह अपनी तरह का दुनिया का सबसे बड़ा डेटाबेस बन सके।
- **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन का कार्य:**
  - पांडुलिपियों का संरक्षण।
  - पांडुलिपियों के ऐतिहासिक महत्त्व को सुरक्षित रखते हुए दस्तावेजों को संरक्षित करने के लिए स्वदेशी और आधुनिक तकनीकों के मिश्रण को नियोजित करने पर भी ध्यान केंद्रित करना है।

कला और सांस्कृतिक — विरासत के लिए भारतीय राष्ट्रीय ट्रस्ट

- यह सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत पंजीकृत एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ संगठन है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1984 में भारत में विरासत जागरूकता और संरक्षण की दृष्टि से नई दिल्ली में की गई थी।
- यह हमारी प्राकृतिक विरासत, निर्मित विरासत और अमूर्त विरासत की संरक्षा और सुरक्षा का कार्य करता है।
- वर्ष 2007 में, संयुक्त राष्ट्र द्वारा इसे संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद के साथ एक विशेष सलाहकार का दर्जा प्रदान किया गया है।

साहित्य अकादमी

- साहित्य अकादमी की स्थापना भारतीय साहित्य के विकास और सभी भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं समन्वय करने के साथ-साथ उच्च साहित्यिक मानक स्थापित करने के लिए की गई है।
- यह संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त निकाय है।
- इसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा वर्ष 1954 में नई दिल्ली में की गई थी।
- इसका मुख्यालय नई दिल्ली में अवस्थित है।
- इसके चार क्षेत्रीय कार्यालय क्रमश: कोलकाता, मुंबई, बेंगलुरु एवं चेन्नई में अवस्थित हैं।
- अकादमी ने 24 भारतीय भाषाओं(भारत के संविधान में शामिल 22 भाषाएँ, अंग्रेजी और राजस्थानी) को मान्यता दी है।
- साहित्य अकादमी द्वारा प्रदान किए जाने वाले कुछ पुरस्कार निम्न हैं: पुरस्कार उद्देश्य साहित्य अकादमी पुरस्कार
- यह साहित्य के क्षेत्र में विशेष प्रतिभा हासिल करने वालों को दिया जाने वाला सम्मान है।
- यह प्रतिवर्ष उन लोगों को दिया जाता है, जिन्होंने अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 प्रमुख भाषाओं में से किसी में साहित्यिक योग्यता हासिल की है।
- इसके अतिरिक्त वह अपने कार्यों के माध्यम से नए रुझान पैदा किए हैं।

साहित्य अकादमी — फे लोशिप

- यह किसी लेखक को अपना फेलो चुनकर अकादमी द्वारा दिया जाने वाला सर्वोच्च सम्मान है।

• यह सम्मान 'साहित्य के क्षेत्र में अविस्मरणीय योगदान (The Immortals of Literature)' वाले लोगों के लिए आरक्षित है।

• इस पुरस्कार को किसी भी समय केवल 21 लोगों को ही दिया जा सकता है।

भाषा सम्मान z यह पुरस्कार उन लेखकों को दिया जाता है, जिन्होंने भारतीय भाषा में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए दिया जाता है।

• यह शास्त्रीय और मध्यकालीन साहित्य में योगदान को भी मान्यता प्रदान करता है।

डॉ. आनंद कुमारस्वामी फे लोशिप: कला के क्षेत्र में, विशेषकर प्राचीन भारतीय कला के क्षेत्र में काम करने वालों को दी जाती है।

प्रेमचंद फे लोशिप: हिंदी साहित्य में योगदान के लिए दी जाती है। संगीत नाटक अकादमी

• इसकी स्थापना वर्ष 1952 में कला के लिए भारत की पहली राष्ट्रीय अकादमी के रूप में की गई थी।

• इसका मुख्य ध्यान देश में प्रदर्शन कलाओं को बढ़ावा देना और उसे प्रदर्शित करना है।

• यह अकादमी भारत की सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए यूनेस्को जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ भी सहयोग करती है।

• साथ ही यह वर्ष 1959 में स्थापित राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय जैसे विभिन्न विशिष्ट संस्थानों की देखरेख भी करता है।

ललित कला अकादमी

• सरकार ने भारत में ललित कला को बढ़ावा देने के प्राथमिक उद्देश्य से वर्ष 1954 में राष्ट्रीय कला अकादमी की स्थापना की जिसे ललित कला अकादमी के नाम से भी जाना जाता है।

• यह संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्य करती है।

• इसे वर्ष 1957 में सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के तहत वैधानिक अधिकार प्रदान किया गया है।

• इसका मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है।

• इसके क्षेत्रीय के न्द्रों की स्थापना चेन्नई, कोलकाता, लखनऊ, शिमला, शिलांग और भुवनेश्वर में की गई हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान — भारत सरकार द्वारा दिए गए पुरस्कार — भारत रत्न

• भारत रत्न, भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है।

• पहली बार वर्ष 1954 में प्रदान किया गया था।

• यह मानव प्रयास के किसी भी क्षेत्र में उच्चतम क्रम की असाधारण सेवा/ प्रदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है।

  ◦ प्रथम पुरस्कार विजेता सी. राजगोपालाचारी, डॉ. सीवी रमन और डॉ. एस. राधाकृष्णन थे।

  ◦ एक प्राकृतिक रूप से बने भारतीय नागरिक को प्रथम पुरस्कार: मदर टेरेसा (1980)।

  ◦ **यह दो गैर-भारतीयों:** खान अब्दुल गफ्फार खान (1987)और नेल्सन मंडेला (1990) को भी प्रदान किया गया है।

• प्रारंभ में, यह कला, विज्ञान, साहित्य और सार्वजनिक सेवा में उपलब्धियों के लिए था, लेकिन वर्ष 2011 में मानव प्रयास के किसी भी क्षेत्र को शामिल करने के लिए मानदंड का विस्तार किया गया।

• भारत रत्न के लिए सिफारिशें प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति को की जाती हैं, जो सालाना अधिकतम तीन प्राप्तकर्ताओं का चयन करते हैं।

• इसके लिए किसी औपचारिक अनुशंसा की आवश्यकता नहीं है।

• सम्मानित व्यक्ति को एक पीपल के पत्ते के आकार का पदक और एक प्रमाण पत्र (सनद) मिलता है। इसमें कोई मौद्रिक पुरस्कार नहीं मिलता है।

• भारत रत्न प्राप्तकर्ताओं को भारतीय वरीयता क्रम में सातवें (7क) स्थान पर रखा गया है।

• भारत के संविधान के **अनुच्छेद 18(** 1) के प्रावधानों के तहत (सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार) भारत रत्न पुरस्कार का उपयोग प्राप्तकर्ता के नाम के लिए उपसर्ग या प्रत्य के रूप में नहीं किया जा सकता है। **[UPSC-2021]**

पद्म पुरस्कार

• पद्म पुरस्कार भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में से एक है जिसकी घोषणा प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्यया पर की जाती है।

• यह पुरस्कार विशिष्ट कार्यों को मान्यता देना चाहता है और गतिविधियों/ विषयों के सभी क्षेत्रों में विशिष्ट और असाधारण उपलब्धियों/सेवाओं के लिए दिया जाता है।

• पुरस्कार विजेताओं को राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक सनद (प्रमाण पत्र) और एक पदक प्रदान किया जाता है।

• पद्म पुरस्कारों की स्थापना वर्ष 1954 में की गई थी और ये तीन श्रेणियों में दिए जाते हैं। **[UPSC-2021]**

◦ **पद्म विभूषण:** यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार है। पुरस्कार पाने वालों को एक प्रशस्ति पत्र और एक पदक दिया जाता है जिसके मध्य में कमल का फू ल होता है और अग्रभाग पर 'देश सेवा' शब्द अंकित होता है।

◦ इस पुरस्कार को 'असाधारण और विशिष्ट सेवा' के लिए प्रदान किया जाता है।

◦ **पद्म भूषण:** यह 'उच्च कोटि की विशिष्ट सेवा' के लिए भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला तीसरा सबसे बड़ा नागरिक पुरस्कार है।

◦ **पद्म श्री:** यह भारत का चौथा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार है और कला, साहित्य, खेल, राजनीति, उद्योग, चिकित्सा, सामाजिक सेवा आदि जैसे विभिन्न विषयों में विशिष्ट योगदान के लिए दिया जाता है।

◦ पुरस्कार विजेता को एक प्रमाण पत्र और एक पदक दिया जाता है। एक तरफ तीन पत्तों वाला फू ल और दूसरी तरफ पद्म (कमल)।

• पद्म पुरस्कार वर्ष 1977, 1980 और वर्ष 1993-1997 को छोड़कर प्रत्येक वर्ष दिए गए हैं।

पद्म पुरस्कारों के बारे में नियम

• यदि प्राप्तकर्ता को पद्म पुरस्कार की निम्न डिग्री प्राप्त हुई हो, तो पाँच या अधिक वर्षों के बाद उच्च डिग्री का पुरस्कार दिया जा सकता है।

• मरणोपरांत पुरस्कार दुर्लभ है, लेकिन अत्यधिक योग्य मामलों के लिए अपवाद हो सकता है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: ललित कला अकादमी

1952	1959	1954	1957
ललित कला अकादमी	पुरस्कार एवं सम्मान	भारत सरकार द्वारा दिए गए पुरस्कार	भारत रत्न

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — ललित कला अकादमी

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मरणोपरांत पुरस्कार दुर्लभ है, लेकिन अत्यधिक योग्य मामलों के लिए अपवाद हो सकता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: ललित कला अकादमी • पुरस्कार एवं सम्मान • भारत सरकार द्वारा दिए गए पुरस्कार • भारत रत्न • पद्म पुरस्कार | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1952, 1959, 1954, 1957, 1860

IUC विशेष स्मृति सूत्र #15: भारतीय दर्शन के 6 आस्तिक संप्रदाय (षड्दर्शन)

ट्रिक: 'सांख्य-कपिल, योग-पतंजलि, न्याय-गौतम, वैशेषिक-कणाद, मीमांसा-जैमिनी, वेदांत-बादरायण' — इन्हें भारतीय आस्तिक दर्शन की रीढ़ माना जाता है।

भारत में सांस्कृतिक संस्थान और महत्त्वपूर्ण 89

• व्यक्ति की उपलब्धियों में सार्वजनिक सेवा का तत्त्व होना चाहिए।

• केवल किसी क्षेत्र में उत्कृष्टता की बजाय उत्कृष्टता से कहीं अधिक पर आधारित होना चाहिए।

• पीएसयू में कार्यरत सरकारी कर्मचारी (डॉक्टरों और वैज्ञानिकों को छोड़कर) इन पुरस्कारों के लिए पात्र नहीं हैं। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

• राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, फिल्म-कला की उन्नति में योगदान देने वाले व्यक्तियों को दिए जाने वाले सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक है।

• ये पुरस्कार वर्ष 1954 से प्रतिवर्ष दिए जा रहे हैं।

• वर्ष 1973 में, फिल्म समारोह निदेशालय को इन पुरस्कारों के आयोजन के लिए जिम्मेदारी दी गई थी।

• विजेताओं का चयन सरकार द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय चयन समिति द्वारा किया जाता है।

• यह पुरस्कार भारतीय राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किया जाता है और पुरस्कार जीतने वाली फिल्मों को जनता को दिखाया जाता है।

• राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों में बहुत प्रतिष्ठित दादा साहब फाल्के लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार भी शामिल है, जो उन लोगों को प्रदान किया जाता है जिन्होंने अपना पूरा करियर भारतीय सिनेमा के योगदान में बिताया है।

• यह पुरस्कार भारतीय बॉलीवुड सिनेमा और क्षेत्रीय श्रेणियों में से सर्वश्रेष्ठ को प्रदान किए जाते हैं।

• निम्नलिखित पाँच प्रमुख श्रेणियों को यह पुरस्कार दिया जाता है:

  ◦ स्वर्ण कमल पुरस्कार।

  ◦ रजत कमल पुरस्कार।

  ◦ संविधान की आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म।

  ◦ संविधान की आठवीं अनुसूची में निर्दिष्ट भाषाओं के अलावा अन्य भाषाओं में सर्वश्रेष्ठ फीचरफिल्म: अंग्रेजी, भोजपुरी, कोकबोरोक, मोनपा और तुलु सहित पाँच श्रेणियाँ।

अन्य साहित्यिक सम्मान — ज्ञानपीठ पुरस्कार

• इसे असाधारण साहित्यिक उपलब्धि के लिए प्रदान किया जाता है।

• इसे पहली बार वर्ष 1961 में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा शुरू किया गया था।

• यह उन भारतीय नागरिकों को प्रदान किया जाता है, जो भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भाषाओंऔर अंग्रेजी में साहित्य लिखते हैं।

• पुरस्कार प्राप्तकर्ता को एक पट्टिका और 11 लाख रुपये के नकद पुरस्कार के अलावा देवी सरस्वती की एक कांस्य प्रतिमा भी दी जाती है।

• यह पुरस्कार मरणोपरांत नहीं दिया जाता है। सरस्वती सम्मान

• यह भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में से किसी एक को उत्कृष्ट गद्य या पद्य में साहित्यिक कार्यों के लिए दिया जाने वाला एक वार्षिक पुरस्कार है।

• इस पुरस्कार की स्थापना वर्ष 1991 में के . के . बिड़ला फाउंडेशन द्वारा की गई थी।

दादा साहब फाल्के पुरस्कार

• इस पुरस्कार को वर्ष 1969 में शुरू किया गया।

• यह पुरस्कार सिनेमा के क्षेत्र में भारत का सर्वोच्च सम्मान है।

• यह दादा साहेब फाल्के की याद में मनाया जाता है, जिन्होंने वर्ष 1913 में भारत की पहली पूर्ण लंबाई वाली फीचर फिल्म, “राजा हरिश्चंद्र” का निर्देशन किया था।

• इस पुरस्कार कोसूचना और प्रसारण मंत्रालय के अधीन फिल्म समारोह निदेशालय द्वारा प्रदान किया जाता है।

भारत के महत्त्वपूर्ण सर्वेक्षण विभाग एवं संस्थान संगठन का नाम स्थापना वर्ष मुख्यालय केंद्रित क्षेत्र भारतीय सर्वेक्षण विभाग 1767 देहरादून, उत्तराखंड भारत का मानचित्रण, सर्वेक्षण और नक्शानवीसी।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) 1861 नई दिल्ली पुरातात्विक स्थलों, स्मारकों और विरासत का सर्वेक्षण और संरक्षण।

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (BSI) 1890 कोलकाता, पश्चिम बंगाल भारत में पादप प्रजातियों का सर्वेक्षण, अनुसंधान और उनका दस्तावेजीकरण/प्रलेखन।

भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण (ASI) 1945 कोलकाता, पश्चिम बंगाल भारत के मानवविज्ञान, नृवंशविज्ञान और सांस्कृतिक विविधता पर शोध।

भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI) 1916 कोलकाता, पश्चिम बंगाल भारत में पशु प्रजातियों, जैव विविधता और संरक्षण पर अनुसंधान।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (GSI) 1851 कोलकाता, पश्चिम बंगाल भारत में भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, मानचित्रण और खनिज संसाधनों से संबंधित अनुसंधान।

महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थान

संस्था का नाम अवस्थिति स्थापित केंद्रित क्षेत्र प्रकार मंत्रालय/विभाग राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD) नई दिल्ली 1959 रंगमंच और नाट्य कला के क्षेत्र में अनुसंधान और प्रशिक्षण।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय

राष्ट्रीय कला इतिहास, संरक्षण एवं संग्रहालय विज्ञान संग्रहालय संस्थान नई दिल्ली 1989 कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान में अनुसंधान और शिक्षा।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय — भारतीय सांस्कृतिक संबंध

परिषद (ICCR) नई दिल्ली 1950 भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और अनुसंधान को बढ़ावा देना।

सरकारी विदेश मंत्रालय

कलाक्षेत्र फाउंडेशन चेन्नई, तमिलनाडु 1936 भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत और पारंपरिक कलाओं में अनुसंधान और शिक्षा।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय

विश्वभारती विश्विद्यालय शांतिनिके तन, पश्चिम बंगाल 1921 भारतीय संस्कृति, कला और साहित्य में अनुसंधान; रबींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित।

सरकारी शिक्षा मंत्रालय (स्वायत्त विश्विद्यालय) रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान कोलकाता, पश्चिम बंगाल 1938 भारतीय दर्शन, संस्कृति और अंतर-धार्मिक समझ का अनुसंधान और संवर्धन।

गैर-सरकारी रामकृष्ण मिशन द्वारा संचालित एशियाई सोसायटी कोलकाता, पश्चिम बंगाल 1784 इंडोलॉजी, मानविकी और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान और अध्ययन।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय — भंडारकर ओरिएंटल

रिसर्चइंस्टीट्यूट (BORI) पुणे, महाराष्ट्र 1917 संस्कृत, प्राचीन भारतीय ग्रंथों एवं इंडोलॉजी में अनुसंधान। गैर-सरकारी स्वायत्त संस्था खुदा बख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी पटना, बिहार 1891 भारतीय एवं इस्लामी संस्कृति से संबंधित दुर्लभ पांडुलिपियों एवं ग्रंथों का संरक्षण एवं अध्ययन।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय — भारतीय राष्ट्रीय — पुस्तकालय — कोलकाता, पश्चिम — बंगाल

1948 भारतीय विरासत और संस्कृति पर पुस्तकों, पत्रिकाओं और दस्तावेजों का संग्रहण।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय

ललित कला अकादमी नई दिल्ली 1954 चित्रकला, मूर्तिकला और ग्राफिक्स सहित ललित कलाओं के क्षेत्र में संवर्धन और अनुसंधान।

सरकारी संस्कृति मंत्रालय — केंद्रीय भारतीय भाषा

संस्थान (CIIL) मैसूर, कर्नाटक 1969 भारतीय भाषाओं और भाषा विज्ञान का अनुसंधान और संवर्धन।

सरकारी शिक्षा मंत्रालय

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थान

- **1. महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थान**
- **2. सरकारी संस्कृति मंत्रालय**
- **3. भारतीय सांस्कृतिक संबंध**
- **4. सरकारी विदेश मंत्रालय**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थान

मुख्य परीक्षा दृष्टि: संस्थान (CIIL) मैसूर, कर्नाटक 1969 भारतीय भाषाओं और भाषा विज्ञान का अनुसंधान और संवर्धन।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थान • सरकारी संस्कृति मंत्रालय • भारतीय सांस्कृतिक संबंध • सरकारी विदेश मंत्रालय • भंडारकर ओरिएंटल | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1959, 1989, 1950, 1936, 1921

वर्ष 1972 में स्थापित यूनेस्को विश्व विरासत सम्मेलन में किए गए वर्णन के अनुसार यूनेस्को की सूची में शामिल ये स्थल सांस्कृतिक या प्राकृतिक विरासत के आवश्यक स्थान हैं।

विश्व धरोहर स्थलों के चयन के लिए मानदंड

सांस्कृतिक स्थलों के लिए

- मानव की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करता है।
- समय के साथ या किसी सांस्कृतिक क्षेत्र के भीतर वास्तुकला, प्रौद्योगिकी, कला, नगर नियोजन या परिदृश्य डिजाइन में मानवीय मूल्यों के आदान-प्रदान को प्रदर्शित करता है।
- जीवित या लुप्त हो चुकी सांस्कृतिक परंपरा या सभ्यता का अद्वितीय साक्ष्य प्रदान करता है।
- अपनी वास्तुकला, प्रौद्योगिकी या परिदृश्य के माध्यम से मानव इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण चरण का उदाहरण देता है।
- पारंपरिक मानव बस्ती, भूमि उपयोग या समुद्री उपयोग का प्रतिनिधित्व करता है खासकर जब इसे अपरिवर्तनीय परिवर्तन से खतरा हो।
- विद्यमान परंपराओं, मान्यताओं, कलात्मक और साहित्यिक कार्यों के सार्वभौमिक महत्त्व से इसका गहरा संबंध है।

प्राकृतिक स्थलों के लिए

- असाधारण प्राकृतिक घटनाएँ शामिल होती हैं या उल्लेखनीय प्राकृतिक सुंदरता प्रदर्शित होती है।
- महत्त्वपूर्ण चरणों का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें जीवन और चल रही भूवैज्ञानिक प्रक्रियाओं का रिकॉर्ड उपस्थित है।
- स्थलीय, मीठे पानी, तटीय और समुद्री पारिस्थितिक तंत्र में चल रही पारिस्थितिक और जैविक प्रक्रियाओं का प्रतिनिधित्व करता है।
- सार्वभौमिक वैज्ञानिक या संरक्षण मूल्य की संकटग्रस्त प्रजातियों सहित जैविक विविधता के संरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक आवास स्थित हैं।

मूर्त विश्व धरोहर स्थल

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - (सांस्कृतिक स्थल) स्थल वर्ष विशेषताएँ होयसल के पवित्र मंदिर समूह (कर्नाटक) 2023 इसमें दक्षिण भारत में होयसल-शैली के मंदिर परिसरों के तीन सबसे अधिक प्रतिनिधि उदाहरण सम्मिलित हैं, जो 12वीं से 13वीं शताब्दी ईसवी तक के हैं।

अहोम साम्राज्य के मोइदम 2024 अहोम राजवंश के शाही शवाधान स्थल (टीले), अद्वितीय शवाधान प्रथाओं और वास्तुकला को प्रस्तुत करते हैं।

शांति निके तन (पश्चिम बंगाल) 2023 यह प्राचीन भारतीय परंपराओंऔर मानवता की एकता की दृष्टि पर आधारित एक आवासीय विद्यालय और कला केंद्र था। इसकी स्थापना वर्ष 1901 में प्रसिद्ध कवि और दार्शनिक रवीन्द्रनाथ टैगोर ने की थी।

धोलावीरा: एक हड़प्पा सभ्यता का नगर

(गुजरात) 2021 इसमें एक किलेबंद शहर, कब्रिस्तान और एक परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली शामिल है।

यह एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक और वाणिज्यिक केंद्र भी था।

काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर (तेलंगाना) 2021 काकतीय काल (1123-1323 ई.) के दौरान शासक रुद्रदेव और रेचरला रुद्र के अधीन निर्मित मुख्य शिव मंदिर है। इमारत में हल्के झरझरा ईंटों, तथाकथित 'फ्लोटिंग ईंटों' से बना एक विशिष्ट और पिरामिडनुमा विमान के साथ नक्काशीदार ग्रेनाइट और डोलराइट के सजाए गए बीम और स्तंभ हैं, जो छत संरचनाओं के वजन को कम करते हैं।

जयपुर शहर (राजस्थान) 2019 सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1727 ई. में शहर की स्थापना की थी।

मुंबई का विक्टोरियन और आर्ट डेको एनसेंबल

(महाराष्ट्र) 2018 ये समूह समय गुजरने के साथ यूरोपीय और भारतीय मानवीय मूल्यों के आवश्यक आदान-प्रदान को प्रदर्शित करते हैं।

अहमदाबाद का ऐतिहासिक शहर (गुजरात) 2017 सुल्तान अहमद शाह ने 15वीं शताब्दी में साबरमती नदी के पूर्वी तट पर चारदीवारी वाले शहर की स्थापना की थी।

यूनेस्को की सूची में शामिल — प्रमुख भारतीय विश्व धरोहर स्थल

ले कोर्बुज़िए का वास्तुशिल्प कार्य, आधुनिक

आंदोलन में एक उत्कृष्ट योगदान (चंडीगढ़) 2016 यहाँ पर 17 स्थल हैं और चंडीगढ़ में स्थित कॉम्प्लेक्स डु कैपिटोल इसका हिस्सा है।

नालंदा महाविहार का पुरातत्त्व स्थल (नालंदा विश्विद्यालय) (बिहार) 2016 यह भारत का सबसे प्राचीन विश्विद्यालय है। इसमें तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 13वीं शताब्दी ईसवी तक एक मठवासी और शैक्षिक संस्थान के पुरातात्विक अवशेष सम्मिलित हैं। इसमें स्तूप, मंदिर, विहार (आवासीय और शैक्षिक भवन) और प्लास्टर, पत्थर और धातु से बनी महत्त्वपूर्ण कलाकृतियाँ शामिल हैं।

रानी-की-वाव (गुजरात) 2014 यह सरस्वती नदी के तट पर स्थित है और इसे 11वीं शताब्दी के राजा भीमदेव प्रथम के स्मारक के रूप में बनाया गया था।

पहाड़ी किले (राजस्थान) 2013 इसमें चित्तौड़गढ़ के छह राजसी किले सम्मिलित हैं: कुंभलगढ़, सवाई माधोपुर, झालावाड़, जयपुर और जैसलमेर।

जंतर मंतर (राजस्थान) 2010 यह 18वीं सदी की शुरुआत में बनाया गया एक खगोलीय अवलोकन स्थल है।

इसमें लगभग 20 मुख्य स्थिर उपकरणों का एक संग्रह उपस्थित है।

लाल किला परिसर (दिल्ली) 2007 इसे शाहजहाँ की राजधानी, शाहजहाँनाबाद में उसके महल को एक किले के रूप में बनाया गया था।

चंपानेर-पावागढ पुरातत्त्व पार्क (गुजरात) 2004 यह बिना खुदाई किया हुआ एक पुरातात्विक, ऐतिहासिक और जीवित सांस्कृतिक विरासत है जिसमें प्रागैतिहासिक (ताम्रपाषाणिक) स्थल, प्रारंभिक हिंदू राजधानी का एक पहाड़ी किला और गुजरात राज्य की 16वीं शताब्दी की राजधानी के अवशेष सम्मिलित हैं।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनस (महाराष्ट्र) 2004 यह भारत में विक्टोरियन गोथिक पुनरुद्धार वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है और ब्रिटिश वास्तुकार एफ.डब्ल्यू. स्टीवंस द्वारा बनाया गया था।

भीमबेटका शैलाश्रय (मध्य प्रदेश) 2003 इनका निर्माण विंध्य पर्वत की तलहटी में किया गया था। इसमें प्राकृतिक शैल आश्रयों के पाँच समूह हैं जिनमें मध्यपाषाण काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक की चित्रकारी प्रदर्शित हैं।

महाबोधि मंदिर परिसर, बोधगया (बिहार) 2002 यह भगवान बुद्ध के जीवन, विशेषकर ज्ञान प्राप्ति से संबंधित चार पवित्र स्थलों में से एक है।

पहला मंदिर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक द्वारा बनाया गया था और वर्तमान मंदिर 5वीं या 6वीं शताब्दी का है।

भारत की पर्वतीय रेलवे (पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, हिमाचल प्रदेश) 1999 इस साइट में दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, नीलगिरि माउंटेन रेलवे और कालका-शिमला रेलवे सम्मिलित हैं।

हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली) 1993 इसे 1570 ई. में बनवाया गया, जो भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था।

कुतुब मीनार और उसके स्मारक (दिल्ली) 1993 इसका निर्माण 13वीं शताब्दी में सल्तनत शासन के तहत किया गया था। आस-पास के पुरातात्विक क्षेत्र में अलाई-दरवाजा गेट (1311 ई. में निर्मित) और कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद सहित दो मस्जिदें सम्मिलित हैं।

साँची में बौद्ध स्मारक (मध्य प्रदेश) 1989 साँची की साइट में बौद्ध स्मारकों (अखंड स्तंभ, महल, मंदिर और मठ) का एक समूह शामिल है, जिनमें से अधिकांश दूसरी और पहली शताब्दी ईसा पूर्व के हैं।

एलीफे

टा गुफाएँ (महाराष्ट्र) 1987 ये सात गुफाएँ हैं जिनका स्थानीय नाम घारापुरी गुफाएँ है। मुंबई के नजदीक एक द्वीप पर स्थित 'गुफाओं के शहर' में स्थित ये गुफाएँ शैव धर्म से जुड़ी शैल कला का संग्रह हैं ।

महान आस्तित्वान चोल मंदिर (तमिलनाडु) 1987 इसमें तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर, गंगाईकोंडचोलिसवरम में बृहदेश्वर मंदिर (राजेंद्र प्रथम द्वारा निर्मित, 1035 में पूरा हुआ) और दारासुरम में ऐरावतेश्वर मंदिर (राजराजा द्वितीय द्वारा निर्मित) जैसे मंदिर सम्मिलित हैं।

पत्तदकल में स्मारकों का समूह (कर्नाटक) 1987 चालुक्य राजवंश के अन्तर्गत 7वीं और 8वीं शताब्दी ईसवी में निर्मित, जिनमें नौ हिंदू मंदिरों (विरुपाक्ष मंदिर सहित) की एक श्रृंखला के साथ ही एक जैन अभयारण्य भी स्थित है।

चर्च और कॉन्वेंट (गोवा) 1986 इसमें चर्च ऑफ बोम जीसस शामिल है जिसमें सेंट फ्रांसिस-जेवियर का मकबरा है।

फतेहपुर सीकरी (उत्तर प्रदेश) 1986 यह मुगलों का पहला नियोजित शहर था जो शानदार प्रशासनिक, आवासीय और धार्मिक इमारतों से चिह्नित था।

स्मारकों का समूह, हम्पी (कर्नाटक) 1986 इसमें मुख्य रूप से विजयनगर साम्राज्य की राजधानी के अवशेष सम्मिलित हैं।

खजुराहो स्मारक समूह (मध्य प्रदेश) 1986 इसके अन्तर्गत 950 और 1050 ईसवी के बीच चंदेल वंश के शासकों के शासनकाल के दौरान निर्मित हिंदू और जैन मंदिर सम्मिलित हैं।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — ले कोर्बुज़िए का वास्तुशिल्प कार्य, आधुनिक

मुख्य परीक्षा दृष्टि: खजुराहो स्मारक समूह (मध्य प्रदेश) 1986 इसके अन्तर्गत 950 और 1050 ईसवी के बीच चंदेल वंश के शासकों के शासनकाल के दौरान निर्मित हिंदू और जैन मंदिर सम्मिलित हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: एलीफे | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2016, 2014, 2013, 2010, 2007

यूनेस्को की सूची में शामिल प्रमुख भारतीय विश्व धरो 93 महाबलीपुरम में स्मारकों का समूह (तमिलनाडु) 1984 पल्लव राजाओं (7वीं और 8वीं शताब्दी ईसवी में) द्वारा स्थापित यह समूह रथों, मंडपों, प्रसिद्ध "गंगा का अवतरण" और "तट के मंदिर" जैसी विशाल संरचनाओं के लिए जाना जाता है।

सूर्य मंदिर, कोणार्क (ओडिशा) 1984 यह कलिंग वास्तुकला का प्रतिनिधित्व करता है और इसे 13वीं शताब्दी में राजा नरसिम्हा देव द्वारा बनाया गया था।

आगरा का किला (उत्तर प्रदेश) 1983 यह 16वीं शताब्दी का मुगल स्मारक है जिसे आगरा के लाल किले के नाम से जाना जाता है।

इसमें शाहजहाँ द्वारा निर्मित जहाँगीर महल और खास महल जैसे महल सम्मिलित हैं। दीवान-ए-खास (दर्शक कक्ष) भी इसमें सम्मिलित है।

अजंता की गुफाएँ (महाराष्ट्र) 1983 यहाँ कुल 29 चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ हैं। अजंता में पहला बौद्ध गुफा स्मारक पहली और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है। गुप्त काल (5वीं और 6वीं शताब्दी ईसवी) के दौरान मूल समूह में कई और पूर्णतः सजाई गई गुफाएँ जोड़ी गईं।

एलोरा की गुफाएँ (महाराष्ट्र) 1983 यहाँ 34 मठ और मंदिर हैं। बौद्ध धर्म, ब्राह्मणवाद और जैन धर्म के अनुयायियों के द्वारा यहाँ उत्कृष्ट वास्तुशिल्प गतिविधियाँ की गई थी।

ताज महल (उत्तर प्रदेश) 1983 यह शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया था, जो यमुना के तट पर स्थित है।

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - (प्राकृतिक स्थल) स्थल वर्ष विशेषताएँ ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क (हिमाचल प्रदेश) 2014 यह हिमालय पर्वत के पश्चिमी भाग में स्थित है और इसकी विशेषता ऊँची अल्पाइन चोटियाँ, अल्पाइन घास के मैदान और नदी के वन हैं।

पश्चिमी घाट (केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गोवा और गुजरात) 2012 उप-समूहों में अगस्त्यमलाई, पेरियार, अन्नामलाई, नीलगिरि, तालाकावेरी, कुद्रेमुख और सह्याद्रि सम्मिलित हैं।

नंदा देवी और फू लों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान (उत्तराखंड) 1988 यह एशियाई काले भालू, हिम तेंदुआ, भूरा भालू और नीली भेड़ सहित दुर्लभ जानवरों का घर है। इसमें जांस्कर पर्वत श्रृंखला और महान हिमालय के बीच एक संक्रमण क्षेत्र शामिल है।

सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान (पश्चिम बंगाल) 1987 यह भारत और बांग्लादेश के बीच गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के मुहाने पर स्थित है। इसमें दुनिया के सबसे बड़े मैंग्रोव वन स्थित हैं।

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान) 1985 यह पुरापाषाणकालीन प्रवासी जलपक्षियों का एक महत्त्वपूर्ण शीतकालीन प्रवास स्थल है। यह गैर-प्रवासी प्रजनन पक्षियों के बड़े समूह के लिए प्रसिद्ध है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (असम) 1985 यहाँ एक सींग वाले गैंडों की विश्व की सबसे बड़ी आबादी पाई जाती है। यह ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर स्थित है।

मानस वन्यजीव अभयारण्य (असम) 1985 यह एक जैव विविधता हॉटस्पॉट है जिसमें जंगली पहाड़ियाँ, जलोढ़ घास के मैदान और उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन सम्मिलित हैं। मानस वन्यजीव अभयारण्य, मानस टाइगर रिजर्व के मुख्य क्षेत्र का हिस्सा है और मानस नदी के किनारे स्थित है।

भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल - (मिश्रित श्रेणी) स्थल वर्ष विशेषताएँ कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान (सिक्किम) 2016 इसमें मैदानों, घाटियों, झीलों, ग्लेशियरों और प्राचीन वनों वाले एवं बर्फ से ढके शानदार पहाड़ों की एक अनूठी विविधता शामिल है। इसमें दुनिया की तीसरी सबसे ऊँची चोटी भी शामिल है।

यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत — विरासत वर्ष विशेषताएँ

गुजरात का गरबा 2023 गरबा एक अनुष्ठानिक और भक्तिपूर्ण नृत्य है जो हिंदू त्योहार नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है।

कोलकाता में दुर्गा पूजा 2021 यह देवी दुर्गा की दस दिवसीय पूजा का प्रतीक है। इस त्योहार की विशेषता शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर मंडपों की स्थापना करने के साथ-साथ पारंपरिक बंगाली ढोल बजाना और देवी की पूजा करना है।

कुंभ मेला

(पवित्र कलश का त्योहार) 2017 यह पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा शांतिपूर्ण सम्मेलन है जिसके दौरान श्रद्धालु पवित्र नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं। यह उत्सव हर चार साल में बारी-बारी से इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में आयोजित किया जाता है।

योग 2016 एक अभ्यास जिसमें आसन, ध्यान, नियंत्रित श्वास, जाप और आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने की तकनीकेंसम्मिलित हैं। परंपरागत रूप से यह गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से निष्पादित होता है।

पारसी नवरोज त्योहार 2016 इसे पारसी नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। इस दौरान अपनाई जाने वाली एक महत्त्वपूर्ण परंपरा प्रियजनों के साथ विशेष भोजन का आनंद लेने के लिए पवित्रता, चमक, आजीविका और धन की प्रतीक अन्य वस्तुओं से सजाई गई 'मेज' के चारों ओर इकट्ठा होना है।

पंजाब में जंडियाला गुरु के ठठेरों के बीच बर्तन बनाने की पारंपरिक पीतल और ताँबे की शिल्पकला 2014 ठठेरा समुदाय की एक मौखिक परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है।

- इसमें पीतल, ताँबा और कंसा जैसी धातुओं को गर्म करना और उन्हें कार्यात्मक और अनुष्ठानिक बर्तनों में ढालना शामिल है।
- इसका वर्णन रोगनाशक उद्देश्य के लिए आयुर्वेद ग्रंथ में किया गया है।
- 19वीं शताब्दी में इसे महाराजा रणजीत सिंह द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। संकीर्तन, मणिपुर का अनुष्ठान गायन, ढोल बजाना और नृत्य 2013 यह एक मणिपुरी अनुष्ठानिक कला है जो मणिपुरी वैष्णवों के जीवन में धार्मिक अवसरों और विभिन्न चरणों को चिह्नित करने के लिए गायन, ढोल बजाने और नृत्य का संयोजन करती है। यह मंदिरों में भगवान कृष्ण के जीवन और कार्यों का वर्णन करते हुए प्रदर्शित किया जाता है।

लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चार 2012 बौद्ध लामा (पुजारी) बुद्ध की भावना, दर्शन और शिक्षाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले पवित्र ग्रंथों का जाप करते हैं। लोगों के आध्ययात्मिक और नैतिक कल्याण, मन की शुद्धि और शांति के लिए, बुरी आत्माओं के क्रोध को शांत करने या विभिन्न बुद्धों, बोधिसत्वों, देवताओं और रिनपोछे के आशीर्वाद का आह्वान करने के लिए जाप किया जाता है। लद्दाख में बौद्ध धर्म के दो रूप प्रचलित हैं - महायान और वज्रयान। यहाँ चार प्रमुख संप्रदाय विद्यमान हैं: निंग्मा, काग्यूद, शाक्य और गेलुक। प्रत्येक संप्रदाय में जाप के कई रूप होते हैं जिनका अभ्यास जीवन-चक्र अनुष्ठानों के दौरान और बौद्ध कैलेंडर के महत्त्वपूर्ण दिनों में किया जाता है।

छऊ नृत्य 2010 इस जनजातीय मार्शल आर्ट नृत्य की तीन उप शैलियाँ हैं: पुरुलिया छऊ (पश्चिम बंगाल), सरायके ला छऊ (झारखंड) और मयूरभंज छऊ (ओडिशा)।

- यह मुख्य रूप से वसंत उत्सव के दौरान सामुदायिक भागीदारी के साथ 13 दिनों तक चलता है।
- इसमें रात में पुरुष नर्तकों द्वारा प्रदर्शन किया जाता है जिसमें महाभारत और रामायण सहित कई अन्य महाकाव्यों और स्थानीय लोक कथाओं के प्रसंगों का अभिनय किया जाता है।
- मयूरभंज छऊ को छोड़कर शेष सभी नर्तक मुखौटे पहनते हैं। राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य 2010 यह राजस्थान में कालबेलिया जनजाति द्वारा किया जाता है, जो अपने साँप पकड़ने और व्यापारिक व्यवसायों के लिए जानी जाती है। गीत और नृत्य कालबेलिया समुदाय की पारंपरिक जीवन शैली की अभिव्यक्ति हैं। लहराती हुई काली स्कर्ट में महिलाएँ नागिन की नकल करते हुए नृत्य करती हैं और घूमती हैं वहीं दूसरी ओर पुरुष उनके साथ खंजरी ताल वाद्य और पूंगी (एक लकड़ी का वाद्य यंत्र जो पारंपरिक रूप से सांपों को पकड़ने के लिए बजाया जाता है) पर उनका साथ देते हैं।

मुडियेट्टु 2010 यह केरल का एक पारंपरिक अनुष्ठान है जिसमें रंगमंच, लोक नृत्य और नाटक सम्मिलित हैं। इसमें देवी काली और राक्षस दारिका के बीच युद्ध को दर्शाया जाता है।

- फसल कटाई के बाद फरवरी से मई तक गाँव के मंदिरों (भगवती कावुस) में इसका प्रदर्शन किया जाता है।
- कलाकार भारी श्रृंगार, भव्य पोशाक, चेहरे की पेंटिंग औरसिर पर लंबी टोपी पहनते हैं, जो अलौकिकता का प्रतीक है। चमोली का रम्माण 2009 यह एक धार्मिक त्योहार और अनुष्ठान नाटक-कला है जो उत्तराखंड के चमोली जिले के सलूर-डुंगरा गाँवों में मनाया जाता है। यह गाँव के मंदिर प्रांगण में ग्राम देवता 'भूमियाल' का सम्मान करने के लिए मनाया जाता है।

इसके मुख्य पहलुओं में जागर का गायन और स्थानीय दंतकथा का वर्णन शामिल है।

वैदिक मंत्रोच्चार की परंपरा 2008 यह सबसे पुरानी अखंड मौखिक परंपराओं में से एक है जिसमें कई पाठ (पाठ) या वैदिक मंत्रों के जाप के तरीके सम्मिलित हैं।

रामलीला 2008 रामलीला, जिसका शाब्दिक अर्थ "राम का खेल" है दृश्यों की एक शृंखला है जिसमें महाकाव्य रामायण का प्रदर्शन किया जाता है। इसमें गीत, कथन, गायन और संवाद सम्मिलित हैं। दशहरे के त्यौहार के दौरान पूरे उत्तर भारत में इसका आयोजन किया जाता है।

कुटियाट्टम (संस्कृत रंगमंच) 2008 कुटियाट्टम, संस्कृत शास्त्रीयता के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है और केरल की स्थानीय परंपराओं को दर्शाता है।

- यह पारंपरिक रूप से कुट्टमपालम नामक थिएटरों में प्रदर्शित किया जाता है, जो हिंदू मंदिरों में स्थित हैं।
- इसके अंतर्गत अभिनेता की कला विशेषता, किसी स्थिति या प्रसंग को उसके संपूर्ण विस्तार से प्रस्तुत करने में निहित है। इसलिए किसी एक कार्य को निष्पादित करने में कई दिन लग सकते हैं और एक पूर्ण प्रदर्शन 40 दिनों तक भी चल सकता है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 94

2016	2014	2013	2012
प्रमुख चरण #1	प्रमुख चरण #2	प्रमुख चरण #3	प्रमुख चरण #4

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 94

मुख्य परीक्षा दृष्टि: यह पारंपरिक रूप से कुट्टमपालम नामक थिएटरों में प्रदर्शित किया जाता है, जो हिंदू मंदिरों में स्थित हैं।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारतीय कला एवं संस्कृति — खंड 94 | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2016, 2014, 2013, 2012, 2010

यूनेस्को की सूची में शामिल प्रमुख भारतीय विश्व धरो 95 यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क के बारे में

- **स्थापना:** वर्ष 2004 यूनेस्को द्वारा स्थापित।
- **उद्देश्य:** उन शहरों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना जिन्होंने रचनात्मकता को सतत्शहरी विकास के लिए एक रणनीतिक कारक के रूप में चिंहित किया है।
- **रचनात्मकता के क्षेत्र:** शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, गैस्ट्रोनॉमी, साहित्य, मीडिया कला और संगीत। भारत में कई शहर हैं जो यूनेस्को क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (UNESCO Creative Cities Network- UCCN) में सम्मिलित हैं, जिन्हें विभिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में उनके योगदान के लिए मान्यता प्राप्त है। नीचे नेटवर्क में शामिल भारतीय शहरों और उनके निर्दिष्ट रचनात्मक क्षेत्रोंकी सूची दी गई है: शहर राज्य रचनात्मक क्षेत्र मनोनयन वर्ष महत्त्व जयपुर राजस्थान शिल्प और लोक कला 2015 यह स्थान जीवंत लोक परंपराओं के साथ-साथ नीली मिट्टी के बर्तन, ब्लॉक प्रिंटिंग और आभूषण जैसे पारंपरिक शिल्पों के लिए प्रसिद्ध है।

वाराणसी उत्तर प्रदेश संगीत 2015 हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का एक सांस्कृतिक केंद्र, प्रतिष्ठित बनारस घराने का उद्भव स्थल।

चेन्नई तमिलनाडु संगीत 2017 अपनी समृद्ध कर्नाटक संगीत परंपरा के लिए प्रसिद्ध, विश्व प्रसिद्ध संगीत सत्र(दिसम्बर) की मेजबानी।

मुंबई महाराष्ट्र फिल्म 2019 भारतीय फिल्म उद्योग, बॉलीवुड का हृदय तथा सिनेमाई कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का केंद्र।

हैदराबाद तेलंगाना पाक-कला 2019 अपनी समृद्ध पाक विरासत, विशेषकर बिरयानी, हलीम और अन्य हैदराबादी व्यंजनों के लिए प्रसिद्ध।

कोलकाता पश्चिम बंगाल साहित्य 2019 एक साहित्यिक केंद्र जिसमें रबींद्रनाथ टैगोर सहित प्रभावशाली लेखकों, कवियों और प्रकाशकों का इतिहास संरक्षित है।

श्रीनगर जम्मू और कश्मीर शिल्प और लोक कला 2021 यह स्थान अपने असाधारण पारंपरिक शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें पश्मीना शॉल, पेपर-मैचे और कश्मीरी कालीन सम्मिलित हैं।

ग्वालियर मध्य प्रदेश संगीत 2023 ग्वालियर घराना, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक प्रमुख शैली है, जिसने ध्रुपद और ख्याल शैलियों में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

कोझिकोड केरल साहित्य 2023 जीवंत साहित्यिक विरासत और लेखकों और विद्वानों के समृद्ध समूह के साथ, इसे भारत के प्रथम यूनेस्को साहित्य शहर के रूप में मान्यता प्राप्त है।

यूनेस्को “मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड” में सम्मिलित धरोहर ग्रंथ नाम अभिलेख वर्ष महत्त्व ऋग्वेद पांडुलिपियाँ 2007 वैदिक ज्ञान और संस्कृति का आधार, सबसे प्राचीन ज्ञात ग्रंथों में से एक।

गिलगित पांडुलिपियाँ 2017 गिलगित से प्राचीन बौद्ध ग्रंथ प्राप्त हुए, जो बौद्ध धर्म के प्रसार और क्षेत्र के इतिहास को दर्शाते हैं।

शांतिनाथ चरित्र 2013 जैन तीर्थंकर शांतिनाथ के जीवन का विवरण देते हुए 14वीं शताब्दी का संस्कृत ग्रंथ जिसमें विभिन्न चित्र भी समाहित किए गए हैं।

अभिनवगुप्त पांडुलिपियाँ 2023 दार्शनिक और विद्वान अभिनवगुप्त की कृतियाँ, जो सौंदर्य, सौन्दर्यशास्त्र और तंत्र पर केंद्रित हैं।

मैत्रेयव्ययाकरण 2017 प्राचीन भारत का एक ग्रन्थ जो दार्शनिक और आध्ययात्मिक शिक्षाओं से संबंधित है।

लघुकाल चक्रतंत्राजटिका (विमलप्रभा) 2011 बौद्ध शिक्षाओं से संबंधित महत्त्वपूर्ण तांत्रिक ग्रंथ।

पांडिचेरी में शैव पांडुलिपियाँ 2005 पांडिचेरी में संरक्षित शैव ग्रंथ, तमिल धार्मिक साहित्य के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण हैं।

तारीख-ए-ख़ानदान-ए-तैमूरिया 2011 तैमूरी राजवंश का विस्तृत विवरण देने वाला ऐतिहासिक अभिलेख, भारत के मुगल काल को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

I.A.S. तमिल मेडिकल पांडुलिपि संग्रह 1997 पारंपरिक तमिल चिकित्सा से संबंधित पांडुलिपियाँ, प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों की जानकारी प्रदान करती हैं।

हाल ही में तीन भारतीय साहित्यिक कृतियों को यूनेस्को मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कार्यक्रम (UNESCO Memory of the World Programme) के एशिया-प्रशांत क्षेत्रीय में शामिल किया गया है, जो इस प्रकार हैं:

नाम अभिलेख वर्ष महत्त्व

रामचरितमानस 2024 भगवान राम के जीवन पर तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य, जो एक महत्त्वपूर्ण अवधी साहित्य है।

पंचतंत्र 2024 संस्कृत में प्राचीन दंतकथाओं का संग्रह, पशु कहानियों माध्यम से नैतिक शिक्षा प्रदान की गई है।

से नैतिक शिक्षा प्रदान करना।

सहृदयालोक-लोकन 2024 साहित्य और सौंदर्यशास्त्र के सिद्धांतों की खोज करने वाला एक शास्त्रीय भारतीय ग्रंथ है।

साहित्यिक शहरों के बारे में यूनेस्को का साहित्य शहर कार्यक्रम व्यापक रचनात्मक शहर नेटवर्क /क्रिएटिव सिटीज़ नेटवर्क (Creative Cities Network) का भाग है जिसे वर्ष 2004 में शुरू किया गया था।

साहित्यिक शहरों (City of Literature) के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए, शहरों को यूनेस्को द्वारा निर्धारित कई मानदंडों को पूरा करना होगा। यूनेस्को द्वारा नामित साहित्य के शहरों में समान विशेषताएँ होती हैं।

- शहर में प्रकाशन की गुणवत्ता, मात्रा और विविधता।
- प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक स्तरों पर घरेलू या विदेशी साहित्य पर ध्यान केंद्रित करने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों की गुणवत्ता और मात्रा।
- शहर में साहित्य, नाटक एवं कविता की निर्णायक भूमिका।
- घरेलू और विदेशी साहित्य को बढ़ावा देने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों और उत्सवों की मेजबानी करना।
- पुस्तकालयों, किताबों की दुकानों और सार्वजनिक या निजी सांस्कृतिक केंद्रों की उपस्थिति, जो घरेलू और विदेशी साहित्य को संरक्षित, बढ़ावा औरप्रसारित करते हैं।
- विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं और विदेशी साहित्य से साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में प्रकाशन क्षेत्र की भागीदारी।
- साहित्य को बढ़ावा देने और साहित्यिक उत्पादों के लिए बाजार को मजबूत करने में पारंपरिक और नवीन मीडिया की सक्रिय भागीदारी।

केरल के कोझिकोड (Kozhikode) को भारत का पहला यूनेस्को साहित्य शहर घोषित किया गया है। इसकी आधिकारिक घोषणा 31 अक्टूबर, 2023 को की गई थी। कोझिकोड, जिसे पहले कालीकट के नाम से जाना जाता था, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और मलयालम साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर साहित्यिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, जहाँ से कई प्रमुख मलयालम लेखक संबंधित हैं।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — नाम अभिलेख वर्ष महत्त्व

मुख्य परीक्षा दृष्टि: साहित्य को बढ़ावा देने और साहित्यिक उत्पादों के लिए बाजार को मजबूत करने में पारंपरिक और नवीन मीडिया की सक्रिय भागीदारी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: नाम अभिलेख वर्ष महत्त्व | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2024, 2004, 2023

विविध भारत में मार्शल आर्ट — मार्शल आर्ट विशेषताएँ — परी-खंडा

(बिहार) इसके तत्त्व छऊ नृत्य में देखे जाते हैं।, जो इसकी कदम गति और तकनीकों पर निर्भर करता है। राजपूतों ने इसे ढाल (परी) और तलवार (खंडा) का प्रयोग करके बनाया था।

थोडा (हिमाचल प्रदेश) “थोडा" नाम तीर की घातक क्षमता को कम करने के लिए उसके अग्र भाग पर लगाए गए गोल लकड़ी के टुकड़े से लिया गया है। यह बैसाखी के दौरान देवी माशू और दुर्गा के आशीर्वाद का आह्वान करने के लिए मार्शल आर्ट, खेल और संस्कृति का संगम है।

इसमें लगभग 500 लोगों के दो समूह भाग लेते हैं, जिन्हें पाशी और साथी कहा जाता है, जिन्हें पांडव और कौरवों का वंशज माना जाता है।

खेल एक चिह्नित कोर्ट पर खेला जाता है, और तीरंदाज अंक हासिल करने के लिए घुटने के नीचे पैर पर निशाना लगाते हैं।

कलारीपयट्टू

(केरल) इस मार्शल आर्ट का अभ्यास प्रशिक्षण हॉल या व्ययायामशाला में किया जाता है जिसे कलारी के नाम से जाना जाता है। किं वदंतियों के अनुसार, इसकी शुरुआत महर्षि परशुराम ने की थी। इसमें फु टवर्क पर जोर देने के साथ निहत्थे और सशस्त्र युद्धाभ्यास सम्मिलित हैं।

महिलाएँ और पुरुष इसका अभ्यास करते हैं। **[UPSC 2014]**

महत्त्वपूर्ण शर्तें

उझिचिल: गिंग्ली तेल मालिश; ओट्टा: युद्ध में उपयोग की जाने वाली 'एस' आकार वाली एक छड़ी; मयपयट्टु: शारीरिक व्ययायाम; पुलियंकम: तलवार से लड़ाई; वेरुमकई: निहत्थे मुकाबला; अंगथारी: धातु के हथियारों और कोलथारी लाठियों का उपयोग।

मर्दानी खेल

(महाराष्ट्र) यह हथियार कौशल, खास तौर पर तलवार, तेज गतियों और पहाड़ी श्रेणियों में नीचे झुकने में उपयुक्त मुद्रा पर जोर देती है। यह भारतीय पाटा (तलवार) और वीटा (रस्सीदार भाला) का उपयोग करने के लिए उल्लेखनीय है। इसका प्रयोग शिवाजी ने मुगलों के विरुद्ध प्रभावी ढंग से किया था।

थांग-टा और सरित सारक (मणिपुर) थांग-टा एक सशस्त्र मार्शल आर्ट है, जिसमें तलवार (थांग) और भाले (टा) का उपयोग किया जाता है। इसमें अनुष्ठानिक प्रथाएँ सम्मिलित हैं और युद्ध के लिए व्यायावहारिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है। **[UPSC 2014]**

थांग-टा, 17वीं शताब्दी के दौरान मणिपुर में लोकप्रिय हुआ था जब राज्य पर मैतेई साम्राज्य का शासन था, जिन्होंने इसे अंग्रेजों के खिलाफ प्रभावी ढंग से इस्तेमाल किया । इस प्रकार, ब्रिटिश शासन के दौरान इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया लेकिन स्वतंत्रता के बाद यह फिर से सामने आया।

सरित सारक: यह एक युद्ध कला है, जो अपनी आक्रामक और बचाव क्रियाओं के लिए जानी जाती है। दो घटकों थांग-टा और सरित सारक को एक साथ हुयेन लैंगलोन (Huyen Langlon) कहा जाता है।

चेइबी गद-गा

(मणिपुर) यह मणिपुर की प्राचीन मार्शल आर्ट में से एक है जिसमें तलवार और ढाल से लड़ाई की जाती है। इसके संशोधित संस्करणों में तलवार और चमड़े की ढाल के रूप में बंद नरम पत्ती वाली छड़ी (चेइबी) का उपयोग किया जाता है। प्रतियोगिता समतल सतह पर एक घेरे में होती है।

इंबुआई कुश्ती

(मिजोरम) डुंग्टलांग गाँव में 1750 ई. से प्रचलित एक देशी मार्शल आर्ट है।इसके सख्त नियम हैं जिनमें घेरे के भीतर रहना, लात नहीं मारना और घुटने नहीं मोड़ना शामिल है। जीत में प्रतिद्वंद्वी को उसके पैरों से उठाना और प्रतिद्वंद्वी की बेल्ट को पकड़ना शामिल है।

गतका (पंजाब) “गतका" नाम स्वतंत्रता और अनुग्रह से जुड़ा है और इसकी उत्पत्ति संस्कृत शब्द "गदा (Mace)" से हुई है।यह गतका में सिखों द्वारा अभ्यास की जाने वाली एक सशस्त्र मार्शल आर्ट है। इसमें लाठी, कृपाण, तलवार और कटार जैसे हथियारों का उपयोग किया जाता है।

सिलमबम

(तमिलनाडु) शिलप्पदिकारम में विदेशी व्यापारियों द्वारा सिलमबम की छड़ों, मोती, तलवारों और कवच का व्यापार करने का संदर्भ मिलता है। इसकी उत्पत्ति दैवीय है, भगवान मुरुगन (तमिल पौराणिक कथाओं में) और ऋषि अगस्त्य ने सिलमबम का निर्माण किया था। यह एक शुद्ध रक्षा कला से युद्ध अभ्यास में विकसित हुई। इस कला का मलेशिया में भी प्रसार हुआ, जहाँ यह एक प्रसिद्ध खेल और आत्मरक्षा पद्धति है।

कुट्टू बरसाई

(तमिलनाडु) इसका उल्लेख सबसे पहले संगम साहित्य में हुआ था।

यह खाली हाथ सिलमबम है, जो एथलेटिसिस्म, फुटवर्क , स्ट्रेचिंग, योग, जिम्नास्टिक और साँस लेने जैसे व्ययायाम पर केंद्रित हैं।

तकनीकों में साँप, चील, बाघ, हाथी और बंदर जैसे पशु आधारित सेटों के साथ हाथापाई, प्रहार करना और पाश लगाना/कसना शामिल है।

मुष्टि युद्ध

(उत्तर प्रदेश) इसकी उत्पत्ति वाराणसी में हुई। यह मुक्के बाजी से मिलता-जुलता मार्शल आर्ट है, जिसमें लात, घूँसे और घुटने और कोहनी के वार सम्मिलित हैं। इससे शारीरिक, मानसिक और आध्ययात्मिक विकास होता है।

भारत के अन्य प्रसिद्ध मार्शल आर्ट — मार्शल आर्ट राज्य विशेषता

काथी सामू आंध्र प्रदेश शाही सेनाओं द्वारा निपुणता प्राप्त एक प्राचीन कौशल है।

स्काय कश्मीर इसमें तलवारों और ढालों का प्रयोग किया जाता है।

मलखंभ महाराष्ट्र जिम्नास्ट एक ऊर्ध्वाधर, स्थिर या लटकते लकड़ी के खंभे के साथ एरियल योग आसन करता है।

इंसु नोर मिजोरम खिलाड़ी एक घेरे के भीतर लकड़ी की गोल छड़ी का उपयोग करते हैं।

किरीप, साल्डू निकोबार यह कुश्ती का खेल है, जिसमें अखाड़े की जरूरत नहीं होती, केवल खाली जमीन की आवश्यकता होती है।

पाइका अखाड़ा ओडिशा इसमें नृत्य और युद्ध का मिश्रण है और अब इसे एक प्रदर्शन कला के रूप में प्रदर्शित किया जाता है।

वर्मा अति तमिलनाडु यह शरीर के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर लक्षित हमलों पर केंद्रित है ।

मल्ल युद्ध दक्षिण भारत यह अन्य दक्षिण-पूर्व एशियाई कुश्ती शैलियों से संबंधित एक पारंपरिक युद्ध कुश्ती है।

बंदेश सम्पूर्ण भारत में यह एक प्राचीन नि:शस्त्र कला है, जिसमें किसी सशस्त्र प्रतिद्वंद्वी को नुकसान पहुँचाए बिना विभिन्न पाश (locks) का उपयोग किया जाता है।

भारत के प्रमुख त्योहार और मेले — भारत के प्रमुख त्योहार — त्योहार राज्य महत्त्व

बतुकम्म तेलंगाना यह फू लों का त्योहार है और दशहरा के भाग के रूप में मनाया जाता है।

बोनालू तेलंगाना बोनालु तेलुगु महीने आषादम (जून/जुलाई) के दौरान मनाया जाता है। यह त्योहार देवी महाकाली को समर्पित है।

उगादी कर्नाटक यह त्योहार कन्नड़ नव वर्ष का प्रतीक है। यह भारतीय माह चैत्र (मार्च-अप्रैल) के पहले दिन मनाया जाता है।

डूंगरी हिमाचल प्रदेश मनाली के डूंगरी वन विहार जंगल में स्थित हिडिम्बा या डूंगरी मंदिर में हिडिम्बा देवी (भीम की पत्नी) के सम्मान में मनाया जाता है ।

सरहुल झारखंड यह वसंत ऋतु के दौरान मनाया जाता है, जिसमें देवताओं को साल के फू ल चढ़ाए जाते हैं।

विशु केरल यह 'मलयालम नव वर्ष' है। यह मलयालम महीने मेडम के पहले दिन मनाया जाता है।

मेला हेमिस गोम्पा लद्दाख यह तिब्बती कैलेंडर के 10वें दिन भगवान पद्मसंभव (बौद्ध धर्म के वज्रयान संप्रदाय के संस्थापक) के जन्म का समारोह मनाने के लिए हेमिस मठ में आयोजित किया जाता है, जो लद्दाख में सर्दियों के मौसम के अंत के साथ मेल खाता है।

हरि जिरोती मध्य प्रदेश हरियाली का एक महीने तक चलने वाला त्योहार है, जिसके दौरान गोंड और कोरकू जनजाति फलदार पौधे लगाते हैं। **[UPSC 2014]**

गुड़ी पड़वा महाराष्ट्र इसे व्यापक रूप से मराठी नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है।

रथयात्रा ओडिशा भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ भगवान जगन्नाथ की जगन्नाथ मंदिर से गुंडिचा मंदिर तक की पवित्र यात्रा।

बैसाखी पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी — उत्तर प्रदेश

यह वैशाख महीने (अप्रैल-मई) के पहले दिन मनाया जाता है, जब फसल की कटाई होती है।

इसे खालसा पंथ के स्थापना दिवस के रूप में भी जाना जाता है।

गणगौर राजस्थान यह भगवान शिव की पत्नी देवी पार्वती या गौरी के सम्मान में मनाया जाने वाला एक वसंत पर्व है।

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: कुट्टू बरसाई



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — कुट्टू बरसाई

मुख्य परीक्षा दृष्टि: गणगौर राजस्थान यह भगवान शिव की पत्नी देवी पार्वती या गौरी के सम्मान में मनाया जाने वाला एक वसंत पर्व है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: कुट्टू बरसाई • मुष्टि युद्ध • भारत के अन्य प्रसिद्ध मार्शल आर्ट • मार्शल आर्ट राज्य विशेषता • भारत के प्रमुख त्योहार और मेले | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2014

रेगिस्तान महोत्सव राजस्थान यह जैसलमेर में मनाया जाता है, जिसमें ऊँट दौड़ सहित राजस्थान की परंपरा का प्रदर्शन किया जाता है।

पुष्कर मेला राजस्थान इसे पुष्कर ऊँट मेले के रूप में भी जाना जाता है, जहाँ लाखों लोग अपने ऊँटों और मवेशियों के साथ पशुधन व्यापार और तीर्थयात्रा के लिए कई दिनों तक पुष्कर आते हैं।

पोंगल तमिलनाडु यह एक प्रमुख फसल उत्सव है।

तेप्पम तमिलनाडु यह 12 दिवसीय त्योहार है, जिसे फ्लोट फे स्टिवल के नाम से भी जाना जाता है।

पुथंडू तमिलनाडु इसे तमिल नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मीनाक्षीकलायनम

(चिथिरई महोत्सव) तमिलनाडु यह त्योहार मदुरै में भगवान सुंदरेश्वर (शिव) के साथ देवी मीनाक्षी (शक्ति) के दिव्य विवाह को फिर से प्रस्तुत के लिए मनाया जाता है।

नंदा देवी राज जात — यात्रा

उत्तराखंड गढ़वाली और कुमाऊँ नी लोगों का त्योहार है । [UPSC 2017] । यह 12 वर्षों में एक बार आयोजित होने वाली तीन सप्ताह तक चलने वाली एक तीर्थयात्रा है।

चालिहा पर्व संपूर्ण भारत सिंधियों द्वारा मनाया जाने वाला एक त्योहार है, जिसमें वे अपने भगवान झूलेलाल से प्रार्थना करते हैं। [UPSC 2017]

मकर संक्रांति संपूर्ण भारत यह सूर्य के मकर राशि में प्रवेश का प्रतीक है। इसे अच्छी फसल के लिए प्रकृति को धन्यवाद देने के रूप में भी मनाया जाता है।

वसंत पंचमी संपूर्ण भारत इसमें सरस्वती (विद्या की देवी) की पूजा की जाती है।

चेटी चंद संपूर्ण भारत सिंधी नव वर्ष, झूलेलाल के जन्म के सम्मान में मनाया जाता है।

बुद्ध पूर्णिमा संपूर्ण भारत वैशाख माह की पूर्णिमा के दिन भगवान बुद्ध की जयंती के रूप में मनाई जाती है।

गुरुपर्व संपूर्ण भारत इसे गुरु नानक के प्रकाश उत्सव और गुरु नानक देव की जयंती के रूप में भी जाना जाता है। यह पहले सिख गुरु, गुरु नानक देव का जन्म समारोह भी होता है।

उत्तर-पूर्वी भारत के प्रमुख त्योहार — त्योहार राज्य महत्त्व

सोलुंग अरुणाचल प्रदेश यह आदिवासी समुदायों का एक सामाजिक-धार्मिक उत्सव है ।

म्योको महोत्सव अरुणाचल प्रदेश यह विभिन्न अपातानी गाँवों के बीच मित्रता और सद्भाव के त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

मोपिन अरुणाचल प्रदेश यह गालो समुदाय का त्योहार है और यह प्रमुख तौर पर कृषि से जुड़ा है ।

इस त्योहार का एक उद्देश्य बुरी आत्माओं को दूर भगाना है।

बुद्ध महोत्सव अरुणाचल प्रदेश बौद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बौद्ध पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए तवांग में मनाया जाता है।

द्री फे स्टिवल अरुणाचल प्रदेश अपातानियों द्वारा मनाया जाने वाला एक कृषि अनुष्ठान है, जिसमें सूर्य और चंद्र देवताओं को अंडों और जानवरों की बलि दी जाती है।

तोर्ग्या मठ महोत्सव अरुणाचल प्रदेश यह स्वस्थ और समृद्ध नव वर्ष का स्वागत करने के लिए मोनपा समुदाय द्वारा मनाया जाता है।

बिहू महोत्सव असम यह कृषि संचालन के तीन महत्त्वपूर्ण चरणों को चिह्नित करने के लिए वर्ष में तीन बार मनाया जाता है।

बोहाग बिहू (इसे रोंगाली बिहू भी कहा जाता है) बुवाई की शुरुआत का प्रतीक है।

कटि बिहू खड़ी फसलों के लिए प्रार्थना करने के लिए मनाया जाता है।

माघ बिहू (इसे भोगाली बिहू भी कहा जाता है) फसल कटाई के मौसम का प्रतीक है।

देहिंग पटकाई महोत्सव असम यह हर वर्ष जनवरी में लेखापानी में आयोजित किया जाता है और इसका नाम पूर्वी असम की देहिंग नदी और पटकाई पर्वत श्रृंखला के नाम पर रखा गया है।

अंबुबाची मेला असम यह कामाख्या देवी मंदिर में हर वर्ष जून महीने के मध्य में आयोजित होने वाले देवी कामाख्या के वार्षिक शुद्धिकरण संस्कार से जुड़ा है। इसे पूर्व का महाकुंभ भी कहा जाता है।

कांग चिंगबा मणिपुर यह 10 दिनों तक चलने वाला त्योहार है, जो हर वर्ष जुलाई में वैष्णव धर्म का पालन करने वाले मैतेई समुदाय द्वारा मनाया जाता है।

चीरोबा महोत्सव मणिपुर यह मणिपुरी नव वर्ष है, जो मणिपुरी महीने साजिबू (मार्च/अप्रैल) के दौरान मनाया जाता है।

नोंगक्रे म नृत्य महोत्सव मेघालय यह मेघालय के लोगों द्वारा भरपूर फसल और समृद्धि के लिए देवी "का ब्लेई सिंशर" को प्रसन्न करने के लिए प्रतिवर्ष मनाया जाता है।

वंगाला महोत्सव मेघालय यह सूर्य देवता 'मिसी सालजोंग'और अनाज की देवी 'मिनी-मा किरी रोकिमे' को धन्यवाद देने के लिए गारो समुदाय का एक फसल उत्सव है।

चापचर कुट मिजोरम झूम खेती के लिए जंगलों को साफ करने के बाद मनाया जाने वाला एक धन्यवाद उत्सव है। इसे वसंत उत्सव के रूप में भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। **[UPSC 2018]**

लोसूंग महोत्सव सिक्किम फसल की कटाई का त्योहार है। बुराई पर अच्छाई की जीत की याद में मनाए जाने वाले इस त्योहार पर ब्लैक हैट नृत्य होता है, जिसमें लोसूंग से दो दिन पहले कई मठों में 'चाम' का आयोजन किया जाता है।

सागा दावा सिक्किम यह सिक्किम के बौद्ध समुदायों द्वारा मनाया जाता है।

खर्ची पूजा त्रिपुरा इसे '14 देवताओं का त्योहार' भी कहा जाता है और यह हर वर्ष जुलाई या अगस्त में अमावस्या के आठवें दिन मनाया जाता है।

माजुली महोत्सव असम यह नवंबर में असम राज्य मंत्रालय द्वारा माजुली द्वीप पर मनाया जाता है, जिसमें उद्घाटन और समापन समारोह के दौरान स्थानीय संरक्षक देवता का आह्वान किया जाता है।

भारत के प्रमुख मेले — मेले राज्य महत्त्व

सोनपुर पशु मेला (एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला) बिहार यह गंगा और गंडक नदियों के संगम पर सोनपुर के हरिहरनाथ मंदिर से जुड़ा है। यह मेला हाथियों के व्यापार के लिए, चंद्रगुप्त मौर्य के समय से नवंबर में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लगता है।

गोवा कार्निवल गोवा यह पुर्तगालियों द्वारा शुरू किया गया था और इसमें दावत एवं मौज-मस्ती शामिल थी।

सूरजकुंड शिल्प मेला हरियाणा यह एक अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला है, जो क्षेत्रीय और साथ ही अंतरराष्ट्रीय शिल्प तथा सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए हर वर्ष 1 फरवरी से एक पखवाड़े के लिए फरीदाबाद के पास आयोजित किया जाता है।

चित्र-विचित्र मेला गुजरात यह गुजरात का सबसे बड़ा आदिवासी मेला है, जो मुख्य रूप से होली के बाद 'अमावस्या' के दिन 'घरासिया' और 'भील' जनजातियों द्वारा आयोजित किया जाता है।

शामलाजी मेला गुजरात यह आदिवासी समुदाय द्वारा मेशनो नदी में पवित्र स्नान करके कृष्ण या विष्णु के अवतार माने जाने वाले भगवान शामला जी की पूजा करने के लिए आयोजित किया जाता है।

कोलायत मेला

(कपिल मुनि मेला) राजस्थान लोग अपने सभी पापों का प्रायश्चित करने के लिए कार्तिक पूर्णिमा के दिन बीकानेर की पवित्र कोलायत झील में डुबकी लगाते हैं।

प्राचीन और मध्यकालीन — भारतीय सिक्कों का एक अवलोकन

प्राचीन सिक्के सिक्के पहली बार लगभग 700 ईसा पूर्व चीन, ग्रीस और भारत में दिखाई दिए।

- इसका सबसे पहला उल्लेख वेदों में मिलता है, जिनमें धातु के सिक्कों के लिए "निष्क" शब्द का प्रयोग किया गया है।
- सिक्कों और पदकों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (Numismatics) के नाम से जाना जाता है।

आहत सिक्के (पंचमार्क सिक्के) (500BC-100BC) पाणिनि के अष्टाध्ययायी में "रत्ती" का उल्लेख है। इन सिक्कों को हाथ से ढाला जाता था और उन पर 1 से 5 अंकित चिह्नों की मुहर (छाप) लगाई जाती थी।

वर्गीकरण

- महाजनपद काल (500 ईसा पूर्व) के दौरान ढाले गए पहले भारतीय आहत सिक्कों को पुराण, कार्षापण या पण कहा जाता था।
  - इन सिक्कों का अनियमित आकार और एक मानक वजन था और ये चाँदी के बने थे, जिन पर विभिन्न प्रकार के चिह्न अंकित होते थे।
  - सौराष्ट्र के सिक्कों पर एक कूबड़ वाला बैल, दक्षिणी पांचाल के सिक्कों पर स्वास्तिक और मगध के सिक्कों पर पाँच प्रतीक अंकित थे।
  - इनका उल्लेख मनुस्मृति और बौद्ध जातक कथाओं में मिलता है।
- मौर्य काल (322-185 ईसा पूर्व) के दौरान इन सिक्कों को कार्षापण कहा जाता था
  - चाणक्य ने अर्थशास्त्र ग्रंथ में रूपयेरूपा (चाँदी का सिक्का), सुवर्णरूपा (सोने का सिक्का), ताम्रूपा (ताँबे का सिक्का), और सीसारूपा (सीसे का सिक्का) जैसे आहत सिक्कों की ढलाई का उल्लेख किया है।
  - सूर्य और छह भुजाओंवाले पहिये के प्रतीक सबसे अधिक दिखाई दिए। सातवाहनों के सिक्के
- सातवाहन राजा (232 ईसा पूर्व-227 ईसवी) अपने सिक्कों में सामग्री के रूप में सीसा तथा चाँदी और ताँबे की एक मिश्र धातु "पोटिन" का उपयोग करते थे।
- **छवि-अंकन (Iconography):** एक तरफ हाथी, घोड़े, शेर या चैत्य जैसी आकृतियाँ थीं और दूसरी तरफ एक उज्जैन प्रतीक जिसमें एक क्रॉस होता था और दो क्रॉसिंग लाइनों के अंत में चार वृत्त होते थे।
- कौड़ी छोटे पैमाने के आर्थिक लेनदेन के लिए आम लोगों द्वारा विनिमय के एक अन्य प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करती थी।

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: भारत के प्रमुख मेले

1. भारत के प्रमुख मेले	**2. मेले राज्य महत्त्व**
3. कोलायत मेला	**4. प्राचीन और मध्यकालीन**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — भारत के प्रमुख मेले

मुख्य परीक्षा दृष्टि: कौड़ी छोटे पैमाने के आर्थिक लेनदेन के लिए आम लोगों द्वारा विनिमय के एक अन्य प्रमुख माध्यम के रूप में कार्य करती थी।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: भारत के प्रमुख मेले • मेले राज्य महत्त्व • कोलायत मेला • प्राचीन और मध्यकालीन • भारतीय सिक्कों का एक अवलोकन | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** *2018*

पश्चिमी क्षत्रपों के सिक्के (इंडो-सीथियन)

- इन सिक्कों में एक तरफ राजा का चित्र है और दूसरी तरफ बौद्ध चैत्य या स्तूप का चित्र है जो शायद सातवाहनों से लिया गया है।
- उन्होंने प्राकृत भाषा का विभिन्न लिपियों में प्रयोग किया। गुप्त काल में जारी सिक्के (319-550 ई.) गुप्तकालीन सिक्के मुख्य रूप से सोने के बने होते थे, हालाँकि चाँदी और ताँबे के सिक्के भी जारी किए गए थे।
- **सिक्कों पर चित्र:**
  - गुप्त सिक्कों में एक तरफ राजा को विभिन्न गतिविधियों जैसे- वीणा बजाते (समुद्रगुप्त), अनुष्ठान करते, जानवरों का शिकार करते हुए दर्शाया गया है।
  - दूसरी तरफ प्रायः देवी लक्ष्मी को सिंहासन पर बैठे हुए या कमल की मुहर या स्वयं रानी को दर्शाया गया है। अन्य देवताओं में दुर्गा, गंगा, गरुड़ और कार्तिके य के चित्र सम्मिलित हैं।

- पहली बार सिक्कों पर संस्कृत (ब्राह्मी लिपि) अंकित किए गए। गुप्त शासन के बाद बदलाव का दौर
- उत्तर-गुप्त काल के सिक्कों की विशेषता 'धातु की कम मात्रा और कम कलात्मक डिजाइन' थी ।
- उत्तरवर्ती राजवंशों ने कुषाण-गुप्त पैटर्न के साथ-साथ विदेशी डिजाइनों से उधार लिए गए डिजाइनों का मिश्रण किया था।
- **दक्षिण भारत का स्वर्ण मानक:** दक्षिण भारत में, एक अलग सिक्का प्रणाली का विकास हुआ, जो रोमन सोने के सिक्कों से प्रभावित होकर स्वर्ण मानक की ओर बढ़ रही थी।

चालुक्य राजाओं के सिक्के (छठी-सातवीं शताब्दी ईसवी): पश्चिमी चालुक्यों के सिक्कों में एक तरफ मंदिर या शेर अंकित होता था और दूसरी तरफ सपाट होता था। पूर्वी चालुक्यों के सिक्कों में एक तरफ केंद्र में सूअर होता था, जिसमें राजा के नाम का प्रत्येक अक्षर एक अलग छाप में होता था। दूसरी तरफ सपाट होता था।

वर्द्धन वंश के सिक्के (सातवीं शताब्दी ईसवी): वर्द्धन वंश के चाँदी के सिक्कों पर एक तरफ राजा का चित्र और दूसरी तरफ एक मोर चित्रित था।

हर्षवर्द्धन के सिक्कों में नए युग की तारीख निर्धारण प्रणाली का उपयोग किया गया था, जिसकी शुरुआत संभवत: 606 ईसवी में हुई थी।

राजपूत राजवंशों के सिक्के (11वीं-12वीं शताब्दी) सिक्के मुख्य रूप से सोने, ताँबे या बिलोन (चाँदी और ताँबे की मिश्रधातु) से बने होते थे, चाँदी का उपयोग शायद ही कभी किया जाता था। राजपूत सिक्के दो प्रकार के थे:

- एक तरफ संस्कृत में राजा का नामऔर दूसरी तरफ देवी काचित्र होता था।
- चाँदी के सिक्कों पर एक तरफ बैठे हुए बैल का चित्र और दूसरी तरफ एक घुड़सवार का चित्र होता था।

पांड्य, चोल और पल्लव राजवंश के सिक्के पांड्य राजवंश : प्रारंभिक पांडियन सिक्के चौकोर आकार के होते थे, जिन पर हाथी की छवि अंकित होती थी। बाद में, मछली एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक बन गई। सोने और चाँदी के सिक्कों पर उत्कीर्ण लेख संस्कृत में थे, वहीं दूसरी ओर ताँबे के सिक्कों पर उत्कीर्ण लेख तमिल में थे।

> **चोल राजवंश :** राज राज-प्रथम के सिक्कों पर एक तरफ खड़े राजा और दूसरी तरफ बैठी हुई देवी को चित्रित किया गया था, सामान्य रूप से संस्कृत में उत्कीर्ण लेख भी थे। राजेंद्र-प्रथम के सिक्कों पर बाघ और मछली के प्रतीक के साथ 'श्री राजेंद्र' या 'गंगईकोंडा चोल' जैसे शब्द अंकित थे।

पल्लव राजवंश के सिक्कों पर शेर की आकृति अंकित थी।

मध्यकालीन सिक्के दिल्ली सल्तनत के सिक्के (1206-1526): दिल्ली के सुल्तानों ने सोने, चाँदी, ताँबे और बिलोन के सिक्के जारी किए, जिन पर राजा का नाम, उपाधि, टकसाल का नाम और हिजरी संवत्की तारीख अंकित थी।

- इस्लाम में मूर्ति पूजा के निषेध के कारण सिक्के जारी करने वाले राजाओं की कोई छवि अंकित नहीं होती थी।
- इल्तुतमिश ने चाँदी का टंका और ताँबे का जीतल शुरू किया।
- अलाउद्दीन खिलजी ने खलीफा के नाम के स्थान पर आत्म-प्रशंसा वाली उपाधियाँ अंकित करवाईं।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने कांस्य, ताँबे के सिक्कों और सांके तिक कागजी मुद्रा की शुरुआत की।
- शेरशाह सूरी ने भार मानक, रुपया (चाँदी), और दाम (ताँबा) स्थापित किया और रुपया की शुरुआत की।

विजयनगर साम्राज्य के सिक्के (14वीं-17वीं शताब्दी)

- विजयनगर साम्राज्य द्वारा सोने, शुद्ध चाँदी और ताँबे के सिक्के जारी किए गए थे।
- **विभिन्न प्रयोजनों के लिए अलग-अलग सिक्के :** पैगोडा (उच्च मूल्य वर्ग के सिक्के), सोने के फै नम (आंशिक इकाइयाँ) **[UPSC 2022]**, चाँदी के तारे (Taras) (आंशिक इकाइयाँ), और ताँबे के सिक्के (दैनिक लेनदेन)।
- सिक्कों पर कन्नड़ या संस्कृत में उत्कीर्ण लेख होते थे।
- सिक्के बरकुर गद्यना और भटकल गद्यना नामक स्थानों में ढाले गए थे।
- सिक्कों पर दो सिर वाले बाज, एक बैल, एक हाथी और हिंदू देवी-देवता के चित्र अंकित होते थे।
- कृष्णदेव राय द्वारा निर्मित स्वर्ण वर्द्धन (Gold Vardhan) सिक्के के एक तरफ बैठी मुद्रा में विष्णु दूसरी तरफ संस्कृत में तीन पंक्तियों में श्री प्रताप कृष्ण राय अंकित था।

मुगल सिक्के (1526-1707)

- मुगल काल के मानक सोने के सिक्के को मुहर (170-175 ग्रेन) कहा जाता था। 'आईन-ए-अकबरी' में अबुल फजल ने संकेत दिया है कि एक मुहर नौ रुपये के बराबर थी।
- मुगल ताँबे का सिक्का शेरशाह के दाम से अपनाया गया था, वहीं दूसरी ओर चाँदी का रुपया शेरशाह की मुद्रा से अपनाया गया था।

- अकबर ने गोल और चौकोर सिक्के जारी किए। उसके "इलाही सिक्कों" ने उसके धार्मिक पंथ को बढ़ावा दिया।
  - शहंशाह सबसे बड़ा सोने का सिक्का था और इसपर फारसी सौर महीनों के नाम अंकित थे।
- जहाँगीर के सिक्कों में दोहे, उसकी पत्नी नूरजहाँ का नाम और राशि चिह्न अंकित थे।

अन्य सिक्के

- छत्रपति शिवाजी ने नागरी लिपि में शीर्षक के साथ सोने के "होन" और ताँबे के "शिवराई" जारी किए।
- वाड्यार राजवंश (मैसूर) के सिक्कों पर विष्णु का नरसिंह अवतार अंकित था।
- हैदर अली और टीपू सुल्तान ने शिव, पार्वती की आकृतियों के साथ सिक्का निर्माण जारी रखा।

ब्रिटिश कालीन और आधुनिकिसक्के ब्रिटिश काल

- बंगाल के सिक्कों का निर्माण मुगल पैटर्न पर हुआ था।
- पश्चिमी भारत के अंग्रेजी सिक्कों का निर्माण मुगल पैटर्न के साथ-साथ अंग्रेजी पैटर्न पर भी हुआ।
  - अंग्रेजी पैटर्न के सिक्के बॉम्बे टकसाल में बनाए गए थे।
  - सोने के सिक्कों को कैरोलिना, चाँदी के सिक्कों को एंग्लिना, ताँबे के सिक्कों को क्यूपरून और टिन के सिक्कों को टिनी कहा जाता था।
- ब्रिटिश ताज के तहत पहला सिक्का वर्ष 1862 में जारी किया गया था और 1877 ई. में रानी विक्टोरिया ने भारत की महारानी की उपाधि धारण की थी।

वर्तमान में, भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड (Security Printing and Minting Corporation of India Ltd., SPMCIL) के स्वामित्व वाली चार टकसालों में सिक्का निर्माण होता है। ये टकसालें मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता और नोएडा में स्थित हैं।

- सिक्के आरबीआई अधिनियम की धारा 38 के तहत केवल रिजर्व बैंक के माध्यम से चलन के लिए जारी किए जाते हैं।

महत्त्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय

संग्रहालय का नाम स्थान स्थापना वर्ष केंद्रीय क्षेत्र प्रकार प्रशासनिक निकाय राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली 1949 भारत की कला, संस्कृति, इतिहास और पुरातत्व।

शासकीय संस्कृति मंत्रालय — भारतीय संग्रहालय कोलकाता, पश्चिम — बंगाल

1814 भारत का सबसे पुराना संग्रहालय; कला, पुरातत्व, नृविज्ञान और भूविज्ञान पर केंद्रित है।

शासकीय संस्कृति मंत्रालय — छत्रपति शिवाजी महाराज — वास्तु संग्रहालय

मुंबई, महाराष्ट्र 1922 कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास। शासकीय महाराष्ट्र सरकार सालार जंग संग्रहालय हैदराबाद, तेलंगाना 1951 भारत, एशिया और यूरोप की कलाकृतियों का सबसे बड़ा संग्रह।

शासकीय संस्कृति मंत्रालय — विक्टोरिया मेमोरियल कोलकाता, पश्चिम — बंगाल

1921 ब्रिटिश भारत से संबंधित कला और ऐतिहासिक कलाकृतियाँ।

शासकीय संस्कृति मंत्रालय — राष्ट्रीय आधुनिक कला

गैलरी (NGMA) नई दिल्ली 1954 आधुनिक भारतीय कला और मूर्तियाँ। शासकीय संस्कृति मंत्रालय भारत कला भवन वाराणसी, उत्तर प्रदेश 1920 भारतीय कला, संस्कृति, पुरातत्व और पांडुलिपियाँ।

शासकीय बनारस हिंदू — विश्विद्यालय — शासकीय संग्रहालय

(एग्मोर) चेन्नई, तमिलनाडु 1851 कला, पुरातत्व, मुद्राशास्त्र और प्राणीशास्त्र। शासकीय तमिलनाडु सरकार अल्बर्ट हॉल संग्रहालय जयपुर, राजस्थान 1887 कला, शिल्प और पारंपरिक राजस्थानी कलाकृतियाँ।

शासकीय राजस्थान सरकार

वस्त्रों का के लिको संग्रहालय अहमदाबाद, गुजरात 1949 भारतीय वस्त्र, वेशभूषा और कपड़े। गैर शासकीय साराभाई फाउंडेशन पटना संग्रहालय पटना, बिहार 1917 मौर्य और गुप्त काल सहित प्राचीन भारत की कलाकृतियाँ।

शासकीय बिहार सरकार — डॉ. भाऊ दाजी लाद — संग्रहालय

मुंबई, महाराष्ट्र 1872 सौंदर्य कला, औद्योगिक इतिहास और पुरातत्व।

शासकीय ग्रेटर मुंबई नगर निगम

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: महत्त्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय

1. महत्त्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय

2. शासकीय संस्कृति मंत्रालय

3. भारतीय संग्रहालय कोलकाता, पश्चिम

4. बंगाल

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — महत्त्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय

मुख्य परीक्षा दृष्टि: मुंबई, महाराष्ट्र 1872 सौंदर्य कला, औद्योगिक इतिहास और पुरातत्व।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: महत्त्वपूर्ण भारतीय संग्रहालय • शासकीय संस्कृति मंत्रालय • भारतीय संग्रहालय कोलकाता, पश्चिम • बंगाल • छत्रपति शिवाजी महाराज | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 1862, 1877, 1949, 1814, 1922

राजा दिनकर के लकर — संग्रहालय

पुणे, महाराष्ट्र 1962 भारतीय जीवन और संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाली दैनिक कलाकृतियों का संग्रह।

गैर शासकीय स्वायत्त नेपियर संग्रहालय तिरुवनंतपुरम, केरल 1855 कला, पुरातत्व और प्राकृतिक इतिहास। शासकीय केरल सरकार शंकर का अंतर्राष्ट्रीय 'डॉल म्यूजियम' नई दिल्ली 1965 दुनिया भर से गुड़ियों का संग्रह। गैर शासकीय चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट इंदिरा गांधी मेमोरियल संग्रहालय नई दिल्ली 1985 इंदिरा गांधी के जीवन और विरासत से संबंधित कलाकृतियाँ और प्रदर्शनियाँ।

शासकीय संस्कृति मंत्रालय

जनजातीय संग्रहालय भोपाल, मध्य प्रदेश 2013 मध्य प्रदेश की जनजातीय कला, संस्कृति और कलाकृतियाँ।

शासकीय मध्य प्रदेश सरकार

परिशिष्ट नवीन संग्रहालय

संग्रहालय का नाम स्थान स्थापित वर्ष क्षेत्र भारतीय संगीत अनुभव संग्रहालय बेंगलुरु, कर्नाटक 2019 शास्त्रीय परंपराओं से लेकर आधुनिक शैलियों तक, भारतीय संगीत के विकास को प्रदर्शित करने वाली संवादात्मक प्रदर्शनियाँ।

कला एवं फोटोग्राफी संग्रहालय

(MAP) बेंगलुरु, कर्नाटक 2023 दक्षिण एशियाई कला, वस्त्र, फोटोग्राफी और डिजाइन, कला को जनता के लिए सुलभ बनाता है।

स्मृतिवन भूकंप संग्रहालय भुज, गुजरात 2022 वर्ष 2001 के भूकंप के बाद की स्थिति की याद दिलाता है, इसमें सीढ़ीदार गैलरी और एक वन स्थित है।

मंद्रो जीवाश्म पार्क राजमहल पहाड़ियाँ, झारखंड 2022 145 से 200मिलियन वर्ष पुराने जीवाश्मों को प्रदर्शित करता है,जिसमें 140मिलियन वर्ष पुराने पौधे का जीवाश्म भी शामिल है।

राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर

(NMHC) लोथल, गुजरात निर्माणरत (2024 अपेक्षित) विश्व का सबसे बड़ा समुद्री संग्रहालय, जिसमें भारत की नौसैनिक और समुद्री विरासत का इतिहास दर्शाया गया है।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक नई दिल्ली 2019 सैन्य इतिहास पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सभी युद्धों और संघर्षों में भारतीय सैनिकों के बलिदान का सम्मान करता है।

कपड़ा संग्रहालय अहमदाबाद, गुजरात 2023 पारंपरिक बुनाई, कपड़ा तकनीक और डिजाइन पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारतीय वस्त्रों की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करता है।

भारत के प्रमुख पुरातत्व स्थल, जिन्हें प्रतिष्ठित स्थलों के रूप में विकसित किया जाएगा पुरातात्विक स्थल स्थान विशेषताएँ राखीगढ़ी हरियाणा एक प्रमुख हड़प्पा स्थल, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता के सबसे बड़े स्थलों में से एक माना जाता है। इसमें प्राचीन शहर के खंडहर, कब्रिस्तान और कलाकृतियाँ सम्मिलित हैं।

हस्तिनापुर उत्तर प्रदेश महाभारत काल का प्राचीन शहर, जो अपने ऐतिहासिक और पौराणिक महत्त्व के लिए जाना जाता है। उत्खनन से प्राचीन संरचनाओं, मृदभांडों और कलाकृतियों का पता चलता है।

शिवसागर असम यह अहोम राजवंश के साथ अपने संबंध के लिए जाना जाता है, इसमें महल, मंदिर और ऐतिहासिक जलाशय स्थित हैं। मुख्य विशेषता: शिवसागर जलाशय और रंग घर, एक प्राचीन रंगभूमि।

धोलावीरा गुजरात हड़प्पा सभ्यता का एक प्रमुख स्थल, जो अपनी उन्नत शहरी योजना, बड़े जलाशयों और उल्लेखनीय जल प्रबंधन प्रणालियों के लिए जाना जाता है।

आदिचनल्लूर तमिलनाडु लौह युग का एक प्राचीन शवाधान स्थल, जो अपने कलश शवाधान, प्राचीन मिट्टी के बर्तनों और लोहे के औजारों जैसी कलाकृतियों के लिए जाना जाता है।

महत्त्वपूर्ण पुस्तके एवं लेखक लेखक/विद्वान पुस्तकें वाल्मीकि रामायण वेदव्यास महाभारत पाणिनि अष्टाध्ययायी

उप-विषयवार परीक्षा भार एवं विश्लेषणात्मक ग्राफ: परिशिष्ट



IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — परिशिष्ट

मुख्य परीक्षा दृष्टि: महत्त्वपूर्ण पुस्तके एवं लेखक लेखक/विद्वान पुस्तकें वाल्मीकि रामायण वेदव्यास महाभारत पाणिनि अष्टाध्ययायी

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: परिशिष्ट • नवीन संग्रहालय • कला एवं फोटोग्राफी संग्रहालय • राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 2019, 2023, 2022, 2001, 2024

पतंजलि महाभाष्य

नागार्जुन माध्यमिका कारिका, प्रजनापरमिता कारिका वसुमित्र महाविभाषाशास्त्र अश्वघोष बुद्धचरित, वज्रसूची, सौंदरानंद चरक चरक संहिता (चिकित्सा पर पुस्तक) कालिदास मालविकाग्निमित्रम् (अग्निमित्र शुंग और मालविका की प्रेम कहानी), मेघदूत, ऋतुसंहार, अभिज्ञानशाकुंतलम्, रघुवंशम और कुमारसंभवम्सुश्रुत सुश्रुत संहिता (शल्य चिकित्सा पर पुस्तक) विशाखदत्त मुद्राराक्षस (चंद्रगुप्त मौर्य ने नंदों को हराया), देवीचंद्रगुप्तम शूद्रक मृच्छकटिकम् (नाटक) से भरत मुनि नाट्यशास्त्र भास्कराचार्य सिद्धांत शिरोमणि (4 भाग - लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित और खगोल विज्ञान पर गोलाध्ययाय) दण्डी दशकुमारचरित और काव्यदर्शन भवभूति उत्तररामचरित (वाल्मीकि रामायण की निरंतरता), मालती माधव देवचन्द्र शांतिनाथचरित्र (जैन कथा) हेमचन्द्र द्वाश्रय महाकाव्य, सप्त साधना विल्हण विक्रमांकदेवचरित (चालुक्य राजा विक्रमादित्य) और कर्णसुन्दरी श्रीजयानक पृथ्वीराज विजय जयसिंह कुमारपालचरित लगधाचार्य ज्योतिष पर पुस्तक कामंदक नीतिशास्त्र (राजनीति पर) न्यायचंद्र हम्मीरकाव्य पद्मगुप्त नवसाहसांकचरित्राजशेखर कर्पूरमंजरी, बाल रामायण, बाला भारत, काव्यमीमांसा, भुवन कोश, हरविलास विज्ञानेश्वर मिताक्षरा जयदेव प्रसन्नराघव और गीत गोविंद जीमूतवाहन दयाभाग वाग्भट्ट अष्टांग-संग्रह, अष्टांग-हृदय-संहिता वाक्पति गौडवहो/गड़वाहों (कन्नौज का यशोवर्मन) वराहमिहिर पंचसिद्धांतिका (ज्योतिष पर पुस्तक), सूर्यसिद्धांत, बृहदसंहिता वर्धमान आदिनाथचरित्र (जैन कथा) विशालदेव हरिके ली नाटक चंदबरदाई पृथ्वीराज रासो विदेशी यात्री और उनके अवलोकन/विवरण नाम राष्ट्रीयता अवधि शासक का शासनकाल उल्लेखनीय कार्य/टिप्पणियाँ मेगस्थनीज सेल्यूकस निके टर के यूनानी राजदूत 302-298 ईसा पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य "इंडिका" नामक पुस्तक लिखी।

डाइमेकस यूनानी राजदूत 320-273 — ईसा-पूर्व — बिंदुसार

फाह्यान चीनी यात्री 405-411 ई. चन्द्रगुप्त द्वितीय अपने यात्रा वृतांत द 'रिकॉर्ड्स ऑफ बुद्धिस्ट किंगडम्स' ("फो-क्यो-की") में उसने अपनी यात्रा का वर्णन किया है। उसने पाटलिपुत्र की अपनी यात्रा से यह निष्कर्ष निकाला कि हीनयान और महायान दोनों संप्रदायों के अलग-अलग संघ थे जो पूरे भारत के छात्रों को शिक्षा देते थे।

ह्वेन त्सांग चीनी यात्री 630-645 ई. हर्षवर्धन एक यात्रा वृत्तांत "सी-यू-की" (पश्चिमी विश्व की यात्रा) लिखा। इसने लगभग पाँच वर्षों तक नालंदा में अध्ययन किया। हर्ष के शासनकाल के बारे में भी बताया गया है।

इत्सिंग चीनी यात्री 671-695 ई. श्रीविजय और रास्ते में आने वाले राज्यों के ज्ञान में योगदान करते हुए, अपनी 25 वर्ष की यात्राओं के वृत्तान्त लिखा।

अल मसूदी अरब यात्री 957 ई. "मुरुज-उल-ज़हाब" में भारत का विस्तृत विवरण दिया है।

अलबरूनी फारसी विद्वान 1024-1030 ई. "तहकीक-ए-हिंद/किताब-उल-हिन्द" लिखा। उसने जाति व्यवस्था को समझाने का प्रयास किया।

मार्को पोलो इतालवी यात्री 1292-1294 ई काकतीय वंश की रुद्रम्मादेवी के शासनकाल के दौरान दक्षिण भारत का दौरा किया।

भारत के आर्थिक इतिहास पर "द बुक ऑफ सर मार्को पोलो"लिखा।

इब्नबतूता मोरक्को यात्री 1333-1347 ई मुहम्मद-बिन-तुगलक एक यात्रा वृतांत "रिहला" लिखा। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने इसे दिल्ली का काजी/न्यायाधीश नियुक्त किया। मुहम्मद-बिन-तुगलक शासनकाल (उलूक-घोड़े की चौकी और दावा-पैदल डाक) के दौरान डाक प्रणाली के बारे में बताता है। यह बताता है कि यात्रा करना असुरक्षित था और यात्रा के दौरान डकैती का भी उल्लेख किया गया है।

उन्होंने नारियल और पान का भी जिक्र किया है।

निकोलो कोंटी इतालवी व्यापारी 1420-1421 ई. विजयनगर साम्राज्य के देवराय प्रथम विजयनगर का चित्रित विवरण दिया। "तेलुगु" को "पूर्व का इतालवी" कहा गया।

अब्दुर रज्जाक — समरकंदी — फ़ारसी विद्वान, तिमुरिड

राजवंश के शाहरुख का राजदूत 1443-1444 ई विजयनगर साम्राज्य के देवराय द्वितीय कालीकट के जमोरिन के दरबार में रहे। अपने "मतला उस सद्दीन वा मजूमा उल बहरीन" में कालीकट और विजयनगर का संक्षिप्त विवरण दिया है।

अथानासियस निकितिन रूसी व्यापारी 1470-1474 ई. 1470 में दक्षिण भारत का दौरा किया और मुहम्मद तृतीय के अधीन बहमनी साम्राज्य की स्थिति का वर्णन किया। उसके कार्यों में "3 समुद्रों से परे की यात्रा" शामिल है।

डुआर्टे बारबोसा पुर्तगाली यात्री 1500-1516 ई. विजयनगर साम्राज्य के सरकार और जनता का संक्षिप्त विवरण दिया डोमिंगो पायस पुर्तगाली यात्री 1520-1522 ई. कृष्णदेव राय (विजयनगर साम्राज्य) फर्नाओ नुनिज़ पुर्तगाली व्यापारी 1535-1537 ई. तुलुव वंश के अच्युतदेव राय अच्युत राय के शासनकाल के दौरान विजयनगर साम्राज्य का इतिहास लिखा विलियम हॉकिन्स ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम के राजदूत 1608-1611 ई. जहाँगीर सर या टॉमस रो ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम के राजदूत 1615-1619 ई. जहाँगीर एडवर्ड टेरी सर थॉमस रो के राजदूत 1616 ई. "ए वॉयेज टू ईस्ट-इंडिया" लिखा फ्रांसिस्को पेल्सर्ट डच यात्री 1620-1627 ई. मुगल साम्राज्य में सामान्य लोगों के जीवन स्तर के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी। बर्नियर की तरह यह भी व्यापक गरीबी देखकर हैरान था।

पीटर मुंडी इतालवी यात्री 1628-1634 ई. शाहजहाँ 6 बार भारत भ्रमण किया। अपने लेख में इन्होंने शाहजहाँ और औरंगजेब के शासनकाल को शामिल किया गया है।

कालानुक्रमिक विकास एवं ऐतिहासिक समय-रेखा आरेख: अब्दुर रज्जाक

645 ई	695 ई	957 ई	1292
अब्दुर रज्जाक	समरकंदी	फ़ारसी विद्वान, तिमुरिड	प्रमुख चरण #4

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — अब्दुर रज्जाक

मुख्य परीक्षा दृष्टि: पीटर मुंडी इतालवी यात्री 1628-1634 ई. शाहजहाँ 6 बार भारत भ्रमण किया। अपने लेख में इन्होंने शाहजहाँ और औरंगजेब के शासनकाल को शामिल किया गया है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: अब्दुर रज्जाक • समरकंदी • फ़ारसी विद्वान, तिमुरिड | **प्रमुख तिथियाँ/कालखंड:** 645 ई, 695 ई, 957 ई, 1292, 1294

जीन बैप्टिस्ट टैवर्नियर फ्रांसीसी यात्री

(जौहरी) 1638-1663 ई. शाहजहाँ इसने “ट्रैवल्स इन इंडिया" लिखा।

ओटोमन साम्राज्य के साथ व्यापार के बारे में बताता है।

उन्होंने छह बार भारत का दौरा किया।

निकोलो मनूची इतालवी चिकित्सक और दार्शनिक 1653-1708 ई. मुगल साम्राज्य इसकी पुस्तक “स्टोरिया-डो-मोगोर" है जिसे मुगल दरबार का सबसे विस्तृत विवरण माना जाता है।

फ्रेंकोइस बर्नियर फ़्रांसीसी चिकित्सक और दार्शनिक 1656-1668 ई. मुगल साम्राज्य यह राजकुमार दाराशिकोह के चिकित्सक के रूप में मुगल दरबार से निकटता से जुड़ा था और इसे औरंगजेब के दरबार में एक चिकित्सक के रूप में रखा गया था।

जीन डे थेवेनॉट फ्रांसीसी यात्री 1666 ई. मुगल साम्राज्य अहमदाबाद, कैम्बे, औरंगाबाद और गोलकुंडा जैसे शहरों का विवरण दिया भारत में महत्त्वपूर्ण भक्ति आंदोलन भक्ति आंदोलन संस्थापक/प्रमुख संत प्रमुख शिक्षाएँ क्षेत्र/अवधि महत्त्व प्रमुख ग्रंथ अलवार और नयनार अलवार (वैष्णव) और नयनार (शैव) कविता और संगीत के माध्यम से विष्णु या शिव की भक्ति। व्यक्तिगत श्रद्धा एवं भक्ति पर बल।

तमिलनाडु, छठी-नौवीं शताब्दी ई.

दक्षिण भारत में भक्ति

आंदोलन की नींव।

तिरुवाय्मोली (नम्मालवार द्वारा), तेवरम (नयनमार द्वारा) संत एकनाथ संत एकनाथ, तुकाराम, ज्ञानेश्वर विठोबा (भगवान विष्णु का एक रूप) की भक्ति, कविता, गायन और सेवा के माध्यम से भक्ति पर ध्यान केंद्रित करना।

महाराष्ट्र, 15वीं-17वीं — शताब्दी

पूजा में समुदाय, समानता और सादगी पर जोर।

अभंग (तुकाराम द्वारा), ज्ञानेश्वरी (ज्ञानेश्वर द्वारा) रामानुज रामानुज (12वीं शताब्दी ई.) विष्णु, विशेषकर भगवान रंगनाथ की भक्ति की वकालत की। समर्पण (शरणागति) और व्यक्तिगत सेवा के माध्यम से भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया।

तमिलनाडु, 12वीं

शताब्दी ई.

विशिष्टाद्वैत वेदांत

दर्शन का विकास।

श्री भाष्य, भगवद गीता

(टीका), वेदांत कबीर कबीर (15वीं शताब्दी ई.) निराकार ईश्वर के प्रति समर्पण और सामाजिक समानता को बढ़ावा देते हुए, औपचारिक धार्मिक सीमाओं को पार करने का प्रयास किया गया।

उत्तर भारत, 15वीं — शताब्दी ई.पू — इस्लामी और हिंदू — तत्वों का मिश्रण करने — वाला एक समन्वित

आंदोलन।

बीजक, साखी

भास्कराचार्य भास्कराचार्य (12वीं शताब्दी ई.) भजनों और गीतों के माध्यम से भक्ति पर ध्यान केंद्रित किया गया, जिसमें भगवान के साथ व्यक्तिगत संबंध पर जोर दिया गया।

गुजरात, 12वीं

शताब्दी ई.पू.

ईश्वर के साथ व्यक्तिगत

संबंध के विचार पर जोर देने के लिए जाने जाते हैं।

संस्कृत भजन

गुरु नानक गुरु नानक (16वीं शताब्दी ई.) एक अद्वितीय, निराकार ईश्वर की भक्ति। समानता, सामाजिक न्याय और निस्वार्थ सेवा पर जोर।

पंजाब, 15वीं शताब्दी

ई.

सिख धर्म के संस्थापक, सभी धर्मों की एकता को बढ़ावा देने वाले।

गुरु ग्रंथ साहिब

मीराबाई मीराबाई (16वीं शताब्दी ई.) कृष्ण के प्रति भक्ति, अक्सर उनके प्रेम और समर्पण के भावपूर्ण गीतों में व्यक्त होती है।

राजस्थान, 16वीं

शताब्दी ई.

राधा-कृष्ण भक्ति की समर्थक, सामाजिक मानदंडों को चुनौती भजन, पदावली रविदास रविदास (15वीं शताब्दी ई.) जातिगत ऊं च-नीच को खारिज करते हुए भगवान राम की भक्ति और सामाजिक समानता पर ध्यान केंद्रित किया।

उत्तर भारत, 15वीं

शताब्दी ई.

जातिगत समानता और कर्मकांड के स्थान पर भक्ति की वकालत।

शब्द (Shabads), रविदास के भजन तुलसीदास तुलसीदास (16वीं शताब्दी ई.) भगवान राम के प्रति भक्ति, रामचरितमानस के लेखक जिसने उत्तर भारत में राम पूजा को लोकप्रिय बनाया।

उत्तर भारत, 16वीं

शताब्दी ई.

उनके कार्य ने भारत में भक्ति आंदोलन के केंद्र में राम के प्रति समर्पण को मजबूत किया।

रामचरितमानस, हनुमान — चालीसा

लिंगायत आंदोलन बसव, अल्लामा प्रभु, चन्नाबसव सर्वोच्च देवता के रूप में शिव की भक्ति, पारंपरिक जाति व्यवस्था को अस्वीकार करना और व्यक्तिगत पूजा पर बल देना।

कर्नाटक, 12वीं

शताब्दी ई.

संपूर्ण कर्नाटक में शिव

को इष्टलिंग (व्यक्तिगत देवता) के रूप में केंद्रित करना।

वचन (बसव, अल्लामा प्रभु द्वारा) शून्य संपदाने भारत के महत्त्वपूर्ण सूफी संप्रदाय सिलसिले का नाम संस्थापक प्रमुख विशेषताएँ प्रसिद्ध केंद्र/स्थान चिश्तिया सिलसिला ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती प्रेम, सहिष्णुता और मानवता की सेवा पर ध्यान केंद्रित करता है। अपनी सरल और सुलभ प्रथाओं के लिए जाना जाता है।

अजमेर (राजस्थान), दिल्ली, फतेहपुर — सीकरी

कादरिया सिलसिला शेख अब्दुल कादिर जिलानी भक्ति, आध्ययात्मिक शुद्धि और ध्यान पर जोर देता है।

ईश्वर और समुदाय दोनों के साथ अपने संबंध के लिए जाना जाता है।

बगदाद, दिल्ली, लाहौर

सुहरावर्दिया सिलसिला शेख अबू अल-नजीब अल-सुहरावर्दी आंतरिक अनुशासन और आध्ययात्मिक प्रशिक्षण पर ध्यान देना। दिव्य प्रकाश (नूर) की अवधारणा को बढ़ावा देता है।

बंगाल, दिल्ली, पटना

नक्शबंदिया सिलसिला बहाउद्दीन नक्शबंदी एक मौन ध्यान अभ्यास, दैनिक जीवन में ईश्वरका स्मरण (ज़िक्र) पर बल देता है।

कश्मीर, दिल्ली, बुखारा

मेवलिया सिलसिला जलालुद्दीन रूमी (तुर्की में जन्मे) आध्ययात्मिक परमानंद और ईश्वर के साथ मिलन तक पहुंचने के तरीके के रूप में चक्रीय नृत्य (सेमा) पर ध्यान केंद्रित करना।

इस्तांबुल, दिल्ली, अजमेर

अशरफिया सिलसिला शेख अशरफ जहाँगीर सेमनानी सुहरावर्दिया की एक शाखा, यह सिलसिला प्रेम, ज्ञान और धार्मिक सद्भाव पर बल देता है।

दिल्ली, बाराबंकी (उत्तर प्रदेश), बदायूँ

(उत्तर प्रदेश) फैयाजिया सिलसिला शेख फैयाजुद्दीन शाह कादरी कादरिया औरचिश्तिया परंपराओं का मिश्रण, व्यक्तिगत धर्मपरायणता के विकास पर ध्यान केंद्रित करता है।

बंगाल, उत्तर प्रदेश, देवबंद

कादरिया सिलसिला शेख इब्राहिम अल-कादरी आंतरिक शुद्धि, ईश्वर की याद और पैगंबर मुहम्मद (PBUH) के प्रेम भाव पर ध्यान केंद्रित करता है।

गुजरात, आंध्र प्रदेश, असम

रिफैया सिलसिला शेख अहमद अल-रिफ़ाई यह ध्यान की अपनी प्रथाओं और ईश्वर के रहस्यमय ज्ञान प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है।

बंगाल, उत्तर प्रदेश

संकल्पनात्मक संरचना एवं मुख्य घटक आरेख: राजस्थान, 16वीं

1. **राजस्थान, 16वीं**
2. **उत्तर भारत, 15वीं**
3. **उत्तर भारत, 16वीं**
4. **रामचरितमानस, हनुमान**

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — राजस्थान, 16वीं

मुख्य परीक्षा दृष्टि: रिफैया सिलसिला शेख अहमद अल-रिफ़ाई यह ध्यान की अपनी प्रथाओं और ईश्वर के रहस्यमय ज्ञान प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जाना जाता है।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: राजस्थान, 16वीं • उत्तर भारत, 15वीं • उत्तर भारत, 16वीं • रामचरितमानस, हनुमान • चालीसा

दिल्ली के सात शहर — नाम अवधि महत्त्व उल्लेखनीय विशेषताएँ

किला राय पिथौरा 10वीं सदी पृथ्वीराज चौहान द्वारा स्थापित। वर्तमान समय का पुराना किला।

पृथ्वीराज के पूर्वजों ने तोमर राजपूत को हराकर दिल्ली पर अधिकार कर किया था जिन्हें दिल्ली की स्थापना का श्रेय दिया जाता है। पृथ्वीराज ने लाल कोट से जोड़कर किले का विस्तार किया।

महरौली 12वीं सदी गुलाम वंश कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित सिरी 14 वीं शताब्दी अलाउद्दीन खिलजी द्वारा निर्मित। संक्षिप्त और सुदृढ शहर। विशेषताओं में अलाई दरवाजा और हौज खास (एक जलाशय) सम्मिलित हैं।

तुगलकाबाद 14 वीं शताब्दी गयासुद्दीन तुगलक द्वारा निर्मित। महत्त्वपूर्ण लेकिन अंततः जल की कमी के कारण छोड़ दिया गया। अपनी विशाल किलेबंदी के लिए जाना जाता है।

फिरोजाबाद 14 वीं शताब्दी फ़िरोज़ शाह तुगलक द्वारा निर्मित। दिल्ली के दक्षिण में स्थित है। अपनी व्यापक सिंचाई और जलकार्यों के लिए जाना जाता है।

शेरगढ़/दीन पनाह/पुराना किला 16वीं सदी शेर शाह सूरी 1540 में शेरशाह ने हुमायूँ से दिल्ली छीनने के बाद इसका निर्माण कराया था शाहजहाँबाद 17वीं सदी शाहजहाँ द्वारा निर्मित। वर्तमान पुरानी दिल्ली।

इसमें लाल किला, जामा मस्जिद और चाँदनी चौक जैसी प्रतिष्ठित संरचनाएँ सम्मिलित हैं।

महत्त्वपूर्ण जी आई टैग्स (GI TAGS) की सूची

उत्पाद का नाम श्रेणी राज्य/क्षेत्र विवरण दुर्गी पत्थर की नक्काशी हस्तशिल्प आंध्र प्रदेश मूर्तियों और सजावटी वस्तुओं के लिए अद्वितीय मुलायम चूना पत्थर की नक्काशी का उपयोग किया जाता है।

एटिकोप्पका खिलौने हस्तशिल्प आंध्र प्रदेश मुलायम लकड़ी और प्राकृतिक रंगों से निर्मित; इन्हें “लाख खिलौने" (Lac Toys) भी कहा जाता है।

चक्षेसंग शाल हस्तशिल्प नगालैंड पारंपरिक हस्तनिर्मित शॉल, जिसमें ज्यामितीय पैटर्न और सांस्कृतिक रूपांकनों का समावेश है।

तवल्लोहपुआन हस्तशिल्प मिजोरम मिज़ो पारंपरिक वेशभूषा के लिए उपयोग किया जाने वाला एक भारी, टिकाऊ वस्त्र।

मिज़ो पुआंचेई हस्तशिल्प मिजोरम यह एक जीवंत, हाथ से बुना हुआ कपड़ा है जिसका उपयोग मिज़ो समारोहों और त्यौहारों में किया जाता है।

सोहराई खोवर पेंटिंग हस्तशिल्प झारखंड यह प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते हुए जनजातीय भित्ति चित्र कला, सांस्कृतिक विषयों को दर्शाती है।

तेलिया रुमाल हस्तशिल्प तेलंगाना प्राकृतिक वनस्पति रंगों का उपयोग करके ज्यामितीय पैटर्न में रंगे गए हस्त निर्मित सूती वस्त्र।

कलमकारी पेंटिंग हस्तशिल्प आंध्र प्रदेश हाथ से चित्रित वस्त्रों पर जटिल पुष्प और पौराणिक डिजाइन होते हैं।

चन्नापटना खिलौने हस्तशिल्प कर्नाटक वनस्पति रंगों और लाह कोटिंग का उपयोग करके तैयार किए गए पारंपरिक लकड़ी के खिलौने।

गमोसा हस्तशिल्प असम सांस्कृतिक और औपचारिक महत्त्व वाला पारंपरिक असम का हाथ से बुना तौलिया।

तंजावुर चित्रकला हस्तशिल्प तमिलनाडु समृद्ध स्वर्ण परत और पौराणिक विषयों के साथ पारंपरिक चित्रकला।

चेरियल स्क्रॉल पेंटिंग हस्तशिल्प तेलंगाना पौराणिक कहानियों को जीवंत रंगों में प्रदर्शित करने वाले हाथ से चित्रित स्क्रॉल।

टोडा कढ़ाई हस्तशिल्प तमिलनाडु टोडा जनजातियों द्वारा जटिल रूपांकनों वाली हाथ से सिली गई कढ़ाई।

पाटन पटोला हस्तशिल्प गुजरात 'डबल-इकात' हाथ से बुनी रेशम साड़ियाँ, जो अपने जीवंत पैटर्न के लिए जानी जाती हैं।

निर्मल खिलौने हस्तशिल्प तेलंगाना भारतीय रूपांकनों और फ़ारसी कला शैलियों के अनूठे मिश्रण के साथ लकड़ी के खिलौने।

पट्टचित्र पेंटिंग हस्तशिल्प ओडिशा महाभारत जैसे महाकाव्यों को चित्रित करने वाली जटिल डिजाइन वाली पारंपरिक स्क्रॉल पेंटिंग।

फुलकारी कढ़ाई हस्तशिल्प पंजाब, हरियाणा

और राजस्थान रंगीन पुष्प पैटर्न वाली पारंपरिक कढ़ाई, जिसका उपयोग शॉल और दुपट्टे पर किया जाता है।

आरणमुल कनाटी हस्तशिल्प केरल सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्त्व वाले अद्वितीय हस्तनिर्मित धातु दर्पण।

कपडागंडा शॉल हस्तशिल्प ओडिशा कोंड जनजाति (PVTGs) की महिलाओं द्वारा बुनाई और कढ़ाई किया गया लांजिया सौरा पेंटिंग हस्तशिल्प ओडिशा घर की मिट्टी की दीवारों पर चित्रित बाह्य भित्ति चित्र।

इदु मिश्मी टेक्सटाइल्स/कपड़ा हस्तशिल्प अरुणाचल प्रदेश जीवंत रंग, जटिल डिजाइन और प्रतीकात्मक पैटर्न, टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं, जानवरों की आकृतियाँ, अमूर्त प्रतीक, हीरे और ग्रिड।

IUC गहन अध्ययन एवं परीक्षा सारांश कैप्सूल — फुलकारी कढ़ाई हस्तशिल्प पंजाब, हरियाणा

मुख्य परीक्षा दृष्टि: इदु मिश्मी टेक्सटाइल्स/कपड़ा हस्तशिल्प अरुणाचल प्रदेश जीवंत रंग, जटिल डिजाइन और प्रतीकात्मक पैटर्न, टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएं, जानवरों की आकृतियाँ, अमूर्त प्रतीक, हीरे और ग्रिड।

इस पृष्ठ के प्रमुख की-वर्ड्स: फुलकारी कढ़ाई हस्तशिल्प पंजाब, हरियाणा

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 1: मंदिर स्थापत्य कला: नागर, द्रविड़ एवं वेसर शैली का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय वास्तुकला का विकास, क्षेत्रीय विशेषताएँ एवं परीक्षा उपयोगी मुख्य अंतर

मंदिर स्थापत्य की तीनों प्रमुख शैलियों की संरचनात्मक विशेषताएँ

• नागर शैली (उत्तर भारत)

हिमालय से विंध्य तक; रेखीय/वक्ररेखीय शिखर (लतिना, फमसाना, वल्लभी), आमलक व कलश, चहारदीवारी का अभाव, पंचायतन विन्यास। उदाहरण: खजुराहो, कोणार्क, मोढेरा।

• द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत)

कृष्णा से कन्याकुमारी तक; पिरामिडनुमा विमान (मंजिला संरचना), भव्य प्रवेश द्वार 'गोपुरम', परिसर की चारदीवारी, जल कुंड (कल्याणी) एवं द्वारपाल। उदाहरण: तंजावुर बृहदेश्वर।

• वेसर शैली (दक्कन/मिश्रित)

विंध्य से कृष्णा नदी के मध्य; नागर के शिखर और द्रविड़ के विमान का समन्वय, तारांकित (Stellate) भू-योजना, सूक्ष्म अलंकरण। उदाहरण: होयसल (हलेबिदु, बेलूर) एवं चालुक्य मंदिर।

• क्षेत्रीय उप-शैलियाँ

ओडिशा शैली (देउल व जगमोहन), सोलंकी शैली (सूर्य कुंड/बावड़ी), नायक शैली (विशाल गलियारे — मीनाक्षी मंदिर), विजयनगर शैली (कल्याण मंडप व अम्मन श्राइन)।

तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

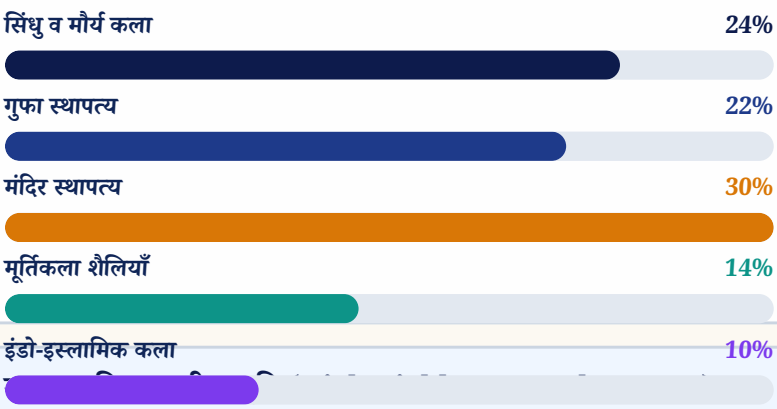
तुलना का आधार	नागर शैली (उत्तर भारत)	द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत)	वेसर शैली (दक्कन क्षेत्र)
भौगोलिक विस्तार	हिमालय से विंध्य पर्वत श्रृंखला तक	कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक	विंध्य से कृष्णा नदी के मध्य (कर्नाटक क्षेत्र)
मुख्य शिखर/शीर्ष	वक्ररेखीय 'शिखर' (आमलक एवं कलश युक्त)	पिरामिडनुमा बहुमंजिला 'विमान' (स्तूपिका युक्त)	अर्ध-गोलाकार या तारांकित मिश्रित शिखर

तुलना का आधार	नागर शैली (उत्तर भारत)	द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत)	वेसर शैली (दक्कन क्षेत्र)
प्रवेश द्वार एवं प्राचीर	सामान्य प्रवेश द्वार; ऊँची चारदीवारी नहीं	भव्य एवं अलंकृत 'गोपुरम' तथा ऊँची प्राचीर	खुले मंडप, अलंकृत स्तंभ एवं मिश्रित द्वार
गर्भगृह के द्वारपाल	गंगा एवं यमुना नदियों की आकृतियाँ	मिथुन एवं भयावह द्वारपाल की मूर्तियाँ	शैव एवं वैष्णव अलंकृत द्वारपाल
जल स्रोत (कुंड)	अनिवार्य नहीं (अपवाद: मोढेरा सूर्य मंदिर)	मंदिर परिसर के भीतर जल कुंड अनिवार्य	स्थानीय स्थापत्य के अनुसार वैकल्पिक
प्रमुख उदाहरण	कंदरिया महादेव, लिंगराज, जगन्नाथ मंदिर	बृहदेश्वर (तंजावुर), गंगईकोंडचोलपुरम	चेन्नाकेशव (बेलूर), होयसलेश्वर (हलेबिदु)

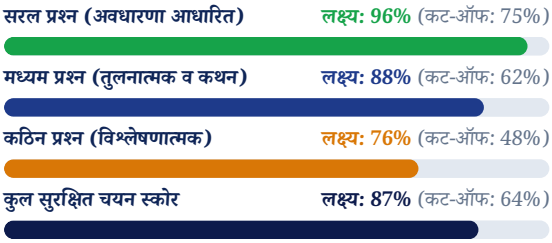
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: मंदिर स्थापत्य कला: नागर, द्रविड़ एवं वेसर शैली का तुलनात्मक अध्ययन

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला से पूछे गए प्रश्नों का विषयवार अनुपात (%)



कठिनाई स्तर के अनुसार लक्ष्य सटीकता एवं कट-ऑफ (%)



परीक्षा तथ्य #1: ओडिशा शैली में गर्भगृह को 'रेखा देउल' और मंडप को 'जगमोहन' कहा जाता है; कोणार्क सूर्य मंदिर को 'ब्लैक पैगोडा' और जगन्नाथ पुरी को 'व्हाइट पैगोडा' कहते हैं।

परीक्षा तथ्य #2: चोल शासक राजराज प्रथम द्वारा 1010 ई. में निर्मित तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर पूर्णतः ग्रेनाइट से निर्मित विश्व का पहला मंदिर है।

परीक्षा तथ्य #3: काकतीय वंश द्वारा निर्मित रामप्पा मंदिर (तेलंगाना, 39वाँ यूनेस्को स्थल) में पानी पर तैरने वाली हल्की छिद्रयुक्त ईंटों (Sandbox Technique) का प्रयोग हुआ है।

परीक्षा तथ्य #4: होयसल मंदिरों (कर्नाटक — बेलूर, हलेबिदु, सोमनाथपुर) को 2023 में भारत के 42वें यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी गई।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल व नदियाँ: ट्रिक: 'लोभी मौसी का हरा कंघा रमा ने ले लिया' — लोथल (भोगवा), मोहनजोदड़ो (सिंधु), हड़प्पा (रावी), कालीबंगन (घग्गर), रंगपुर (मादर), रोपड़ (सतलज)।

2. सारनाथ अशोक स्तंभ के 4 पशु (दिशा अनुसार): ट्रिक: 'घोड़ा पश्चिम, हाथी पूरब, बैल दक्षिण, शेर उत्तर' — अबेकस पर 24 तीलियों वाला धर्मचक्र और मुंडक उपनिषद से 'सत्यमेव जयते' उत्कीर्ण है।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 2: भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला परंपरा: प्रागैतिहासिक से आधुनिक काल तक

गांधार-मथुरा-अमरावती कला, अजंता-बाघ भित्ति चित्र एवं राजपूत-पहाड़ी-मुगल लघु चित्रकला

भारतीय चित्रकला का ऐतिहासिक वर्गीकरण एवं प्रमुख शैलियाँ

• प्रागैतिहासिक शैलचित्र

भीमबेटका (म.प्र., विंध्य श्रेणी, खोज: वी.एस. वाकणकर 1957-58); उच्च पुरापाषाण से मध्यपाषाण काल; खनिज रंग (गेरू/हेमेटाइट लाल व सफेद), सामूहिक आखेट व नृत्य दृश्य।

• शास्त्रीय भित्ति चित्र (Murals)

अजंता (गुफा 1, 2, 16, 17 — पद्मपाणि व वज्रपाणि बोधिसत्व, मरणासन्न राजकुमारी), बाघ (म.प्र.), बादामी (कर्नाटक), सित्तनवासल (तमिलनाडु, जैन), लेपाक्षी (आंध्र)।

• मुगल एवं दक्कनी लघु चित्रकला

हुमायूँ (मीर सैयद अली व अब्दुस्समद), अकबर (तस्वीरखाना, हम्जानामा, दसवंत व बसावन), जहाँगीर (चित्रकला का स्वर्णकाल, उस्ताद मंसूर — पक्षी विशेषज्ञ, अबुल हसन)।

• राजपूत एवं पहाड़ी शैलियाँ

मेवाड़ (साहिबदीन, रागमाला), किशनगढ़ (निहालचंद — 'बनी-ठनी', राजा सावंत सिंह), बूंदी-कोटा, बसोहली (देवीदास), कांगड़ा (संसार चंद, गीता गोविंद व नल-दमयंती)।

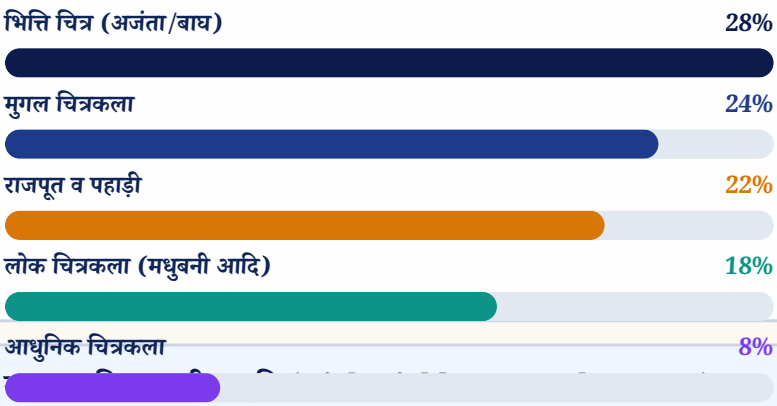
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

विशेषता	गांधार कला शैली	मथुरा कला शैली	अमरावती कला शैली
बाह्य प्रभाव	यूनानी-रोमन (हेलेनिस्टिक/इंडो-ग्रीक) प्रभाव	पूर्णतः स्वदेशी भारतीय कला परंपरा	पूर्णतः स्वदेशी (दक्षिण भारतीय शैली)
प्रयुक्त सामग्री	नीला-धूसर बलुआ पत्थर एवं बाद में स्टुको (चूना)	चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर (Spotted Red Sandstone)	सफेद संगमरमर (White Marble/ Limestone)
धार्मिक संबद्धता	केवल बौद्ध धर्म (महायान परंपरा)	बौद्ध, जैन और हिंदू तीनों धर्मों की मूर्तियाँ	मुख्यतः बौद्ध धर्म (जातक कथाओं का अंकन)
संरक्षक राजवंश	कुषाण वंश (विशेषकर कनिष्क)	कुषाण वंश	सातवाहन एवं इक्ष्वाकु राजवंश
बुद्ध की प्रतिमा	लहरदार बाल, मांसल शरीर, आध्यात्मिक मुद्रा, मूँछें	प्रसन्न मुद्रा (अभय मुद्रा), मुंडित सिर, पद्मासन	एकल मूर्ति के स्थान पर कथात्मक पैनल (Narrative Art)
प्रमुख केंद्र	तक्षशिला, बामियान, पेशावर, जलालाबाद	मथुरा, सोंख, कंकाली टीला (जैन)	अमरावती, नागार्जुनकोंडा (कृष्णा-गोदावरी घाटी)

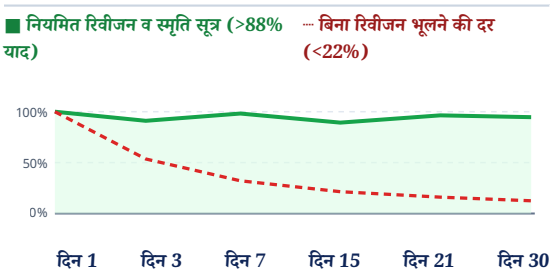
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला परंपरा: प्रागैतिहासिक से आधुनिक काल तक

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

भारतीय चित्रकला एवं लोक कला से परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का वितरण (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ



परीक्षा तथ्य #1: चोल कालीन कांस्य नटराज प्रतिमा 'मधुच्छिष्ट विधान' (Lost-Wax Technique) से निर्मित है; इसमें शिव के दाएँ ऊपरी हाथ में डमरू (सृजन) और बाएँ ऊपरी हाथ में अग्नि (विनाश) है।

परीक्षा तथ्य #2: प्रमुख लोक चित्रकलाएँ (GI Tag): मधुबनी/मिथिला (बिहार — अरिपन, कोहबर), पट्टचित्र (ओडिशा), कलमकारी (आंध्र — श्रीकालहस्ती व मछलीपट्टनम), वारली (महाराष्ट्र), फड़ (राजस्थान), थंगका (सिक्किम/लद्दाख)।

परीक्षा तथ्य #3: राजा रवि वर्मा को आधुनिक भारतीय चित्रकला का जनक माना जाता है ('शकुंतला', 'हंस और दमयंती'); अवनींद्रनाथ टैगोर ने 'बंगाल स्कूल' और 'भारत माता' चित्र की रचना की।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य एवं राज्य: ट्रिक: 'भरत नाट्, गान करना, पूरी आदिल, कथक उत्तर, कली-मोहिनी केरल, मणि-सत्र असम' — भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कुचिपुड़ी (आंध्र), कथक (उ.प्र.), कथकली व मोहिनीअट्टम (केरल), मणिपुरी (मणिपुर), ओडिसी (ओडिशा), सत्रिया (असम)।

2. षड्दर्शन एवं उनके प्रवर्तक: ट्रिक: 'सांख्य कपिल, योग पतंजलि, न्याय गौतम, वैशेषिक कणाद, मीमांसा जैमिनी, वेदांत बादरायण' — भारतीय आस्तिक दर्शन की 6 मूल शाखाएँ।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 3: भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत, रंगमंच एवं कठपुतली कला

भरतमुनि का नाट्यशास्त्र, 8 शास्त्रीय नृत्य, हिंदुस्तानी व कर्नाटक संगीत तथा पारंपरिक लोक नाट्य

भारतीय प्रदर्शन कला के तीन मूलभूत तत्व एवं शास्त्रीय आधार

• नाट्यशास्त्र एवं अभिनय के 4 अंग

भरतमुनि कृत 'नाट्यशास्त्र' (पंचम वेद): 1. आंगिक (शारीरिक मुद्राएँ), 2. वाचिक (संवाद/गीत), 3. आहार्य (वेशभूषा व शृंगार), 4. सात्विक (मनोभाव व नव रस)।

• तांडव बनाम लास्य एवं नृत्य के 3 भाग

तांडव (शिव — ओज, शक्ति व लय) और लास्य (पार्वती — कोमलता, लालित्य व भाव)। नृत्य के तीन घटक: नृत्त (शुद्ध ताल व पद-संचालन), नृत्य (भाव व मुद्रा), नाट्य (नाटकीय कथा)।

• हिंदुस्तानी बनाम कर्नाटक संगीत

हिंदुस्तानी (उत्तर भारत — ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, तराना, ग़ज़ल; समय व ऋतु आधारित राग); कर्नाटक (दक्षिण भारत — कृति आधारित, 72 मेलकर्ता राग, पुरंदरदास व त्रिमूर्ति: त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर, श्यामा शास्त्री)।

• भारत की कठपुतली शैलियाँ

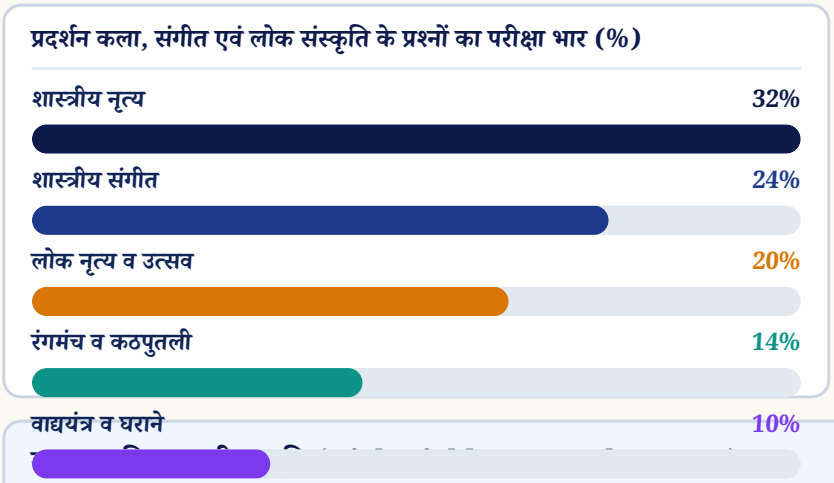
1. धागा/सूत्र कठपुतली: कठपुतली (राजस्थान), कुंदई (ओडिशा), गोम्बेयट्टा (कर्नाटक), बोम्मलट्टम (तमिलनाडु)। 2. छाया: तोगलु गोम्बेयट्टा, रावणछाया, थोलपावकुथु। 3. छड़: पुतुल नाच, यमपुरी। 4. दस्ताना: पावाकुथु (केरल)।

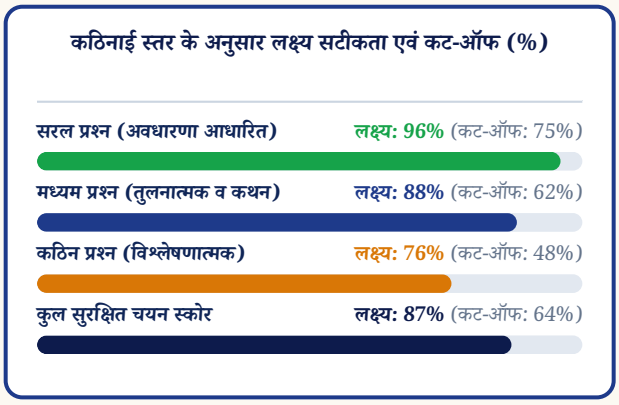
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

शास्त्रीय नृत्य	संबंधित राज्य	प्रमुख विशेषताएँ एवं तत्व	प्रमुख कलाकार
भरतनाट्यम	तमिलनाडु	सबसे प्राचीन; एकहार्य शैली, 'अलारिपु' से आरंभ व 'तिल्लाना' पर समापन, अग्नि नृत्य	रुक्मिणी देवी अरुंडेल, यामिनी कृष्णमूर्ति, पद्मा सुब्रह्मण्यम
कुचिपुड़ी	आंध्र प्रदेश	सिद्धेंद्र योगी; 'तरंगम' (पीतल की थाली के किनारों पर नृत्य व सिर पर जल पात्र), भागवत पुराण	राधा और राजा रेड्डी, यामिनी कृष्णमूर्ति, वेम्पति चिन्ना सत्यम
कथकली	केरल	रामायण-महाभारत आधारित; चेहरे का रंगीन शृंगार (पच्चा=हरा/सात्विक, कत्ती=खलनायक), नेत्र-भौंह संचालन	कलामंडलम गोपी, कलामंडलम रमणकुट्टी नायर, रीता गांगुली
मोहिनीअट्टम	केरल	एकल महिला नृत्य; लास्य प्रधान, सफेद व सुनहरी बॉर्डर वाली 'कसावु' साड़ी, वायु तत्व का प्रतीक	कल्याणी अम्मा, सुनंदा नायर, वैजयंतीमाला, हेमा मालिनी
ओडिसी	ओडिशा	महारी व गोतिपुआ परंपरा; 'त्रिभंग' और 'चौक' मुद्रा, गीत गोविंद (जयदेव) पर आधारित, जल तत्व	केलुचरण महापात्र, सोनल मानसिंह, संजुक्ता पाणिग्रही
मणिपुरी	मणिपुर	रासलीला (राधा-कृष्ण भक्ति), संकीर्तन व पुंग चोलोम, घुँघरू नहीं बाँधे जाते, नागबंध मुद्रा	झावेरी बहनें (दर्शना, नयना, रंजना, सुवर्णा), गुरु बिपिन सिंह
कथक	उत्तर प्रदेश	कथिक (कथावाचक) परंपरा; जुगलबंदी, तत्कार, चक्कर, ठुमरी व दरबारी संरक्षण (वाजिद अली शाह)	पंडित बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, शोभना नारायण
सत्रिया	असम	15वीं सदी में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा वैष्णव मठों (सत्र) में विकसित; अंकीया नाट व बोरगीत, खोल वाद्य	जतिन गोस्वामी, घनकांत बोरा, इंदिरा पी.पी. बोरा

डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: भारतीय शास्त्रीय नृत्य, संगीत, रंगमंच एवं कठपुतली कला

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र





परीक्षा तथ्य #1: संगीत नाटक अकादमी (स्थापना 1953) द्वारा वर्तमान में 8 नृत्यों को शास्त्रीय नृत्य का दर्जा प्राप्त है; संस्कृति मंत्रालय ने 'छऊ' को भी अर्ध-शास्त्रीय/शास्त्रीय सूची में जोड़ा है।

परीक्षा तथ्य #2: भारत के प्रमुख लोक नाट्य (Theatre): भांड पाथेर (कश्मीर), स्वांग (हरियाणा), नौटंकी (उत्तर प्रदेश), माच (मध्य प्रदेश), भवाई (गुजरात), जात्रा (बंगाल/ओडिशा), अंकिया नाट (असम), तमाशा (महाराष्ट्र), यक्षगान (कर्नाटक), तेरुक्कुत्तु (तमिलनाडु), मुडियेट्टु (केरल — यूनेस्को अमूर्त विरासत)।

परीक्षा तथ्य #3: वाद्ययंत्रों के 4 प्रकार (नाट्यशास्त्र): 1. तत वाद्य (तंतु/तार — वीणा, सितार, सरोद), 2. सुषिर वाद्य (फूँक/वायु — बाँसुरी, शहनाई), 3. अवनद्ध वाद्य (चमड़ा मढ़ा — तबला, पखावज, मृदंगम), 4. घन वाद्य (ठोस धातु/लकड़ी — मंजीरा, करताल, घटम)।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. बौद्ध संगीतियाँ: स्थान एवं शासक: ट्रिक: 'राजा-महाराजा आजा, वैशाख में सबका काल है, पटाओ मत आशिक, कुंवर जी कंगाल हैं' — 1. राजगृह (अजातशत्रु), 2. वैशाली (कालाशोक), 3. पाटलिपुत्र (अशोक), 4. कुंडलवन (कनिष्क)।

2. नागर मंदिर स्थापत्य के प्रमुख अंग: ट्रिक: 'जगती पर मंडप, गर्भगृह के ऊपर शिखर और आमलक पर कलश' — पंचायतन् शैली में मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा होता है (जैसे- खजुराहो कंदरिया महादेव)।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 4: भारतीय साहित्य, दर्शन, पंचांग एवं यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (अपडेटेड)

वैदिक-बौद्ध-जैन-संगम साहित्य, शास्त्रीय भाषाएँ (2024 अपडेट) एवं नवीनतम यूनेस्को धरोहर सूची

भारतीय साहित्यिक परंपरा एवं नवीनतम शास्त्रीय भाषाएँ (Classical Languages)

• वैदिक एवं संस्कृत साहित्य

ऋग्वेद (10 मंडल, 1028 सूक्त), सामवेद (भारतीय संगीत का मूल), यजुर्वेद (यज्ञ विधि — शुक्ल व कृष्ण), अथर्ववेद (औषधि व लौकिक तंत्र)। कालिदास, भास, शूद्रक, विशाखदत्त, बाणभट्ट व कल्हण ('राजतरंगिणी')।

• पाली एवं प्राकृत साहित्य (बौद्ध व जैन)

त्रिपिटक (पाली): सुत्त पिटक (बुद्ध के उपदेश), विनय पिटक (संघ के नियम), अभिधम्म पिटक (दार्शनिक विश्लेषण — मोग्गलिपुत्त तिस्स)। जैन आगम (प्राकृत/अर्धमागधी): 12 अंग, 12 उपांग, भगवती सूत्र, कल्पसूत्र (भद्रबाहु)।

• संगम साहित्य (तमिल)

पांड्य शासकों के संरक्षण में मदुरै में 3 संगम; तोलकाप्पियम (व्याकरण), एट्टुथोकई (8 संकलन), पट्टुप्पाट्टु (10 गीत), महाकाव्य: शिलप्पादिकारम (इलांगो आदिगल) और मणिमेखलै (सीतलै सतनार)।

• 11 शास्त्रीय भाषाएँ (2024 अपडेट)

मूल 6 भाषाएँ: तमिल (2004), संस्कृत (2005), कन्नड़ (2008), तेलुगु (2008), मलयालम (2013), ओडिया (2014)। अक्टूबर 2024 में 5 नई भाषाएँ जुड़ीं: मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली (कुल 11)।

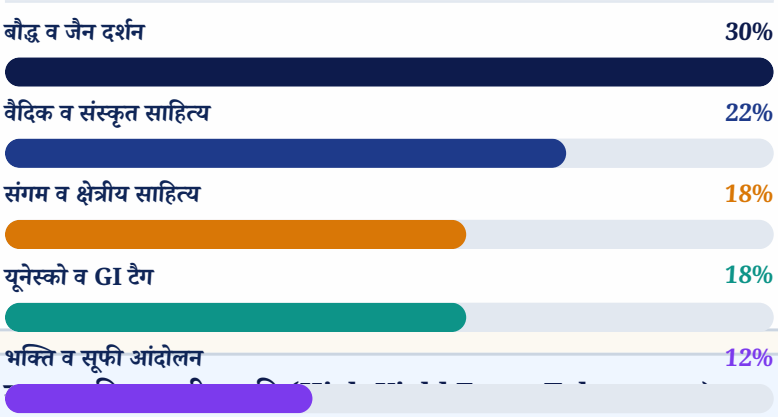
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

यूनेस्को स्थल / विरासत	राज्य / स्थान	वर्ष एवं श्रेणी	प्रमुख ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व
धोलावीरा (हड़प्पाकालीन नगर)	गुजरात (कच्छ)	2021 (40वाँ स्थल)	तीन भागों में विभाजित नगर, उन्नत जल प्रबंधन व विशाल शिलालेख
शांतिनिकेतन	पश्चिम बंगाल (बीरभूम)	2023 (41वाँ स्थल)	रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा 1901 में स्थापित आश्रम एवं विश्वभारती विश्वविद्यालय
होयसल के पवित्र मंदिर समूह	कर्नाटक (बेलूर, हलेबिदु, सोमनाथपुर)	2023 (42वाँ स्थल)	तारांकित वेसर स्थापत्य, सोपस्टोन (सेलखड़ी) पर सूक्ष्म नक्काशी
मोइदाम (अहोम शाही टीले)	असम (चराइदेव)	2024 (43वाँ स्थल)	अहोम राजवंश की शाही शवाधान प्रणाली (असम के पिरामिड)
गुजरात का गरबा नृत्य	गुजरात	2023 (15वीं अमूर्त विरासत)	नवरात्रि के दौरान शक्ति की आराधना में किया जाने वाला सामूहिक नृत्य
कोलकाता की दुर्गा पूजा	पश्चिम बंगाल	2021 (14वीं अमूर्त विरासत)	कला, संस्कृति और सामुदायिक समावेशन का भव्य उत्सव

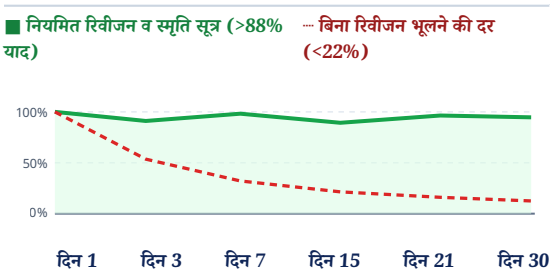
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: भारतीय साहित्य, दर्शन, पंचांग एवं यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (अपडेटेड)

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

साहित्य, धर्म-दर्शन एवं सांस्कृतिक विरासत से पूछे गए प्रश्नों का अनुपात (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ



परीक्षा तथ्य #1: भारत में अब कुल 43 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (35 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक, 1 मिश्रित — कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान) और 15 अमूर्त सांस्कृतिक विरासतें हैं।

परीक्षा तथ्य #2: अक्टूबर 2024 में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मराठी, पाली, प्राकृत, असमिया और बंगाली को शास्त्रीय भाषा (Classical Language) का दर्जा दिया, जिससे कुल शास्त्रीय भाषाओं की संख्या 6 से बढ़कर 11 हो गई है।

परीक्षा तथ्य #3: भारत का राष्ट्रीय पंचांग 'शक संवत' (78 ई., कनिष्क द्वारा प्रारंभ) पर आधारित है, जिसे 22 मार्च 1957 को ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ आधिकारिक रूप से अपनाया गया (पहला महीना: चैत्र)।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. अजंता बनाम एलोरा गुफाएँ: ट्रिक: 'अजंता केवल बौद्ध (29 गुफाएँ, वाघोरा नदी), एलोरा तीनों धर्म (34 गुफाएँ: 1-12 बौद्ध, 13-29 हिंदू, 30-34 जैन)' — राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने कैलाश मंदिर (गुफा 16) बनवाया।

2. गांधार बनाम मथुरा बनाम अमरावती कला: ट्रिक: 'गांधार नीली-धूसर ग्रीक-रोमन (कुषाण), मथुरा लाल बलुआ पत्थर स्वदेशी (तीनों धर्म), अमरावती सफेद संगमरमर कथात्मक (सातवाहन)'।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 5: भारतीय चित्रकला: प्रागैतिहासिक शैलचित्र से मुगल व पहाड़ी लघु चित्रकला तक

भीमबेटका, अजंता भित्तिचित्र, पाल-अपभ्रंश शैली, मुगल कारखाना एवं राजपूत-कांगड़ा कलम का तुलनात्मक अध्ययन

भारतीय चित्रकला के विकास के 4 प्रमुख ऐतिहासिक चरण

• 1. प्रागैतिहासिक शैलचित्र
भीमबेटका (म.प्र.), लखुडियार (उत्तराखंड); खनिज रंग (गेरू/हेमेटाइट); सामूहिक शिकार व नृत्य दृश्य।

• 2. शास्त्रीय भित्तिचित्र (Murals)
अजंता, बाघ, बादामी, सित्तनवासल व तंजौर; फ्रेस्को एवं टेम्पेरा तकनीक; जातक कथाओं का सजीव चित्रण।

• 3. मुगल लघु चित्रकला
हुमायूँ (मीर सैयद अली, अब्दुस्समद), अकबर (तस्वीरखाना, रज्मनामा), जहाँगीर (उस्ताद मंसूर, प्रकृति चित्रण का स्वर्णकाल)।

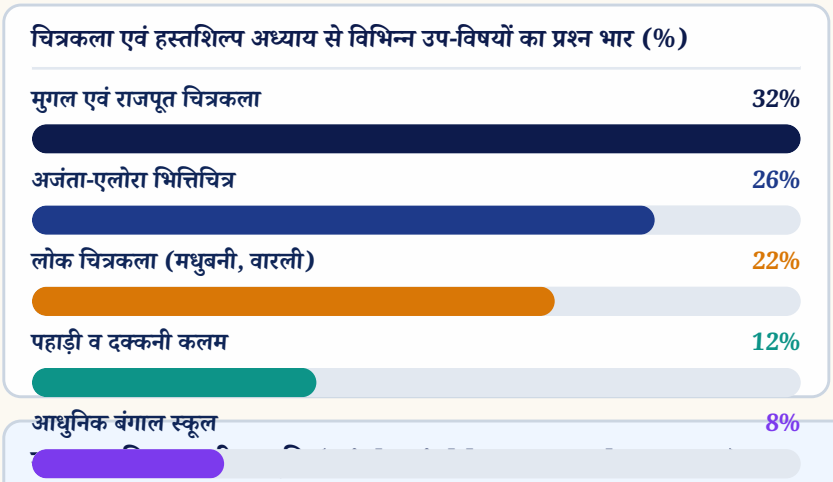
• 4. राजपूत एवं पहाड़ी शैली
किशनगढ़ (बणी-ठणी — निहाल चंद), बूंदी, मेवाड़ (साहिबदीन), बसोहली एवं कांगड़ा शैली (गीत-गोविंद व बारहमासा)।

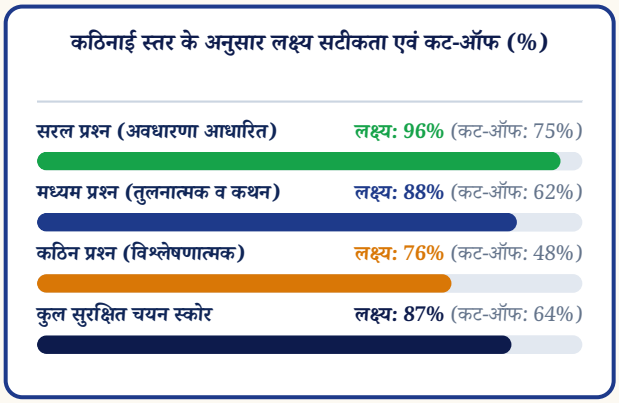
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

चित्रकला शैली	प्रमुख संरक्षक / काल	तकनीकी विशेषता एवं रंग	प्रमुख कृतियाँ / कलाकार
अजंता भित्तिचित्र	वाकाटक एवं गुप्त काल (2री श. ई.पू.–6ठी श. ई.)	टेम्पेरा व फ्रेस्को; लाल गेरू, नीला लाजवर्द (Lapis Lazuli)	पद्मपाणि व वज्रपाणि बोधिसत्व, मरणासन्न राजकुमारी (गुफा 16)
पाल लघु चित्रकला	पाल राजवंश (8वीं–12वीं शताब्दी, बंगाल-बिहार)	ताड़पत्र व कागज पर बौद्ध वज्रयान पांडुलिपियाँ; वक्र रेखाएँ	अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता; कलाकार: धीमान एवं वित्तपाल
जहाँगीरकालीन मुगल शैली	सम्राट जहाँगीर (1605–1627 ई.)	छवि चित्र (Portrait), पक्षी-वनस्पति चित्रण व अलंकृत हाशिए	उस्ताद मंसूर (साइबेरियन सारस, डोडो), अबुल हसन, बिशनदास
किशनगढ़ शैली (राजपूत)	राजा सावंत सिंह 'नागरीदास' (18वीं शताब्दी)	लंबी कमल-नयन आकृतियाँ, नुकीली ठुड्डी, राधा-कृष्ण प्रेम भाव	'बणी-ठणी' (भारतीय मोनालिसा) — चित्रकार मोरध्वज निहाल चंद
कांगड़ा शैली (पहाड़ी)	राजा संसार चंद (18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध)	कोमल प्राकृतिक रंग, शृंगार रस, नायिका भेद व प्रकृति चित्रण	जयदेव की 'गीत-गोविंद', बिहारी सतसई व नल-दमयंती चित्र शृंखला

डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: भारतीय चित्रकला: प्रागैतिहासिक शैलचित्र से मुगल व पहाड़ी लघु चित्रकला तक

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र





परीक्षा तथ्य #1: मधुबनी (मिथिला, बिहार) में चावल के पेस्ट और वनस्पति रंगों से अरिपन, कोहबर व धार्मिक चित्र बनाए जाते हैं; जगदम्बा देवी व सीता देवी इसकी प्रमुख कलाकार रही हैं।

परीक्षा तथ्य #2: कलमकारी (आंध्र प्रदेश) में श्रीकालहस्ती (मुक्तहस्त हिंदू पौराणिक चित्रण) और मछलीपट्टनम (ब्लॉक प्रिंटिंग) दो प्रमुख शैलियाँ प्रचलित हैं।

परीक्षा तथ्य #3: पटचित्र (ओडिशा) में जगन्नाथ एवं वैष्णव कथाओं को सूती कैनवास व ताड़पत्र पर उकेरा जाता है, जबकि 'फड़' (राजस्थान) में पाबूजी व देवनारायणजी की वीरगाथा चित्रित होती है।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. हिंदुस्तानी संगीत के प्रमुख घराने: ट्रिक: 'ग्वालियर सबसे प्राचीन, किराना स्वर-प्रधान (भीमसेन जोशी), आगरा नोम-तोम, पतियाला तान-प्रधान (बड़े गुलाम अली खाँ), बनारस ठुमरी (गिरिजा देवी)'।

2. यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (प्रमुख): ट्रिक: 'वैदिक जप, रामलीला, कुटियाट्टम, छऊ, कालबेलिया, संकीर्तन, नवरोज, कुंभ मेला, दुर्गा पूजा (2021) और गरबा नृत्य (2023)'।

विशेष अध्ययन मॉड्यूल 6: भारतीय संगीत, लोक नाट्य एवं यूनेस्को सांस्कृतिक धरोहर विश्लेषण

हिंदुस्तानी बनाम कर्नाटक संगीत, घराना परंपरा, प्रमुख लोक रंगमंच एवं भारत के 43 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नाट्य परंपरा के 4 स्तंभ

• 1. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

उत्तर भारत; ध्रुपद (तानसेन, डागर बंधु), ख्याल (अमीर खुसरो, ग्वालियर/किराना घराना), ठुमरी, टप्पा व तराना।

• 2. कर्नाटक शास्त्रीय संगीत

दक्षिण भारत; पुरंदरदास (पितामह); त्रिमूर्ति: त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार व श्यामा शास्त्री; कृति एवं रागम-तानम-पल्लवी।

• 3. प्रमुख लोक नाट्य (Folk Theatre)

भांड पाथेर (कश्मीर), स्वांग (हरियाणा), नौटंकी (उ.प्र.), माच (म.प्र.), जात्रा (बंगाल), भवाई (गुजरात), यक्षगान (कर्नाटक), तमाशा (महाराष्ट्र)।

• 4. यूनेस्को धरोहर एवं GI टैग शिल्प

43 मूर्त धरोहर स्थल (होयसल मंदिर समूह 42वाँ, मोइदाम असम 43वाँ - 2024) तथा 15 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्व।

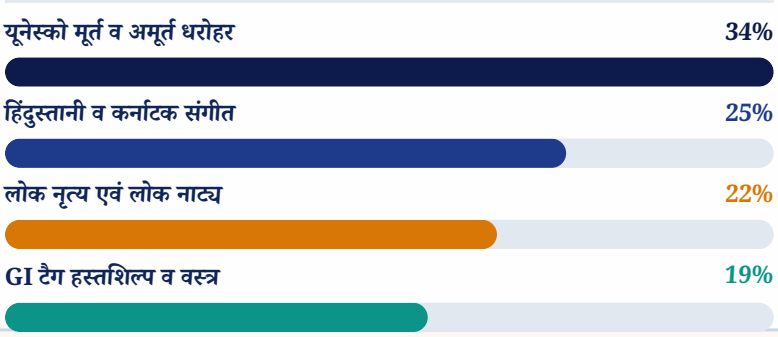
तुलनात्मक विश्लेषण एवं परीक्षा मास्टर सारणी

तुलनात्मक आधार	हिंदुस्तानी संगीत शैली	कर्नाटक संगीत शैली	प्रमुख परीक्षा बिंदु
ऐतिहासिक प्रभाव	वैदिक परंपरा + फारसी व मध्य एशियाई प्रभाव	पूर्णत: स्वदेशी एवं भक्ति आंदोलन पर आधारित	शारंगदेव कृत 'संगीत रत्नाकर' (13वीं श.) दोनों का आधार ग्रंथ है
प्रमुख गायन रूप	ध्रुपद, ख्याल, धमार, ठुमरी, टप्पा, ग़ज़ल	वर्णम, कृति, पदम, जावली, तिल्लाना	ग्वालियर घराना ख्याल गायकी का सबसे प्राचीन घराना है
मुख्य राग व समय	6 मुख्य राग; समय, ऋतु व प्रहर पर विशेष बल	72 मेलकर्ता राग प्रणाली (वेंकटमखी द्वारा वर्गीकृत)	कर्नाटक संगीत में गायन व वादन दोनों में 'कृति' की प्रधानता
प्रमुख वाद्ययंत्र	तबला, पखावज, सितार, सरोद, बाँसुरी, शहनाई	मृदंगम, वीणा, घटम, वायलिन, नादस्वरम	अमीर खुसरो को सितार व तबला के विकास का श्रेय दिया जाता है

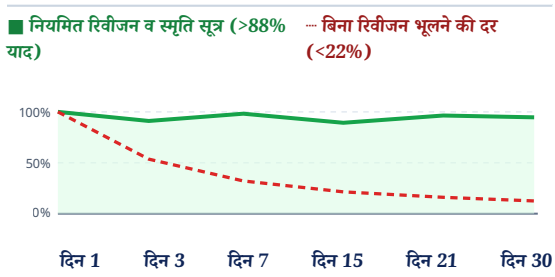
डेटा ग्राफ एवं प्रमुख अध्ययन बिंदु: भारतीय संगीत, लोक नाट्य एवं यूनेस्को सांस्कृतिक धरोहर विश्लेषण

IUC Academy • उच्च-उपज तथ्य एवं स्मृति सूत्र

संगीत, लोक नाट्य एवं यूनेस्को धरोहर से प्रश्नों का अनुपात (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ



उच्च-प्राथमिकता परीक्षा दृष्टि (High-Yield Exam Takeaways)

परीक्षा तथ्य #1: वर्ष 2023 में शांतिनिकेतन (पश्चिम बंगाल, 41वाँ) और होयसल के पवित्र मंदिर समूह — बेलूर, हलेबिडु और सोमनाथपुरा (कर्नाटक, 42वाँ) को यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में जोड़ा गया।

परीक्षा तथ्य #2: वर्ष 2024 में असम के 'चराइदेव मोइदाम' (अहोम राजवंश की शाही टीला दफन प्रणाली) को भारत के 43वें यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता मिली।

परीक्षा तथ्य #3: केरल का 'कुटियाट्टम' भारत का सबसे प्राचीन जीवित संस्कृत रंगमंच है, जिसमें 'चाक्यार' (पुरुष अभिनेता) और 'नांग्यार' (महिला कलाकार) अभिनय करते हैं।

IUC स्पेशल स्मृति ट्रिक्स (Memory Mnemonics)

1. द्रविड़ मंदिर स्थापत्य का विकास क्रम (पल्लव): ट्रिक: 'महेश ने नरसिंह के साथ राज और नंदू को देखा' — महेंद्रवर्मन शैली (मंडप), नरसिंहवर्मन/मामल्ल शैली (रथ मंदिर), राजसिंह शैली (शोर मंदिर), नंदिवर्मन शैली।

2. भक्ति आंदोलन के प्रमुख संप्रदाय व सिद्धांत: ट्रिक: 'शंकर अद्वैत, रामानुज विशिष्टाद्वैत, मध्व द्वैत, निम्बार्क द्वैताद्वैत, वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत' — पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य थे।

IUC Academy विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं अभ्यास खंड — भारतीय कला एवं संस्कृति

गहन परीक्षा-उन्मुख विश्लेषण • तुलनात्मक सारणियाँ • महत्वपूर्ण सूत्र • व्याख्या सहित हल प्रश्न

प्रामाणिक आधिकारिक संदर्भ स्रोत (Official Reference Portals): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) • एनसीईआरटी भारतीय कला का परिचय • पत्र सूचना कार्यालय — 43वाँ यूनेस्को स्थल (चराइदेव मैदाम)

यह अध्ययन सामग्री संघ लोक सेवा आयोग तथा राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षाओं के लिए पूर्णतः मौलिक, कॉपीराइट-मुक्त, गैर-दोहराव वाली और शुद्ध देवनागरी हिंदी में तैयार की गई है। इसमें स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, निष्पादन कलाओं, विश्व धरोहर स्थलों तथा दार्शनिक आंदोलनों को छह संरचित अध्ययन मॉड्यूलों और दस स्मृति सूत्रों में पिरोया गया है।

मॉड्यूल 1: प्राचीन भारतीय स्थापत्य विकास — सिंधु घाटी सभ्यता, मौर्य काल एवं गुप्त स्वर्ण युग

विस्तृत व्याख्या

1. सिंधु घाटी सभ्यता की नगर नियोजन एवं स्थापत्य कला

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2600 से 1900 ईसा पूर्व) विश्व की प्राचीनतम नगरीय सभ्यताओं में अपनी वैज्ञानिक नगर नियोजन प्रणाली के लिए अद्वितीय स्थान रखती है (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण - हुलास उत्खनन प्रतिवेदन**)। इस सभ्यता के नगर मुख्यतः दो भागों में विभाजित थे: पश्चिमी टीले पर स्थित 'दुर्ग' (जहाँ शासक वर्ग या प्रशासनिक भवन होते थे) और पूर्वी भाग में स्थित 'निचला नगर' (जहाँ सामान्य नागरिक निवास करते थे)। धोलावीरा इसका एक विशिष्ट अपवाद है, जो दुर्ग, मध्यमा और निचले नगर सहित तीन स्पष्ट भागों में विभाजित था तथा जहाँ शैलकृत जल कुंड और उन्नत जल संचयन प्रणाली के प्रमाण मिले हैं (**राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय - भारतीय स्थापत्य परिचय**)। सड़कों का निर्माण 'जाल पद्धति' (समकोण पर काटती हुई मुख्य सड़कें और गलियाँ) के आधार पर किया गया था। इस सभ्यता की सबसे प्रमुख अभियांत्रिकी विशेषता इसकी ढकी हुई भूमिगत जल-निकासी प्रणाली थी, जिसमें स्वच्छता के लिए निश्चित अंतराल पर सोख्ता गड्ढे (मलकुंड) बनाए गए थे और जुड़ाई के लिए जिप्सम तथा चूने के गारे का प्रयोग किया गया था। भवनों के निर्माण में पक्की ईंटों का उपयोग मानकीकृत अनुपात (4:2:1 — लंबाई : चौड़ाई : मोटाई) में किया गया था। मोहनजोदड़ो का 'विशाल स्नानागार' आनुष्ठानिक पवित्रता का प्रतीक है, जिसके तल को जलरोधी बनाने के लिए प्राकृतिक डामर (बिटुमेन) की परत चढ़ाई गई थी, जबकि हड़प्पा के बारह कक्षों वाले अन्नागार और लोथल का ज्वारीय गोदीबाड़ा (बंदरगाह) तत्कालीन आर्थिक एवं व्यापारिक समृद्धि को दर्शाते हैं।

2. मौर्यकालीन स्थापत्य: राजकीय एवं लोक कला का संगम

मौर्य काल (चौथी से दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) में भारतीय स्थापत्य ने काष्ठ कला से प्रस्तर (पत्थर) स्थापत्य की ओर ऐतिहासिक संक्रमण किया (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण - साँची के बौद्ध स्मारक**)। प्रसिद्ध कला इतिहासकार आनंद कुमारस्वामी ने मौर्य कला को दो वर्गों में बाँटा है: 'राजकीय कला' और 'लोक कला'। राजकीय कला के अंतर्गत चंद्रगुप्त मौर्य का कुम्हरार (पाटलिपुत्र) स्थित अस्सी स्तंभों वाला काष्ठ राजप्रासाद तथा सम्राट अशोक के एकाश्मक (एक ही पत्थर से तराशे गए) स्तंभ, स्तूप और गुफाएँ आती हैं (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण - पटना मंडल स्मारक**)। अशोक के स्तंभ चुनार के बलुआ पत्थर से निर्मित हैं, जिन पर दर्पण जैसी चमकदार ओप (पॉलिश) की गई है। स्तंभ के शीर्ष भाग में घंटी के आकार का उल्टा कमल, उसके ऊपर गोल या चौकोर फलक (अबेकस) और सबसे ऊपर पशु आकृति (सिंह, वृषभ, अश्व या गज) उत्कीर्ण है। सारनाथ का चतुर्मुख सिंह स्तंभ शीर्ष भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है, जिसके फलक पर धर्मचक्र के साथ अश्व, वृषभ, सिंह और गज उकेरे गए हैं (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारतीय कला एवं स्थापत्य**)। गुफा स्थापत्य में सम्राट अशोक और उनके पौत्र दशरथ द्वारा आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं के लिए बराबर और नागार्जुनी पहाड़ियों (बिहार) में कटवाकर बनाई गई गुफाएँ (लोमस ऋषि गुफा का अर्धवृत्ताकार चैत्य गवाक्ष, सुदामा गुफा, कर्ण चौपड़ और विश्व झोपड़ी) शैलकृत वास्तुकला के प्रारंभिक उदाहरण हैं। स्तूप स्थापत्य में साँची का महास्तूप अंड, हर्मिका, यष्टि, छत्र, मेधि, प्रदक्षिणा पथ और तोरण द्वारों के माध्यम से बुद्ध के महापरिनिर्वाण और ब्रह्मांडीय संतुलन को प्रदर्शित करता है।

3. गुप्त काल: शास्त्रीय पूर्णता और संरचनात्मक मंदिरों का उदय

गुप्त काल (चौथी से छठी शताब्दी ईस्वी) को भारतीय कला और स्थापत्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है क्योंकि इस युग में संरचनात्मक मंदिर निर्माण (ईंट और पत्थर से बने स्वतंत्र मंदिर) की सुव्यवस्थित शुरुआत हुई (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण - साँची एवं गुप्तकालीन स्थापत्य**)। गुप्तकालीन मंदिरों का विकास पाँच क्रमिक चरणों में हुआ: प्रथम चरण में सपाट छत वाले वर्गाकार मंदिर बने (जैसे साँची का मंदिर संख्या 17 और तिगवा का कंकाली देवी मंदिर); द्वितीय चरण में ऊँचे चबूतरे (जगती) और ढके हुए प्रदक्षिणा पथ जुड़े (जैसे नचना कुठारा का पार्वती मंदिर और भूमरा का शिव मंदिर); तृतीय चरण में सपाट छत के स्थान पर शिखर का प्रारंभिक रूप और पंचायतन शैली (मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर चार सहायक मंदिर) विकसित हुई (जैसे देवगढ़ का दशावतार मंदिर और भीतरगाँव का ईंट निर्मित मंदिर); चतुर्थ चरण में आयताकार मंदिर बने (जैसे तेर का मंदिर); तथा पंचम चरण में वृत्ताकार मंदिरों का निर्माण हुआ (जैसे राजगीर का मनियार मठ) (**राष्ट्रीय शैक्षिक**

अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारत में मंदिर स्थापत्य)। इसी काल में अजंता, बाघ और उदयगिरि (विदिशा) की शैलकृत गुफाओं में वास्तुकला, मूर्तिकला और भित्ति चित्रण का अद्भुत समन्वय हुआ तथा सारनाथ के धमेख स्तूप ने बेलनाकार प्रस्तर-ईंट संरचना का भव्य रूप ग्रहण किया।

4-नोड आरेख बिंदु: प्राचीन स्थापत्य का क्रमिक विकास

• **नोड 1 (ताम्रपाषाणिक नगरीय आधार — सिंधु सभ्यता):** मानकीकृत पक्की ईंटें (4:2:1 अनुपात) समकोण जाल पद्धति की सड़कें एवं ढकी हुई नालियाँ दुर्ग व निचला नगर विभाजन जल संचयन (धोलावीरा) एवं गोदीबाड़ा (लोथल)।

• **नोड 2 (काष्ठ से प्रस्तर संक्रमण — मौर्य राजकीय कला):** चुनार बलुआ पत्थर का चयन एकाश्मक चमकदार स्तंभ (सारनाथ, लौरिया नंदनगढ़) शैलकृत आजीवक गुफाएँ (बराबर की लोमस ऋषि गुफा) ईंट व प्रस्तर निर्मित प्रारंभिक स्तूप (साँची)।

• **नोड 3 (अलंकरण एवं प्रस्तर वेष्टन — मौर्योत्तर काल):** स्तूपों का प्रस्तर परिवर्धन व अलंकृत तोरण द्वार (भरहूत, साँची, अमरावती) हीनयान व महायान शैलकृत चैत्य (प्रार्थना कक्ष) एवं विहार (आवास कक्ष) जैसे कार्ले, भाज और अजंता।

• **नोड 4 (संरचनात्मक शिखर एवं शास्त्रीय मानक — गुप्त स्वर्ण युग):** सपाट छत से रेखीय शिखर का विकास पंचायतन मंदिर विन्यास व गर्भगृह के द्वार पर गंगा-यमुना आकृतियाँ (देवगढ़ दशावतार मंदिर) पक्की ईंटों का मेहराबयुक्त स्थापत्य (भीतरगाँव मंदिर)।

5-पंक्तियों की तुलनात्मक सारणी: सिंधु घाटी, मौर्य एवं गुप्त स्थापत्य

तुलना का आधार	सिंधु घाटी स्थापत्य	मौर्यकालीन स्थापत्य	गुप्तकालीन स्थापत्य	प्रमुख पुरातात्विक प्रमाण एवं स्रोत
1. मुख्य निर्माण सामग्री	पक्की एवं कच्ची ईंटें, जिप्सम और बिटुमेन का गारा	काष्ठ (प्रारंभिक), चुनार का बलुआ पत्थर और पक्की ईंटें	तराशा हुआ बलुआ पत्थर और साँचे में ढली पक्की ईंटें	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
2. केंद्रीय स्थापत्य स्वरूप	उपयोगितावादी नगरीय संरचना (स्नानागार, अन्नागार, जलकुंड)	राजकीय स्तंभ, आजीवक गुफाएँ एवं बौद्ध स्तूप	स्वतंत्र संरचनात्मक मंदिर (पंचायतन शैली) एवं महायान गुफाएँ	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
3. स्तंभों की संरचनात्मक विशेषता	भवनों में वर्गाकार या आयताकार ईंट के सादे स्तंभ	एकाश्मक, बिना आधार के सीधे भूमि पर टिके, चमकदार ओपयुक्त	अलंकृत आधार, बहुकोणीय शाफ्ट और पूर्णकलश शीर्षयुक्त स्तंभ	भारतीय कला एवं स्थापत्य - एनसीईआरटी
4. छत एवं शीर्ष विधान	लकड़ी की धरनों पर टिकी सपाट मिट्टी व ईंट की छतें	अर्धगोलाकार स्तूप अंड और गजपृष्ठाकार (मेहराबदार) गुफा छतें	प्रारंभिक सपाट छत से क्रमिक रूप से वक्ररेखीय शिखर का उदय	साँची बौद्ध स्मारक - एएसआई
5. बाह्य एवं आंतरिक अलंकरण	अलंकरण की अपेक्षा स्वच्छता और अभियांत्रिकी उपयोगिता पर बल	शीर्ष पर सजीव पशु आकृतियाँ और भीतर दर्पण जैसी चमक	द्वारशाखाओं पर गंगा-यमुना, मिथुन आकृतियाँ व पौराणिक फलक	पटना मंडल स्मारक - एएसआई

चार्ट डेटा % (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा प्रश्न-भार तथा पुरातात्विक साक्ष्य वितरण)

• **सिंधु घाटी नगर नियोजन, जल प्रबंधन एवं प्रमुख स्थल (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा, लोथल):** 35%

• **मौर्यकालीन स्तंभ, शिलालेख, स्तूप एवं बराबर-नागार्जुनी शैलकृत गुफाएँ:** 30%

• **गुप्तकालीन संरचनात्मक मंदिर विकास के 5 चरण (देवगढ़, भीतरगाँव, तिगवा, नचना कुठारा):** 25%

• **मौर्योत्तर चैत्य-विहार संक्रमण एवं धमेख-भरहूत स्तूप संरचनात्मक तत्व:** 10%

मॉड्यूल 2: भारतीय मंदिर स्थापत्य (नागर, द्रविड़, वेसर) एवं इंडो-इस्लामिक वास्तुकला

विस्तृत व्याख्या

1. नागर मंदिर स्थापत्य शैली (उत्तर भारत)

हिमालय से लेकर विंध्य पर्वतमाला तक विकसित मंदिर निर्माण की शैली को 'नागर शैली' कहा जाता है (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारत में मंदिर स्थापत्य**)। इस शैली में पूरे मंदिर का निर्माण एक ऊँचे प्रस्तर चबूतरे (जगती) पर किया जाता है, जिस पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं, किंतु दक्षिण भारतीय मंदिरों की भाँति इसके चारों ओर चारदीवारी या भव्य प्रवेश द्वार नहीं होते। गर्भगृह के ठीक ऊपर वक्ररेखीय शिखर (जिसे रेखा-प्रसाद या लैटिना भी कहा जाता है) उठता है, जिसके शीर्ष पर चपटे अंडाकार प्रस्तर चक्र 'आमलक' और उसके ऊपर 'कलश' की स्थापना की जाती है। शिखर के तीन प्रमुख प्रकार मिलते हैं: वर्गाकार आधार और भीतर की ओर मुड़ती दीवारों वाला 'लैटिना', चौड़े आधार और कई छोटी छतों की पंक्तियों से बना पिरामिडनुमा 'फमसाना' (प्रायः मंडपों के लिए प्रयुक्त), तथा मेहराबदार छत वाला आयताकार 'वल्लभी' प्रकार। नागर शैली की तीन प्रमुख क्षेत्रीय उप-शैलियाँ हैं:

- **ओडिशा उप-शैली:** यहाँ शिखर को 'रेखा देउल' और मंडप को 'जगमोहन' कहा जाता है। बाहरी दीवारें अत्यंत अलंकृत और आंतरिक दीवारें सादी होती हैं (उदाहरण: भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, पुरी का जगन्नाथ मंदिर और कोणार्क का सूर्य मंदिर)।
- **खजुराहो (चंदेल) उप-शैली:** ये मंदिर पंचायतन प्रणाली पर ऊँचे चबूतरे पर बने हैं, जिनमें अर्धमंडप, मंडप, महामंडप और अंतराल के साथ मुख्य शिखर से जुड़े छोटे शिखर ('उरुशृंग') क्रमिक पर्वत शृंखला का आभास देते हैं (उदाहरण: कंदरिया महादेव मंदिर और लक्ष्मण मंदिर)।
- **सोलंकी (मारू-गुर्जर) उप-शैली:** गुजरात और राजस्थान में विकसित इस शैली की विशेषता बहु-स्तरीय तोरण, सूक्ष्म संगमरमर नक्काशी और मंदिर के सामने स्थित ज्यामितीय 'सूर्य कुंड' या बावड़ी है (उदाहरण: मोढेरा का सूर्य मंदिर और दिलवाड़ा के जैन मंदिर)।

2. द्रविड़ एवं वेसर मंदिर स्थापत्य शैली (दक्षिण एवं दक्कन भारत)

कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक फैली 'द्रविड़ शैली' का क्रमिक विकास पल्लवों (रथ और तटीय मंदिर), चोलों (विशाल विमान), पांड्यों और विजयनगर शासकों के अधीन हुआ (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारत में मंदिर स्थापत्य**)। द्रविड़ मंदिर चारों ओर से एक ऊँची चारदीवारी (प्राकार) से घिरे होते हैं और इनके मुख्य प्रवेश द्वार पर विशाल अलंकृत मीनारनुमा 'गोपुरम' होता है। मुख्य गर्भगृह के ऊपर पिरामिड के आकार का बहुमंजिला 'विमान' होता है, जिसके शीर्ष पर अष्टकोणीय या षट्कोणीय गुंबदनुमा 'स्तूपिका' (शिखर) होती है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर मिथुन या नदी देवियों के स्थान पर उग्र 'द्वारपाल' की मूर्तियाँ होती हैं और परिसर के भीतर एक पवित्र जलकुंड ('कल्याणी' या पुष्करिणी) अनिवार्य रूप से पाया जाता है। चोल सम्राट राजराज प्रथम द्वारा निर्मित तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर (लगभग 1009 ईस्वी) द्रविड़ विमान का सर्वोच्च प्रतिमान है, जबकि विजयनगर काल में कल्याण मंडप, अम्मन श्राइन और अश्व-स्तंभों (हम्पी का विट्ठल और विरूपाक्ष मंदिर) का विस्तार हुआ। विंध्य और कृष्णा नदी के मध्य दक्कन क्षेत्र में चालुक्यों, राष्ट्रकूटों और होयसलों के अधीन 'वेसर शैली' (खच्चर या मिश्रित शैली) विकसित हुई, जिसमें नागर का वक्ररेखीय शिखर विन्यास और द्रविड़ का बहुमंजिला अलंकरण व खुला प्रदक्षिणा पथ एकीकृत है (उदाहरण: ऐहोल का लाड खान व दुर्गा मंदिर, पट्टदकल का विरूपाक्ष मंदिर, एलोरा का एकाश्मक कैलाश मंदिर तथा बेलूर और हलेबिदु के तारकीय या तारे के आकार के होयसल मंदिर)।

3. इंडो-इस्लामिक वास्तुकला (सल्तनत, प्रांतीय एवं मुगल शैली)

बारहवीं शताब्दी के अंत में तुर्क-अफगान और तत्पश्चात मुगल आगमन से भारतीय धरन-स्तंभ (त्रैबिएट — खंभों और शहतीरों पर आधारित) प्रणाली का इस्लामी मेहराब-गुंबद (आर्कुएट — सच्चे मेहराब और गुंबद पर आधारित) प्रणाली के साथ संश्लेषण हुआ (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण - आगरा ताजमहल एवं मुगल स्मारक**)। सल्तनत काल में मामलूक (कुतुब मीनार, अढ़ाई दिन का झोपड़ा), खिलजी (अलाई दरवाजा — लाल बलुआ पत्थर और घोड़े की नाल के आकार का मेहराब), तुगलक (गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा — ढलवाँ दीवारें या 'बट्टर' प्रणाली और भूरा प्रस्तर) तथा लोदी (सिकंदर लोदी का मकबरा — अष्टकोणीय योजना और दोहरे गुंबद का प्रारंभिक प्रयोग) शैलियाँ उभरीं। प्रांतीय शैलियों में जौनपुर की अटाला मस्जिद (बिना मीनार की ऊँची तोरण या पायलॉन दीवार), मालवा का जहाज महल और बीजापुर का गोल गुंबद (फुसफुसाती दीर्घा) उल्लेखनीय हैं। मुगल काल में चारबाग पद्धति (हुमायूँ का मकबरा), लाल बलुआ पत्थर व गुजराती-राजस्थानी छतरियों का समन्वय (फतेहपुर सीकरी का बुलंद दरवाजा और पंचमहल), पूर्ण श्वेत संगमरमर और 'पिएत्रा ड्यूरा' (संगमरमर में कीमती पत्थरों की जड़ाऊ पच्चीकारी — एतमादुद्दौला का मकबरा और ताजमहल) के माध्यम से इंडो-इस्लामिक स्थापत्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचा।

4-नोड आरेख बिंदु: मंदिर एवं इंडो-इस्लामिक स्थापत्य का संरचनात्मक तंत्र

- **नोड 1 (नागर ऊर्ध्वगामी विधान):** ऊँची जगती (चबूतरा, बिना प्राकार) अर्धमंडप-मंडप-महामंडप-अंतराल का अक्षीय क्रम गर्भगृह के ऊपर वक्ररेखीय शिखर व उरुशृंग शीर्ष पर आमलक एवं स्वर्ण कलश।
- **नोड 2 (द्रविड़ क्षैतिज एवं प्राकार विधान):** बाह्य प्राकार भित्ति व भव्य गोपुरम प्रवेश द्वार कल्याणी जलकुंड व सहस्र-स्तंभी मंडप द्वारपाल रक्षित गर्भगृह बहुमंजिला पिरामिडनुमा विमान व अष्टकोणीय स्तूपिका।
- **नोड 3 (वेसर दक्कनी संश्लेषण):** चालुक्य-राष्ट्रकूट प्रयोगशाला (ऐहोल, पट्टदकल, एलोरा) तारकीय (तारे के समान) जगती व सोपस्टोन (सेलखड़ी) की सूक्ष्म नक्काशी (होयसल — बेलूर, हलेबिदु) नागर शिखर व द्रविड़ मंडप का समन्वय।
- **नोड 4 (इंडो-इस्लामिक अभियांत्रिकी नवाचार):** सच्चा मेहराब (डाट) एवं दोहरा गुंबद (भीतर से खोखला, बाहर से ऊँचा) सुलेखन (कैलीग्राफी), अरबस्क बेल-बूटे व ज्यामितीय जाली पिएत्रा ड्यूरा पच्चीकारी व सममितीय चारबाग जल-उद्यान।

5-पंक्तियों की तुलनात्मक सारणी: नागर, द्रविड़, वेसर एवं इंडो-इस्लामिक स्थापत्य

तुलना का आधार	नागर शैली (उत्तर भारत)	द्रविड़ शैली (दक्षिण भारत)	वेसर शैली (दक्कन क्षेत्र)	इंडो-इस्लामिक शैली (सल्तनत व मुगल)
1. शीर्ष संरचना (शिखर/विमान/गुंबद)	भीतर की ओर मुड़ता वक्ररेखीय शिखर, शीर्ष पर गोल आमलक व कलश	सीढ़ीदार पिरामिडनुमा बहुमंजिला विमान, शीर्ष पर अष्टकोणीय स्तूपिका	छोटा किया गया वक्ररेखीय या तारे के आकार का मिश्रित शिखर	मेहराबदार पेंडेंटिव या स्क्विंच पर टिका अर्धगोलाकार दोहरा गुंबद (**एएसआई आगरा**)
2. परिसर घेरा एवं प्रवेश द्वार	कोई चारदीवारी नहीं; जगती पर सीधा खुला प्रवेश और अलंकृत तोरण	ऊँची प्राकार भित्ति और विमान से भी ऊँचे भव्य अलंकृत गोपुरम	खुला प्रदक्षिणा पथ और बिना गोपुरम के सुसज्जित नंदी मंडप	विशाल मेहराबदार प्रवेश द्वार (ईवान/बुलंद दरवाजा) और चारबाग अहाता
3. गर्भगृह द्वार एवं जल व्यवस्था	द्वार पर गंगा-यमुना की मूर्तियाँ; जलकुंड केवल सोलंकी मंदिरों में	द्वार पर उग्र द्वारपाल; परिसर के भीतर कल्याणी जलकुंड अनिवार्य	द्वारपाल व मकर तोरण दोनों का समन्वय; परिसर में सीढ़ीदार कुंड	मानव आकृतियाँ वर्जित; उद्यान में चार नहरें, हौज और फव्वारे
4. अभियांत्रिकी एवं निर्माण सिद्धांत	धरन, स्तंभ और कोर्बेलिंग (प्रस्तरों को क्रमशः आगे बढ़ाकर छत बनाना)	विशाल ग्रेनाइट प्रस्तर खंडों की धरन-स्तंभ एवं कोर्बेलिंग प्रणाली	सेलखड़ी (क्लोराइट शिस्ट) पत्थर पर खराद मशीन जैसी सूक्ष्म स्तंभ तराश	चूना-सुर्खी गारा, सच्चा मेहराब (की-स्टोन) और भार-वितरक गुंबद प्रणाली
5. प्रतिनिधि स्मारक एवं स्रोत	कंदरिया महादेव (खजुराहो), लिंगराज (भुवनेश्वर), सूर्य मंदिर (मोढेरा)	बृहदेश्वर (तंजावुर), तटीय मंदिर (मामल्लपुरम), मीनाक्षी (मदुरै)	विरूपाक्ष (पट्टदकल), कैलाश (एलोरा), चेन्नकेशव (बेलूर) (**एनसीईआरटी**)	कुतुब मीनार, अलाई दरवाजा, हुमायूँ का मकबरा, ताजमहल (**एएसआई**)

चार्ट डेटा % (मंदिर एवं इंडो-इस्लामिक स्थापत्य में परीक्षा प्रश्नों का अनुपातिक वितरण)

- **नागर शैली एवं उसकी क्षेत्रीय उप-शैलियाँ (ओडिशा, खजुराहो, सोलंकी, कश्मीर का मार्तंड मंदिर):** 30%
- **द्रविड़ शैली का कालक्रमिक विकास (पल्लव रथ, चोल विमान, विजयनगर मंडप, नायक गोपुरम):** 30%
- **इंडो-इस्लामिक स्थापत्य (सल्तनतकालीन तकनीकी बदलाव, मुगल पिएत्रा ड्यूरा एवं प्रांतीय शैलियाँ):** 25%
- **वेसर शैली (चालुक्य-राष्ट्रकूट-होयसल स्थापत्य एवं तारकीय तल-विन्यास):** 15%

मॉड्यूल 3: भारतीय मूर्तिकला की शैलियाँ एवं चित्रकला परंपराएँ (भित्ति, लघु एवं लोक चित्रकला)

विस्तृत व्याख्या

1. भारतीय मूर्तिकला का ऐतिहासिक विकास एवं प्रमुख शैलियाँ

भारतीय मूर्तिकला की यात्रा सिंधु घाटी सभ्यता से प्रारंभ होती है, जहाँ तीन माध्यमों में उत्कृष्ट कृतियाँ मिली हैं: (क) कांस्य ढलाई — मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'कांस्य नर्तकी' की मूर्ति, जो 'मधुच्छिष्ट विधि' (लुप्त मोम प्रक्रिया) से ढाली गई है और त्रिभंग मुद्रा तथा आभूषणों से युक्त है; (ख) प्रस्तर मूर्तियाँ — मोहनजोदड़ो से प्राप्त सेलखड़ी (स्टीएटाइट) निर्मित 'दाढ़ी वाले पुजारी' (तिपतिया अलंकरण युक्त शॉल ओढ़े हुए) और हड़प्पा से प्राप्त लाल बलुआ पत्थर का पुरुष धड़; तथा (ग) मृण्मूर्तियाँ (टेराकोटा) — चिकोटी विधि से निर्मित मातृदेवी की प्रतिमाएँ और पशुपति मुहर (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारतीय कला एवं स्थापत्य**)। मौर्य काल में लोक कला के अंतर्गत दीदारगंज (पटना) की चौरी धारिणी यक्षी और परखम (मथुरा) के यक्ष की विशाल प्रस्तर मूर्तियाँ बनीं, जबकि धौली (ओडिशा) में चट्टान को तराशकर बाहर निकलते हुए हाथी का अग्रभाग बनाया गया।

मौर्योत्तर (कुषाण एवं सातवाहन) काल में मूर्तिकला के तीन ऐतिहासिक केंद्र उभरे:

- **गांधार शैली:** पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत (तक्षशिला, पेशावर) में कुषाण संरक्षण में पल्लवित इस शैली पर यूनानी-रोमन (हेलेनिस्टिक) प्रभाव था। इसमें नीले-भूरे परतदार पत्थर (शिस्ट) और बाद में चूने के प्लास्टर (स्टको) का प्रयोग हुआ। यहाँ बुद्ध को अपोलो देवता के समान लहरदार बालों, मांसल शरीर, मोटे वस्त्रों की सिलवटों और आध्यात्मिक शांति के साथ दर्शाया गया।

• **मथुरा शैली:** पूर्णतः स्वदेशी परंपरा पर आधारित इस शैली में चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ। इसमें बौद्ध, जैन (तीर्थंकर प्रतिमाएँ) और हिंदू (शिव, विष्णु, लक्ष्मी) तीनों धर्मों की मूर्तियाँ बनीं। यहाँ बुद्ध को प्रसन्नचित्त मुद्रा, मुँडे हुए सिर (कपर्दिन), पतले पारदर्शी वस्त्र, पद्मासन और अभय मुद्रा में अलंकृत प्रभामंडल के साथ उकेरा गया।

• **अमरावती शैली:** कृष्णा-गोदावरी घाटी (आंध्र प्रदेश) में सातवाहन और इक्ष्वाकु शासकों के संरक्षण में श्वेत संगमरमर (चूना पत्थर) से विकसित इस शैली में एकल मूर्तियों के स्थान पर 'कथात्मक फलक' (जातक कथाओं के गतिशील समूह दृश्य) और त्रिभंग मुद्रा की प्रधानता थी।

गुप्त काल में 'सारनाथ शैली' ने क्रीम रंग के चुनार बलुआ पत्थर में पूर्णतः शांत, आध्यात्मिक और सिलवट-रहित पारदर्शी वस्त्रों वाले धर्मचक्रप्रवर्तन बुद्ध की रचना की, साथ ही सुल्तानगंज की ताम्र बुद्ध प्रतिमा और उदयगिरि की वराह प्रतिमा निर्मित हुई। मध्यकाल में चोल काल (नवीं से तेरहवीं शताब्दी) ने मधुच्छिष्ट विधि से निर्मित 'नटराज' की कांस्य प्रतिमा के माध्यम से मूर्तिकला को वैश्विक शिखर प्रदान किया, जिसमें डमरू सृजन का, अग्नि विनाश का, अभय हस्त संरक्षण का, उठा हुआ पैर मोक्ष का और पैरों के नीचे दबा अपस्मार बौना अज्ञान के दमन का प्रतीक है।

2. भारतीय चित्रकला: प्रागैतिहासिक शैलचित्र, भित्ति चित्र, लघु चित्र एवं लोक शैलियाँ

भारतीय चित्रकला का प्राचीनतम प्रमाण भीमबेटका (मध्य प्रदेश), लखुडियार (उत्तराखंड) और कुपगल्लू (कर्नाटक) के प्रागैतिहासिक शैलचित्रों में मिलता है, जहाँ उच्च पुरापाषाण से मध्यपाषाण काल तक गेरू (हेमेटाइट) और खनिज रंगों से आखेट और सामूहिक नृत्य के दृश्य बनाए गए (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारतीय कला का परिचय**)। वात्स्यायन के कामसूत्र और विष्णुधर्मोत्तर पुराण के 'चित्रसूत्र' में चित्रकला के 'षडंग' (रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य योजना, सादृश्य और वर्णिका भंग) का शास्त्रीय विधान किया गया।

• **भित्ति चित्रकला (म्यूरल):** अजंता (गुफा संख्या 1, 2, 9, 10, 16, 17 — पद्मपाणि और वज्रपाणि बोधिसत्व, मरणासन्न राजकुमारी, माता और शिशु), बाघ (मध्य प्रदेश), बादामी (कर्नाटक), एलोरा, सित्तनवासल (तमिलनाडु — जैन समवसरण सरोवर), तंजावुर और लेपाक्षी (विजयनगर) में 'टेम्परा' और 'फ्रेस्को-सेको' तकनीक (सूखे चूने के प्लास्टर पर प्राकृतिक रंगों से चित्रण) का प्रयोग हुआ।

• **लघु चित्रकला (मिनिएचर):** पूर्वी भारत में पाल शैली (ताड़पत्र पर बौद्ध पांडुलिपियाँ) और पश्चिमी भारत में अपभ्रंश/जैन शैली (कागज पर कल्पसूत्र चित्रण, बाहर निकली हुई बड़ी आँखें) से लघु चित्रण प्रारंभ हुआ। मुगल काल में हुमायूँ ने मीर सैयद अली और अब्दुस्समद के माध्यम से फारसी-भारतीय संश्लेषण शुरू किया; अकबर ने 'तस्वीरखाना' स्थापित कर हमजानामा और रज्मनामा चित्रित करवाए; जहाँगीर के काल में प्रकृति, पक्षी (उस्ताद मंसूर का बाज) और छवि चित्रण (अबुल हसन, बिशनदास) तथा अलंकृत हाशिए अपने उत्कर्ष पर पहुँचे। राजस्थानी शैली में मेवाड़ (साहिबदीन का रागमाला), मारवाड़, किशनगढ़ (निहालचंद द्वारा चित्रित 'बनी-ठनी' — भारत की मोनालिसा), बूँदी और कोटा प्रमुख हैं, जबकि पहाड़ी शैली में बसोहली (चटक रंग और भृंग पंखों का प्रयोग) तथा काँगड़ा (नैनसुख द्वारा गीतगोविंद और राधा-कृष्ण का कोमल शृंगारिक चित्रण) प्रसिद्ध हैं (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - बंगाल स्कूल एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद**)।

• **लोक एवं आधुनिक चित्रकला:** बिहार की मधुबनी (मिथिला — अरिपन व चावल के लेप से प्राकृतिक चित्रण) और मंजूषा, महाराष्ट्र की वारली (गोंड-भील समुदाय द्वारा गेरू की पृष्ठभूमि पर सफेद त्रिकोण व वृत्त से दैनिक जीवन), ओडिशा की पट्टचित्र, आंध्र प्रदेश की कलमकारी, राजस्थान की फड़ और बंगाल की कालीघाट व पटुआ प्रमुख लोक शैलियाँ हैं। आधुनिक काल में राजा रवि वर्मा ने तैल चित्रों और ओलियोग्राफ प्रेस से पौराणिक पात्रों को जन-जन तक पहुँचाया, जबकि अबनींद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बोस ने 'बंगाल स्कूल' (वाश तकनीक और भारत माता का चित्रण) के माध्यम से राष्ट्रवादी कला आंदोलन का नेतृत्व किया (**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - आधुनिक भारतीय कला**)।

4-नोड आरेख बिंदु: मूर्तिकला एवं चित्रकला का शिल्प-चक्र

• **नोड 1 (मूर्तिकला माध्यम एवं तकनीक):** मधुच्छिष्ट लुप्त-मोम कांस्य ढलाई (मोहनजोदड़ो से चोल नटराज तक) नीला-भूरा शिस्ट (गांधार) चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर (मथुरा) श्वेत संगमरमर (अमरावती) क्रीम चुनार प्रस्तर (सारनाथ)।

• **नोड 2 (भित्ति चित्रण प्रक्रिया):** चट्टान पर खुरदरापन गोबर, मिट्टी व धान की भूसी का प्रथम लेप महीन चूने के प्लास्टर की परत लाल गेरू से बाह्य रेखाचित्र खनिज व वनस्पति रंगों (लापिस लाजुली नीला, हरिताल पीला) का भराव।

• **नोड 3 (लघु चित्रण घराना वर्गीकरण):** पाल (पूर्वी बौद्ध ताड़पत्र) व अपभ्रंश (पश्चिमी जैन कागज) मुगल दरबारी यथार्थवाद (अकबर-जहाँगीर छवि व प्रकृति चित्रण) राजपूत-पहाड़ी भक्ति व शृंगार (किशनगढ़ बनी-ठनी, काँगड़ा राधा-कृष्ण)।

• **नोड 4 (लोक चित्रकला का भौगोलिक तंत्र):** मधुबनी व टिकुली (बिहार) वारली (महाराष्ट्र) पट्टचित्र व सौरा (ओडिशा) कलमकारी व चेरियाल (आंध्र-तेलंगाना) पिथौरा व गोंड (मध्य भारत) थंगका (हिमालयी बौद्ध क्षेत्र)।

5-पंक्तियों की तुलनात्मक सारणी: गांधार, मथुरा, अमरावती मूर्तिकला एवं अजंता-मुगल चित्रकला

तुलना का आधार	गांधार मूर्तिकला शैली	मथुरा मूर्तिकला शैली	अमरावती मूर्तिकला शैली	अजंता भित्ति बनाम मुगल लघु चित्रकला
1. भौगोलिक क्षेत्र एवं राजवंश	पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत (तक्षशिला); कुषाण शासक	यमुना घाटी (मथुरा); कुषाण शासक	कृष्णा-गोदावरी डेल्टा; सातवाहन व इक्ष्वाकु शासक	अजंता: वाकाटक-गुप्त (दक्कन); मुगल: आगरा-दिल्ली दरबार
2. बाह्य प्रभाव एवं मूल प्रेरणा	यूनानी-रोमन (हेलेनिस्टिक) शिल्प और भारतीय बौद्ध विषयवस्तु	पूर्णतः स्वदेशी (प्राचीन यक्ष-यक्षी परंपरा का विस्तार)	पूर्णतः स्वदेशी और दक्षिण भारतीय स्थापत्य से संबद्ध	अजंता: स्वदेशी बौद्ध करुणा; मुगल: फारसी, भारतीय व यूरोपीय संश्लेषण (एनसीईआरटी)
3. प्रयुक्त सामग्री एवं रंग माध्यम	नीला-भूरा परतदार पत्थर (शिस्ट), मिट्टी और स्टको प्लास्टर	चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर	श्वेत चूना पत्थर (संगमरमर जैसा)	अजंता: गुफा भित्ति पर खनिज रंग; मुगल: हस्तनिर्मित कागज पर जलरंग व स्वर्ण
4. धार्मिक एवं विषयगत विस्तार	केवल बौद्ध धर्म (बुद्ध और बोधिसत्व की मानवाकार प्रतिमाएँ)	बौद्ध, जैन (तीर्थंकर) और हिंदू (वैष्णव व शैव) तीनों धर्म	मुख्यतः बौद्ध धर्म (जातक कथाओं का समूहगत आख्यान)	अजंता: जातक व बुद्ध जीवन; मुगल: दरबारी वैभव, शिकार, छवि व प्रकृति (एनसीईआरटी)
5. कलात्मक एवं शारीरिक लक्षण	लहरदार बाल, मोटे वस्त्र, मांसल शरीर, सादा प्रभामंडल, योगी मुद्रा	प्रसन्न मुख, पतला पारदर्शी वस्त्र, अलंकृत प्रभामंडल, अभय मुद्रा	त्रिभंग मुद्रा में लचीली काया, गतिशील भीड़ और भावात्मक ऊर्जा	अजंता: लयात्मक रेखाएँ व भाव-प्रवणता; मुगल: त्रिआयामी छायांकन (फोरशॉर्टनिंग)

चार्ट डेटा % (भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला में परीक्षा प्रश्नों का विषयगत भार)

- **गांधार, मथुरा, अमरावती एवं सारनाथ मूर्तिकला शैलियों का तुलनात्मक विश्लेषण:** 30%
- **अजंता, बाघ, बादामी, एलोरा एवं सित्तनवासल की भित्ति चित्रकला परंपरा:** 25%
- **मुगल, राजस्थानी (मेवाड़, किशनगढ़, बूँदी) एवं पहाड़ी (काँगड़ा, बसोहली) लघु चित्रकला:** 25%
- **चोल कांस्य नटराज शिल्प एवं भारत की प्रमुख GI-टैग प्राप्त लोक चित्रकलाएँ:** 20%

मॉड्यूल 4: भारतीय निष्पादन कलाएँ (भाग-1) — शास्त्रीय व लोक नृत्य तथा हिंदुस्तानी व कर्नाटक संगीत

विस्तृत व्याख्या

1. भारतीय शास्त्रीय नृत्य के सिद्धांत एवं अष्ट शास्त्रीय नृत्य रूप

भारतीय शास्त्रीय नृत्य का मूल आधार भरतमुनि द्वारा रचित 'नाट्यशास्त्र' (पंचम वेद) और नंदिकेश्वर द्वारा रचित 'अभिनय दर्पण' है (सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र - भारतीय निष्पादन कलाएँ)। नाट्यशास्त्र के अनुसार नृत्य के तीन मूलभूत घटक हैं: 'नृत्त' (शुद्ध तालबद्ध शारीरिक गतियाँ जिनमें भाव या कथा नहीं होती), 'नृत्य' (रस, भाव और हस्त मुद्राओं के माध्यम से कथा या मनोभावों की अभिव्यक्ति) और 'नाट्य' (संवाद व अभिनय युक्त नाटकीय प्रस्तुति)। प्रत्येक शास्त्रीय नृत्य में दो पहलू होते हैं: 'तांडव' (शिव का ओजस्वी, शक्ति और लय प्रधान नृत्य) तथा 'लास्य' (पार्वती का कोमल, लचीला और श्रृंगार प्रधान नृत्य)। संगीत नाटक अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त भारत के आठ शास्त्रीय नृत्य निम्नलिखित हैं:

- **भरतनाट्यम (तमिलनाडु):** प्राचीन देवदासी परंपरा ('सदिर' या 'दासीअट्टम') से विकसित यह सबसे प्राचीन शास्त्रीय नृत्य है, जिसे ई. कृष्ण अय्यर और रुक्मिणी देवी अरुंडेल ने पुनर्जीवित किया। इसे 'अग्नि नृत्य' भी कहा जाता है। इसकी प्रस्तुति अलारिप्पु (प्रारंभिक मंगलाचरण) से शुरू होकर जातियोंस्वरम, शब्दम, वर्णम (कथा व नृत्त का मुख्य भाग), पदम, जावली और तिल्लाना (अंतिम तेज लयबद्ध समापन) पर पूर्ण होती है।

- **कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश):** सत्रहवीं शताब्दी में सिद्धेंद्र योगी द्वारा 'भागवत मेला' परंपरा के रूप में विकसित इस नृत्य में नर्तक स्वयं गायन और संवाद भी बोलते हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएँ 'तरंगम' (पीतल की थाली के किनारों पर पैर रखकर और सिर पर जल से भरा कलश रखकर नृत्य करना), 'मंडूक शब्दम' (मेंढक की कथा) और 'जल चित्र नृत्यम' (अंगूठे से मंच पर चित्र बनाना) हैं।

- **कथकली (केरल):** रामायण और महाभारत के महाकाव्यों पर आधारित यह पुरुष-प्रधान मूक नृत्य-नाटिका है। इसमें पात्रों के चेहरे पर प्राकृतिक रंगों का जटिल श्रृंगार किया जाता है: 'पच्चा' (हरा रंग — सात्विक व महान नायक जैसे राम और कृष्ण), 'कत्ती' (हरा व लाल — राजसी व अहंकारी पात्र जैसे रावण),

'थाडी' (लाल दाढ़ी — दुष्ट पात्र जैसे दुशासन; सफेद दाढ़ी — दैवीय पात्र जैसे हनुमान; काली दाढ़ी — वनवासी या शिकारी), 'करी' (काला रंग — राक्षसी पात्र) और 'मिनुक्कू' (पीला-नारंगी — संत व महिलाएँ)। यह नृत्य 'कलारीपयट्टू' सामरिक कला से प्रभावित है।

• **मोहिनीअट्टम (केरल):** भगवान विष्णु के 'मोहिनी' अवतार पर आधारित यह एकल महिला नृत्य विशुद्ध रूप से 'लास्य' प्रधान है। इसमें श्वेत और सुनहरी किनारी वाली 'कसावु' साड़ी पहनी जाती है और केरल के ताड़ के वृक्षों व समुद्र की लहरों जैसी कोमल पद-संचालन गतियाँ ('अटावुकल') होती हैं। त्रावणकोर के महाराजा स्वाति तिरुनल और कवयित्री वल्लथोल नारायण मेनन ने इसके संरक्षण में प्रमुख योगदान दिया।

• **ओडिसी (ओडिशा):** उदयगिरि-खंडगिरि गुफाओं के रानी गुम्फा शिलालेख से प्रमाणित यह नृत्य 'महारी' (मंदिर नर्तकियों) और 'गोतिपुआ' (महिला वेश में नृत्य करने वाले बालकों) की परंपरा से विकसित हुआ। इसे 'चलती-फिरती मूर्तिकला' कहा जाता है क्योंकि इसमें 'त्रिभंग' (सिर, धड़ और घुटनों का तीन कोणों पर झुकाव) और 'चौक' (जगन्नाथ प्रभु का प्रतीक वर्गाकार पौरुष आसन) मुद्राएँ प्रमुख हैं। इसका समापन 'मोक्ष' (आध्यात्मिक मुक्ति) चरण से होता है।

• **मणिपुरी (मणिपुर):** वैष्णव भक्ति, रासलीला और प्राचीन 'लाई हरोबा' उत्सव से जुड़ा यह नृत्य अत्यंत भक्तिपूर्ण और संयत है। इसमें नर्तकियाँ बेलनाकार दर्पण-जड़ित घाघरा ('कुमिल') पहनती हैं, पैरों में घुँघरू नहीं बाँधतीं और 'नागबंध' मुद्रा (आठ के आकार में शरीर का घुमाव) बनाती हैं। इसमें 'पुंग चोलम' (ढोल बजाते हुए कलाबाजी नृत्य) और 'करताल चोलम' (मंजीरा नृत्य) अत्यंत प्रसिद्ध हैं।

• **कथक (उत्तर प्रदेश व उत्तर भारत):** 'कथा कहे सो कथक कहलावे' की उक्ति से जन्मा यह नृत्य मंदिर के कथावाचकों से मुगल दरबारों तक विकसित हुआ। यह एकमात्र शास्त्रीय नृत्य है जो हिंदुस्तानी संगीत और फारसी संस्कृति से गहराई से जुड़ा है। इसमें घुटनों को मोड़े बिना तेज चक्कर लगाना ('चक्कड़'), तत्कार (पैरों की थाप), तोड़ा, टुकड़ा और 'जुगलबंदी' प्रमुख हैं। इसके चार प्रमुख घराने हैं: लखनऊ (नवाब वाजिद अली शाह और पंडित बिरजू महाराज — भाव व नजाकत प्रधान), जयपुर (भानुजी — वीर रस व जटिल लयकारी प्रधान), बनारस (जानकी प्रसाद — जमीन पर एड़ी-पंजे का विशेष प्रयोग) और रायगढ़ (राजा चक्रधर सिंह)।

• **सत्रिया (असम):** पंद्रहवीं शताब्दी में महान वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा असम के वैष्णव मठों ('सत्रों') में 'अंकिया नाट' के मंचन हेतु प्रवर्तित किया गया। इसे वर्ष 2000 में संगीत नाटक अकादमी ने आठवें शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता दी। इसमें पुरुष भिक्षु नर्तकों को 'भोकोट' कहा जाता है और यह 'बोरगीत' (शंकरदेव व माधवदेव द्वारा रचित भक्ति गीत), खोल और बांसुरी की धुन पर प्रस्तुत किया जाता है। (विशेष नोट: भारत के संस्कृति मंत्रालय द्वारा झारखंड-ओडिशा-पश्चिम बंगाल के 'छऊ' नृत्य को भी अर्ध-शास्त्रीय/नवम शास्त्रीय संदर्भ में वर्गीकृत किया जाता है)।

2. भारत के प्रमुख लोक नृत्य (राज्यवार एवं यूनेस्को अमूर्त विरासत)

लोक नृत्य ऋतु परिवर्तन, फसल कटाई और सामुदायिक उत्सवों की सहज अभिव्यक्ति हैं (**सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र - लोक नृत्य परंपरा**)। यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल तीन प्रमुख भारतीय नृत्य हैं: राजस्थान का 'कालबेलिया' (सपेरा समुदाय का लचीला नृत्य), पूर्वी भारत का 'छऊ' (सरायकेला-झारखंड, मयूरभंज-ओडिशा और पुरुलिया-पश्चिम बंगाल — जिसमें मयूरभंज छऊ में मुखौटा नहीं पहना जाता) तथा गुजरात का 'गरबा' (नवरात्रि में गर्भदीप के चारों ओर किया जाने वाला नृत्य)। अन्य प्रमुख राज्यवार लोक नृत्य हैं: उत्तर प्रदेश (रासलीला, नौटंकी, चरकुला — सिर पर 108 तेल के दीपक रखकर नृत्य, कजरी, धोबिया), असम (बिहू, बगुरुम्बा — बोडो जनजाति), पंजाब (भांगड़ा, गिद्दा), राजस्थान (घूमर, चरी, तेरहताली — कामड़ जनजाति द्वारा शरीर पर तेरह मंजीरे बाँधकर), महाराष्ट्र (लावणी, कोली, लेझिम), कश्मीर (रऊफ, भांड पाथेर), हिमाचल प्रदेश (नाटी, डांगी), उत्तराखंड (छोलिया, झोड़ा), छत्तीसगढ़ (पंडवानी, राउत नाचा, पंथी), कर्नाटक (यक्षगान, डोलू कुनिथा), केरल (तिरुवातिराकली, पडयानी) और नागालैंड (चांग लो, बांस नृत्य)।

3. भारतीय शास्त्रीय संगीत: हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत पद्धति

भारतीय संगीत का उद्गम 'सामवेद' (गंधर्ववेद) से हुआ है। तेरहवीं शताब्दी में शारंगदेव द्वारा रचित 'संगीत रत्नाकर' (जिसे 'सप्ताध्यायी' भी कहा जाता है) में भारतीय संगीत के मूल सिद्धांतों — सात स्वर (षड्ज-सा, ऋषभ-रे, गांधार-ग, मध्यम-म, पंचम-प, धैवत-ध, निषाद-नि), बाईस सूक्ष्म ध्वनियाँ ('श्रुतियाँ'), 'राग' (कम से कम पाँच स्वरों की रंजक रचना — औडव 5 स्वर,षाडव 6 स्वर, संपूर्ण 7 स्वर) और 'ताल' (लय का चक्र) — को सूत्रबद्ध किया गया। चौदहवीं शताब्दी के बाद भारतीय संगीत दो धाराओं में विभाजित हो गया:

• **हिंदुस्तानी संगीत (उत्तर भारत):** अमीर खुसरो (जिन्हें सितार, तबला, कव्वाली और तराना का जनक माना जाता है) तथा पंडित विष्णु नारायण भातखंडे (जिन्होंने हिंदुस्तानी रागों को 10 'थाटों' में वर्गीकृत किया) ने इसे आकार दिया। यहाँ रागों को 'समय सिद्धांत' (प्रातःकालीन भैरव, सायंकालीन यमन, रात्रिकालीन मालकौंस व दरबारी कान्हड़ा) और ऋतुओं (वर्षा का मल्हार, वसंत का बहार) के अनुसार गाया जाता है। इसकी दो प्रमुख शास्त्रीय शैलियाँ हैं: (क) **ध्रुपद** — सबसे प्राचीन और गंभीर शैली, जिसमें अलाप और 'नोम-तोम' के बाद पखावज की संगत पर चार भागों (स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग) में गायन होता है; राजा मानसिंह तोमर और तानसेन इसके प्रमुख संरक्षक रहे और इसके चार 'वाणी' या घराने हैं (डागर, दरभंगा, बेतिया और तलवंडी); (ख) ***ख्याल*** — 'ख्याल' का अर्थ कल्पना है; सुल्तान हुसैन शाह शर्की और सदारंग-अदारंग द्वारा लोकप्रिय बनाई गई इस शैली में बड़ा ख्याल (विलंबित लय) और छोटा ख्याल (द्रुत लय) में तानों की स्वतंत्रता होती है। इसके प्रमुख घराने ग्वालियर (सबसे प्राचीन घराना — नत्थन पीरबख्श), आगरा (फैयाज खाँ — 'रंगीला घराना'), किराना (अब्दुल करीम खाँ व पंडित भीमसेन जोशी — स्वर की शुद्धता प्रधान), पटियाला (बड़े गुलाम अली खाँ) और जयपुर-अतरौली (अल्लादिया खाँ व किशोरी अमोनकर) हैं। उप-शास्त्रीय शैलियों में ठुमरी (बनारस व लखनऊ — गिरिजा देवी), टप्पा (मियाँ शोरी — ऊँट चाल की तेज तानें), दादरा, चैती और होरी प्रमुख हैं।

• **कर्नाटक संगीत (दक्षिण भारत):** पुरंदरदास को 'कर्नाटक संगीत का पितामह' कहा जाता है, जबकि सत्रहवीं शताब्दी में वेंकटमखिन ने अपनी कृति 'चतुरदंडी प्रकाशिका' में 72 'मेलकर्ता' (मूल रागों) की वैज्ञानिक प्रणाली स्थापित की। अठारहवीं शताब्दी के तीन महान संतों — **त्यागराज** (तेलुगु पंचरत्न कृतियाँ), **मुथुस्वामी दीक्षितार** (संस्कृत रचनाएँ व वीणा वादन) और **श्यामा शास्त्री** (कामाक्षी देवी की स्तुति व जटिल ताल) — को 'कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति' कहा जाता है। कर्नाटक संगीत की प्रस्तुति में 'वर्णम' (प्रारंभिक स्वर अभ्यास), 'कृति' (पल्लवी, अनुपल्लवी और चरणम में बँधी मुख्य रचना) और 'रागं-तानं-पल्लवी' (मनोधर्म या आशुरचना का सर्वोच्च भाग) शामिल होते हैं।

4-नोड आरेख बिंदु: शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत का शास्त्रीय विधान

• **नोड 1 (नाट्यशास्त्र का त्रिकोणीय आधार):** नृत्त (शुद्ध लय व पद-संचालन) + नृत्य (नवरस व अभिनय के चार प्रकार: आंगिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक) + नाट्य (कथात्मक नाटक) = संपूर्ण शास्त्रीय निष्पादन।

• **नोड 2 (अष्ट शास्त्रीय नृत्यों का भौगोलिक चक्र):** दक्षिण (भरतनाट्यम-तमिलनाडु, कुचिपुड़ी-आंध्र, कथकली व मोहिनीअट्टम-केरल) पूर्व व पूर्वोत्तर (ओडिसी-ओडिशा, मणिपुरी-मणिपुर, सत्रिया-असम) उत्तर (कथक-उत्तर प्रदेश)।

• **नोड 3 (हिंदुस्तानी संगीत की संरचना):** 10 भातखंडे थाट समय व ऋतु आधारित राग ध्रुपद (पखावज संगत, डागर-दरभंगा वाणी) ख्याल (तबला संगत, ग्वालियर-किराना-आगरा-पटियाला घराने) उप-शास्त्रीय (ठुमरी, टप्पा, तराना)।

• **नोड 4 (कर्नाटक संगीत की संरचना):** 72 वेंकटमखिन मेलकर्ता राग कर्नाटक त्रिमूर्ति (त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितार, श्यामा शास्त्री) कृति संरचना (पल्लवी-अनुपल्लवी-चरणम) मृदंगम, घटम व वायलिन संगत।

5-पंक्तियों की तुलनात्मक सारणी: हिंदुस्तानी संगीत बनाम कर्नाटक संगीत

तुलना का आधार	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत	कर्नाटक शास्त्रीय संगीत	प्रमुख शास्त्रीय नृत्य युग्म (भरतनाट्यम बनाम कथक)	प्रामाणिक स्रोत एवं संदर्भ
1. ऐतिहासिक विकास एवं प्रभाव	वैदिक परंपरा के साथ मध्यकालीन फारसी, तुर्क व अफगान तत्वों का समन्वय	बाह्य प्रभाव से पूर्णतः मुक्त, शुद्ध स्वदेशी दक्षिण भारतीय मंदिर परंपरा	भरतनाट्यम: दक्षिण भारतीय मंदिर देवदासी; कथक: उत्तर भारतीय मंदिर व दरबार	सीसीआरटी निष्पादन कलाएँ
2. मूल राग वर्गीकरण प्रणाली	पंडित भातखंडे के 10 थाट और 6 मुख्य राग (समय व ऋतु से बँधे हुए)	वेंकटमखिन के 72 मेलकर्ता राग (समय के कठोर बंधन से मुक्त)	भरतनाट्यम: कर्नाटक संगीत पर आधारित; कथक: हिंदुस्तानी संगीत पर आधारित	भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत
3. गायन एवं वादन का संतुलन	स्वर विस्तार (आलाप) और आशुरचना (इम्प्रोवाइजेशन) की अधिक स्वतंत्रता; वाद्ययंत्रों का स्वतंत्र वादन भी प्रमुख	पूर्व-रचित 'कृति' और 'साहित्य' (गीत के बोल) व ताल की गणितीय सटीकता पर अधिक बल; गायन प्रधान	भरतनाट्यम: अर्धमंडली (झुके घुटने) व ज्यामितीय त्रिभुज; कथक: सीधे घुटने व तीव्र चक्कड़	एनसीईआरटी भारतीय कला
4. घराना परंपरा एवं उप-शैलियाँ	अनेक घराने (ग्वालियर, किराना, आगरा, पटियाला) और ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी, टप्पा शैलियाँ	घराना प्रणाली का अभाव; एक समान प्रस्तुति विधान (वर्णम, कृति, रागं-तानं-पल्लवी, तिल्लाना)	भरतनाट्यम: तंजावुर, पंडनल्लूर, वझुवूर शैली; कथक: लखनऊ, जयपुर, बनारस घराना	सीसीआरटी अभिलेखागार
5. प्रमुख संगत वाद्ययंत्र	तबला, पखावज, सितार, सरोद, सारंगी, बांसुरी (बांसुरी-हरिप्रसाद चौरसिया) और शहनाई (बिस्मिल्लाह खाँ)	मृदंगम, घटम (मिट्टी का घड़ा), कंजीरा, सरस्वती वीणा, नादस्वरम और वायलिन	भरतनाट्यम: मृदंगम, नट्टुवंगम (मंजीरा), वीणा; कथक: तबला, पखावज, सारंगी, हारमोनियम	सीसीआरटी संगीत एवं नृत्य

चार्ट डेटा % (नृत्य एवं संगीत अनुभाग में परीक्षा प्रश्नों का अनुपातिक वितरण)

• **आठ शास्त्रीय नृत्यों की मुद्राएँ, वेशभूषा, शब्दावली एवं प्रमुख कलाकार:** 35%

• **हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक संगीत का सिद्धांत, घराने, राग तथा कर्नाटक त्रिमूर्ति:** 30%

• **राज्यवार लोक नृत्य, जनजातीय नृत्य एवं यूनेस्को अमूर्त विरासत नृत्य (कालबेलिया, छऊ, गरबा):** 20%

• **भारतीय वाद्ययंत्रों के 4 वर्ग (तत-तार, सुषिर-वायु, अवनद्ध-चमड़ा, घन-धातु) एवं वादक:** 15%

मॉड्यूल 5: भारतीय निष्पादन कलाएँ (भाग-2) — पारंपरिक रंगमंच, कठपुतली कला एवं यूनेस्को के 43 विश्व धरोहर स्थल

विस्तृत व्याख्या

1. भारतीय रंगमंच: संस्कृत नाट्य परंपरा एवं क्षेत्रीय लोक रंगमंच

भारतीय रंगमंच की शुरुआत वैदिक संवाद सूक्तों और भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से हुई, जिसमें तीन प्रकार के प्रेक्षागृह (विकृष्ट-आयताकार, चतुरस्र-वर्गाकार और त्र्यस्र-त्रिभुजाकार) का वर्णन है (सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र - भारतीय रंगमंच)। प्राचीन संस्कृत नाटककारों में **भास** (सर्वाधिक 13 नाटक — स्वप्नवासवदत्तम, उरुभंगम — जो संस्कृत का दुर्लभ त्रासदी नाटक है), **कालिदास** (अभिज्ञानशाकुंतलम, मालविकाग्निमित्रम, विक्रमोर्वशीयम), **शूद्रक** (मृच्छकटिकम — यथार्थवादी सामाजिक नाटक), **विशाखदत्त** (मुद्राराक्षस — चाणक्य की राजनीतिक कूटनीति), **हर्षवर्धन** (रत्नावली, नागानंद, प्रियदर्शिका) और **भवभूति** (उत्तररामचरितम, मालतीमाधव) अग्रणी हैं। संस्कृत नाटक में 'सूत्रधार' (प्रबंधक व संचालक), 'विदूषक' (हास्य पात्र जो प्राकृत बोलता था), 'नांदी' (प्रारंभिक मंगलाचरण) और 'भरतवाक्य' (अंतिम आशीर्वचन) अनिवार्य अंग थे।

मध्यकाल से विकसित प्रमुख क्षेत्रीय लोक रंगमंचों को तीन श्रेणियों (धार्मिक/अनुष्ठानिक, मनोरंजन प्रधान और दक्षिण भारतीय) में देखा जा सकता है:

- **उत्तर एवं मध्य भारत: रामलीला** (उत्तर प्रदेश — तुलसीदास के रामचरितमानस पर आधारित, यूनेस्को अमूर्त विरासत), **रासलीला** (ब्रज क्षेत्र), **नौटंकी** (कानपुर, हाथरस व लखनऊ शैली — दोहा, चौबोला व नगाड़े की थाप), **स्वांग** (हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश — रूपण व नकल पर आधारित), **भांड पाथेर** (जम्मू-कश्मीर — कृषक समाज पर आधारित व्यंग्य और सुरनाई व नगाड़ा वादन), **करियाला** (हिमाचल प्रदेश), **रम्मत** (राजस्थान) और **माच** (मालवा, मध्य प्रदेश — दोहों और संवादों को 'बोल' तथा तुकबंदी को 'वणग' कहा जाता है)।

- **पूर्वी एवं पश्चिमी भारत: जात्रा** (बंगाल व ओडिशा — चैतन्य महाप्रभु द्वारा लोकप्रिय बनाई गई संगीतमय भ्रमणशील नाट्य शैली), **अंकिया नाट / भाओना** (असम — शंकरदेव द्वारा ब्रजावली भाषा में रचित एक-अंकीय नाटक), **बिदेसिया** (बिहार — भिखारी ठाकुर द्वारा प्रवर्तित, पलायन व विरह की पीड़ा पर आधारित, महिला पात्र भी पुरुष निभाते हैं), **भवई** (गुजरात व राजस्थान — कच्छ और काठियावाड़ में भूंगळ वाद्य के साथ संतुलन व नृत्य नाटिका), **तमाशा** (महाराष्ट्र — महिला अभिनेत्रियों 'मुरकी' द्वारा लावणी गीतों के साथ प्रस्तुत) और **दशावतार** (कोंकण व गोवा)।

- **दक्षिण भारत: कुडियाट्टम** (केरल — चाक्यार और नांबियार समुदाय द्वारा प्रस्तुत भारत की सबसे प्राचीन जीवित संस्कृत रंगमंच परंपरा, वर्ष 2008 में यूनेस्को अमूर्त विरासत में शामिल), **मुडियेट्टू** (केरल — भद्रकाली और दारिका राक्षस के युद्ध पर आधारित अनुष्ठानिक नाट्य, यूनेस्को सूचीबद्ध), **तेय्यम** (केरल — पूर्वजों व देवताओं का अनुष्ठानिक आह्वान), **यक्षगान** (कर्नाटक — विजयनगर काल में जक्कण पंथ से उत्पन्न, चेंडे और मद्दाले वाद्य की संगत) तथा **तेरुकुट्टू** (तमिलनाडु — 'गली का नाटक', द्रौपदी पंथ और महाभारत के अठारह दिनों के युद्ध पर केंद्रित)।

2. भारतीय कठपुतली कला (चार प्रमुख शैलियाँ)

भारत में कठपुतली कला का प्राचीनतम साहित्यिक उल्लेख तमिल संगम महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम' और महाभारत में मिलता है (सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र - कठपुतली कला)। संचालन की तकनीक के आधार पर भारतीय कठपुतलियाँ चार प्रकार की हैं:

- **सूत्र कठपुतली (धागे से संचालित):** धागों से बँधी लचीले जोड़ों वाली कठपुतलियाँ। प्रमुख रूप: **कठपुतली** (राजस्थान — भाट समुदाय द्वारा आम की लकड़ी से निर्मित, बिना पैरों के लंबी घेरदार पोशाक और मुँह से सीटी जैसी आवाज या 'बोली'), **कुंडई** (ओडिशा — हल्की लकड़ी से बनी, अधिक जोड़), **गोम्बेयट्टा** (कर्नाटक — यक्षगान के पात्रों पर आधारित, एक साथ कई सूत्रधारों द्वारा संचालित) और **बोम्मलट्टम** (तमिलनाडु — सबसे बड़ी और भारी कठपुतलियाँ, जिनमें धागे और छड़ दोनों का प्रयोग होता है तथा सूत्रधार सिर पर लोहे का छल्ला पहनता है)।

- **छाया कठपुतली (चमड़े की चपटी आकृतियाँ):** चपटे चमड़े से बनी और रोशन पर्दे के पीछे से संचालित कठपुतलियाँ। प्रमुख रूप: **तोल्लु बोम्मलाता** (आंध्र प्रदेश — हिरण के चमड़े से बनी बड़ी रंगीन कठपुतलियाँ और शास्त्रीय संगीत), **तोगलु गोम्बेयट्टा** (कर्नाटक — सामाजिक स्तर के अनुसार पात्रों का आकार छोटा-बड़ा होना) और **रावणछाया** (ओडिशा — बिना किसी जोड़ वाली एक ही टुकड़े में बनी चमड़े की कठपुतलियाँ, जो अत्यंत नाटकीय छाया उत्पन्न करती हैं)।

- **छड़ कठपुतली (डंडे या रॉड से संचालित):** नीचे से बांस या लकड़ी की छड़ों द्वारा संचालित। प्रमुख रूप: **पुतुल नाच** (पश्चिम बंगाल और असम — जात्रा शैली से प्रभावित, सूत्रधार कमर में बँधे बांस के खंभे से कठपुतली को नचाता है) और **यमपुरी** (बिहार — लकड़ी के एक ही टुकड़े से बनी बिना जोड़ वाली कठपुतलियाँ)।

- **दस्ताना कठपुतली (हाथ में पहनकर संचालित):** हथेली और उँगलियों में दस्ताने की तरह पहनकर नचाई जाने वाली कठपुतली। प्रमुख रूप: **पावाकूथु** (केरल — कथकली के शृंगार और रामायण-महाभारत के प्रसंगों पर आधारित, चेंडा और इलथलम वाद्य की संगत) और ओडिशा की **सखी कुंडई**।

3. यूनेस्को के 43 भारतीय विश्व धरोहर स्थल (जुलाई 2024 में शामिल 43वें स्थल 'चराइदेव मैदाम' सहित)

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा वर्ष 1972 के विश्व विरासत अभिसमय के अंतर्गत भारत के कुल **43 स्थलों** को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है, जिनमें **35 सांस्कृतिक स्थल**, 7 **प्राकृतिक स्थल** और **1 मिश्रित स्थल** है (**पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार - चराइदेव मैदाम भारत का 43वाँ विश्व धरोहर स्थल**; **यूनेस्को भारत के विश्व धरोहर स्थल**):

• 35 सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल (कालक्रम व राज्यवार):

1. आगरा का किला, उत्तर प्रदेश (1983)
2. अजंता की गुफाएँ, महाराष्ट्र (1983)
3. एलोरा की गुफाएँ, महाराष्ट्र (1983)
4. ताजमहल, उत्तर प्रदेश (1983) (**एएसआई आगरा**)
5. महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) के स्मारक समूह, तमिलनाडु (1984)
6. कोणार्क का सूर्य मंदिर, ओडिशा (1984)
7. गोवा के चर्च और कॉन्वेंट (1986)
8. फतेहपुर सीकरी, उत्तर प्रदेश (1986)
9. हम्पी के स्मारक समूह, कर्नाटक (1986)
10. खजुराहो के स्मारक समूह, मध्य प्रदेश (1986)
11. एलिफेंटा की गुफाएँ, महाराष्ट्र (1987)
12. महान जीवित चोल मंदिर — तंजावुर का बृहदेश्वर, गंगैकोंडचोलपुरम और दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर, तमिलनाडु (1987, 2004 में विस्तारित)
13. पट्टदकल के स्मारक समूह, कर्नाटक (1987)
14. साँची के बौद्ध स्मारक, मध्य प्रदेश (1989) (**एएसआई साँची**)
15. हुमायूँ का मकबरा, दिल्ली (1993)
16. कुतुब मीनार और उसके स्मारक, दिल्ली (1993)
17. भारत की पर्वतीय रेल — दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे, नीलगिरि माउंटेन रेलवे और कालका-शिमला रेलवे (1999, 2005, 2008)
18. बोधगया का महाबोधि मंदिर परिसर, बिहार (2002)
19. भीमबेटका के शैलाश्रय, मध्य प्रदेश (2003)
20. चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्व उद्यान, गुजरात (2004)
21. छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (पूर्व विक्टोरिया टर्मिनस), महाराष्ट्र (2004)
22. लाल किला परिसर, दिल्ली (2007)
23. जंतर मंतर, जयपुर, राजस्थान (2010)
24. राजस्थान के पहाड़ी किले — चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर और जैसलमेर (2013)
25. रानी की वाव (पाटन की सीढ़ीदार बावड़ी), गुजरात (2014)
26. नालंदा महाविहार का पुरातात्विक स्थल, बिहार (2016)
27. ली कोर्बुजिए का स्थापत्य कार्य — चंडीगढ़ का कैपिटल कॉम्प्लेक्स (2016)
28. अहमदाबाद का ऐतिहासिक नगर, गुजरात — भारत का प्रथम विश्व विरासत नगर (2017)
29. मुंबई के विक्टोरियन गोथिक और आर्ट डेको एनसेंबल, महाराष्ट्र (2018)
30. जयपुर नगर, राजस्थान — भारत का दूसरा विश्व विरासत नगर (2019)
31. काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर, पालमपेट, तेलंगाना — तैरती हुई हल्की ईंटों से निर्मित (2021)
32. धोलावीरा: एक हड़प्पाकालीन नगर, गुजरात — कर्क रेखा पर स्थित प्राचीन जल प्रबंधन नगर (2021)
33. शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल — रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित विश्वभारती सांस्कृतिक केंद्र (2023 — 41वाँ स्थल)
34. होयसल के पवित्र मंदिर समूह — बेलूर, हलेबिदु और सोमनाथपुरा के तारकीय मंदिर, कर्नाटक (2023 — 42वाँ स्थल)

35. **चराइदेव मैदाम (अहोम राजवंश की टीला-दफन प्रणाली), असम (जुलाई 2024 — 43वाँ स्थल):** नई दिल्ली में आयोजित विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र में शामिल यह पूर्वोत्तर भारत का पहला सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल है (**संयुक्त राष्ट्र भारत - असम का चराइदेव मैदाम विश्व धरोहर सूची में शामिल**; **पीआईबी विज्ञप्ति**)। पाटकाई पहाड़ियों की तलहटी में स्थित चराइदेव को 1253 ईस्वी में अहोम साम्राज्य के संस्थापक चाओ लुंग सुकाफा ने अपनी पहली राजधानी बनाया था। इन शाही पिरामिडनुमा टीलों (मैदाम) में तेरहवीं से उन्नीसवीं शताब्दी तक ताई-अहोम राजाओं और रानियों को उनकी बहुमूल्य वस्तुओं के साथ दफनाया जाता था; इन्हें 'असम का पिरामिड' भी कहा जाता है।

• **7 प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल:** (36) काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, असम (1985 — एक सींग वाला गैंडा); (37) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर, राजस्थान (1985); (38) मानस वन्यजीव अभयारण्य, असम (1985); (39) सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिम बंगाल (1987 — मैंग्रोव वन व रॉयल बंगाल टाइगर); (40) नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड (1988, 2005); (41) पश्चिमी घाट — केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक व महाराष्ट्र के 39 जैव विविधता स्थल (2012); तथा (42) ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान संरक्षण क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश (2014)।

• **1 मिश्रित (सांस्कृतिक + प्राकृतिक) विश्व धरोहर स्थल:** (43) **कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान, सिक्किम (2016)** — यह अपनी समृद्ध हिमालयी जैव विविधता (प्राकृतिक महत्व) और लेप्चा जनजाति की पवित्र पौराणिक घाटी 'बेयुल डेमाजोंग' व बौद्ध मठों (सांस्कृतिक महत्व) दोनों के कारण भारत का एकमात्र मिश्रित विश्व धरोहर स्थल है।

4-नोड आरेख बिंदु: रंगमंच, कठपुतली एवं यूनेस्को विरासत तंत्र

• **नोड 1 (संस्कृत से लोक रंगमंच का प्रवाह):** भरतमुनि का नाट्यशास्त्र एवं भास-कालिदास-शूद्रक की शास्त्रीय परंपरा उत्तर भारतीय स्वांग-नौटंकी-रामलीला पूर्वी जात्रा-अंकिया नाट-बिदेसिया दक्षिणी कुडियाट्टम-यक्षगान-मुडियेट्टू।

• **नोड 2 (कठपुतली के 4 यांत्रिक वर्ग):** सूत्र (कठपुतली-राजस्थान, कुंडई-ओडिशा, गोम्बेयट्टा-कर्नाटक, बोम्मलट्टम-तमिलनाडु) छाया (तोल्लु बोम्मलाता-आंध्र, रावणछाया-ओडिशा) छड़ (पुतुल नाच-बंगाल, यमपुरी-बिहार) दस्ताना (पावाकूथु-केरल)।

• **नोड 3 (यूनेस्को के 43 विश्व धरोहर स्थलों का त्रि-स्तरीय विभाजन):** 35 सांस्कृतिक स्थल (ताजमहल से चराइदेव मैदाम तक) + 7 प्राकृतिक स्थल (काजीरंगा से ग्रेट हिमालयन पार्क तक) + 1 मिश्रित स्थल (कंचनजंगा-सिक्किम) = 43 कुल स्थल।

• **नोड 4 (नवीनतम 5 सांस्कृतिक यूनेस्को स्थलों का कालक्रम):** 39वाँ: रामप्पा मंदिर, तेलंगाना (2021) 40वाँ: धोलावीरा, गुजरात (2021) 41वाँ: शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल (2023) 42वाँ: होयसल मंदिर समूह, कर्नाटक (2023) 43वाँ: चराइदेव मैदाम, असम (2024)।

5-पंक्तियों की तुलनात्मक सारणी: कठपुतली शैलियाँ, लोक रंगमंच एवं यूनेस्को स्थल

तुलना का आधार	सूत्र कठपुतली (धागा)	छाया कठपुतली (चमड़ा)	छड़ व दस्ताना कठपुतली	संबद्ध लोक रंगमंच एवं यूनेस्को संदर्भ
1. निर्माण सामग्री एवं आकृति	हल्की लकड़ी, कपड़ा और सिर-हाथ-कमर में लचीले जोड़	हिरण या बकरी के चपटे पारदर्शी व रंगीन चमड़े की आकृतियाँ	छड़: लकड़ी व बांस; दस्ताना: कपड़ा व लकड़ी का छोटा सिर	रंगमंच में काष्ठ मुखौटे, हरताल-गेरू शृंगार व पारंपरिक परिधान (**सीसीआरटी**)
2. संचालन विधि एवं मंच	ऊपर से सूत्रधार की उँगलियों में बँधे काले धागों द्वारा	पीछे से दीपक या प्रकाश स्रोत द्वारा सफेद पर्दे पर छाया प्रक्षेपण	नीचे से कमर में बँधी छड़ या हथेली व उँगलियों में पहनकर	खुला अखाड़ा मंच, मशाल प्रकाश और सूत्रधार-विदूषक संवाद
3. क्षेत्रीय प्रतिनिधि रूप	कठपुतली (राजस्थान), कुंडई (ओडिशा), गोम्बेयट्टा (कर्नाटक), बोम्मलट्टम (तमिलनाडु)	तोल्लु बोम्मलाता (आंध्र), तोगलु गोम्बेयट्टा (कर्नाटक), रावणछाया (ओडिशा)	छड़: पुतुल नाच (बंगाल), यमपुरी (बिहार); दस्ताना: पावाकूथु (केरल)	उत्तर: नौटंकी, भांड पाथेर, माच; दक्षिण: कुडियाट्टम, यक्षगान, तेरुकुट्टू
4. विशिष्ट संरचनात्मक पहचान	राजस्थानी कठपुतली में पैर नहीं होते; बोम्मलट्टम सबसे भारी होती है	रावणछाया में कोई जोड़ नहीं होता; तोल्लु बोम्मलाता दोनों तरफ से रंगीन	यमपुरी बिना जोड़ की होती है; पावाकूथु पर कथकली का सीधा प्रभाव है	कुडियाट्टम, रामलीला और मुडियेट्टू यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल हैं
5. राज्यों के शीर्ष यूनेस्को धरोहर युग्म	राजस्थान (पहाड़ी किले, जयपुर नगर, जंतर मंतर, केवलादेव)	आंध्र/तेलंगाना (रामप्पा मंदिर); कर्नाटक (हम्पी, पट्टदकल, होयसल)	बंगाल (शांतिनिकेतन, सुंदरबन); बिहार (महाबोधि, नालंदा); असम (चराइदेव, काजीरंगा, मानस)	भारत के कुल 43 यूनेस्को स्थल: महाराष्ट्र (सर्वाधिक 5 सांस्कृतिक स्थल) (**पीआईबी**)

चार्ट डेटा % (43 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों एवं रंगमंच-कठपुतली का अनुपातिक वितरण)

• **सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल (35 स्थल — 43 में से अनुपात):** 81.4% (35/43)

• **प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थल (7 स्थल — 43 में से अनुपात):** 16.3% (7/43)

• **मिश्रित विश्व धरोहर स्थल (1 स्थल — कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान):** 2.3% (1/43)

• (परीक्षा प्रश्न-भार वितरण: यूनेस्को के 43 स्थल व अमूर्त सूची 45%, क्षेत्रीय लोक रंगमंच व संस्कृत नाटककार 30%, कठपुतली की चारों शैलियाँ 25%)

मॉड्यूल 6: भारतीय दार्शनिक चिंतन — आस्तिक षड्दर्शन, नास्तिक परंपराएँ एवं भक्ति-सूफी आंदोलन

विस्तृत व्याख्या

1. भारतीय दर्शन: आस्तिक षड्दर्शन एवं नास्तिक (अवैदिक) संप्रदाय

भारतीय दार्शनिक परंपरा को वेदों की प्रामाणिकता स्वीकार करने या न करने के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - भारतीय संस्कृति एवं दर्शन)। जो संप्रदाय वेदों को सर्वोच्च ज्ञान-स्रोत मानते हैं उन्हें **'आस्तिक दर्शन' (षड्दर्शन — छह रूढ़िवादी प्रणालियाँ)** कहा जाता है, और जो वेदों की प्रामाणिकता को अस्वीकार करते हैं उन्हें **'नास्तिक दर्शन'** (चार्वाक/लोकायत, बौद्ध, जैन और आजीवक) कहा जाता है।

• **आस्तिक षड्दर्शन के तीन युग्म (छह प्रणालियाँ):**

1. **सांख्य दर्शन (प्रवर्तक: महर्षि कपिल, ग्रंथ: सांख्य सूत्र, ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका):** यह सबसे प्राचीन दार्शनिक प्रणाली है। यह 'द्वैतवादी यथार्थवाद' और 'सत्कार्यवाद' (कार्य उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान रहता है) पर आधारित है। इसके अनुसार ब्रह्मांड का सृजन दो स्वतंत्र मूल तत्वों — **'प्रकृति'** (जड़, सक्रिय और तीन गुणों: सत्व, रज, तम से युक्त) और **'पुरुष'** (चेतन, निष्क्रिय आत्मा) — के संयोग से कुल 25 तत्वों के रूप में हुआ है। प्रारंभिक सांख्य अनीश्वरवादी था।

2. **योग दर्शन (प्रवर्तक: महर्षि पतंजलि, ग्रंथ: योगसूत्र):** यह सांख्य के सैद्धांतिक ज्ञान का व्यावहारिक पक्ष है, किंतु इसमें 26वें तत्व के रूप में 'ईश्वर' को जोड़ा गया है (अत: इसे 'सेश्वर सांख्य' कहते हैं)। चित्त की वृत्तियों के निरोध ('योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः') के लिए पतंजलि ने **'अष्टांग योग'** का मार्ग दिया: यम (नैतिक संयम), नियम (आत्म-अनुशासन), आसन (शारीरिक मुद्रा), प्राणायाम (श्वास नियंत्रण), प्रत्याहार (इंद्रियों को विषयों से हटाना), धारणा (एकाग्रता), ध्यान (चिंतन) और समाधि (मोक्ष की अवस्था)।

3. **न्याय दर्शन (प्रवर्तक: अक्षपाद गौतम, ग्रंथ: न्याय सूत्र):** यह तार्किक विश्लेषण और प्रमाण मीमांसा पर आधारित दर्शन है। इसके अनुसार यथार्थ ज्ञान ('प्रमा') के चार वैध साधन (प्रमाण) हैं: प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द। सही तर्क और ज्ञान के माध्यम से ही दुखों से मुक्ति ('अपवर्ग') संभव है।

4. **वैशेषिक दर्शन (प्रवर्तक: महर्षि कणाद या उलूक, ग्रंथ: वैशेषिक सूत्र):** यह भारतीय भौतिकशास्त्र और **'परमाणुवाद'** का जनक है। कणाद के अनुसार संपूर्ण भौतिक जगत शाश्वत और अविभाज्य सूक्ष्मतम कणों ('परमाणु') के संयोग से बना है और संपूर्ण अस्तित्व को सात 'पदार्थों' (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव) में समझा जा सकता है।

5. **पूर्व मीमांसा (प्रवर्तक: महर्षि जैमिनि, ग्रंथ: मीमांसा सूत्र, भाष्यकार: कुमारिल भट्ट व प्रभाकर):** यह वेदों के 'कर्मकांड' (ब्राह्मण ग्रंथों व यज्ञीय अनुष्ठानों) पर केंद्रित है। इसके अनुसार वेद अपौरुषेय और नित्य हैं तथा वैदिक यज्ञों और धर्म का निष्ठापूर्वक पालन करने से ही स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

6. **उत्तर मीमांसा या वेदांत (प्रवर्तक: महर्षि बादरायण, ग्रंथ: ब्रह्मसूत्र या वेदांत सूत्र):** यह उपनिषदों के 'ज्ञानकांड' पर आधारित है, जिसका मूल आधार प्रस्थानत्रयी (उपनिषद, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र) है। मध्यकाल में इसके पाँच प्रमुख उप-संप्रदाय विकसित हुए: (i) **अद्वैतवाद — आदि शंकराचार्य** ('ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नापरः' — ब्रह्म और आत्मा एक हैं, जगत माया है); (ii) **विशिष्टाद्वैतवाद — रामानुजाचार्य** (सगुण ब्रह्म सत्य है, जीव और जगत ब्रह्म के विशेषण या शरीर हैं, मोक्ष का मार्ग प्रपत्ति/भक्ति है); (iii) **द्वैतवाद — मध्वाचार्य** (ईश्वर, जीव और जड़ जगत तीनों एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न व सत्य हैं — पंचभेद सिद्धांत); (iv) **द्वैताद्वैतवाद (भेदाभेद) — निम्बार्काचार्य** (जीव और जगत ब्रह्म से भिन्न भी हैं और अभिन्न भी, जैसे सूर्य और उसकी किरणें); तथा (v) **शुद्धाद्वैतवाद — वल्लभाचार्य** (माया से रहित शुद्ध ब्रह्म ही जगत के रूप में प्रकट होता है, मोक्ष केवल ईश्वर के अनुग्रह या 'पुष्टिमार्ग' से मिलता है)।

• **प्रमुख नास्तिक दर्शन: चार्वाक/लोकायत** (प्रवर्तक: बृहस्पति — भौतिकवादी दर्शन, केवल 'प्रत्यक्ष' को प्रमाण मानता है, आत्मा व परलोक को अस्वीकार करता है); **आजीवक** (प्रवर्तक: मक्खलि गोसाल — कठोर 'नियतिवाद' या भाग्य पर आधारित); **जैन दर्शन** (अनेकांतवाद, स्याद्वाद या सप्तभंगी नय और पंच महाव्रत); तथा **बौद्ध दर्शन** (प्रतीत्यसमुत्पाद, क्षणिकवाद, अनात्मवाद और चार आर्य सत्य)।

2. भक्ति आंदोलन: दक्षिण से उत्तर की ओर आध्यात्मिक एवं सामाजिक क्रांति

भक्ति आंदोलन का सूत्रपात छठी से नवीं शताब्दी के बीच दक्षिण भारत (तमिलनाडु) में पल्लव और चोल काल के दौरान बौद्ध व जैन कठोरता के विरुद्ध भावनात्मक जन-भक्ति के रूप में हुआ। इसके दो स्तंभ थे:

• **आलवार संत (भगवान विष्णु के भक्त — कुल 12 संत):** इनके भक्ति गीतों का संकलन नाथमुनि ने **'नलइरा दिव्यप्रबंधम'** (चार हजार पवित्र छंद, जिसे 'तमिल वेद' कहा जाता है) में किया। प्रमुख संत: **अंडाल** (एकमात्र महिला आलवार संत, जिन्हें 'दक्षिण की मीरा' कहा जाता है; रचना: तिरुप्पावै), नम्मालवार, पेरियालवार और कुलशेखर।

• **नयनार संत (भगवान शिव के भक्त — कुल 63 संत):** इनके भजनों का संकलन नम्बि अंडार नम्बि ने **'तिरुमुरई'** (जिसके प्रथम सात भाग 'तेवरम' कहलाते हैं) में किया। प्रमुख संत: अप्पार, संबंदर, सुंदरार, मणिक्कवाचकर और महिला संत **कराइक्कल अम्मैयार**।

बारहवीं शताब्दी में कर्नाटक में **बसवन्ना** ने 'वीरशैव' या 'लिंगायत' आंदोलन चलाया, जिसने जाति प्रथा, मूर्ति पूजा और कर्मकांडों का तीव्र विरोध किया तथा कन्नड़ भाषा में 'वचन' साहित्य की रचना की। चौदहवीं शताब्दी में रामानुजाचार्य के शिष्य **रामानंद** भक्ति को दक्षिण से उत्तर भारत (काशी) लाए और संस्कृत के स्थान पर जनभाषा हिंदी में उपदेश दिए। उत्तर भारत में भक्ति की दो धाराएँ प्रवाहित हुईं:

• **निर्गुण भक्ति धारा (ज्ञानाश्रयी शाखा):** ईश्वर को निराकार, सर्वव्यापी और अवतार-रहित मानने वाले संत। प्रमुख संत: **कबीरदास** (रामानंद के शिष्य, रचना: बीजक — साखी, सबद, रमैनी; उलटबाँसी शैली और हिंदू-मुस्लिम आडंबरों पर प्रहार), **गुरु नानक देव** (1469 में तलवंडी में जन्म, सिख धर्म के संस्थापक, 'लंगर' और 'संगत' की शुरुआत, एकेश्वरवाद) और **दादू दयाल** (गुजरात-राजस्थान, 'निपख' संप्रदाय)।

• **सगुण भक्ति धारा (प्रेमाश्रयी — राम व कृष्ण भक्ति शाखा):** ईश्वर के साकार अवतारों की उपासना। कृष्ण भक्ति में **वल्लभाचार्य** व उनके पुत्र विट्ठलनाथ (अष्टछाप के आठ कवि जिनमें **सूरदास** सर्वोपरि थे — रचना: सूरसागर), **चैतन्य महाप्रभु** (बंगाल में 'संकीर्तन' और अचिंत्य भेदाभेद दर्शन), **मीराबाई** (मेवाड़ राजघराना, कृष्ण को पति रूप में भजना) और **शंकरदेव** (असम में 'एकशरण धर्म') प्रमुख रहे। राम भक्ति में **गोस्वामी तुलसीदास** (अवधी में रामचरितमानस, ब्रज में विनयपत्रिका व कवितावली) सर्वोच्च रहे। महाराष्ट्र में तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक पंढरपुर के भगवान विट्ठल (विठोबा) को केंद्र में रखकर **'वारकरी' और 'धरकरी' आंदोलन** चला, जिसके प्रमुख संत **ज्ञानेश्वर** (ज्ञानेश्वरी — मराठी गीता टीका), **नामदेव** (जिनके पद गुरु ग्रंथ साहिब में भी संकलित हैं), **एकनाथ**, **तुकाराम** (अभंग रचनाएँ) और **समर्थ रामदास** (शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु, रचना: दासबोध) थे।

3. सूफी आंदोलन: इस्लामी रहस्यवाद, सिलसिले एवं सांस्कृतिक समन्वय

सूफीवाद ('तसव्वुफ') इस्लाम के भीतर उभरा रहस्यवादी और उदारवादी आंदोलन है, जिसका मूल शब्द 'सूफ' (ऊन) या 'सफा' (पवित्रता) से बना है। सूफी दर्शन **'वहदत-उल-वुजूद'** (इब्न-अल-अरबी द्वारा प्रतिपादित — 'अस्तित्व की एकता', अर्थात स्रष्टा और सृष्टि एक हैं) पर आधारित था, जो भारतीय अद्वैत दर्शन के अत्यंत निकट था। सूफी आश्रम को **'खानकाह'**, गुरु को **'पीर' या 'मुर्शिद'**, शिष्य को **'मुरीद'**, उत्तराधिकारी को **'वली'**, संगीतमय आध्यात्मिक सभा को **'समा'** और संत की दरगाह पर पुण्यतिथि उत्सव को **'उर्स'** कहा जाता था। अबुल फजल ने 'आइन-ए-अकबरी' में चौदह सूफी सिलसिलों का उल्लेख किया है, जिन्हें दो वर्गों में बाँटा जाता है: **'बा-शरा'** (इस्लामी कानून या शरीयत को मानने वाले — चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, नक्शबंदी) और **'बे-शरा'** (शरीयत से मुक्त घुमक्कड़ संत — कलंदर और मदारी)।

• **चिश्ती सिलसिला:** भारत में सबसे लोकप्रिय सिलसिला, जिसकी स्थापना बारहवीं शताब्दी के अंत में **ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती** (दरगाह: अजमेर शरीफ) ने की। चिश्ती संत राजकीय संरक्षण व धन से दूर रहते थे, गरीबों की सेवा करते थे और 'समा' (कव्वाली) तथा 'चिल्ला-ए-माकूस' (योगिक प्राणायाम) अपनाते थे। प्रमुख संत: **कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** (दिल्ली), **बाबा फरीद** (गंजे-ए-शकर — अजोधन, जिनकी रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल हैं), **हजरत निजामुद्दीन औलिया** (दिल्ली — 'महबूब-ए-इलाही', जिन्होंने सात सुल्तानों का शासन देखा और अमीर खुसरो जिनके प्रिय शिष्य थे), **नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी** और दक्षिण में **गेसूदराज बंदानवाज** (गुलबर्गा — दक्कनी उर्दू के प्रथम गद्य लेखक, रचना: मिराज-उल-आशिकी)।

• **सुहरावर्दी सिलसिला:** भारत में **शेख बहाउद्दीन जकारिया** (मुल्तान) द्वारा स्थापित। चिश्तियों के विपरीत इन्होंने राजकीय पद ('शेख-उल-इस्लाम') और धन स्वीकार किया तथा आध्यात्मिक साधना के साथ भौतिक समृद्धि को उचित माना।

• **कादिरी एवं शत्तारी सिलसिला:** कादिरी सिलसिले के प्रमुख संत **मियाँ मीर** (जिन्होंने अमृतसर के हरमंदिर साहिब/स्वर्ण मंदिर की नींव रखी) और उनके शिष्य मुल्ला शाह के माध्यम से मुगल शहजादे **दारा शिकोह** (रचना: 'मज्म-उल-बहरैन' अर्थात दो समुद्रों का संगम, तथा 52 उपनिषदों का 'सिर्र-ए-अकबर' नाम से फारसी अनुवाद) जुड़े थे। शत्तारी सिलसिले के संत **मुहम्मद गौस** (ग्वालियर) से तानसेन प्रभावित थे।

• **नक्शबंदी सिलसिला:** ख्वाजा बाकी बिल्लाह द्वारा स्थापित और **शेख अहमद सरहिंदी** ('मुजद्दिद अलिफ सानी') द्वारा प्रचारित यह अत्यंत कट्टरवादी सिलसिला था। इन्होंने अकबर की उदार नीतियों और 'वहदत-उल-वुजूद' का विरोध कर **'वहदत-उल-शुहूद'** (प्रत्यक्षवाद — ईश्वर और सृष्टि अलग हैं) का सिद्धांत दिया तथा संगीत ('समा') को पूर्णतः वर्जित माना। औरंगजेब इसी सिलसिले का अनुयायी था।

4-नोड आरेख बिंदु: भारतीय दर्शन एवं भक्ति-सूफी समन्वय चक्र

• **नोड 1 (आस्तिक षड्दर्शन के 3 पूरक युग्म):** सांख्य (कपिल: प्रकृति-पुरुष द्वैत) + योग (पतंजलि: अष्टांग योग) न्याय (गौतम: 4 प्रमाण तर्क) + वैशेषिक (कणाद: परमाणुवाद) पूर्व मीमांसा (जैमिनि: वैदिक कर्मकांड) + उत्तर मीमांसा/वेदांत (बादरायण: उपनिषद ब्रह्मज्ञान)।

• **नोड 2 (वेदांत के 5 आचार्य एवं दर्शन):** शंकराचार्य (अद्वैतवाद) रामानुजाचार्य (विशिष्टाद्वैतवाद) मध्वाचार्य (द्वैतवाद) निम्बार्काचार्य (द्वैताद्वैतवाद) वल्लभाचार्य (शुद्धाद्वैतवाद / पुष्टिमार्ग)।

• **नोड 3 (भक्ति आंदोलन का क्षेत्रीय प्रसार):** तमिल आलवार (12 वैष्णव, दिव्यप्रबंधम) व नयनार (63 शैव, तिरुमुरई) कर्नाटक वीरशैव (बसवन्ना) मराठी वारकरी (ज्ञानेश्वर, नामदेव, तुकाराम) उत्तर भारतीय निर्गुण (कबीर, नानक) व सगुण (तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, चैतन्य, शंकरदेव)।

• **नोड 4 (सूफी सिलसिलों का वैचारिक स्पेक्ट्रम):** चिश्ती (मुईनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया — समा संगीत व राजकीय अलगाव) सुहरावर्दी (बहाउद्दीन जकारिया — राजकीय संरक्षण स्वीकार) कादिरी (मियाँ मीर, दारा शिकोह — सर्वधर्म समन्वय) नक्शबंदी (अहमद सरहिंदी — कट्टर शरीयत व संगीत विरोध)।

5-पंक्तियों की तुलनात्मक सारणी: षड्दर्शन, वेदांत आचार्य एवं भक्ति-सूफी धाराएँ

तुलना का आधार	सांख्य बनाम योग एवं न्याय बनाम वैशेषिक	अद्वैतवाद बनाम विशिष्टाद्वैतवाद एवं द्वैतवाद	निर्गुण भक्ति बनाम सगुण भक्ति धारा	चिश्ती सिलसिला बनाम सुहरावर्दी एवं नक्शबंदी
1. संस्थापक एवं प्रवर्तक	सांख्य: कपिल; योग: पतंजलि; न्याय: गौतम; वैशेषिक: कणाद	अद्वैत: शंकराचार्य; विशिष्टाद्वैत: रामानुज; द्वैत: मध्वाचार्य	निर्गुण: कबीर, गुरु नानक, रैदास; सगुण: तुलसीदास, सूरदास, चैतन्य, मीराबाई	चिश्ती: मुईनुद्दीन चिश्ती; सुहरावर्दी: बहाउद्दीन जकारिया; नक्शबंदी: बाकी बिल्लाह व सरहिंदी
2. केंद्रीय दार्शनिक सिद्धांत	सांख्य: 25 तत्व (प्रकृति-पुरुष); योग: अष्टांग मार्ग; न्याय: तर्क प्रमाण; वैशेषिक: परमाणुवाद	अद्वैत: निर्गुण ब्रह्म सत्य, जगत माया; विशिष्टाद्वैत: सगुण ब्रह्म; द्वैत: ईश्वर-जीव-जगत सर्वथा भिन्न	निर्गुण: निराकार ईश्वर व ज्ञान मार्ग; सगुण: अवतारवाद (राम-कृष्ण) व प्रेम-भक्ति मार्ग	चिश्ती: वहदत-उल-वुजूद (अस्तित्व की एकता); नक्शबंदी: वहदत-उल-शुहूद (एनसीईआरटी)
3. मोक्ष या आध्यात्मिक प्राप्ति का साधन	सांख्य-न्याय: यथार्थ विवेक ज्ञान; योग: समाधि; मीमांसा: वैदिक यज्ञ कर्म	शंकराचार्य: ज्ञान मार्ग; रामानुज व मध्वाचार्य: ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण (प्रपत्ति/भक्ति)	निर्गुण: गुरु कृपा, नाम स्मरण व आडंबर त्याग; सगुण: कीर्तन, लीला गान व दास्य/माधुर्य भाव	चिश्ती: समा (कव्वाली), जिक्र व जनसेवा; नक्शबंदी: मौन ध्यान व शरीयत का कठोर पालन
4. सामाजिक एवं राजकीय दृष्टिकोण	शास्त्रीय संस्कृत विमर्श और वैदिक-दार्शनिक शास्त्रार्थ परंपरा	शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में 4 मठ स्थापित किए; रामानुज ने सभी जातियों के लिए भक्ति खोली	जाति-पाँति, छुआछूत व धार्मिक कट्टरता का विरोध तथा मातृभाषाओं (अवधी, ब्रज, पंजाबी, मराठी) का उत्थान	चिश्ती: सुल्तानों व जागीरों से दूरी; सुहरावर्दी व नक्शबंदी: राजकीय संरक्षण व दरबारी राजनीति में सक्रिय
5. प्रमुख ग्रंथ एवं साहित्यिक योगदान	सांख्यकारिका, योगसूत्र, न्यायसूत्र, वैशेषिक सूत्र, ब्रह्मसूत्र	शारीरक भाष्य (शंकर), श्रीभाष्य (रामानुज), पूर्णप्रज्ञ भाष्य (मध्व), अणुभाष्य (वल्लभ)	बीजक, गुरु ग्रंथ साहिब, रामचरितमानस, सूरसागर, ज्ञानेश्वरी, बोरगीत	फवायद-उल-फुआद (अमीर हसन सिजजी), कश्फ-उल-महजूब (हुजविरी), मज्म-उल-बहरैन (दारा शिकोह)

चार्ट डेटा % (दर्शन, भक्ति एवं सूफी अनुभाग में परीक्षा प्रश्नों का अनुपातिक वितरण)

• **भक्ति आंदोलन (आलवार-नयनार, निर्गुण-सगुण संत, महाराष्ट्र धर्म एवं महिला संत):** 35%

• **आस्तिक षड्दर्शन एवं वेदांत के 5 उप-संप्रदाय (शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क, वल्लभ):** 30%

• **सूफी आंदोलन (चिश्ती, सुहरावर्दी, कादिरी, नक्शबंदी सिलसिले व सूफी शब्दावली):** 20%

• **नास्तिक दार्शनिक परंपराएँ (बौद्ध, जैन, चार्वाक/लोकायत एवं आजीवक दर्शन):** 15%

भाग 2: संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग परीक्षाओं हेतु 10 नई अद्वितीय स्मृति ट्रिक्स (मेमोरी सूत्र)

प्रतियोगी परीक्षाओं में तथ्यों के भ्रम को समाप्त करने और तुरंत सही विकल्प पहचानने के लिए शुद्ध देवनागरी हिंदी में दस पूर्णतः मौलिक स्मृति सूत्र नीचे दिए गए हैं:

ट्रिक 1: सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल एवं उनके साक्ष्य

• **स्मृति सूत्र: "मोहन ने स्नान कर कांस्य नर्तकी देखी, हड़प्पा के अन्नागार में लाल धड़ रखा, लोथल के गोदीबाड़ा में युगल ने चावल खाए, और कालीबंगा की जुती भूमि पर चूड़ियाँ व अग्निकुंड पाए, जबकि धोलावीरा ने तीन भागों में जल-स्टेडियम बनाए।"**

• **परीक्षा अनुप्रयोग:**

• **मोहनजोदड़ो:** विशाल स्नानागार, कांस्य नर्तकी, पशुपति मुहर, दाढ़ी वाला पुजारी।

• **हड़प्पा:** बारह कक्षों वाला अन्नागार, लाल बलुआ पत्थर का पुरुष धड़, ताबूत शवाधान (आर-37)।

• **लोथल:** ज्वारीय गोदीबाड़ा (बंदरगाह), युगल शवाधान, चावल के भूसे के प्रमाण, मनका कारखाना।

• **कालीबंगा:** जुते हुए खेत के साक्ष्य, काली चूड़ियाँ, सप्त अग्निवेदिकाएँ, ऊँट की हड्डियाँ।

• **धोलावीरा:** तीन भागों में विभाजित एकमात्र नगर, शैलकृत जल कुंड, क्रीड़ांगन (स्टेडियम) व दस बड़े अक्षरों का सूचना पट्ट।

ट्रिक 2: सम्राट अशोक के स्तंभ शीर्ष एवं उन पर उत्कीर्ण पशु

• **स्मृति सूत्र: "सारनाथ और साँची में चार सिंह दहाड़े, रामपुरवा में वृषभ-सिंह खड़े, संकिसा में गजराज विराजे, और लौरिया नंदनगढ़ में एकल सिंह साजे।"**

• **परीक्षा अनुप्रयोग:**

• **सारनाथ व साँची:** चतुर्मुख सिंह शीर्ष (सारनाथ फलक के नीचे के चार पशुओं का क्रम: **"अश्व-वृषभ-सिंह-गज"** अर्थात घोड़ा, बैल, शेर और हाथी)।

• **रामपुरवा (बिहार):** यहाँ दो स्तंभ हैं — एक पर नटुवा वृषभ (बैल) और दूसरे पर एकल सिंह।

• **संकिसा (उत्तर प्रदेश):** हाथी (गज) शीर्ष।

• **लौरिया नंदनगढ़ व वैशाली:** एकल सिंह शीर्ष।

ट्रिक 3: नागर, द्रविड़ एवं वेसर मंदिर स्थापत्य के मुख्य अंतर

• **स्मृति सूत्र: "नागर में जगती पर आमलक-कलश मुस्काए और द्वार पर गंगा-यमुना नहाए; द्रविड़ में गोपुरम-प्राकार के भीतर कल्याणी नहाए और विमान पर स्तूपिका छाए; वेसर में चालुक्य-होयसल तारे सा जगमगाए।"**

• **परीक्षा अनुप्रयोग:**

• **नागर (उत्तर):** ऊँचा चबूतरा (जगती), चारदीवारी नहीं, वक्ररेखीय शिखर पर आमलक और कलश, गर्भगृह द्वार पर गंगा-यमुना।

• **द्रविड़ (दक्षिण):** चारदीवारी (प्राकार), प्रवेश द्वार पर भव्य गोपुरम, परिसर में कल्याणी जलकुंड, पिरामिडनुमा विमान के शीर्ष पर अष्टकोणीय स्तूपिका, द्वार पर द्वारपाल।

• **वेसर (दक्कन):** नागर और द्रविड़ का संश्लेषण, तारकीय (तारे के आकार का) आधार और सेलखड़ी प्रस्तर पर नक्काशी (ऐहोल, पट्टदकल, बेलूर, हलेबिदु)।

ट्रिक 4: गांधार, मथुरा और अमरावती मूर्तिकला की पहचान

• **स्मृति सूत्र: "गांधार का नीला कुषाण यूनानी केवल बुद्ध बनाए; मथुरा का लाल कुषाण स्वदेशी तीनों धर्मों (बौद्ध-जैन-हिंदू) को हँसाए; अमरावती का श्वेत सातवाहन जातक कथाओं की भीड़ सजाए।"**

• **परीक्षा अनुप्रयोग:**

• **गांधार:** नीला-भूरा शिस्ट पत्थर + कुषाण काल + यूनानी प्रभाव + केवल बौद्ध मूर्तियाँ (लहरदार बाल, मोटे वस्त्र)।

• **मथुरा:** चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर + कुषाण काल + स्वदेशी शैली + बौद्ध, जैन और हिंदू तीनों धर्म (प्रसन्न मुख, अलंकृत प्रभामंडल)।

• **अमरावती:** श्वेत संगमरमर/चूना पत्थर + सातवाहन काल + स्वदेशी शैली + एकल मूर्ति के बजाय जातक कथाओं के गतिशील समूह दृश्य और त्रिभंग मुद्रा।

ट्रिक 5: भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य एवं उनके राज्य

• **स्मृति सूत्र: "तमिल भरत ने आंध्र की कुचिपुड़ी खाई, केरल की मोहिनी ने कथकली दिखाई; ओडिशा में ओडिसी और मणिपुर में रास रचाई, यूपी के कथक ने असम के सत्र में शंकर की महिमा गाई।"**

• **परीक्षा अनुप्रयोग:**

• तमिलनाडु भरतनाट्यम; आंध्र प्रदेश कुचिपुड़ी; केरल मोहिनीअट्टम (एकल महिला लास्य) व कथकली (पुरुष प्रधान तांडव); ओडिशा ओडिसी; मणिपुर मणिपुरी; उत्तर प्रदेश/उत्तर भारत कथक; असम सत्रिया (श्रीमंत शंकरदेव)।

ट्रिक 6: हिंदुस्तानी संगीत के प्रमुख ख्याल घराने एवं संस्थापक

• स्मृति सूत्र: "ग्वालियर के नत्थन सबसे पुराने, आगरा के रंगीले फैयाज दीवाने; किराना के करीम-भीम ने शुद्ध स्वर ठाने, पटियाला के बड़े गुलाम और जयपुर के अल्लादिया को सब जानें।"

• परीक्षा अनुप्रयोग:

• ग्वालियर घराना: सबसे प्राचीन ख्याल घराना (हद्दू खाँ, हस्सू खाँ, नत्थन पीरबख्श, विष्णु दिगंबर पलुस्कर)।

• आगरा घराना: 'रंगीला घराना' (हाजी सुजान खाँ, फैयाज खाँ)।

• किराना घराना: स्वर और अलाप की शुद्धता (अब्दुल करीम खाँ, पंडित भीमसेन जोशी, गंगूबाई हंगल)।

• पटियाला घराना: उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ।

• जयपुर-अतरौली घराना: उस्ताद अल्लादिया खाँ, किशोरी अमोनकर।

ट्रिक 7: भारतीय कठपुतली की चारों शैलियों का वर्गीकरण

• स्मृति सूत्र: "धागे में कठपुतली-कुंडई-गोम्बे-बोम्मल बँधे, चमड़े की छाया में तोल्लु-तोगलु-रावणछाया सजे; छड़ से बंगाल का पुतुल और बिहार की यमपुरी चले, दस्ताने में केरल का पावाकूथु पले।"

• परीक्षा अनुप्रयोग:

• सूत्र (धागा): कठपुतली (राजस्थान), कुंडई (ओडिशा), गोम्बेयट्टा (कर्नाटक), बोम्मलट्टम (तमिलनाडु)।

• छाया (चमड़ा): तोल्लु बोम्मलाता (आंध्र प्रदेश), तोगलु गोम्बेयट्टा (कर्नाटक), रावणछाया (ओडिशा)।

• छड़ (रॉड): पुतुल नाच (पश्चिम बंगाल), यमपुरी (बिहार)।

• दस्ताना (ग्लव): पावाकूथु (केरल), सखी कुंडई (ओडिशा)।

ट्रिक 8: प्रमुख क्षेत्रीय लोक रंगमंच एवं संबद्ध राज्य

• स्मृति सूत्र: "कश्मीर का भांड, मालवा का माच, यूपी की नौटंकी, बंगाल का जात्रा नाच; असम का अंकिया, बिहार का बिदेसिया, गुजरात की भवई, महाराष्ट्र का तमाशा और केरल का कुडियाट्टम-मुडियेट्टू साँच।"

• परीक्षा अनुप्रयोग:

• भांड पाथेर (जम्मू-कश्मीर), माच (मध्य प्रदेश), नौटंकी व रासलीला (उत्तर प्रदेश), जात्रा (बंगाल-ओडिशा), अंकिया नाट/भाओना (असम), बिदेसिया (बिहार), भवई (गुजरात), तमाशा (महाराष्ट्र), यक्षगान (कर्नाटक), तेरुकुट्टू (तमिलनाडु), कुडियाट्टम व मुडियेट्टू (केरल)।

ट्रिक 9: भारत के नवीनतम यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (39वें से 43वें तक का सटीक क्रम)

• स्मृति सूत्र: "इकतालीस से पहले इक्कीस में रामप्पा और धोलावीरा आए (39-40), तेईस में शांतिनिकेतन और होयसल मुस्काए (41-42), चौबीस में असम के चराइदेव मैदाम ने तैंतालीसवाँ परचम लहराए (43)!"

• परीक्षा अनुप्रयोग:

• 39वाँ स्थल (2021): काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर, तेलंगाना।

• 40वाँ स्थल (2021): धोलावीरा (हड़प्पाकालीन नगर), गुजरात।

• 41वाँ स्थल (2023): शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल।

• 42वाँ स्थल (2023): होयसल के पवित्र मंदिर समूह (बेलूर, हलेबिदु, सोमनाथपुरा), कर्नाटक।

• **43वाँ स्थल (जुलाई 2024):** चराइदेव मैदाम (अहोम राजवंश की टीला-दफन प्रणाली), असम — पूर्वोत्तर भारत का प्रथम सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल।

ट्रिक 10: आस्तिक षड्दर्शन एवं वेदांत के पाँच प्रमुख आचार्य

• **स्मृति सूत्र (षड्दर्शन): "कपिल की संख्या (सांख्य), पतंजलि का योग; गौतम का न्याय, कणाद का विशेष परमाणु प्रयोग; जैमिनि की पूर्व मीमांसा, बादरायण का उत्तर वेदांत संयोग।"**

• **स्मृति सूत्र (वेदांत के 5 संप्रदाय): "शंकर अद्वैत, रामानुज विशिष्ट, मध्व द्वैत में स्पष्ट; निम्बार्क द्वैताद्वैत, वल्लभ शुद्ध पुष्टि में तुष्ट।"**

• **परीक्षा अनुप्रयोग:**

• **षड्दर्शन प्रवर्तक:** सांख्य (कपिल), योग (पतंजलि), न्याय (गौतम), वैशेषिक (कणाद), पूर्व मीमांसा (जैमिनि), उत्तर मीमांसा/वेदांत (बादरायण)।

• **वेदांत आचार्य:** अद्वैतवाद (आदि शंकराचार्य), विशिष्टाद्वैतवाद (रामानुजाचार्य), द्वैतवाद (मध्वाचार्य), द्वैताद्वैतवाद/भेदाभेद (निम्बार्काचार्य), शुद्धाद्वैतवाद/पुष्टिमार्ग (वल्लभाचार्य)।

भारतीय कला, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, शास्त्रीय नृत्य, संगीत, दर्शन एवं साहित्य की अविरल परंपरा सिन्धु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक काल तक भारत की सांस्कृतिक विविधता में एकता का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करती है। **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)**, **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** तथा **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)** के प्रामाणिक विवरणों के आधार पर इस भाग में भारतीय कला एवं संस्कृति के 6 प्रमुख अध्यायों का तुलनात्मक विश्लेषण और 40 उच्च-स्तरीय हल प्रश्न प्रस्तुत किए गए हैं।

अध्याय 1: भारतीय वास्तुकला का विकास — सिंधु घाटी से मंदिर स्थापत्य (नागर, द्रविड़ एवं वेसर शैली) तथा गुफा स्थापत्य

भारतीय वास्तुकला का प्रारंभ हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के सुनियोजित नगर विन्यास, पक्की ईंटों के भवनों और विशाल स्नानागार से होता है। मौर्य काल में सम्राट अशोक के एकाश्मक स्तंभों, स्तूपों (साँची, भरहूत) और बराबर की शैलकृत गुफाओं से होते हुए गुप्त काल में मंदिर निर्माण कला का शास्त्रीय स्वरूप विकसित हुआ, जो आगे चलकर उत्तर भारत में **नागर शैली**, दक्षिण भारत में **द्रविड़ शैली** और दक्कन क्षेत्र में **वेसर शैली** के रूप में प्रतिष्ठित हुआ (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)**)।

अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणी 1: नागर, द्रविड़ एवं वेसर मंदिर स्थापत्य शैलियाँ तथा प्रमुख शैलकृत गुफाएँ

क्रम	स्थापत्य शैली / स्मारक समूह	भौगोलिक क्षेत्र एवं कालखंड	प्रमुख संरक्षक राजवंश	मुख्य वास्तुशिल्पीय विशेषताएँ (शिखर, विमान, गोपुरम, मंडप)	प्रमुख प्रतिनिधि मंदिर / गुफा उदाहरण	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	नागर मंदिर स्थापत्य शैली	हिमालय से विंध्य पर्वत तक (उत्तर भारत); 5वीं से 13वीं शताब्दी ई.	गुप्त, चंदेल, सोलंकी (चालुक्य), गंग एवं परमार राजवंश	पंचायतन शैली; ऊँचे चबूतरे (जगती) पर निर्माण; गर्भगृह के ऊपर रेखीय/वक्ररेखीय **शिखर**; शीर्ष पर **आमलक** और **कलश**; चारदीवारी व गोपुरम का अभाव	दशावतार मंदिर (देवगढ़), कंदरिया महादेव (खजुराहो), लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर), सूर्य मंदिर (मोढेरा व कोणार्क)	NCERT इतिहास
2	द्रविड़ मंदिर स्थापत्य शैली	कृष्णा नदी से कन्याकुमारी तक (दक्षिण भारत); 7वीं से 18वीं शताब्दी ई.	पल्लव, चोल, पांड्य एवं विजयनगर साम्राज्य	ऊँची चारदीवारी से घिरा परिसर; भव्य प्रवेश द्वार (**गोपुरम**); गर्भगृह के ऊपर पिरामिडनुमा मंजिला **विमान**; शीर्ष पर अष्टकोणीय **स्तूपिका**; मंदिर परिसर में **कल्याणी** (जलकुंड)	तटीय मंदिर (महाबलीपुरम), बृहदेश्वर मंदिर (तंजौर), गंगैकोंडचोलपुरम, मीनाक्षी मंदिर (मदुरै)	ASI विश्व धरोहर
3	वेसर (चालुक्य/कर्नाटक) शैली	विंध्य पर्वत से कृष्णा नदी के मध्य (दक्कन क्षेत्र); 7वीं से 13वीं शताब्दी ई.	बादामी के चालुक्य, राष्ट्रकूट एवं होयसल राजवंश	नागर और द्रविड़ दोनों शैलियों का समन्वित रूप; अर्द्ध-गोलाकार या तारकीय (Star-shaped) धरातल योजना; अलंकृत स्तंभ और खुला प्रदक्षिणा पथ	विरूपाक्ष मंदिर व पापनाथ मंदिर (पट्टदकल), होयसलेश्वर मंदिर (हलेबिदु), चेन्नाकेशव मंदिर (बेलूर)	भारतीय संस्कृति पोर्टल
4	ओडिशा उप-शैली (कलिंग स्थापत्य)	तटीय ओडिशा (भुवनेश्वर, पुरी, कोणार्क); 8वीं से 13वीं शताब्दी ई.	सोमवंशी एवं पूर्वी गंग राजवंश (नरसिंहदेव प्रथम)	शिखर को **'रेखा देउल'** और मंडप को **'जगमोहन'** (पीढ़ा देउल) कहा जाता है; बाहरी दीवारों पर भव्य उत्कीर्णन किंतु भीतरी दीवारें सादी	लिंगराज मंदिर (भुवनेश्वर), जगन्नाथ मंदिर (पुरी), कोणार्क का सूर्य मंदिर ('ब्लैक पैगोडा')	ASI आधिकारिक पोर्टल
5	खजुराहो (चंदेल) उप-शैली	बुंदेलखंड (छतरपुर, मध्य प्रदेश); 10वीं से 11वीं शताब्दी ई.	चंदेल राजवंश (यशोवर्मन, धंगदेव एवं विद्याधर)	मंदिर के भीतर और बाहर दोनों ओर सजीव मूर्तियाँ; मुख्य शिखर के साथ छोटे शिखरों ('उरुःशृंग') का समूह; अर्द्धमंडप, मंडप, अंतराल और गर्भगृह एक ही अक्ष पर	कंदरिया महादेव मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, चौंसठ योगिनी मंदिर एवं पार्श्वनाथ जैन मंदिर	ASI विश्व धरोहर
6	सोलंकी (मारू-गुर्जर) उप-शैली	गुजरात एवं पश्चिमी राजस्थान; 11वीं से 13वीं शताब्दी ई.	सोलंकी (चालुक्य) शासक भीमदेव प्रथम, विमल शाह, तेजपाल	बलुआ पत्थर व श्वेत संगमरमर का सूक्ष्म तक्षण; मंदिर के सम्मुख सीढ़ीदार सूर्यकुंड (बावड़ी); तोरण द्वार	मोढेरा का सूर्य मंदिर (मेहसाणा, गुजरात) एवं माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर (विमल वसही व लूण वसही)	भारतीय संस्कृति पोर्टल

क्रम	स्थापत्य शैली / स्मारक समूह	भौगोलिक क्षेत्र एवं कालखंड	प्रमुख संरक्षक राजवंश	मुख्य वास्तुशिल्पीय विशेषताएँ (शिखर, विमान, गोपुरम, मंडप)	प्रमुख प्रतिनिधि मंदिर / गुफा उदाहरण	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
7	बराबर एवं नागार्जुनी शैलकृत गुफाएँ	जहानाबाद (बिहार); तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (मौर्य काल)	सम्राट अशोक एवं उनके पौत्र दशरथ	भारत की प्राचीनतम मानव-निर्मित शैलकृत गुफाएँ; आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं को समर्पित; भीतरी दीवारों पर दर्पण जैसी चमकदार पॉलिश	लोमस ऋषि गुफा (मेहराबदार गजपृष्ठाकार प्रवेश द्वार), सुदामा गुफा, कर्ण चौपड़ एवं विश्व झोपड़ी	NCERT पाठ्यपुस्तक
8	अजंता की शैलकृत गुफाएँ	छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद, महाराष्ट्र) — वाघोरा नदी तट; 200 ई.पू. से 650 ई.	सातवाहन एवं वाकाटक राजवंश (हरिषेण का मंत्री वराहदेव)	कुल **29 बौद्ध गुफाएँ** (5 चैत्य और 24 विहार); गुफा संख्या 9, 10, 19, 26, 29 चैत्य हैं; फ्रेस्को व टेम्परा पद्धति के विश्वप्रसिद्ध भित्ति चित्र	पद्मपाणि और वज्रपाणि बोधिसत्व चित्र (गुफा 1), मरणासन्न राजकुमारी (गुफा 16), महापरिनिर्वाण प्रतिमा (गुफा 26)	ASI विश्व धरोहर
9	एलोरा की शैलकृत गुफाएँ	छत्रपति संभाजीनगर (महाराष्ट्र); 5वीं से 11वीं शताब्दी ई.	राष्ट्रकूट राजवंश (कृष्ण प्रथम, दंतिदुर्ग) एवं यादव वंश	कुल **34 गुफाएँ** — तीन धर्मों का संगम: गुफा 1–12 (बौद्ध), गुफा 13–29 (हिंदू/ब्राह्मण), गुफा 30–34 (जैन)	गुफा संख्या 16 का **कैलाशनाथ मंदिर** (राष्ट्रकूट राजा कृष्ण प्रथम द्वारा ऊपर से नीचे चट्टान काटकर निर्मित विश्व की सबसे बड़ी एकाश्म संरचना)	ASI विश्व धरोहर
10	एलिफेंटा एवं बाघ की गुफाएँ	एलिफेंटा (मुंबई, धारापुरी द्वीप); बाघ (धार, मध्य प्रदेश — बाघिनी नदी तट)	राष्ट्रकूट एवं कलचुरि (एलिफेंटा); गुप्त शासक (बाघ गुफाएँ)	एलिफेंटा में 7 गुफाएँ (5 हिंदू शैव व 2 बौद्ध); बाघ में 9 बौद्ध गुफाएँ (जिनमें 'रंग महल' गुफा संख्या 4 प्रसिद्ध है)	एलिफेंटा की 6 मीटर ऊँची **त्रिमूर्ति सदाशिव प्रतिमा** (सृजनकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता का अद्भुत शिल्प)	भारतीय संस्कृति पोर्टल
11	उदयगिरि-खंडगिरि एवं उदयगिरि (विदिशा) गुफाएँ	भुवनेश्वर (ओडिशा — खारवेल); विदिशा (मध्य प्रदेश — चंद्रगुप्त द्वितीय)	चेदि शासक महामेघवाहन खारवेल (ओडिशा); गुप्त वंश (विदिशा)	ओडिशा की उदयगिरि-खंडगिरि गुफाएँ जैन मुनियों के निवास हेतु बनीं; विदिशा की उदयगिरि गुफाएँ वैष्णव व शैव धर्म से संबंधित हैं	हाथीगुम्फा अभिलेख व रानी गुम्फा (ओडिशा); गुफा संख्या 5 में भगवान विष्णु की विशाल **वराह अवतार प्रतिमा** (विदिशा)	IUC Academy
12	पल्लव कालीन चार स्थापत्य चरण	कांचीपुरम एवं मामल्लपुरम (महाबलीपुरम, तमिलनाडु); 7वीं-8वीं शताब्दी ई.	महेंद्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम 'मामल्ल', नरसिंहवर्मन द्वितीय 'राजसिंह'	1. महेंद्रवर्मन शैली (मंडप), 2. मामल्ल शैली (एकाश्मक रथ — सप्त पैगोडा), 3. राजसिंह शैली (संरचनात्मक मंदिर), 4. नंदिवर्मन शैली	धर्मराज रथ (सबसे बड़ा) व द्रौपदी रथ (सबसे छोटा); महाबलीपुरम का तटीय (शोर) मंदिर और कांची का कैलाशनाथ मंदिर	ASI विश्व धरोहर

क्या आप जानते हैं?
तमिलनाडु के तंजावुर (तंजौर) में चोल सम्राट **राजराज प्रथम** द्वारा 1003–1010 ई. के मध्य निर्मित **बृहदेश्वर मंदिर (राजराजेश्वर मंदिर)** पूर्णतः ग्रेनाइट पत्थर से निर्मित विश्व का पहला भव्य मंदिर है। इसके 13 मंजिला विमान की ऊँचाई लगभग 66 मीटर (216 फीट) है और इसके शीर्ष पर लगभग 80 टन भार का एक विशाल अष्टकोणीय एकाश्मक गुंबद ('कुम्भम्') स्थापित है। यह मंदिर यूनेस्को की 'महान जीवित चोल मंदिर' विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित है (**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)**)।

परीक्षा सतर्कता:
गुफा स्थापत्य से संबंधित प्रश्नों में **'चैत्य'** और **'विहार'** तथा **अजंता बनाम एलोरा** में अंतर को लेकर विशेष सावधानी बरतें:
1. **चैत्य (Chaitya):** बौद्ध भिक्षुओं का पूजा-गृह या प्रार्थना कक्ष होता था जिसके केंद्र में एक स्तूप होता था।
2. **विहार (Vihara):** बौद्ध भिक्षुओं के निवास एवं ध्यान करने का मठ होता था।
3. **अजंता की गुफाएँ (29 गुफाएँ):** केवल **बौद्ध धर्म** (हीनयान व महायान दोनों) से संबंधित हैं, जबकि **एलोरा की गुफाएँ (34 गुफाएँ): बौद्ध (1–12), हिंदू (13–29) और जैन (30–34)** तीनों धर्मों से संबंधित हैं (**NCERT इतिहास भाग 1**)।

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
स्मृति ट्रिक: - एलोरा की गुफाओं में धर्मों का क्रम (1 से 34): "बौद्ध भिक्षु (1-12) ने हिंदू मंदिर (13-29) में जैन मुनि (30-34) का स्वागत किया"

चरण 2
1 से 12 = बौद्ध, 13 से 29 = हिंदू (गुफा 16 कैलाश मंदिर), 30 से 34 = जैन (इंद्र सभा व जगन्नाथ सभा)। - पल्लव वास्तुकला के 4 चरणों का कालक्रम: **"महेंद्र मामल्ल राज नंद"

चरण 3
महेंद्रवर्मन (गुफा मंडप)

चरण 4
नरसिंहवर्मन 'मामल्ल' (रथ मंदिर)

चरण 5
नरसिंहवर्मन द्वितीय 'राजसिंह' (शोर मंदिर)

चरण 6
नंदिवर्मन (छोटे संरचनात्मक मंदिर)।

अध्याय 2: भारतीय मूर्तिकला की शैलियाँ (गांधार, मथुरा, अमरावती), कांस्य शिल्प एवं इंडो-इस्लामिक स्थापत्य

कुषाण और सातवाहन काल (प्रथम शताब्दी ई.पू. से तृतीय शताब्दी ई.) में भारतीय मूर्तिकला की तीन महान शैलियों—गांधार, मथुरा और अमरावती—का विकास हुआ। मथुरा और गांधार शैली में भगवान बुद्ध को पहली बार प्रतीकों (पदचिह्न, छत्र, स्तूप, बोधिवृक्ष) के स्थान पर मानव रूप में उत्कीर्ण किया गया। मध्यकाल में चोल कांस्य मूर्तिकला ('नटराज' शिल्प) और दिल्ली सल्तनत तथा मुगल काल में मेहराब, गुंबद, मीनार एवं चारबाग पद्धति पर आधारित इंडो-इस्लामिक वास्तुकला का उत्कर्ष हुआ (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणी 2: गांधार, मथुरा एवं अमरावती मूर्तिकला शैलियाँ तथा मध्यकालीन इंडो-इस्लामिक स्थापत्य

क्रम	मूर्तिकला / स्थापत्य शैली	प्रमुख केंद्र एवं संरक्षक राजवंश	प्रयुक्त पत्थर / निर्माण सामग्री	बाह्य प्रभाव एवं मुख्य विषय-वस्तु	प्रमुख शिल्पगत / वास्तुगत विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	गांधार मूर्तिकला शैली (ग्रीको-रोमन / इंडो-ग्रीक शैली)	तक्षशिला, पेशावर, बामियान (पश्चिमोत्तर सीमांत); संरक्षक: कुषाण शासक (कनिष्क)	नीला-धूसर बलुआ पत्थर (Blue-grey schist) एवं बाद में मिट्टी व प्लास्टर (Stucco)	यूनानी (हेलेनिस्टिक) और रोमन कला का गहरा प्रभाव; केवल **बौद्ध धर्म** से संबंधित	बुद्ध को यूनानी देवता 'अपोलो' के समान दिखाया गया; घुँघराले बाल, मांसल शरीर, पारदर्शी व सलवटदार वस्त्र, बिना आभूषण के यथार्थवादी अंकन और सादा प्रभामंडल	**NCERT इतिहास**
2	मथुरा मूर्तिकला शैली	मथुरा, सोनख एवं कंकाली टीला (उत्तर प्रदेश); संरक्षक: कुषाण राजवंश	चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर (Spotted Red Sandstone)	पूर्णतः **स्वदेशी शैली**; बौद्ध, हिंदू (वैष्णव-शैव) एवं जैन (तीर्थंकर) तीनों धर्मों की मूर्तियाँ	आध्यात्मिक और प्रसन्नचित्त मुद्रा में बुद्ध; मुँडे हुए सिर, दायाँ हाथ अभय मुद्रा में, अलंकृत प्रभामंडल (Halo); कनिष्क की सिरविहीन खड़ी प्रतिमा	**भारतीय संस्कृति पोर्टल**
3	अमरावती मूर्तिकला शैली	अमरावती एवं नागार्जुनकोंडा (कृष्णा-गोदावरी निचली घाटी, आंध्र प्रदेश); संरक्षक: सातवाहन एवं इक्ष्वाकु वंश	श्वेत संगमरमर (White Marble / Limestone)	पूर्णतः **स्वदेशी शैली**; मुख्यतः बौद्ध धर्म एवं जातक कथाओं का आख्यानात्मक अंकन	एकल मूर्तियों के स्थान पर समूह एवं कथात्मक फलक (Narrative Art); 'त्रिभंग' मुद्रा का अत्यधिक प्रयोग; गतिशील आकृतियाँ	**ASI आधिकारिक पोर्टल**
4	सारनाथ (गुप्तकालीन) मूर्तिकला शैली	सारनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश); 5वीं शताब्दी ई. (गुप्त काल)	चुनार का क्रीम रंग का बलुआ पत्थर (Chunar Sandstone)	पूर्णतः स्वदेशी एवं आध्यात्मिक परिपक्वता; बौद्ध व हिंदू मूर्तियाँ	वस्त्रों की सलवटों का पूर्ण अभाव (पारदर्शी वस्त्र प्रभाव); अत्यंत सुसज्जित एवं चक्राकार प्रभामंडल; धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में आसीन बुद्ध	**भारतीय संस्कृति पोर्टल**
5	चोल कांस्य मूर्तिकला (नटराज शिल्प)	तंजौर एवं कुंभकोणम (तमिलनाडु); 9वीं से 13वीं शताब्दी ई. (चोल राजवंश)	पंचधातु (ताँबा, चाँदी, सोना, पीतल, सीसा) — **'मधुच्छिष्ट विधि'** (Lost-wax technique / Cire Perdue)	शैव एवं वैष्णव भक्ति परंपरा (शिव को तांडव नृत्य के स्वामी 'नटराज' रूप में)	दाहिने ऊपरी हाथ में डमरू (सृजन), बाएँ ऊपरी हाथ में अग्नि (विनाश), दाहिना निचला हाथ अभय मुद्रा में, बायाँ पैर उठा हुआ (मोक्ष) और दायाँ पैर 'अपस्मार' (अज्ञान के बौने) पर	**NCERT पाठ्यपुस्तक**

क्रम	मूर्तिकला / स्थापत्य शैली	प्रमुख केंद्र एवं संरक्षक राजवंश	प्रयुक्त पत्थर / निर्माण सामग्री	बाह्य प्रभाव एवं मुख्य विषय-वस्तु	प्रमुख शिल्पगत / वास्तुगत विशेषताएँ	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
6	गुलाम एवं खिलजी कालीन स्थापत्य (माम एवं सेल्जुक शैली)	दिल्ली एवं अजमेर; 1206–1320 ई. (ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन, अलाउद्दीन खिलजी)	लाल बलुआ पत्थर एवं पूर्ववर्ती मंदिरों के अवशेष	इंडो-इस्लामिक मेहराब (Arcuate style) और गुंबद का प्रारंभ; बलबन के मकबरे में प्रथम वास्तविक मेहराब	कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद, अढ़ाई दिन का झोपड़ा, कुतुब मीनार (72.5 मी.), अलाई दरवाजा (लाल पत्थर व संगमरमर का सुंदर प्रयोग), सीरी का किला	ASI विश्व धरोहर
7	तुगलक एवं लोदी कालीन स्थापत्य	दिल्ली; 1320–1526 ई. (गयासुद्दीन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक, सिकंदर लोदी)	धूसर पत्थर (Grey Quartzite) एवं चूने का प्लास्टर	मजबूती और सादगी पर बल; ढलवाँ दीवारें (**'बट्टर'** / **Batter** शैली); लोदी काल में **'दोहरे गुंबद'** (Double Dome) और अष्टकोणीय मकबरों का विकास	तुगलकाबाद का किला, गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा, फिरोजशाह कोटला, सिकंदर लोदी का मकबरा (लोदी गार्डन)	भारतीय संस्कृति पोर्टल
8	प्रांतीय स्थापत्य शैलियाँ (जौनपुर, बंगाल, मालवा, बीजापुर)	जौनपुर (शर्की वंश), पांडुआ/गौड़ (बंगाल), मांडू (मालवा), बीजापुर (आदिलशाही)	स्थानीय पत्थर, पक्की ईंटें एवं रंगीन टाइलें	जौनपुर में मीनारों का अभाव व ऊँचे तोरण द्वार; बंगाल में ढलवाँ 'बांग्ला छत'; मांडू में जल-महल; बीजापुर में विशाल गुंबद	अटाला मस्जिद (जौनपुर), अदीना मस्जिद (पांडुआ), जहाज महल व हिंडोला महल (मांडू), गोल गुंबद (बीजापुर — मुहम्मद आदिलशाह का मकबरा)	IUC Academy
9	प्रारंभिक मुगल स्थापत्य (बाबर, हुमायूँ, शेरशाह एवं अकबर)	दिल्ली, सासाराम, आगरा एवं फतेहपुर सीकरी; 1526–1605 ई.	लाल बलुआ पत्थर एवं श्वेत संगमरमर का जड़ाऊ काम	फारसी 'चारबाग' पद्धति, दोहरा गुंबद एवं राजपूत-गुजराती छतरियों और झरोखों का समन्वय	शेरशाह का मकबरा (सासाराम), हुमायूँ का मकबरा (दिल्ली — ताजमहल का पूर्वगामी), आगरा का किला, फतेहपुर सीकरी (बुलंद दरवाजा, पंचमहल, सलीम चिश्ती की दरगाह)	ASI विश्व धरोहर
10	जहाँगीर एवं शाहजहाँ कालीन स्थापत्य (मुगल वास्तुकला का स्वर्ण युग)	आगरा, लाहौर एवं दिल्ली (शाहजहाँनाबाद); 1605–1658 ई.	विशुद्ध श्वेत मकराना संगमरमर एवं अर्द्ध-बहुमूल्य रत्नों की जड़ावट (**'पित्रा दुरा'** / **Pietra Dura**)	पित्रा दुरा तकनीक का प्रथम पूर्ण प्रयोग एतमादुद्दौला के मकबरे (आगरा — नूरजहाँ द्वारा निर्मित) में हुआ	ताजमहल (उस्ताद अहमद लाहौरी मुख्य वास्तुकार), आगरा की मोती मस्जिद, दिल्ली का लाल किला एवं जामा मस्जिद	ASI विश्व धरोहर
11	औपनिवेशिक स्थापत्य (पुर्तगाली, फ्रांसीसी एवं ब्रिटिश शैली)	गोवा, पुदुचेरी, कोलकाता, मुंबई एवं नई दिल्ली; 16वीं से 20वीं शताब्दी ई.	चूना-सुर्खी, लाल व पीला बलुआ पत्थर, लोहा एवं कंक्रीट	पुर्तगाली 'बारोक' व 'इबेरियन' शैली; ब्रिटिश 'नव-गोथिक' (मुंबई) और 'इंडो-सारासेनिक' (हिंदू, मुगल व पाश्चात्य का मिश्रण) शैली	बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस (गोवा), विक्टोरिया मेमोरियल (कोलकाता), छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (मुंबई), राष्ट्रपति भवन व संसद भवन (एडविन लुटियंस व हर्बर्ट बेकर)	भारतीय संस्कृति पोर्टल

क्या आप जानते हैं?
आगरा में यमुना नदी के तट पर नूरजहाँ द्वारा अपने पिता मिर्जा गियास बेग की स्मृति में 1622–1628 ई. के मध्य बनवाया गया **'एतमादुद्दौला का मकबरा'** मुगल काल की पहली ऐसी इमारत है जो पूर्ण रूप से सफेद संगमरमर से निर्मित है और जिसमें पहली बार संगमरमर पर रंगीन कीमती पत्थरों से फूल-पत्तियों की जड़ावट करने की **'पित्रा दुरा' (Pietra Dura)** तकनीक का प्रयोग किया गया (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI))।

परीक्षा सतर्कता:
दिल्ली तथा आगरा की **'मोती मस्जिदों'** के निर्माणकर्ताओं के नामों में परीक्षा में अक्सर भ्रम उत्पन्न किया जाता है—इन्हें स्पष्ट रूप से याद रखें:
1. **आगरा के किले की मोती मस्जिद:** मुगल सम्राट **शाहजहाँ** द्वारा बनवाई गई।
2. **दिल्ली के लाल किले की मोती मस्जिद:** मुगल सम्राट **औरंगज़ेब** द्वारा बनवाई गई।
3. **लाहौर के किले की मोती मस्जिद:** सम्राट **जहाँगीर/शाहजहाँ** के काल में निर्मित हुई (IUC Academy)।

★ **स्मृति ट्रिक:**
- **गांधार, मथुरा और अमरावती शैली के पत्थर: "गांधार नीला, मथुरा लाल, अमरावती सफेद कमाल"**
- **गांधार शैली:** नीला-धूसर पत्थर (कुषाण वंश, यूनानी प्रभाव, केवल बौद्ध धर्म)
- **मथुरा शैली:** चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर (कुषाण वंश, स्वदेशी, बौद्ध+हिंदू+जैन तीनों धर्म)
- **अमरावती शैली:** सफेद संगमरमर (सातवाहन वंश, स्वदेशी, जातक कथात्मक फलक)

अध्याय 3: भारतीय चित्रकला परंपरा — भित्ति चित्र, लघु चित्रकला (पाल, अपभ्रंश, मुगल, राजपूत, पहाड़ी) एवं लोक चित्रकलाएँ

भारत में चित्रकला का इतिहास मध्य प्रदेश के **भीमबेटका** के प्रागैतिहासिक शैलचित्रों (उच्च पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल) से प्रारंभ होता है। वात्स्यायन के 'कामसूत्र' में यशोधर पंडित द्वारा रचित 'जयमंगला' टीका में चित्रकला के **'षडंग'** (छह अंग—रूपभेद, प्रमाण, भाव, लावण्य योजना, सादृश्य और वर्णिका भंग) का उल्लेख मिलता है, तथा 'विष्णुधर्मोत्तर पुराण' के 'चित्रसूत्र' प्रकरण में भित्ति चित्रण के सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं (भारतीय संस्कृति पोर्टल)।

अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणी 3: भारत की प्रमुख भित्ति, लघु एवं लोक चित्रकला शैलियाँ तथा भौगोलिक संकेतक (GI Tags)

क्रम	चित्रकला शैली / परंपरा	संबंधित राज्य / क्षेत्र एवं कालखंड	प्रमुख संरक्षक / प्रसिद्ध चित्रकार	प्रमुख विषय-वस्तु एवं चित्रण सामग्री	विशिष्ट तकनीकी विशेषताएँ एवं प्रसिद्ध चित्र	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	प्रागैतिहासिक भीमबेटका शैलचित्र	रायसेन (मध्य प्रदेश — विंध्य पर्वत श्रृंखला); पुरापाषाण से मध्यपाषाण काल	डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा 1957-58 ई. में खोजा गया (2003 में यूनेस्को विश्व धरोहर)	सामूहिक आखेट (शिकार), नृत्य, पशुपालन एवं दैनिक जीवन; खनिज रंग (**गेरू**/ **Hematite** से लाल व चाल्सेडनी से हरा रंग)	मध्यपाषाण काल के चित्रों की संख्या सर्वाधिक है; आकृतियों में रेखीय गतिशीलता एवं ज्यामितीय प्रतीकों का प्रयोग	ASI विश्व धरोहर
2	पाल एवं अपभ्रंश (जैन) लघु चित्रकला	पाल: बंगाल-बिहार (8वीं–12वीं सदी); अपभ्रंश: गुजरात-मेवाड़ (11वीं–15वीं सदी)	पाल शासक (धर्मपाल, देवपाल); जैन व्यापारी; प्रमुख चित्रकार: धीमान एवं वित्तपाल	पाल शैली में वज्रयान बौद्ध ग्रंथ (अष्टसहस्रिका प्रज्ञापारमिता); अपभ्रंश में जैन ग्रंथ (कल्पसूत्र एवं कालकाचार्य कथा)	भारत में **लघु चित्रकला (Miniature Painting)** की शुरुआत पाल शासकों ने ताड़पत्रों पर की; अपभ्रंश शैली में बाद में कागज और स्वर्ण-नीले रंगों का प्रयोग हुआ	भारतीय संस्कृति पोर्टल
3	मुगल चित्रकला शैली (हुमायूँ, अकबर एवं जहाँगीर काल)	दिल्ली, आगरा एवं फतेहपुर सीकरी; 16वीं से 17वीं शताब्दी ई.	मीर सैयद अली, अब्दुस्समद (हुमायूँ/ अकबर); दसवंत, बसावन (अकबर); उस्ताद मंसूर, अबुल हसन, बिशनदास (जहाँगीर)	दरबारी वैभव, हम्जानामा (दास्तान-ए-अमीर हम्जा), रज्मनामा (महाभारत का फारसी अनुवाद), प्रकृति एवं पशु-पक्षी चित्रण	अकबर ने 'तस्वीरखाना' स्थापित किया; **जहाँगीर का काल मुगल चित्रकला का स्वर्ण युग** था; उस्ताद मंसूर ('नादिर-उल-अस्र') पक्षी चित्रण और अबुल हसन ('नादिर-उज-जमा') छवि चित्रण में निपुण थे	NCERT पाठ्यपुस्तक
4	मेवाड़, मारवाड़ एवं हाड़ौती (राजस्थानी शैली)	उदयपुर, नाथद्वारा (मेवाड़); जोधपुर, बीकानेर (मारवाड़); कोटा, बूँदी (हाड़ौती)	राणा कुंभा, जगत सिंह, सावंत सिंह; चित्रकार: साहिबदीन, निसारदीन, मनोहर	कृष्ण लीला, रागमाला, बारहमासा, गीतगोविंद एवं शिकार दृश्य (कोटा शैली में बाघ-सिंह आखेट)	नाथद्वारा शैली की **'पिछवाई पेंटिंग'** (श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे कपड़े पर चित्रण) और साहिबदीन की रागमाला अत्यंत प्रसिद्ध हैं	भारतीय संस्कृति पोर्टल
5	किशनगढ़ शैली (राजस्थानी लघु चित्रकला)	किशनगढ़ (अजमेर के निकट, राजस्थान); 18वीं शताब्दी ई.	राजा सावंत सिंह ('नागरीदास') एवं चित्रकार **मोरध्वज निहालचंद**	राधा-कृष्ण का आध्यात्मिक प्रेम एवं वल्लभ संप्रदाय की भक्ति भावना	**'बनी-ठनी'** चित्र (जिसे एरिक डिकिन्सन ने **'भारत की मोनालिसा'** कहा) — लंबी सुराहीदार गर्दन, धनुषाकार भौंहें, कमल के समान नेत्र और नुकीली ठोड़ी	IUC Academy
6	बसोहली एवं काँगड़ा (पहाड़ी चित्रकला शैली)	बसोहली (जम्मू-कश्मीर); काँगड़ा, गुलेर, कुल्लू (हिमाचल प्रदेश); 17वीं–19वीं सदी	राजा कृपाल पाल (बसोहली); राजा संसार चंद (काँगड़ा — चित्रकार: नैनसुख एवं मानकू)	भानुदत्त की 'रसमंजरी', जयदेव का 'गीतगोविंद', बिहारी सतसई एवं नायिका भेद	बसोहली शैली में चमकीले रंग व भृंग (Beetle) के पंखों से पन्ना रत्न जैसा प्रभाव; काँगड़ा शैली में कोमल रेखाएँ और नारी सौंदर्य का अनुपम चित्रण	भारतीय संस्कृति पोर्टल

क्रम	चित्रकला शैली / परंपरा	संबंधित राज्य / क्षेत्र एवं कालखंड	प्रमुख संरक्षक / प्रसिद्ध चित्रकार	प्रमुख विषय-वस्तु एवं चित्रण सामग्री	विशिष्ट तकनीकी विशेषताएँ एवं प्रसिद्ध चित्र	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
7	मधुबनी (मिथिला) लोक चित्रकला	मिथिलांचल (दरभंगा, मधुबनी, बिहार); GI टैग प्राप्त	जगदंबा देवी, सीता देवी, महासुंदरी देवी, बौआ देवी (पद्म पुरस्कार सम्मानित)	हिंदू देवी-देवता, राम-सीता विवाह, प्रकृति (सूर्य, चंद्रमा, तुलसी) एवं 'कोहबर घर' के मांगलिक चित्र	चावल के आटे के घोल और प्राकृतिक रंगों (हल्दी, नील, पलाश, काजल) से बाँस की कूची द्वारा द्वि-आयामी (2D) चित्रण; चित्र में कोई स्थान रिक्त नहीं छोड़ा जाता; 5 शैलियाँ (भरनी, कचनी, तांत्रिक, गोदना, कोहबर)	PIB भारत सरकार
8	वारली एवं चित्रकथी लोक चित्रकला	वारली: उत्तरी सह्याद्रि (पालघर/ठाणे, महाराष्ट्र-गुजरात सीमा); चित्रकथी: महाराष्ट्र	वारली जनजाति की महिलाएँ (जिव्या सोमा मशे ने इसे अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई)	फसल कटाई, विवाह ('चौक' चित्र — देवी पालघाट को समर्पित), तारपा नृत्य एवं ग्रामीण जीवन	गेरू व गोबर से लिपी लाल-भूरी दीवार पर केवल सफेद रंग (चावल के पेस्ट) से त्रिकोण, वृत्त और वर्ग की ज्यामितीय आकृतियों द्वारा मानव-पशु चित्रण	भारतीय संस्कृति पोर्टल
9	पट्टचित्र एवं सौरा चित्रकला	पुरी व रघुराजपुर (ओडिशा) एवं पश्चिमी बंगाल; GI टैग प्राप्त	ओडिशा के 'चित्रकार' समुदाय एवं सौरा जनजाति	भगवान जगन्नाथ, बलभद्र व सुभद्रा की कथाएँ एवं वैष्णव प्रसंग	सूती कपड़े पर इमली के बीज के गोंद और खड़िया मिट्टी की परत चढ़ाकर चमड़े जैसा कैनवास ('पट्ट') तैयार किया जाता है; ताड़पत्र पर उकेरे गए पट्टचित्र को **'तालपट्टचित्र'** कहते हैं	IUC Academy
10	कलमकारी एवं चेरियाल स्क्रॉल चित्रकला	कलमकारी: श्रीकालहस्ती व मछलीपट्टनम (आंध्र प्रदेश); चेरियाल: तेलंगाना	मछलीपट्टनम और श्रीकालहस्ती के पारंपरिक शिल्पकार	रामायण, महाभारत एवं पौराणिक आख्यान	बाँस की कलम और वानस्पतिक रंगों से सूती वस्त्र पर चित्रण; **श्रीकालहस्ती शैली** में मुक्तहस्त कलम से मंदिर के पर्दे बनते हैं, जबकि **मछलीपट्टनम शैली** में लकड़ी के ठप्पों (Block printing) का प्रयोग होता है	PIB भारत सरकार
11	तंजौर एवं मैसूर चित्रकला (दक्षिण भारतीय शैली)	तंजावुर (तमिलनाडु) एवं मैसूर (कर्नाटक); विजयनगर व मराठा/वाडियार संरक्षण	तंजौर के नायक और मराठा शासक (सरफोजी द्वितीय); मैसूर के राजा कृष्णराज वाडियार तृतीय	बाल कृष्ण ('यशोदा-कृष्ण'), राम पट्टाभिषेक एवं चामुंडेश्वरी देवी	तंजौर पेंटिंग में लकड़ी के फलक पर उभरी हुई नक्काशी (Embossing), 22 कैरेट शुद्ध सोने की पत्ती (Gold leaf) और काँच व रत्नों की जड़ावट; मैसूर शैली में 'जेसो' (Gesso) पेस्ट और सूक्ष्म रेखाओं का प्रयोग	भारतीय संस्कृति पोर्टल
12	कालीघाट, फड़, पिथौरा, गोंड एवं मंजूषा चित्रकला	कालीघाट (कोलकाता), फड़ (भीलवाड़ा, राजस्थान), पिथौरा (गुजरात/म.प्र.), गोंड (म.प्र.), मंजूषा (भागलपुर, बिहार)	श्रीलाल जोशी (फड़); जनगढ़ सिंह श्याम व भूरी बाई (गोंड/भील)	फड़: पाबूजी व देवनारायणजी की वीरगाथा; मंजूषा: बिहुला-विषहरी की लोककथा; पिथौरा: राठवा भील जनजाति के अनुष्ठानिक अश्व चित्र	कालीघाट चित्रकला ने 19वीं सदी में सामाजिक व्यंग्य को उभारा; **मंजूषा कला** को 'अंगिका कला' या 'सर्प चित्रकला' भी कहा जाता है जिसमें केवल गुलाबी, हरे और पीले रंग का प्रयोग होता है	IUC Academy

क्या आप जानते हैं?
मुगल सम्राट जहाँगीर स्वयं चित्रकला का इतना बड़ा पारखी था कि उसने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' में लिखा था—"यदि किसी एक चित्र को कई चित्रकार मिलकर भी बनाएँ, तो भी मैं यह देखकर बता सकता हूँ कि उस चित्र में आँख किस चित्रकार ने बनाई है और भौंहें किसने बनाई हैं।" जहाँगीर के दरबारी चित्रकार **बिशनदास** को फारस के शाह अब्बास और उनके दरबारियों के छवि-चित्र (Portraits) बनाने के लिए ईरान भेजा गया था (NCERT पाठ्यपुस्तक)।

परीक्षा सतर्कता:
आधुनिक भारतीय चित्रकला के प्रणेताओं से जुड़े दो महत्वपूर्ण प्रश्न परीक्षाओं में बार-बार पूछे जाते हैं:
1. **राजा रवि वर्मा (केरल, 1848–1906 ई.):** इन्हें 'आधुनिक भारतीय चित्रकला का जनक' माना जाता है। इन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं (शकुंतला, दमयंती-हंस संवाद, रावण द्वारा जटायु वध) को पश्चिमी यथार्थवादी **तैल चित्रण (Oil Painting)** और ओलियोग्राफ प्रेस के माध्यम से घर-घर पहुँचाया।
2. **अवनींद्रनाथ टैगोर और बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट:** 1905 के स्वदेशी आंदोलन के दौरान अवनींद्रनाथ टैगोर ने प्रसिद्ध **'भारत माता'** का चित्र बनाया तथा 'इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट' (1907) की स्थापना की; नंदलाल बोस (जिन्होंने भारतीय संविधान की मूल प्रति का अलंकरण किया) उनके प्रमुख शिष्य थे (भारतीय संस्कृति पोर्टल)।

★ स्मृति ट्रिक:
• प्रमुख लोक चित्रकलाएँ एवं उनके राज्य: "मधु-मंजू बिहार की, पट्ट ओडिशा नाम; कलम आंध्र में चल रही, वारली महाराष्ट्र धाम; फड़ राजस्थान बाँचता, तंजौर तमिल की शान!"
• मधुबनी व मंजूषा = बिहार | पट्टचित्र = ओडिशा | कलमकारी = आंध्र प्रदेश | वारली = महाराष्ट्र | फड़ = राजस्थान | तंजौर = तमिलनाडु।

अध्याय 4: भारतीय शास्त्रीय नृत्य, लोक नृत्य, शास्त्रीय संगीत (हिंदुस्तानी एवं कर्नाटक शैली) तथा नाट्य परंपरा

भरतमुनि द्वारा रचित **'नाट्यशास्त्र'** (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ई.) और आचार्य नंदिकेश्वर के **'अभिनय दर्पण'** को भारतीय शास्त्रीय नृत्य एवं नाट्य कला का आधारभूत ग्रंथ माना जाता है। नाट्यशास्त्र के अनुसार नृत्य के दो प्रमुख पक्ष हैं—**तांडव** (शिव का ओजपूर्ण, लय व शक्ति प्रधान नृत्य) और **लास्य** (पार्वती का कोमल, भाव एवं माधुर्य प्रधान नृत्य), तथा नृत्य के तीन घटक हैं—**नाट्य** (नाटकीय कथानक), **नृत्त** (भाव-रहित शुद्ध ताल व लयबद्ध पद-संचालन) और **नृत्य** (रस एवं भाव सहित अभिनय) (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणी 4: भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य (संगीत नाटक अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त) एवं शास्त्रीय संगीत शैलियाँ

क्रम	शास्त्रीय नृत्य / संगीत शैली	उद्गम राज्य एवं ऐतिहासिक मूल	प्रमुख तत्व / तकनीकी विशेषताएँ	संबंधित प्रमुख घराने / शैलियाँ / वाद्ययंत्र	विश्वप्रसिद्ध कलाकार एवं प्रतिपादक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	भरतनाट्यम (प्राचीनतम शास्त्रीय नृत्य)	तमिलनाडु (देवदासियों के 'सदिर अट्टम' या 'दासी अट्टम' से विकसित)	**'अग्नि नृत्य'** के रूप में प्रसिद्ध; नर्तक का मुख व हाथ अग्नि की लपटों के समान; 'अलारिप्पु' (प्रारंभ), 'जातिस्वरम', 'शब्दम', 'वर्णम', 'पदम' और 'तिल्लाना' (समापन); नृत्य निर्देशक को **'नट्टुवनार'** कहते हैं	तंजौर, कांचीपुरम एवं पंडनल्लूर शैली (ई. कृष्णा अय्यर व रुक्मिणी देवी अरुंडेल ने पुनर्जीवित किया)	रुक्मिणी देवी अरुंडेल, बालासरस्वती, यामिनी कृष्णमूर्ति, पद्मा सुब्रह्मण्यम, मृणालिनी साराभाई, सोनल मानसिंह	**भारतीय संस्कृति पोर्टल**
2	कुचिपुड़ी	आंध्र प्रदेश (कृष्णा जिले के 'कुचेलपुरम' गाँव से उद्भव; प्रवर्तक: सिद्धेंद्र योगी)	नृत्य-नाटिका परंपरा ('भागवतुलु'); **'तरंगम'** (पीतल की थाली के किनारों पर पैर रखकर और सिर पर जल से भरा कलश रखकर नृत्य करना); 'मंडूक शब्दम' और 'जल चित्र नृत्यम'	कर्नाटक संगीत के साथ मृदंगम, वायलिन व बाँसुरी की संगत; भामाकलापम प्रसिद्ध कथानक	वेम्पति चिन्ना सत्यम, यामिनी कृष्णमूर्ति, राधा रेड्डी और राजा रेड्डी, स्वप्नसुंदरी	**भारतीय संस्कृति पोर्टल**
3	कथकली	केरल (रामानट्टम और कृष्णाट्टम लोक नाट्य परंपरा से विकसित)	मुख्यतः पुरुष नर्तकों द्वारा महाभारत-रामायण के प्रसंगों का मंचन; चेहरे पर गहरा रंगीन शृंगार (**'पच्चा'** = हरा रंग सात्विक नायक हेतु, **'कत्ती'** = खलनायक, **'ताड़ी'** = लाल/सफेद/काली दाढ़ी); नेत्र व भौंहों का सूक्ष्म संचालन; अंत में 'धनासी'	चेंडा, मद्दलम, चेंगिला और इलत्तालम वाद्ययंत्र; मंदिर प्रांगण में रात्रिभर चलने वाला नृत्य	कलामंडलम गोपी, कलामंडलम रमणकुट्टी नायर, कोट्टक्कल शिवरामन, रीता गांगुली	**IUC Academy**
4	मोहिनीअट्टम	केरल (भगवान विष्णु के 'मोहिनी' अवतार की पौराणिक कथा पर आधारित)	विशुद्ध रूप से **एकल महिला नृत्य**; **'लास्य'** भाव की प्रधानता; वायु तत्व का प्रतीक; श्वेत या क्रीम रंग की सुनहरे बॉर्डर वाली **'कसावु साड़ी'**; ताड़ के पत्तों की तरह लहराते कोमल पद-संचालन ('अटवुकल')	त्रावणकोर के महाराजा स्वाति तिरुनल और कवि वल्लथोल नारायण मेनन (केरल कलामंडलम के संस्थापक) द्वारा संरक्षण	कल्याणीकुट्टी अम्मा ('मोहिनीअट्टम की जननी'), सुनंदा नायर, जयप्रभा मेनन, हेमा मालिनी, वैजयंतीमाला	**भारतीय संस्कृति पोर्टल**
5	ओडिसी	ओडिशा (उदयगिरि-खंडगिरि गुफा शिलालेख; 'महारी' और 'गोतिपुआ' परंपरा)	**'जल तत्व'** का प्रतीक; शरीर को तीन स्थानों (गर्दन, कमर और घुटने) से मोड़ने की **'त्रिभंग मुद्रा'** और चौकोर **'चौक मुद्रा'**; 'मंगलाचरण' से प्रारंभ और 'मोक्ष' से समापन ('चलित स्थापत्य' कहा जाता है)	जयदेव के 'गीतगोविंद' की अष्टपदियों पर आधारित; पखावज, मंजीरा व बाँसुरी की संगत	केलुचरण महापात्र, संयुक्ता पाणिग्रही, सोनल मानसिंह, माधवी मुद्गल, इलियाना सिटारिस्टी	**ASI एवं संस्कृति पोर्टल**

क्रम	शास्त्रीय नृत्य / संगीत शैली	उद्गम राज्य एवं ऐतिहासिक मूल	प्रमुख तत्व / तकनीकी विशेषताएँ	संबंधित प्रमुख घराने / शैलियाँ / वाद्ययंत्र	विश्वप्रसिद्ध कलाकार एवं प्रतिपादक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
6	मणिपुरी	मणिपुर (लाई हरोबा उत्सव एवं 18वीं सदी के वैष्णव भक्ति आंदोलन से विकसित)	राधा-कृष्ण की **'रासलीला'** मुख्य विषय; पैरों में घुँघरू नहीं बाँधे जाते; चेहरे को पारदर्शी घूँघट से ढका जाता है और बेलनाकार कठोर लहंगा (**'कुमिल'** / **Potloi**) पहना जाता है; **'पुंग चोलोम'** (ढोल नृत्य) और 'करताल चोलोम' इसके ओजपूर्ण अंग हैं	रवींद्रनाथ टैगोर ने शांतिनिकेतन में मणिपुरी नृत्य की शिक्षा प्रारंभ कर इसे राष्ट्रीय पहचान दिलाई	झावेरी बहनें (दर्शना, नयना, रंजना व सुवर्णा झावेरी), गुरु बिपिन सिंह, राजकुमार सिंहजीत सिंह	PIB भारत सरकार
7	कथक	उत्तर भारत (उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान — 'कथा कहे सो कथक कहावे')	मंदिरों के कथावाचकों से मुगल दरबारों तक विकास; घुटनों को मोड़े बिना तेज चक्कर (**'चक्करदार'**), पैरों की थाप (**'तत्कार'**), 'आमद', 'ठाट', 'तोड़ा-टुकड़ा' और 'जुगलबंदी' (तबला व घुँघरू का संवाद)	**लखनऊ घराना** (नवाब वाजिद अली शाह, बिरजू महाराज), **जयपुर घराना** (भानुजी), **बनारस घराना** (जानकी प्रसाद) एवं **रायगढ़ घराना** (राजा चक्रधर सिंह)	पंडित बिरजू महाराज, लच्छू महाराज, शंभू महाराज, सितारा देवी, शोभना नारायण, कुमुदिनी लाखिया	भारतीय संस्कृति पोर्टल
8	सत्रिया	असम (15वीं शताब्दी में वैष्णव संत **श्रीमंत शंकरदेव** द्वारा 'सत्र' मठों में स्थापित)	15 नवंबर 2000 को संगीत नाटक अकादमी द्वारा 8वें शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता; भक्तिगीतों को **'बोरगीत'** और नृत्य-नाटिका को **'अंकिया नाट'** ('भावना') कहा जाता है; पुरुष भिक्षु नर्तकों को **'भोकोत'** कहते हैं	खोल (ढोल), ताल (मंजीरा) और बाँसुरी की संगत; असमिया पाट रेशम की वेशभूषा	जतिन गोस्वामी, घनकांत बोरा, शारदीय सैकिया, इंदिरा पी. पी. बोरा	भारतीय संस्कृति पोर्टल
9	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत शैली	उत्तर भारत (वैदिक सामवेद, अमीर खुसरो एवं मध्यकालीन दरबारों से विकसित)	समय, ऋतु और भाव पर आधारित **6 मुख्य राग**; 4 प्रमुख शैलियाँ—**ध्रुपद** (प्राचीनतम व गंभीर, तानसेन व स्वामी हरिदास), **ख्याल** (कल्पना प्रधान, सदारंग-अदारंग), **ठुमरी** (भाव प्रधान, गिरिजा देवी व बेगम अख्तर) एवं **तराना**	**ग्वालियर घराना** (ख्याल का प्राचीनतम घराना — हद्दू खाँ, हस्सू खाँ), आगरा घराना (फैयाज खाँ), किराना घराना (भीमसेन जोशी, गंगूबाई हंगल), पटियाला घराना (बड़े गुलाम अली खाँ)	तानसेन, पंडित भीमसेन जोशी (भारत रत्न), पंडित जसराज, किशोरी अमोनकर, पंडित रविशंकर (सितार), उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ (शहनाई)	भारतीय संस्कृति पोर्टल
10	कर्नाटक शास्त्रीय संगीत शैली	दक्षिण भारत (कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल)	पूर्णतः स्वदेशी एवं नियमबद्ध प्रणाली; **72 मेलकर्ता राग प्रणाली** (वेंकटमखी द्वारा प्रतिपादित); संरचना के भाग —'पल्लवी', 'अनुपल्लवी' और 'चरणम'; **पुरंदरदास** को 'कर्नाटक संगीत का पितामह' कहा जाता है	**कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति (Trinity):** त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर और श्यामा शास्त्री (तीनों का जन्म तिरुवरूर, तमिलनाडु में हुआ)	एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी (संगीत क्षेत्र में प्रथम भारत रत्न 1998), बालमुरलीकृष्ण, सेम्मानगुडी श्रीनिवास अय्यर, टी. एम. कृष्णा	IUC Academy
11	भारत के प्रमुख लोक नृत्य एवं यूनेस्को सूचीबद्ध नृत्य	छऊ (ओडिशा-मयूरभंज, झारखंड-सरायकेला, पं. बंगाल-पुरुलिया); कालबेलिया व घूमर (राजस्थान); गरबा (गुजरात); भांगड़ा-गिद्दा (पंजाब); बिहू (असम); लावणी (महाराष्ट्र); रौफ (जम्मू-कश्मीर); यक्षगान (कर्नाटक); करगम (तमिलनाडु)	**छऊ (2010), कालबेलिया (2010) और गुजरात का गरबा (2023)** यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल हैं	मयूरभंज छऊ में मुखौटे का प्रयोग नहीं होता, जबकि सरायकेला व पुरुलिया छऊ में मुखौटा पहना जाता है	गुलाबो सपेरा (कालबेलिया नृत्य), तीजन बाई (पंडवानी गायन, छत्तीसगढ़)	PIB भारत सरकार

क्रम	शास्त्रीय नृत्य / संगीत शैली	उद्गम राज्य एवं ऐतिहासिक मूल	प्रमुख तत्व / तकनीकी विशेषताएँ	संबंधित प्रमुख घराने / शैलियाँ / वाद्ययंत्र	विश्वप्रसिद्ध कलाकार एवं प्रतिपादक	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
12	भारतीय पारंपरिक रंगमंच एवं कठपुतली कला	नाट्य: भांड पाथेर (कश्मीर), स्वांग (हरियाणा), नौटंकी व रामलीला (उ.प्र.), माच (म.प्र.), जात्रा (बंगाल), भवाई (गुजरात), तमाशा (महाराष्ट्र), तेरुक्कुत्तु (तमिलनाडु), कुटियाट्टम (केरल); कठपुतली: कठपुतली (राजस्थान), कुंदई (ओडिशा), बोम्मलट्टम (तमिलनाडु), तोगलु गोम्बेयट्टा (कर्नाटक)	केरल का **'कुटियाट्टम'** (संस्कृत रंगमंच) 2008 में यूनेस्को की अमूर्त धरोहर सूची में शामिल होने वाली भारत की प्रथम नाट्य परंपरा है	कठपुतली के 4 प्रकार: 1. सूत्र/धागा (कठपुतली, गोम्बेयट्टा), 2. छाया/चमड़ा (थोलपावकुथु, रावणछाया), 3. छड़ (पुतुल नाच, यमपुरी), 4. दस्ताना (पावाकूथु, केरल)	हबीब तनवीर, रतन थियम, बंसी कौल (आधुनिक एवं लोक रंगमंच)	भारतीय संस्कृति पोर्टल

क्या आप जानते हैं?
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने 8 शास्त्रीय नृत्यों के अतिरिक्त पूर्वी भारत के युद्ध एवं लोक नृत्य **'छऊ'** को भी अर्द्ध-शास्त्रीय/नवम शास्त्रीय नृत्य परंपरा के रूप में मान्यता प्रदान की है। साथ ही, दिसंबर 2023 में यूनेस्को की अंतर-सरकारी समिति ने **'गुजरात के गरबा नृत्य'** को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage) की प्रतिनिधि सूची में 15वीं भारतीय धरोहर के रूप में अंकित किया है (**पत्र सूचना कार्यालय (PIB)**)।

परीक्षा सतर्कता:
भारतीय वाद्ययंत्रों के 4 शास्त्रीय वर्गों (भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार) से संबंधित प्रश्न परीक्षाओं में बार-बार पूछे जाते हैं:
1. **तत वाद्य (Tantu/Chordophones — तार वाले वाद्य):** सितार, सरोद, वीणा, सारंगी, संतूर, तानपूरा, वायलिन।
2. **सुषिर वाद्य (Aerophones — फूँक कर बजाए जाने वाले वाद्य):** बाँसुरी (हरिप्रसाद चौरसिया), शहनाई (बिस्मिल्लाह खाँ), नादस्वरम, पुंगी, शंख।
3. **अवनद्ध वाद्य (Membranophones — चमड़े से मढ़े ताल वाद्य):** तबला (जाकिर हुसैन, अल्ला रक्खा), पखावज, मृदंगम, ढोलक, नगाड़ा।
4. **घन वाद्य (Idiophones — धातु या लकड़ी के ठोस वाद्य जो आपस में टकराकर बजते हैं):** मंजीरा, करताल, घुँघरू, घटम (मिट्टी का घड़ा — टी. एच. विनायकराम) (**IUC Academy**)।

★ स्मृति ट्रिक:
- **8 शास्त्रीय नृत्य और उनके राज्य: "भरत तमिल में, कुचि आंध्र में, कथक उत्तर प्रदेश; कथकली-मोहिनी केरल नाचें, ओडिसी-मणिपुरी-सत्रिया (असम) विशेष!"**
- **हिंदुस्तानी संगीत के प्रमुख घराने: "ग्वालियर सबसे पुराना, किराना में भीम-गंगू का तराना, बनारस में ठुमरी की गिरिजा, पटियाला में बड़े गुलाम का ठिकाना!"**

अध्याय 5: भारतीय दर्शन (षड्दर्शन, बौद्ध एवं जैन दर्शन), शास्त्रीय भाषाएँ, प्राचीन साहित्य एवं लिपियाँ

भारतीय चिंतन परंपरा में वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार करने वाले दर्शनों को **'आस्तिक दर्शन' (षड्दर्शन)** और वेदों की सर्वोच्चता को अस्वीकार करने वाले दर्शनों को **'नास्तिक दर्शन'** (बौद्ध, जैन एवं चार्वाक/लोकायत) कहा गया है। इसी के साथ भारत की समृद्ध भाषाई विरासत में संस्कृति मंत्रालय द्वारा 11 शास्त्रीय भाषाओं (Classical Languages) को मान्यता प्रदान की जा चुकी है (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणी 5: भारतीय आस्तिक षड्दर्शन, वेदांत संप्रदाय, शास्त्रीय भाषाएँ एवं प्रमुख प्राचीन साहित्य

क्रम	दर्शन / संप्रदाय / ग्रंथ श्रेणी	प्रवर्तक ऋषि / आचार्य / लेखक	मूल आधार ग्रंथ / सूत्र	मुख्य दार्शनिक सिद्धांत एवं परीक्षापयोगी तथ्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	सांख्य दर्शन (प्राचीनतम आस्तिक दर्शन)	महर्षि कपिल	सांख्य सूत्र एवं ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका	द्वैतवादी दर्शन; सृष्टि की उत्पत्ति ईश्वर से नहीं अपितु दो मूल तत्वों—**'प्रकृति'** (जड़) और **'पुरुष'** (चेतन) के संयोग से मानी गई है; कुल 25 तत्वों की गणना	NCERT इतिहास
2	योग दर्शन	महर्षि पतंजलि	योग सूत्र (4 पाद: समाधि, साधन, विभूति एवं कैवल्य पाद)	चित्तवृत्तियों का निरोध ही योग है ('योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'); मोक्ष प्राप्ति हेतु **अष्टांग योग** (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) का मार्ग	PIB भारत सरकार

क्रम	दर्शन / संप्रदाय / ग्रंथ श्रेणी	प्रवर्तक ऋषि / आचार्य / लेखक	मूल आधार ग्रंथ / सूत्र	मुख्य दार्शनिक सिद्धांत एवं परीक्षापयोगी तथ्य	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
3	न्याय दर्शन	महर्षि अक्षपाद गौतम	न्याय सूत्र	तर्कशास्त्र और प्रमाण मीमांसा पर आधारित; ज्ञान प्राप्ति के 4 प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द) स्वीकार किए गए हैं	भारतीय संस्कृति पोर्टल
4	वैशेषिक दर्शन	महर्षि कणाद (उलूक)	वैशेषिक सूत्र	भारत में भौतिकी और **परमाणुवाद (Atomism)** का प्रवर्तक दर्शन; ब्रह्मांड की सभी वस्तुएँ पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के सूक्ष्मतम परमाणुओं से बनी हैं	NCERT पाठ्यपुस्तक
5	पूर्व मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा (वेदांत)	पूर्व मीमांसा: महर्षि जैमिनी; उत्तर मीमांसा (वेदांत): महर्षि बादरायण (वेदव्यास)	मीमांसा सूत्र (जैमिनी) एवं ब्रह्मसूत्र (बादरायण)	पूर्व मीमांसा वेदों के कर्मकांड और यज्ञ भाग (ब्राह्मण ग्रंथों) पर बल देता है, जबकि उत्तर मीमांसा (वेदांत) उपनिषदों के ज्ञानकांड ('ब्रह्म और आत्मा की एकता') पर आधारित है	भारतीय संस्कृति पोर्टल
6	वेदांत दर्शन की 5 प्रमुख शाखाएँ एवं आचार्य	1. शंकराचार्य, 2. रामानुजाचार्य, 3. मध्वाचार्य, 4. निम्बार्काचार्य, 5. वल्लभाचार्य (एवं चैतन्य महाप्रभु)	प्रस्थानत्रयी (उपनिषद, भगवद्गीता एवं ब्रह्मसूत्र) पर भाष्य	1. **अद्वैतवाद** (शंकराचार्य — 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'), 2. **विशिष्टाद्वैतवाद** (रामानुजाचार्य — श्री संप्रदाय), 3. **द्वैतवाद** (मध्वाचार्य — ब्रह्म संप्रदाय), 4. **द्वैताद्वैत/भेदाभेद** (निम्बार्काचार्य — सनकादि संप्रदाय), 5. **शुद्धाद्वैतवाद** (वल्लभाचार्य — पुष्टिमार्ग/रुद्र संप्रदाय)	NCERT इतिहास भाग 2
7	बौद्ध दर्शन, त्रिपिटक एवं चार बौद्ध संगीतियाँ	गौतम बुद्ध; नागार्जुन (माध्यमिक/शून्यवाद), असंग व वसुबंधु (योगाचार/विज्ञानवाद)	पालि भाषा में **त्रिपिटक**: सुत्तपिटक (आनंद), विनयपिटक (उपालि), अभिधम्मपिटक (मोग्गलिपुत्त तिस्स)	चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग एवं **'प्रतीत्यसमुत्पाद'** (कार्य-कारण सिद्धांत) व क्षणिकवाद; 4 संगीतियाँ: राजगृह (483 ई.पू., अजातशत्रु), वैशाली (383 ई.पू., कालाशोक), पाटलिपुत्र (250 ई.पू., अशोक), कुंडलवन कश्मीर (प्रथम सदी, कनिष्क)	NCERT इतिहास भाग 1
8	जैन दर्शन, आगम साहित्य एवं दो जैन संगीतियाँ	ऋषभदेव (प्रथम तीर्थंकर), पार्श्वनाथ (23वें), महावीर स्वामी (24वें तीर्थंकर)	प्राकृत (अर्द्धमागधी) भाषा में 12 अंग व 12 उपांग (**आगम साहित्य**); भद्रबाहु रचित कल्पसूत्र	**त्रिरत्न** (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र), **पंच महाव्रत** (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह + महावीर द्वारा जोड़ा गया 5वाँ व्रत 'ब्रह्मचर्य'), **अनेकांतवाद** और **स्याद्वाद** (सप्तभंगी नय); 2 संगीतियाँ: पाटलिपुत्र (स्थूलभद्र) व वल्लभी गुजरात (512 ई., देवर्धिगणि क्षमाश्रमण)	NCERT इतिहास भाग 1
9	चार्वाक (लोकायत) एवं आजीवक दर्शन	चार्वाक/बृहस्पति (लोकायत दर्शन); मक्खलि गोसाल (आजीवक संप्रदाय)	बृहस्पति सूत्र (अनुपलब्ध)	चार्वाक पूर्णतः भौतिकवादी दर्शन है जो केवल 'प्रत्यक्ष' को ही प्रमाण मानता है और परलोक व पुनर्जन्म को नकारता है; मक्खलि गोसाल के आजीवक दर्शन का मूल सिद्धांत **'नियतिवाद'** (भाग्य ही सब कुछ निर्धारित करता है) था	IUC Academy
10	भारत की 11 शास्त्रीय भाषाएँ (Classical Languages)	संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा घोषित (2004 से 2024 तक)	1,500–2,000 वर्ष से अधिक प्राचीन मूल साहित्यिक परंपरा	**पहली 6 शास्त्रीय भाषाएँ:** 1. तमिल (2004 — प्रथम), 2. संस्कृत (2005), 3. कन्नड़ (2008), 4. तेलुगु (2008), 5. मलयालम (2013), 6. ओडिया (2014); **अक्टूबर 2024 में घोषित 5 नई शास्त्रीय भाषाएँ:** 7. मराठी, 8. पालि, 9. प्राकृत, 10. असमिया और 11. बंगाली	PIB भारत सरकार
11	प्राचीन संस्कृत नाट्य, काव्य एवं वैज्ञानिक ग्रंथ	कालिदास, विशाखदत्त, शूद्रक, बाणभट्ट, हर्षवर्धन, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, सुश्रुत, चरक	कालिदास (अभिज्ञानशाकुंतलम्, मेघदूतम्, रघुवंशम्), शूद्रक (मृच्छकटिकम्), विशाखदत्त (मुद्राराक्षस), कल्हण (राजतरंगिणी)	आर्यभट्ट (आर्यभट्टीयम् — शून्य, दशमलव व पृथ्वी के घूर्णन का सिद्धांत), वराहमिहिर (बृहत्संहिता व पंचसिद्धांतिका), चरक (चरकसंहिता — आयुर्वेद कायचिकित्सा), सुश्रुत (सुश्रुतसंहिता — शल्य चिकित्सा के जनक)	भारतीय संस्कृति पोर्टल
12	संगम साहित्य (प्राचीन तमिल साहित्य) एवं प्राचीन लिपियाँ	अगस्त्य एवं तोलकाप्पियर (पांड्य राजाओं के संरक्षण में मदुरै में 3 संगम आयोजित)	तोलकाप्पियम (व्याकरण ग्रंथ); शिलप्पादिकारम (इलांगो आदिगल) एवं मणिमेकलै (सीतलै सतनार)	अशोक के शिलालेखों की **ब्राह्मी लिपि** (बाएँ से दाएँ — भारत की अधिकांश आधुनिक लिपियों की जननी) एवं **खरोष्ठी लिपि** (दाएँ से बाएँ); 1837 ई. में **जेम्स प्रिंसेप** ने सर्वप्रथम अशोक की ब्राह्मी लिपि को पढ़ा	NCERT इतिहास भाग 1

क्या आप जानते हैं?
भारत के राष्ट्रीय प्रतीक (सारनाथ के अशोक स्तंभ) के नीचे देवनागरी लिपि में अंकित राष्ट्रीय आदर्श वाक्य **'सत्यमेव जयते'** (सत्य की ही विजय होती है) अथर्ववेद से संबद्ध **'मुण्डकोपनिषद्'** (अध्याय 3, खंड 1, मंत्र 6) से लिया गया है। वहीं 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' बृहदारण्यक उपनिषद् से, 'अतिथि देवो भव' तैत्तिरीय उपनिषद् से और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' महोपनिषद् से उद्धृत है (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

परीक्षा सतर्कता:
अक्टूबर 2024 में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा **मराठी, पालि, प्राकृत, असमिया और बंगाली** को शास्त्रीय भाषा (Classical Language) का दर्जा दिए जाने के बाद अब भारत में शास्त्रीय भाषाओं की कुल संख्या 6 से बढ़कर **11** हो गई है। प्रतियोगी परीक्षाओं में विकल्प चुनते समय ध्यान रखें कि **हिंदी और उर्दू** वर्तमान में इस 11 शास्त्रीय भाषाओं की सूची में शामिल नहीं हैं (**IUC Academy**)।

★ स्मृति ट्रिक:
- **भारतीय षड्दर्शन और उनके प्रवर्तक: "सांख्य के कपिल, योग पतंजलि, न्याय गौतम ने पाया; वैशेषिक कणाद का, मीमांसा जैमिनी-बादरायण ने बताया!"**
- **चार बौद्ध संगीतियों के स्थान एवं शासक: "राजा-महाराजा आजा (राजगृह-अजातशत्रु), वैशाली का काल (वैशाली-कालाशोक), पटाओ मत आशिक (पाटलिपुत्र-अशोक), कुंवर जी कंगाल (कुंडलवन-कनिष्क)!"**

अध्याय 6: भारत के यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक शिल्प एवं प्रमुख पर्व-त्योहार

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) और संस्कृति मंत्रालय के अनुसार भारत में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों (UNESCO World Heritage Sites) की समृद्ध श्रृंखला विद्यमान है, जिनमें सांस्कृतिक स्थल (जैसे अजंता, एलोरा, ताजमहल, आगरा किला, कोणार्क, साँची, खजुराहो, हम्पी, धोलावीरा, शांतिनिकेतन, होयसल मंदिर और चराइदेव मैदाम), प्राकृतिक स्थल (काजीरंगा, केवलादेव, मानस, सुंदरबन, नंदा देवी व फूलों की घाटी, पश्चिमी घाट और ग्रेट हिमालयन नेशनल पार्क) तथा मिश्रित स्थल (**कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान, सिक्किम**) सम्मिलित हैं।

अध्याय-स्तरीय तुलनात्मक सारणी 6: भारत के प्रमुख यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल (ASI सूची), अमूर्त सांस्कृतिक धरोहरें एवं पर्व-उत्सव

क्रम	विश्व धरोहर स्थल / सांस्कृतिक विरासत का नाम	राज्य / अवस्थिति	यूनेस्को सूचीबद्ध वर्ष	निर्माणकर्ता / ऐतिहासिक कालखंड	प्रमुख सांस्कृतिक एवं वास्तुशिल्पीय महत्व	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
1	अजंता की गुफाएँ, एलोरा की गुफाएँ, आगरा का किला एवं ताजमहल	महाराष्ट्र (अजंता-एलोरा) एवं उत्तर प्रदेश (आगरा)	1983 ई. (भारत के प्रथम 4 विश्व धरोहर स्थल)	सातवाहन/वाकाटक (अजंता); राष्ट्रकूट (एलोरा); अकबर (आगरा किला); शाहजहाँ (ताजमहल)	1983 में भारत के ये चार स्मारक सर्वप्रथम यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल हुए	**ASI विश्व धरोहर**
2	कोणार्क का सूर्य मंदिर एवं महाबलीपुरम के स्मारक समूह	ओडिशा (कोणार्क, पुरी) एवं तमिलनाडु (मामल्लपुरम)	1984 ई.	पूर्वी गंग शासक नरसिंहदेव प्रथम (कोणार्क, 13वीं सदी); पल्लव शासक नरसिंहवर्मन प्रथम (महाबलीपुरम)	कोणार्क मंदिर सूर्य के रथ के आकार में बना है जिसमें 24 अलंकृत पहिये और 7 घोड़े हैं; महाबलीपुरम में पंच रथ व गंगावतरण शिल्प	**ASI विश्व धरोहर**
3	खजुराहो स्मारक समूह, हम्पी स्मारक समूह एवं फतेहपुर सीकरी	मध्य प्रदेश (खजुराहो), कर्नाटक (हम्पी), उत्तर प्रदेश (आगरा)	1986 ई. (गोवा के चर्च और कॉन्वेंट भी 1986 में शामिल)	चंदेल वंश (खजुराहो); विजयनगर साम्राज्य — हरिहर व बुक्का, कृष्णदेव राय (हम्पी); अकबर (फतेहपुर सीकरी)	हम्पी (तुंगभद्रा नदी तट) में विरूपाक्ष मंदिर और **विट्ठल मंदिर** (सप्तस्वर संगीतमय स्तंभ एवं पत्थर का रथ) स्थित हैं	**ASI विश्व धरोहर**
4	साँची के बौद्ध स्मारक एवं बोधगया का महाबोधि मंदिर परिसर	मध्य प्रदेश (रायसेन — साँची) एवं बिहार (बोधगया)	साँची: 1989 ई.; महाबोधि मंदिर: 2002 ई.	सम्राट अशोक (तीसरी सदी ई.पू.) तथा शुंग व सातवाहन काल में तोरण द्वारों का निर्माण	साँची के महास्तूप में अंड, हर्मिका, यष्टि, छत्र, प्रदक्षिणा पथ, वेदिका और चार दिशाओं में चार अलंकृत तोरण द्वार स्थित हैं	**ASI विश्व धरोहर**

क्रम	विश्व धरोहर स्थल / सांस्कृतिक विरासत का नाम	राज्य / अवस्थिति	यूनेस्को सूचीबद्ध वर्ष	निर्माणकर्ता / ऐतिहासिक कालखंड	प्रमुख सांस्कृतिक एवं वास्तुशिल्पीय महत्व	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
5	पाटन की 'रानी-की-वाव' एवं नालंदा महाविहार	गुजरात (पाटन — सरस्वती नदी तट) एवं बिहार (नालंदा)	रानी-की-वाव: 2014 ई.; नालंदा: 2016 ई.	सोलंकी राजा भीमदेव प्रथम की रानी उदयामती (11वीं सदी — रानी की वाव); गुप्त शासक कुमारगुप्त प्रथम (नालंदा, 5वीं सदी)	रानी-की-वाव उल्टे मंदिर के रूप में निर्मित 7 मंजिला सीढ़ीदार बावड़ी है (₹100 के भारतीय नोट पर अंकित)	ASI विश्व धरोहर
6	अहमदाबाद (2017) एवं जयपुर (2019) — भारत के विश्व धरोहर शहर	गुजरात (अहमदाबाद) एवं राजस्थान (जयपुर)	अहमदाबाद: 2017 ई. (प्रथम धरोहर शहर); जयपुर: 2019 ई. (द्वितीय धरोहर शहर)	सुल्तान अहमद शाह (1411 ई. — अहमदाबाद); सवाई जयसिंह द्वितीय (1727 ई. — जयपुर, वास्तुकार: विद्याधर भट्टाचार्य)	अहमदाबाद अपने 'पोल' (पारंपरिक आवासीय समूह) और जयपुर अपनी चौपड़/ग्रिड नगर योजना, हवा महल और जंतर-मंतर (2010 में सूचीबद्ध) के लिए प्रसिद्ध है	ASI विश्व धरोहर
7	काकतीय रुद्रेश्वर (रामप्पा) मंदिर एवं धोलावीरा (हड़प्पाकालीन नगर)	तेलंगाना (मुलुगु — रामप्पा मंदिर) एवं गुजरात (कच्छ, खादिर बेत द्वीप — धोलावीरा)	2021 ई. (39वाँ और 40वाँ विश्व धरोहर स्थल)	काकतीय सेनापति रेचारला रुद्र (1213 ई. — शिल्पकार: रामप्पा); सिंधु घाटी सभ्यता (धोलावीरा — उत्खननकर्ता: जे. पी. जोशी व आर. एस. बिष्ट)	रामप्पा मंदिर के विमान में पानी पर तैरने वाली हल्की छिद्रयुक्त ईंटों (Floating bricks) का प्रयोग; धोलावीरा तीन भागों (दुर्ग, मध्य नगर, निचला नगर) में विभाजित एवं उन्नत जल प्रबंधन हेतु प्रसिद्ध	ASI विश्व धरोहर
8	शांतिनिकेतन, होयसल के पवित्र मंदिर समूह एवं असम के 'मोइदाम' (Moidams)	पश्चिम बंगाल (वीरभूम — शांतिनिकेतन); कर्नाटक (बेलूर, हलेबिदु, सोमनाथपुरा); असम (चराइदेव — अहोम राजवंश)	शांतिनिकेतन व होयसल मंदिर: 2023 ई.; चराइदेव मोइदाम (अहोम शाही टीले): 2024 ई.	रवींद्रनाथ टैगोर (1901/1921 — विश्वभारती); होयसल वंश (12वीं-13वीं सदी); अहोम राजवंश (चाओलुंग सुकाफा से 19वीं सदी तक)	असम के चराइदेव स्थित 'मोइदाम' अहोम राजाओं के शाही शवाधान टीले हैं जिन्हें **'असम का पिरामिड'** कहा जाता है (पूर्वोत्तर भारत का प्रथम सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थल)	भारतीय संस्कृति पोर्टल
9	कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान (भारत का एकमात्र 'मिश्रित' विश्व धरोहर स्थल)	सिक्किम (हिमालय क्षेत्र)	2016 ई.	प्राकृतिक जैव-विविधता एवं लेपचा जनजाति की 'बेयुल' (पवित्र छिपी हुई भूमि) और बौद्ध सांस्कृतिक परंपरा का समन्वय	यह भारत का एकमात्र **मिश्रित (Mixed — प्राकृतिक + सांस्कृतिक दोनों मानदंडों पर आधारित)** यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है	भारतीय संस्कृति पोर्टल
10	यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची (15 भारतीय तत्व)	संपूर्ण भारत (2008 से 2023 तक सूचीबद्ध)	2008 से 2023 ई.	1. वैदिक जप (2008), 2. रामलीला (2008), 3. कुटियाट्टम (2008), 4. रम्माण (उत्तराखंड, 2009), 5. मुडियेट्टू (केरल, 2010), 6. कालबेलिया (2010), 7. छऊ नृत्य (2010), 8. लद्दाख का बौद्ध मंत्रोच्चार (2012), 9. संकीर्तन (मणिपुर, 2013), 10. जंडियाला गुरु के ठठेरा बर्तन शिल्प (पंजाब, 2014), 11. योग (2016), 12. नवरोज (2016), 13. कुंभ मेला (2017), 14. कोलकाता की दुर्गा पूजा (2021), 15. गुजरात का गरबा (2023)	प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में लगने वाला कुंभ मेला (2017), कोलकाता की दुर्गा पूजा (2021) और गुजरात का गरबा (2023) नवीनतम अमूर्त धरोहरें हैं	PIB भारत सरकार

क्रम	विश्व धरोहर स्थल / सांस्कृतिक विरासत का नाम	राज्य / अवस्थिति	यूनेस्को सूचीबद्ध वर्ष	निर्माणकर्ता / ऐतिहासिक कालखंड	प्रमुख सांस्कृतिक एवं वास्तुशिल्पीय महत्व	आधिकारिक संदर्भ स्रोत
11	पूर्वोत्तर एवं संपूर्ण भारत के प्रमुख सांस्कृतिक पर्व और नववर्ष उत्सव	हॉर्नबिल (नागालैंड), लोसार व सागा दावा (सिक्किम/लद्दाख), वांगला (मेघालय — गारो जनजाति), चापचर कुट (मिजोरम), बिहू व अंबुबाची मेला (असम — कामाख्या मंदिर), सरहुल (झारखंड), ओणम व विशु (केरल), पोंगल (तमिलनाडु), उगादि (आंध्र/कर्नाटक), गुड़ी पड़वा (महाराष्ट्र)	पारंपरिक एवं वार्षिक आयोजन	1 से 10 दिसंबर तक कोहिमा के किसामा विरासत गाँव में आयोजित **'हॉर्नबिल महोत्सव'** को 'त्योहारों का त्योहार' (Festival of Festivals) कहा जाता है	मकर संक्रांति और फसल कटाई के पर्व विभिन्न राज्यों में उत्तरायण (गुजरात), लोहड़ी (पंजाब), माघ बिहू (असम) और पोंगल (तमिलनाडु) के रूप में मनाए जाते हैं	भारतीय संस्कृति पोर्टल
12	भारत की पारंपरिक युद्ध कलाएँ (Martial Arts) एवं वस्त्र शिल्प	कलारीपयट्टु (केरल — प्राचीनतम), सिलंबम (तमिलनाडु), थांग-ता व सरित सरक (मणिपुर), गतका (पंजाब), मर्दानी खेल (महाराष्ट्र), लाठी खेला (बंगाल), परिकंखंडा (बिहार); वस्त्र: पटोला (पाटन, गुजरात), पैठणी (महाराष्ट्र), कांजीवरम (तमिलनाडु), पोचमपल्ली इकत (तेलंगाना), चिकनकारी (लखनऊ), फुलकारी (पंजाब)	प्राचीन काल से अद्यतन (GI टैग प्राप्त शिल्प)	केरल की **'कलारीपयट्टु'** को विश्व की प्राचीनतम युद्ध कलाओं में से एक माना जाता है; लखनऊ की **'चिकनकारी'** कढ़ाई कला को मुगल साम्राज्ञी नूरजहाँ के संरक्षण से विशेष प्रसिद्धि मिली	पाटन का 'डबल इकत पटोला' रेशमी वस्त्र और तेलंगाना का 'पोचमपल्ली इकत' अपनी ज्यामितीय रंगाई-बुनाई के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं	IUC Academy

क्या आप जानते हैं?
तेलंगाना के मुलुगु जिले के पालमपेट में स्थित 13वीं शताब्दी का **काकतीय रुद्रेश्वर मंदिर (रामप्पा मंदिर)** भारत का एकमात्र ऐसा प्राचीन मंदिर है जिसका नाम उसके आराध्य देवता या राजा के नाम पर न होकर उसके मुख्य वास्तुकार एवं मूर्तिकार **'रामप्पा'** के नाम पर प्रसिद्ध हुआ, जिन्होंने 40 वर्षों तक अनवरत परिश्रम कर इस मंदिर का निर्माण किया था (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI))।

परीक्षा सतर्कता:
भारतीय राष्ट्रीय पंचांग (शक संवत्) और विक्रम संवत् के कालक्रम में परीक्षा में अक्सर प्रश्न पूछा जाता है:
1. **विक्रम संवत् (57 ईसा पूर्व):** उज्जैन के राजा विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय के उपलक्ष्य में प्रारंभ किया गया (ईस्वी सन् में 57 जोड़ने पर विक्रम संवत् प्राप्त होता है)।
2. **शक संवत् (78 ईस्वी):** कुषाण सम्राट **कनिष्क** के राज्याभिषेक (78 ई.) से प्रारंभ हुआ (ईस्वी सन् में से 78 घटाने पर शक संवत् प्राप्त होता है)। **22 मार्च 1957** (चैत्र 1, 1879 शक) को मेघनाद साहा समिति की सिफारिश पर भारत सरकार ने ग्रिगोरियन कैलेंडर के साथ-साथ **शक संवत्** को भारत के आधिकारिक राष्ट्रीय पंचांग के रूप में अपनाया (भारतीय संस्कृति पोर्टल)।

★ स्मृति ट्रिक:
• कुंभ मेले के 4 पवित्र स्थल और उनकी नदियाँ: "प्रयाग संगम, हरिद्वार गंगा, उज्जैन क्षिप्रा, नासिक गोदावरी चंगा!"
• प्रयागराज (गंगा-यमुना-सरस्वती संगम) | हरिद्वार (गंगा नदी) | उज्जैन (क्षिप्रा नदी) | नासिक-त्र्यंबकेश्वर (गोदावरी नदी)।

भारतीय कला एवं संस्कृति: उच्च-स्तरीय परीक्षा हल प्रश्न कोष (प्रश्न 41 से 80 — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 41. सिंधु घाटी सभ्यता के किस पुरास्थल से विश्वप्रसिद्ध 'नर्तकी की कांस्य प्रतिमा' (Dancing Girl) प्राप्त हुई है, जिसे 'मधुच्छिष्ट विधि' (Lost-wax technique) से ढाला गया था?

(क) हड़प्पा

(ख) मोहनजोदड़ो

(ग) लोथल

(घ) कालीबंगा

सही उत्तर: (ख) मोहनजोदड़ो

विस्तृत व्याख्या:

NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तक (भाग 1 — ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ) के अनुसार, मोहनजोदड़ो से लगभग 10.5 सेंटीमीटर ऊँची नर्तकी की कांस्य मूर्ति मिली है, जो बाएँ हाथ में कंधे तक चूड़ियाँ पहने हुए और दायाँ हाथ कमर पर रखे 'त्रिभंग' मुद्रा में खड़ी है। इसे प्राचीन द्रवित मोम विधि (Lost-wax casting) से बनाया गया था।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 41):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 41):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 42. सम्राट अशोक के किस एकाश्मक स्तंभ के शीर्ष (Capital) को भारत सरकार ने 26 जनवरी 1950 को 'राष्ट्रीय प्रतीक' (National Emblem) के रूप में अपनाया, जिसके फलक (Abacus) पर चार पशु गतिमान अवस्था में उत्कीर्ण हैं?

(क) सारनाथ सिंह स्तंभ (पशु: सिंह, अश्व, वृषभ एवं गज)

(ख) साँची सिंह स्तंभ (पशु: सिंह, बाघ, अश्व एवं हिरण)

(ग) रामपुरवा स्तंभ

(घ) लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ

सही उत्तर: (क) सारनाथ सिंह स्तंभ (पशु: सिंह, अश्व, वृषभ एवं गज)

विस्तृत व्याख्या:

सारनाथ के अशोक स्तंभ के शीर्ष पर पीठ सटाए बैठे चार सिंह हैं, जिनके नीचे की पट्टी (चौकी/Abacus) पर 24 तीलियों वाले धर्मचक्र के साथ चार दिशाओं में चार पशु—पूर्व में हाथी (गज), पश्चिम में बैल (वृषभ), दक्षिण में घोड़ा (अश्व) और उत्तर में सिंह—उत्कीर्ण हैं (भारतीय संस्कृति पोर्टल)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 42):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 42):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 43. उत्तर भारत की 'नागर मंदिर स्थापत्य शैली' में बने उस प्रथम गुप्तकालीन मंदिर का नाम क्या है, जिसमें पहली बार सपाट छत के स्थान पर 'शिखर' का निर्माण और 'पंचायतन शैली' का प्रयोग देखने को मिलता है?

(क) तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर)

(ख) देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तर प्रदेश)

(ग) भीतरगाँव का ईंटों का मंदिर (कानपुर)

(घ) नचना कुठारा का पार्वती मंदिर (पन्ना)

सही उत्तर: (ख) देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तर प्रदेश)

विस्तृत व्याख्या:

उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में बेतवा नदी के तट पर स्थित 6वीं शताब्दी के प्रारंभ का 'देवगढ़ का दशावतार मंदिर' भगवान विष्णु को समर्पित पंचायतन शैली का मंदिर है। इसकी बाहरी दीवारों पर शेषशायी विष्णु, गजेंद्र मोक्ष और नर-नारायण तपस्या के भव्य शिल्प फलक उत्कीर्ण हैं (**NCERT पाठ्यपुस्तक**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 43):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 43):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #4 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 44. महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर में स्थित 'एलोरा की गुफा संख्या 16' के विश्वप्रसिद्ध एकाश्मक 'कैलाशनाथ मंदिर' का निर्माण किस राष्ट्रकूट शासक ने करवाया था?

(क) दंतिदुर्ग

(ख) कृष्ण प्रथम

(ग) अमोघवर्ष प्रथम

(घ) गोविंद तृतीय

सही उत्तर: (ख) कृष्ण प्रथम

विस्तृत व्याख्या:

8वीं शताब्दी ई. में राष्ट्रकूट सम्राट कृष्ण प्रथम ने एलोरा की पहाड़ी को ऊपर से नीचे की ओर (Top-to-bottom) लंबवत कटवाकर बिना किसी जोड़ के एकाश्मक 'कैलाशनाथ मंदिर' का निर्माण करवाया। इसमें रावण द्वारा कैलाश पर्वत को उठाने का दृश्य भारतीय मूर्तिकला की सर्वोच्च कृतियों में गिना जाता है (**ASI विश्व धरोहर**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 44):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 44):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #5 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 45. कुषाण काल में विकसित 'गांधार मूर्तिकला शैली' और 'मथुरा मूर्तिकला शैली' के अंतर के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(क) गांधार शैली पर ग्रीको-रोमन प्रभाव था और इसमें नीले-धूसर पत्थर का प्रयोग हुआ, जबकि मथुरा शैली पूर्णतः स्वदेशी थी और इसमें चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ।

(ख) गांधार शैली में हिंदू, बौद्ध और जैन तीनों धर्मों की मूर्तियाँ बनीं, जबकि मथुरा शैली में केवल बौद्ध मूर्तियाँ बनीं।

(ग) मथुरा शैली का विकास सातवाहन शासकों के संरक्षण में आंध्र प्रदेश में हुआ।

(घ) गांधार शैली में श्वेत संगमरमर का प्रयोग किया गया।

सही उत्तर: (क) गांधार शैली पर ग्रीको-रोमन प्रभाव था और इसमें नीले-धूसर पत्थर का प्रयोग हुआ, जबकि मथुरा शैली पूर्णतः स्वदेशी थी और इसमें चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ।

विस्तृत व्याख्या:

गांधार शैली में केवल बौद्ध धर्म से जुड़ी मूर्तियाँ बनीं जिनमें बुद्ध को लहरदार बालों और यूनानी देवता अपोलो जैसी शारीरिक संरचना में दिखाया गया; इसके विपरीत मथुरा शैली पूर्णतः भारतीय थी जिसमें बौद्ध, हिंदू और जैन तीनों धर्मों की प्रतिमाएँ लाल बलुआ पत्थर से निर्मित की गईं (**NCERT इतिहास भाग 1**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 45):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 45):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 46. ओडिशा के पुरी जिले में स्थित 13वीं शताब्दी के 'कोणार्क सूर्य मंदिर' (जिसे यूरोपीय नाविकों ने 'ब्लैक पैगोडा' कहा) का निर्माण किस राजवंश के किस शासक ने करवाया था?

(क) पूर्वी गंग वंश के शासक नरसिंहदेव प्रथम

(ख) सोमवंशी शासक ययाति केसरी

(ग) गंग वंश के शासक अनंतवर्मन चोडगंग देव

(घ) गजपति कपिलेंद्र देव

सही उत्तर: (क) पूर्वी गंग वंश के शासक नरसिंहदेव प्रथम

विस्तृत व्याख्या:

13वीं शताब्दी (लगभग 1250 ई.) में पूर्वी गंग राजवंश के राजा नरसिंहदेव प्रथम ने कोणार्क के सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया, जिसे 1984 ई. में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। ध्यान रहे कि पुरी के जगन्नाथ मंदिर ('व्हाइट पैगोडा') का निर्माण अनंतवर्मन चोडगंग देव ने और भुवनेश्वर के लिंगराज मंदिर का निर्माण सोमवंशी राजा ययाति केसरी ने करवाया था (**ASI विश्व धरोहर**)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 46):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 46):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 47. मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल 'खजुराहो के मंदिर समूह' में सबसे विशाल और कलात्मक रूप से सर्वोच्च मंदिर कौन-सा है?

(क) कंदरिया महादेव मंदिर

(ख) लक्ष्मण मंदिर

(ग) चौंसठ योगिनी मंदिर

(घ) आदिनाथ मंदिर

सही उत्तर: (क) कंदरिया महादेव मंदिर

विस्तृत व्याख्या:

चंदेल शासक विद्याधर द्वारा लगभग 1025–1050 ई. के मध्य निर्मित भगवान शिव को समर्पित 'कंदरिया महादेव मंदिर' खजुराहो के पश्चिमी समूह का सबसे बड़ा और भव्य मंदिर है। इसके मुख्य शिखर के चारों ओर 84 छोटे शिखर ('उरुःशृंग') बने हैं जो कैलाश पर्वत के शिखरों का आभास कराते हैं (**ASI विश्व धरोहर**)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 47):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 47):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 48. अजंता की किस गुफा संख्या में प्रसिद्ध भित्ति चित्र 'पद्मपाणि बोधिसत्व' (हाथ में नीलकमल धारण किए हुए बोधिसत्व) और 'वज्रपाणि बोधिसत्व' अंकित हैं?

(क) गुफा संख्या 1

(ख) गुफा संख्या 10

(ग) गुफा संख्या 16

(घ) गुफा संख्या 17

सही उत्तर: (क) गुफा संख्या 1

विस्तृत व्याख्या:

अजंता की गुफा संख्या 1 (महायान विहार गुफा, वाकाटक काल) में विश्वप्रसिद्ध 'पद्मपाणि बोधिसत्व' और 'वज्रपाणि बोधिसत्व' के भित्ति चित्र अंकित हैं। वहीं गुफा संख्या 16 में 'मरणासन्न राजकुमारी' (Dying Princess) और गुफा संख्या 17 ('चित्रशाला') में 'माता और शिशु' (राहुल समर्पण) तथा विभिन्न जातक कथाओं के चित्र बने हैं (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 48):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 48):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #9 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 49. दिल्ली के महरौली में कुतुब मीनार परिसर में स्थित प्रसिद्ध 'लौह स्तंभ' (जिस पर आज तक जंग नहीं लगा है) मूल रूप से किस गुप्त सम्राट की विजयों की स्मृति में स्थापित किया गया था?

(क) चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (अभिलेख में 'चंद्र' नाम अंकित)

(ख) समुद्रगुप्त

(ग) स्कंदगुप्त

(घ) कुमारगुप्त प्रथम

सही उत्तर: (क) चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (अभिलेख में 'चंद्र' नाम अंकित)

विस्तृत व्याख्या:

महरौली के 7.2 मीटर ऊँचे और 6 टन से अधिक वजनी लौह स्तंभ पर गुप्तकालीन ब्राह्मी लिपि और संस्कृत भाषा में 'चंद्र' नामक राजा (चंद्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य, 375–415 ई.) द्वारा सिंधु के सप्तमुखों को पार कर वाह्लीकों को पराजित करने और भगवान विष्णु के ध्वज के रूप में इसे स्थापित करने का उल्लेख है (**ASI विश्व धरोहर**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 49):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 49):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #10 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 50. सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1311 ई. में कुतुब मीनार परिसर के दक्षिणी प्रवेश द्वार के रूप में निर्मित किस स्मारक में लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर के साथ घोड़े की नाल के आकार के मेहराब (Horseshoe Arch) का प्रथम वैज्ञानिक प्रयोग हुआ?

(क) अलाई दरवाजा

(ख) बुलंद दरवाजा

(ग) रूमी दरवाजा

(घ) तीन दरवाजा

सही उत्तर: (क) अलाई दरवाजा

विस्तृत व्याख्या:

1311 ई. में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा बनवाया गया 'अलाई दरवाजा' प्रारंभिक तुर्क-इस्लामी स्थापत्य कला का रत्न माना जाता है, जिसमें पहली बार वास्तविक वैज्ञानिक गुंबद और मेहराब के साथ लाल बलुआ पत्थर व श्वेत संगमरमर की पट्टियों का अलंकरण किया गया (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 50):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 50):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #11 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 51. फतेहपुर सीकरी में सम्राट अकबर द्वारा 176 फीट ऊँचे ऐतिहासिक 'बुलंद दरवाजा' का निर्माण किस विजय की स्मृति में करवाया गया था?

(क) गुजरात विजय (1572–73 ई.)

(ख) चित्तौड़गढ़ विजय

(ग) असीरगढ़ विजय (1601 ई.)

(घ) बंगाल एवं बिहार विजय

सही उत्तर: (क) गुजरात विजय (1572–73 ई.)

विस्तृत व्याख्या:

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के अनुसार, अकबर की गुजरात विजय के उपलक्ष्य में फतेहपुर सीकरी की जामा मस्जिद के दक्षिणी द्वार के रूप में लाल और पीले बलुआ पत्थर से 'बुलंद दरवाजा' बनाया गया, जो विश्व का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार है। इसमें 'अर्द्ध-गुंबदीय पोर्टल' (Half-dome portal) शैली का प्रयोग किया गया है।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 51):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 51):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #12 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 52. राजस्थानी चित्रकला की किस शैली से प्रसिद्ध चित्र 'बनी-ठनी' (राधा का रूप) संबंधित है, जिस पर भारत सरकार ने 1973 ई. में डाक टिकट भी जारी किया था?

(क) किशनगढ़ शैली (चित्रकार: मोरध्वज निहालचंद)

(ख) बूँदी शैली

(ग) मेवाड़ शैली

(घ) बीकानेर शैली

सही उत्तर: (क) किशनगढ़ शैली (चित्रकार: मोरध्वज निहालचंद)

विस्तृत व्याख्या:

किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह (जो वल्लभ संप्रदाय के प्रभाव में 'नागरीदास' उपनाम से कृष्ण-भक्ति के पद रचते थे) के दरबारी चित्रकार मोरध्वज निहालचंद ने राधा के स्वरूप में 'बनी-ठनी' का अमर चित्र बनाया, जिसे कला इतिहासकार एरिक डिकिन्सन ने 'भारत की मोनालिसा' की संज्ञा दी (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 52):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 52):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 53. बिहार की किस पारंपरिक लोक चित्रकला को 'अंगिका कला' या 'सर्प चित्रकला' भी कहा जाता है, जो बिहुला-विषहरी की लोकगाथा पर आधारित है और जिसमें केवल तीन रंगों—गुलाबी, हरे और पीले—का प्रयोग किया जाता है?

(क) मंजूषा चित्रकला (भागलपुर क्षेत्र)

(ख) मधुबनी चित्रकला (मिथिला क्षेत्र)

(ग) टिकुली कला (पटना क्षेत्र)

(घ) जादपटिया चित्रकला

सही उत्तर: (क) मंजूषा चित्रकला (भागलपुर क्षेत्र)

विस्तृत व्याख्या:

बिहार के भागलपुर (प्राचीन अंग महाजनपद) क्षेत्र की 'मंजूषा चित्रकला' बाँस, जूट और कागज से बने मंदिर के आकार के बक्सों ('मंजूषा') पर बनाई जाती है। इसमें सती बिहुला द्वारा अपने पति बाला लखेंद्र को सर्पदंश से बचाने और मनसा देवी (विषहरी) की कथा को केवल तीन रंगों (गुलाबी, हरा, पीला) और सर्पाकार बॉर्डर के साथ चित्रित किया जाता है (**IUC Academy**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 53):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 53):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 54. महाराष्ट्र की 'वारली लोक चित्रकला' के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(क) इसमें गेरू व गोबर की लाल-भूरी पृष्ठभूमि पर केवल सफेद रंग (चावल के आटे के घोल) से त्रिकोण, वृत्त और वर्ग की ज्यामितीय आकृतियों द्वारा चित्र बनाए जाते हैं।

(ख) इसमें सोने की पत्तियों और बहुमूल्य रत्नों की जड़ावट की जाती है।

(ग) यह केवल ताड़पत्रों पर बौद्ध भिक्षुओं द्वारा बनाई जाती है।

(घ) इसका मुख्य केंद्र आंध्र प्रदेश का श्रीकालहस्ती मंदिर है।

सही उत्तर: (क) इसमें गेरू व गोबर की लाल-भूरी पृष्ठभूमि पर केवल सफेद रंग (चावल के आटे के घोल) से त्रिकोण, वृत्त और वर्ग की ज्यामितीय आकृतियों द्वारा चित्र बनाए जाते हैं।

विस्तृत व्याख्या:

वारली चित्रकला में प्रकृति के तत्वों से प्रेरित तीन मूल ज्यामितीय आकार प्रयुक्त होते हैं—वृत्त (सूर्य व चंद्रमा से प्रेरित), त्रिकोण (पर्वत व नुकीले वृक्षों से प्रेरित — दो उल्टे-सीधे त्रिकोणों के मिलन से मानव एवं पशु शरीर बनता है) और वर्ग ('चौक' — जो उर्वरता की देवी पालघाट को समर्पित पवित्र स्थान का प्रतीक है) (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 54):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 54):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 55. भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' को किस अन्य सम्मानजनक उपाधि से जाना जाता है, जिसमें ब्रह्मा द्वारा चारों वेदों के सार-तत्वों को मिलाकर नाट्य की रचना का उल्लेख है?

(क) पंचम वेद (पाँचवाँ वेद — 'नाट्यवेद')

(ख) उपवेद शिरोमणि

(ग) संगीतरत्नाकर

(घ) अभिनय संहिता

सही उत्तर: (क) पंचम वेद (पाँचवाँ वेद — 'नाट्यवेद')

विस्तृत व्याख्या:

नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय के अनुसार ब्रह्माजी ने ऋग्वेद से 'पाठ्य' (संवाद), सामवेद से 'गीत' (संगीत), यजुर्वेद से 'अभिनय' और अथर्ववेद से 'रस' ग्रहण कर पाँचवें वेद के रूप में 'नाट्यवेद' (पंचम वेद) की रचना की, जो सभी वर्णों के लिए सुलभ था (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 55):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 55):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 56. निम्नलिखित में से किस शास्त्रीय नृत्य में नर्तक/नर्तकी द्वारा पीतल की थाली के किनारों पर पैर रखकर और सिर पर जल से भरा कलश रखकर संतुलन साधते हुए नृत्य करने की 'तरंगम' परंपरा प्रसिद्ध है?

(क) कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश)

(ख) भरतनाट्यम (तमिलनाडु)

(ग) ओडिसी (ओडिशा)

(घ) सत्रिया (असम)

सही उत्तर: (क) कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश)

विस्तृत व्याख्या:

कुचिपुड़ी नृत्य में 17वीं शताब्दी के संत नारायण तीर्थ द्वारा रचित 'श्रीकृष्ण लीला तरंगिणी' के पदों पर नर्तक पीतल की थाली के उठे हुए किनारों पर खड़े होकर जटिल लयकारी प्रस्तुत करते हैं, जिसे 'तरंगम' कहा जाता है (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 56):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 56):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 57. ओडिशा के शास्त्रीय नृत्य 'ओडिसी' के विकास में मंदिर की देवदासियों के अतिरिक्त उन युवा लड़कों की परंपरा का भी बड़ा योगदान रहा है, जो महिलाओं का वेश धारण कर भगवान जगन्नाथ की स्तुति में कलाबाजियों से युक्त नृत्य करते थे—इस परंपरा को क्या कहा जाता है?

(क) गोतिपुआ (Gotipua)

(ख) थेय्यम

(ग) पुंग चोलोम

(घ) भागवत मेला

सही उत्तर: (क) गोतिपुआ (Gotipua)

विस्तृत व्याख्या:

ओडिया भाषा में 'गोतिपुआ' का अर्थ 'एक लड़का' होता है। इस परंपरा में किशोर बालक स्त्री-वेशभूषा धारण कर राधा-कृष्ण की भक्ति में नृत्य और यौगिक मुद्राएँ ('बंध नृत्य') प्रस्तुत करते हैं। ओडिसी नृत्य के महान गुरु केलुचरण महापात्र स्वयं गोतिपुआ परंपरा से प्रशिक्षित हुए थे (**IUC Academy**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 57):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 57):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 58. 15वीं शताब्दी में असम के महान वैष्णव संत-सुधारक श्रीमंत शंकरदेव द्वारा 'एकशरण नाम धर्म' के प्रचार हेतु विकसित किस नृत्य शैली को संगीत नाटक अकादमी ने वर्ष 2000 में भारत के 8वें शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता दी?

(क) सत्रिया नृत्य

(ख) बिहू नृत्य

(ग) बगरुम्बा नृत्य

(घ) भोरताल नृत्य

सही उत्तर: (क) सत्रिया नृत्य

विस्तृत व्याख्या:

श्रीमंत शंकरदेव और उनके प्रमुख शिष्य माधवदेव ने असम के वैष्णव मठों ('सत्रों' — विशेषकर माजुली द्वीप के सत्रों) में 'अंकिया नाट' और 'सत्रिया नृत्य' की परंपरा स्थापित की, जिसे 15 नवंबर 2000 को संगीत नाटक अकादमी ने भारत के 8वें शास्त्रीय नृत्य की मान्यता प्रदान की (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 58):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 58):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 59. उत्तर भारतीय (हिंदुस्तानी) शास्त्रीय संगीत के अंतर्गत ख्याल गायकी का सबसे प्राचीन घराना कौन-सा माना जाता है, जिसके प्रवर्तक नत्थन पीर बख्श और प्रसिद्ध गायक हद्दू खाँ व हस्सू खाँ थे?

(क) ग्वालियर घराना

(ख) किराना घराना

(ग) पटियाला घराना

(घ) जयपुर-अतरौली घराना

सही उत्तर: (क) ग्वालियर घराना

विस्तृत व्याख्या:

ग्वालियर के महाराजा मानसिंह तोमर (जिन्होंने ध्रुपद को संरक्षण दिया और 'मानकुतूहल' ग्रंथ की रचना करवाई) की संगीत परंपरा से विकसित 'ग्वालियर घराना' हिंदुस्तानी ख्याल गायकी का सबसे प्राचीन घराना है (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 59):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 59):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 60. कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध 'त्रिमूर्ति' (Trinity of Carnatic Music) में कौन-से तीन महान संगीतज्ञ सम्मिलित हैं, जिनका जन्म 18वीं शताब्दी में तमिलनाडु के तिरुवरूर में हुआ था?

(क) त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर एवं श्यामा शास्त्री

(ख) पुरंदरदास, अन्नमाचार्य एवं भद्राचल रामदास

(ग) स्वाति तिरुनल, वेंकटमखी एवं सुब्रमण्यम भारती

(घ) एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी, सेम्मानगुडी श्रीनिवास अय्यर एवं बालमुरलीकृष्ण

सही उत्तर: (क) त्यागराज, मुथुस्वामी दीक्षितर एवं श्यामा शास्त्री

विस्तृत व्याख्या:

श्यामा शास्त्री (1762–1827 ई. — देवी कामाक्षी पर तेलुगु व संस्कृत में रचनाएँ), संत त्यागराज (1767–1847 ई. — भगवान राम पर तेलुगु में 'पंचरत्न कृतियाँ') और मुथुस्वामी दीक्षितर (1775–1835 ई. — संस्कृत में रचनाएँ व वीणा वादन) को संयुक्त रूप से कर्नाटक संगीत की त्रिमूर्ति कहा जाता है (**IUC Academy**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 60):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 60):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 61. 13वीं शताब्दी में लिखित संगीत के किस प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ को उत्तर भारतीय (हिंदुस्तानी) और दक्षिण भारतीय (कर्नाटक) दोनों संगीत प्रणालियों का साझा आधार ग्रंथ माना जाता है, जिसकी रचना देवगिरि के यादव राजा सिंघण के दरबारी विद्वान शार्ङ्गदेव ने की थी?

(क) संगीतरत्नाकर ('सप्ताध्यायी')

(ख) बृहद्देशी (मतंग मुनि)

(ग) रागतरंगिणी (लोचन कवि)

(घ) चतुर्दंडीप्रकाशिका (वेंकटमखी)

सही उत्तर: (क) संगीतरत्नाकर ('सप्ताध्यायी')

विस्तृत व्याख्या:

आचार्य शार्ङ्गदेव द्वारा 13वीं शताब्दी में रचित 'संगीतरत्नाकर' में 7 अध्याय हैं (स्वर, राग, प्रकीर्णक, प्रबंध, ताल, वाद्य और नर्तन), इसलिए इसे 'सप्ताध्यायी' भी कहा जाता है। इसमें 264 रागों का वर्गीकरण किया गया है (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 61):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 61):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 62. भारतीय षड्दर्शन में से किस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद थे, जिन्होंने सर्वप्रथम यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि भौतिक जगत की सभी वस्तुएँ 'परमाणु' (अविभाज्य सूक्ष्मतम कण) के संयोग से बनी हैं?

(क) वैशेषिक दर्शन

(ख) सांख्य दर्शन

(ग) न्याय दर्शन

(घ) पूर्व मीमांसा दर्शन

सही उत्तर: (क) वैशेषिक दर्शन

विस्तृत व्याख्या:

महर्षि कणाद (जिन्हें 'उलूक' भी कहा जाता है) द्वारा प्रतिपादित वैशेषिक दर्शन ने द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय नामक 6 पदार्थों (बाद में 'अभाव' सहित 7 पदार्थों) तथा परमाणुवाद का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया (**NCERT पाठ्यपुस्तक**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 62):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 62):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #23 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 63. आदि गुरु शंकराचार्य (8वीं शताब्दी ई.) द्वारा प्रतिपादित 'अद्वैत वेदांत' दर्शन के विरोध में 11वीं-12वीं शताब्दी में श्री रामानुजाचार्य ने कौन-सा वेदांत दर्शन प्रतिपादित किया, जिसने सगुण भक्ति आंदोलन को दार्शनिक आधार प्रदान किया?

(क) विशिष्टाद्वैतवाद

(ख) द्वैतवाद

(ग) द्वैताद्वैतवाद

(घ) शुद्धाद्वैतवाद

सही उत्तर: (क) विशिष्टाद्वैतवाद

विस्तृत व्याख्या:

श्री रामानुजाचार्य (1017–1137 ई.) ने 'विशिष्टाद्वैतवाद' का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार जीव (चित्) और जगत (अचित्) दोनों सत्य हैं, किंतु वे ईश्वर (ब्रह्म) के शरीर या विशेषण के रूप में उससे अभिन्न रूप से जुड़े हैं (**NCERT इतिहास भाग 2**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 63):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 63):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #24 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 64. बौद्ध धर्म की चौथी और अंतिम संगीति (प्रथम शताब्दी ई.) कुषाण सम्राट कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के कुंडलवन में किसकी अध्यक्षता और उपाध्यक्षता में आयोजित हुई थी, जिसमें बौद्ध धर्म औपचारिक रूप से 'हीनयान' और 'महायान' में विभाजित हो गया?

(क) अध्यक्ष: वसुमित्र; उपाध्यक्ष: अश्वघोष

(ख) अध्यक्ष: महाकश्यप; उपाध्यक्ष: उपालि

(ग) अध्यक्ष: मोग्गलिपुत्त तिस्स; उपाध्यक्ष: भद्रबाहु

(घ) अध्यक्ष: नागार्जुन; उपाध्यक्ष: चरक

सही उत्तर: (क) अध्यक्ष: वसुमित्र; उपाध्यक्ष: अश्वघोष

विस्तृत व्याख्या:

कुंडलवन (कश्मीर) में आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति की अध्यक्षता वसुमित्र ने और उपाध्यक्षता 'बुद्धचरित' के रचयिता अश्वघोष ने की थी। इसी संगीति में संस्कृत भाषा में त्रिपिटकों पर 'महाविभाषा शास्त्र' नामक विशाल टीका संकलित की गई (**NCERT इतिहास भाग 1**)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 64):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 64):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 65. जैन दर्शन का वह सिद्धांत क्या कहलाता है, जिसके अनुसार किसी भी वस्तु या सत्य के अनेक पहलू (धर्मों के अनंत धर्म) होते हैं और किसी भी मानवीय कथन के आगे 'स्यात्' (कदाचित/एक दृष्टिकोण से) लगाना आवश्यक है?

(क) अनेकांतवाद एवं स्याद्वाद (सप्तभंगी नय)

(ख) प्रतीत्यसमुत्पाद एवं क्षणिकवाद

(ग) शून्यवाद एवं विज्ञानवाद

(घ) नियतिवाद एवं अक्रियावाद

सही उत्तर: (क) अनेकांतवाद एवं स्याद्वाद (सप्तभंगी नय)

विस्तृत व्याख्या:

जैन तत्वमीमांसा का सिद्धांत 'अनेकांतवाद' है और ज्ञानमीमांसा (तर्कशास्त्र) में उसकी अभिव्यक्ति 'स्याद्वाद' या 'सप्तभंगी नय' कहलाती है, जो वैचारिक सहिष्णुता और बौद्धिक अहिंसा का सर्वोच्च दार्शनिक आधार है (NCERT इतिहास भाग 1)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 65):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 65):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #26 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 66. यूनानी-बैक्ट्रियाई राजा मिनांडर प्रथम और बौद्ध भिक्षु नागसेन के मध्य हुए दार्शनिक संवाद किस प्रसिद्ध पालि ग्रंथ में संकलित हैं?

(क) मिलिंदपन्हो (मिलिंद के प्रश्न)

(ख) दीपवंश एवं महावंश

(ग) दिव्यावदान

(घ) ललितविस्तर

सही उत्तर: (क) मिलिंदपन्हो (मिलिंद के प्रश्न)

विस्तृत व्याख्या:

हिंद-यूनानी (इंडो-ग्रीक) शासक मिनांडर (पालि साहित्य में 'मिलिंद') ने बौद्ध दार्शनिक भिक्षु नागसेन से आत्मा, पुनर्जन्म और निर्वाण से संबंधित गहन प्रश्न पूछे थे, जिनका संकलन पालि ग्रंथ 'मिलिंदपन्हो' में किया गया है (भारतीय संस्कृति पोर्टल)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 66):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 66):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #27 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 67. 1837 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी के किस टकसाल अधिकारी और पुरातत्वविद् ने सर्वप्रथम सम्राट अशोक के ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि के अभिलेखों ('देवानंपिय पियदस्सी') को पढ़ने में सफलता प्राप्त की थी?

(क) जेम्स प्रिंसेप

(ख) अलेक्जेंडर कनिंघम

(ग) जॉन मार्शल

(घ) विलियम जोन्स

सही उत्तर: (क) जेम्स प्रिंसेप

विस्तृत व्याख्या:

NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तक (भाग 1 — राजा, किसान और नगर) के अनुसार, 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि को सफलतापूर्वक पढ़ा और पता लगाया कि अभिलेखों में उल्लिखित 'पियदस्सी' (मनोहर मुखाकृति वाला राजा) मौर्य सम्राट अशोक ही था।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 67):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 67):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #28 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 68. प्राचीन तमिल 'संगम साहित्य' के प्रसिद्ध महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम' (नूपुर की कथा — कोवलन, कन्नगी और माधवी की कथा) के रचयिता कौन थे?

(क) इलांगो आदिगल

(ख) सीतलै सतनार

(ग) तिरुवल्लुवर

(घ) तोलकाप्पियर

सही उत्तर: (क) इलांगो आदिगल

विस्तृत व्याख्या:

चेर राजकुमार और जैन मुनि इलांगो आदिगल ने तमिल महाकाव्य 'शिलप्पादिकारम' की रचना की, जबकि इसके पूरक बौद्ध महाकाव्य 'मणिमेकलै' (कोवलन और माधवी की पुत्री की कथा) की रचना सीतलै सतनार ने की और तिरुवल्लुवर ने नैतिक सूत्र ग्रंथ 'तिरुक्कुरल' (तमिल भूमि की बाइबिल) की रचना की (NCERT पाठ्यपुस्तक)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 68):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 68):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #29 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 69. 12वीं शताब्दी ई. में रचित संस्कृत भाषा के उस प्रथम प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ का नाम क्या है, जिसमें कश्मीर के आदिकाल से लेकर 1148–50 ई. तक के शासकों का क्रमबद्ध इतिहास लिखा गया है?

(क) कल्हण रचित 'राजतरंगिणी' (राजाओं की नदी)

(ख) बिल्हण रचित 'विक्रमांकदेवचरित'

(ग) बाणभट्ट रचित 'हर्षचरित'

(घ) संध्याकर नंदी रचित 'रामचरित'

सही उत्तर: (क) कल्हण रचित 'राजतरंगिणी' (राजाओं की नदी)

विस्तृत व्याख्या:

कश्मीरी इतिहासकार कल्हण ने लोहार वंश के शासक जयसिंह के शासनकाल में 1148–1150 ई. में 8 तरंगों (अध्यायों) और लगभग 7,826 संस्कृत श्लोकों में 'राजतरंगिणी' की रचना की, जिसे बाद में जोनराज और श्रीवर ने आगे बढ़ाया (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 69):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 69):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #30 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 70. कर्नाटक के हम्पी (विजयनगर साम्राज्य की राजधानी) में स्थित किस मंदिर परिसर में प्रसिद्ध 'पत्थर का रथ' (जिसे ₹50 के भारतीय करेंसी नोट पर अंकित किया गया है) और 56 संगीतमय स्तंभ ('सारेगामा स्तंभ') स्थित हैं?

(क) विजय विट्ठल मंदिर

(ख) विरूपाक्ष मंदिर

(ग) हजार राम मंदिर

(घ) अच्युतराय मंदिर

सही उत्तर: (क) विजय विट्ठल मंदिर

विस्तृत व्याख्या:

हम्पी के विजय विट्ठल मंदिर (जिसका विस्तार तुलुव वंश के महान सम्राट कृष्णदेव राय के काल में हुआ) के प्रांगण में भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ को समर्पित प्रसिद्ध 'पत्थर का रथ' (Stone Chariot) और थपथपाने पर सप्तस्वर उत्पन्न करने वाले संगीतमय स्तंभ स्थित हैं (**ASI विश्व धरोहर**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 70):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 70):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #31 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 71. 2021 ई. में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में 40वें भारतीय स्थल के रूप में शामिल हड़प्पाकालीन महानगर 'धोलावीरा' (कच्छ, गुजरात) की सबसे अनूठी नगर-योजना विशेषता क्या थी?

(क) यह नगर दो के स्थान पर तीन भागों (दुर्ग/किला, मध्यमा या मध्य नगर, और निचला नगर) में विभाजित था तथा यहाँ शैलकृत विशाल जलकुंड (जलाशय) और 10 बड़े अक्षरों वाला सूचना-पट मिला है।

(ख) यहाँ पक्की ईंटों का प्रयोग बिल्कुल नहीं हुआ था।

(ग) यह रावी नदी के तट पर स्थित बंदरगाह नगर था।

(घ) यहाँ से जुते हुए खेत और अग्निवेदिकाओं के साक्ष्य मिले हैं।

सही उत्तर: (क) यह नगर दो के स्थान पर तीन भागों (दुर्ग/किला, मध्यमा या मध्य नगर, और निचला नगर) में विभाजित था तथा यहाँ शैलकृत विशाल जलकुंड (जलाशय) और 10 बड़े अक्षरों वाला सूचना-पट मिला है।

विस्तृत व्याख्या:

कच्छ के रण के खादिर बेत द्वीप में मानहर और मानसर नालों के बीच स्थित धोलावीरा (स्थानीय नाम 'कोटडा टिम्बा') हड़प्पा सभ्यता का एकमात्र ऐसा नगर है जो तीन भागों में बँटा था और जहाँ नगर के चारों ओर 16 से अधिक शैलकृत जलाशयों की उन्नत वर्षा-जल संचयन प्रणाली विद्यमान थी (**ASI विश्व धरोहर**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 71):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 71):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #32 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 72. वर्ष 2023 में कर्नाटक के किन तीन स्थानों पर स्थित 12वीं–13वीं शताब्दी के 'होयसल के पवित्र मंदिर समूह' को यूनेस्को ने भारत के 42वें विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया?

(क) बेलूर (चेन्नाकेशव मंदिर), हलेबिदु (होयसलेश्वर मंदिर) एवं सोमनाथपुरा (केशव मंदिर)

(ख) बादामी, ऐहोल एवं पट्टदकल

(ग) श्रवणबेलगोला, मैसूर एवं हम्पी

(घ) तालकाड, श्रृंगेरी एवं उडुपी

सही उत्तर: (क) बेलूर (चेन्नाकेशव मंदिर), हलेबिदु (होयसलेश्वर मंदिर) एवं सोमनाथपुरा (केशव मंदिर)

विस्तृत व्याख्या:

होयसल राजाओं (विष्णुवर्धन से नरसिंह तृतीय तक) द्वारा मुलायम क्लोराइट शिस्ट (सोपस्टोन/सेलखड़ी पत्थर) से निर्मित बेलूर, हलेबिदु और सोमनाथपुरा के मंदिर अपने तारकीय (Star-shaped) धरातल, खराद पर तराशे गए स्तंभों और आभूषण जैसी सूक्ष्म नक्काशी के लिए विश्वप्रसिद्ध हैं (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 72):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 72):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #33 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 73. जुलाई 2024 में नई दिल्ली में आयोजित यूनेस्को विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र में असम के किस ऐतिहासिक स्थल को भारत के 43वें विश्व धरोहर स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया गया?

(क) चराइदेव के मोइदाम (अहोम राजवंश की टीला शवाधान प्रणाली)

(ख) माजुली नदी द्वीप के वैष्णव सत्र

(ग) कामाख्या मंदिर परिसर (गुवाहाटी)

(घ) रंग घर (शिवसागर)

सही उत्तर: (क) चराइदेव के मोइदाम (अहोम राजवंश की टीला शवाधान प्रणाली)

विस्तृत व्याख्या:

असम के चराइदेव जिले में स्थित 'मोइदाम' (Moidams) 13वीं से 19वीं शताब्दी तक शासन करने वाले ताई-अहोम राजवंश के राजाओं और राजपरिवार के सदस्यों के अर्द्ध-गोलाकार शाही शवाधान टीले हैं, जिनकी तुलना मिस्र के पिरामिडों से की जाती है (**PIB भारत सरकार**)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 73):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 73):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #34 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 74. पंजाब के अमृतसर जिले के किस कस्बे के 'ठठेरा समुदाय द्वारा पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक शिल्प कला' को 2014 ई. में यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया था, जो भारत की इस सूची में शामिल होने वाली एकमात्र धातु-शिल्प परंपरा है?

(क) जंडियाला गुरु

(ख) मुरादाबाद

(ग) कोटली सूरत मल्ही

(घ) करतारपुर

सही उत्तर: (क) जंडियाला गुरु

विस्तृत व्याख्या:

19वीं शताब्दी में महाराजा रणजीत सिंह ने कश्मीर से कुशल धातु शिल्पकारों (ठठेरों) को पंजाब के अमृतसर के पास 'जंडियाला गुरु' में बसाया था। 2014 ई. में इनकी हस्तनिर्मित पीतल व ताँबे के बर्तन बनाने की कला को यूनेस्को की अमूर्त धरोहर सूची में अंकित किया गया (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 74):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 74):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #35 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 75. उत्तराखंड के चमोली जिले के सलूड़-डुंग्रा गाँव में बैसाख माह में आयोजित होने वाले किस धार्मिक और मुखौटा-नाट्य उत्सव को 2009 ई. में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया गया, जिसमें रामायण के प्रसंगों को बिना संवाद के ढोल-दमाऊ की थाप पर प्रस्तुत किया जाता है?

(क) रम्माण (Ramman)

(ख) छोलिया

(ग) हिलजात्रा

(घ) नंदा देवी राजजात

सही उत्तर: (क) रम्माण (Ramman)

विस्तृत व्याख्या:

गढ़वाल हिमालय के चमोली जिले के सलूड़-डुंग्रा गाँव के भूमियाल देवता के मंदिर प्रांगण में आयोजित होने वाले 'रम्माण' उत्सव में भोजपत्र की लकड़ी के 18 मुखौटे पहनकर रामकथा, कुरजोगी और मल्ल युद्ध नृत्य प्रस्तुत किया जाता है (**भारतीय संस्कृति पोर्टल**)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 75):** यह तथ्य **भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय)** तथा **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI)** के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 75):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (**IUC Academy**)।

अभ्यास प्रश्न #36 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 76. उत्तर भारत में सूफी चिश्ती सिलसिले (चिश्ती संप्रदाय) की स्थापना 12वीं शताब्दी के अंत में किस महान सूफी संत ने की थी, जिनकी दरगाह अजमेर (राजस्थान) में स्थित है?

(क) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ('गरीब नवाज')

(ख) ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी

(ग) बाबा फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर

(घ) शेख निजामुद्दीन औलिया ('महबूब-ए-इलाही')

सही उत्तर: (क) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ('गरीब नवाज')

विस्तृत व्याख्या:

NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तक (भाग 2 — भक्ति-सूफी परंपराएँ) के अनुसार, ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती 1192 ई. के आसपास भारत आए और अजमेर को अपनी खानकाह बनाया। उनके प्रमुख शिष्यों की परंपरा का सही कालक्रम है: ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) → कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (दिल्ली) → बाबा फरीद (अजोधन/पाकपट्टन — जिनकी वाणी गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है) → शेख निजामुद्दीन औलिया (दिल्ली, जिनके शिष्य अमीर खुसरो थे) → शेख नसीरुद्दीन चिराग-ए-देहलवी।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 76):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 76):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #37 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 77. अमीर खुसरो (1253–1325 ई.), जिन्हें 'तूती-ए-हिंद' (भारत का तोता) कहा जाता है, के सांस्कृतिक योगदान के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(क) उन्होंने दिल्ली के 7 से अधिक सुल्तानों का शासन देखा तथा उन्हें 'कव्वाली', 'सितार/तबला' के प्रारंभिक रूप और 'खड़ी बोली हिंदी' व 'सबक-ए-हिंदी' (भारतीय-फारसी काव्य शैली) का जनक माना जाता है।

(ख) वे मुगल सम्राट अकबर के नवरत्नों में शामिल थे।

(ग) उन्होंने बाबरनामा का तुर्की से फारसी में अनुवाद किया।

(घ) वे सुहरावर्दी सूफी सिलसिले के संस्थापक थे।

सही उत्तर: (क) उन्होंने दिल्ली के 7 से अधिक सुल्तानों का शासन देखा तथा उन्हें 'कव्वाली', 'सितार/तबला' के प्रारंभिक रूप और 'खड़ी बोली हिंदी' व 'सबक-ए-हिंदी' (भारतीय-फारसी काव्य शैली) का जनक माना जाता है।

विस्तृत व्याख्या:

उत्तर प्रदेश के एटा (पटियाली) में जन्मे अबुल हसन यमीनुद्दीन अमीर खुसरो सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के प्रिय शिष्य थे। उन्होंने 'खजाइन-उल-फुतूह', 'तुगलकनामा' और 'नूह सिपेहर' की रचना की तथा ईरानी व भारतीय रागों को मिलाकर यमन, सनम और घोर जैसे नए रागों एवं 'कौल' (कव्वाली गायन) का सृजन किया (NCERT इतिहास भाग 2)।

- **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 77):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।
- **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 77):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #38 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 78. दक्षिण भारत में प्रारंभिक मध्यकाल (6वीं से 9वीं शताब्दी ई.) के दौरान भक्ति आंदोलन का सूत्रपात करने वाले वैष्णव और शैव संतों को क्रमशः किस नाम से जाना जाता था?

(क) वैष्णव संत: आलवार (संख्या 12 — संकलन: 'नलइरा दिव्यप्रबंधम'); शैव संत: नयनार (संख्या 63 — संकलन: 'तेवरम' व 'तिरुमुरै')

(ख) वैष्णव संत: नयनार; शैव संत: आलवार

(ग) वैष्णव संत: वीरशैव; शैव संत: वारकरी

(घ) वैष्णव संत: सिद्धर; शैव संत: लिंगायत

सही उत्तर: (क) वैष्णव संत: आलवार (संख्या 12 — संकलन: 'नलइरा दिव्यप्रबंधम'); शैव संत: नयनार (संख्या 63 — संकलन: 'तेवरम' व 'तिरुमुरै')

विस्तृत व्याख्या:

NCERT इतिहास पाठ्यपुस्तक (भाग 2) के अनुसार, तमिल भक्ति परंपरा में विष्णु-भक्त संतों को 'आलवार' (कुल 12 संत, जिनमें एकमात्र महिला संत **आंडाल** थीं जिन्हें 'दक्षिण की मीरा' कहा जाता है; इनका काव्य संकलन 'नलइरा दिव्यप्रबंधम' तमिल वेद कहलाता है) और शिव-भक्त संतों को 'नयनार' (कुल 63 संत — अपार, संबंदर, सुंदरार व मणिक्कवाचकर प्रमुख; महिला संत: **करैक्काल अम्मैयार**) कहा जाता था।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 78):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 78):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #39 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 79. 12वीं शताब्दी ई. में कर्नाटक में जातिप्रथा और कर्मकांडों के विरुद्ध 'वीरशैव' (लिंगायत) आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था, जिनके अनुयायियों ने कन्नड़ भाषा में 'वचन' (Vachanas) रचे?

(क) बसवन्ना (बसव) — कलचुरि राजा बिज्जल के दरबारी मंत्री

(ख) शंकरदेव

(ग) तुकाराम एवं एकनाथ

(घ) नरसी मेहता

सही उत्तर: (क) बसवन्ना (बसव) — कलचुरि राजा बिज्जल के दरबारी मंत्री

विस्तृत व्याख्या:

1106–1168 ई. के मध्य बसवन्ना, अल्लम प्रभु और अक्का महादेवी ने कर्नाटक में 'वीरशैव' या 'लिंगायत' आंदोलन चलाया। इन्होंने 'अनुभव मंटप' नामक आध्यात्मिक संसद की स्थापना की, जातिगत भेदभाव का विरोध किया और विधवा पुनर्विवाह तथा वयस्क विवाह का समर्थन किया (NCERT इतिहास भाग 2)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 79):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 79):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

अभ्यास प्रश्न #40 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 80. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (Archaeological Survey of India — ASI) की स्थापना 1861 ई. में किस वायसराय के कार्यकाल में हुई थी और इसके प्रथम महानिदेशक ('भारतीय पुरातत्व के जनक') कौन नियुक्त किए गए थे?

(क) वायसराय: लॉर्ड कैनिंग; प्रथम महानिदेशक: सर अलेक्जेंडर कनिंघम

(ख) वायसराय: लॉर्ड कर्जन; प्रथम महानिदेशक: सर जॉन मार्शल

(ग) वायसराय: लॉर्ड डलहौजी; प्रथम महानिदेशक: मॉर्टिमर व्हीलर

(घ) वायसराय: वारेन हेस्टिंग्स; प्रथम महानिदेशक: सर विलियम जोन्स

सही उत्तर: (क) वायसराय: लॉर्ड कैनिंग; प्रथम महानिदेशक: सर अलेक्जेंडर कनिंघम

विस्तृत व्याख्या:

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) की स्थापना 1861 ई. में लॉर्ड कैनिंग के कार्यकाल में ब्रिटिश सैन्य अभियंता सर अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा की गई, जिन्हें 1871 ई. में इसका प्रथम महानिदेशक बनाया गया। आगे चलकर 1902 ई. में लॉर्ड कर्जन ने सर जॉन मार्शल को महानिदेशक नियुक्त कर 1904 ई. का 'प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम' पारित किया (NCERT इतिहास भाग 1)।

• **सांस्कृतिक एवं पुरातात्विक संदर्भ (प्रश्न 80):** यह तथ्य भारतीय संस्कृति पोर्टल (संस्कृति मंत्रालय) तथा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक धरोहर अभिलेखों से सत्यापित है।

• **अतिरिक्त स्मरणीय बिंदु (प्रश्न 80):** प्रतियोगी परीक्षाओं में भारतीय कला, स्थापत्य, शास्त्रीय नृत्य-संगीत एवं दर्शन की इस विशिष्ट परंपरा के संरक्षक राजवंश और क्षेत्रीय विशेषताओं का अध्ययन अत्यंत उपयोगी है (IUC Academy)।

परीक्षापयोगी त्वरित पुनरीक्षण सार-संक्षेप: आधुनिक भारत का इतिहास एवं भारतीय कला तथा संस्कृति (100+ उच्च-स्तरीय परीक्षोपयोगी बिंदु)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — परीक्षापयोगी त्वरित पुनरीक्षण सार-संक्षेप: आधुनिक भारत का इतिहास एवं भारतीय कला तथा संस्कृति (100+ उच्च-स्तरीय परीक्षोपयोगी बिंदु)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
खंड 'क': आधुनिक भारत के प्रमुख गवर्नर-जनरल एवं वायसराय तथा उनके ऐतिहासिक कार्य	खंड 'ख': स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ एवं ऐतिहासिक नारे (भारतीय संस्कृति पोर्टल)	खंड 'ग': भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रमुख संस्थान एवं स्थापना वर्ष (भारतीय संस्कृति पोर्टल)

अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं में अंतिम समय के त्वरित पुनरीक्षण हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT), भारतीय संस्कृति पोर्टल, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) तथा पत्र सूचना कार्यालय (PIB) पर आधारित प्रमुख कालक्रम एवं तथ्य नीचे क्रमबद्ध किए गए हैं:

खंड 'क': आधुनिक भारत के प्रमुख गवर्नर-जनरल एवं वायसराय तथा उनके ऐतिहासिक कार्य

1. **रॉबर्ट क्लाइव (1757–60 एवं 1765–67 ई.):** प्लासी का युद्ध (23 जून 1757); इलाहाबाद की संधि (1765); बंगाल में द्वैध शासन लागू किया; श्वेत विद्रोह।

2. **वारेन हेस्टिंग्स (1772–1785 ई.):** बंगाल का अंतिम गवर्नर व प्रथम गवर्नर-जनरल (1773 रेग्युलेटिंग एक्ट); 1772 में बंगाल से द्वैध शासन समाप्त; 1784 में सर विलियम जोन्स द्वारा कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' की स्थापना; 1781 में कलकत्ता मदरसा; पिट्स इंडिया एक्ट 1784 के विरोध में त्यागपत्र; लंदन में एडमंड बर्क द्वारा महाभियोग।

3. **लॉर्ड कॉर्नवालिस (1786–1793 ई.):** 1793 ई. में 'स्थायी बंदोबस्त' एवं 'कॉर्नवालिस कोड' (शक्ति के पृथक्करण सिद्धांत पर आधारित); भारत में **नागरिक सेवा (Civil Services) और पुलिस व्यवस्था का जनक**; एकमात्र गवर्नर-जनरल जिसकी समाधि भारत (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) में स्थित है।

4. **सर जॉन शोर (1793–1798 ई.):** अहस्तक्षेप की नीति (Policy of Non-Intervention); 1795 का खर्दा का युद्ध (मराठों और निजाम के बीच)।

5. **लॉर्ड वेलेज़ली (1798–1805 ई.):** सहायक संधि प्रणाली (हैदराबाद प्रथम राज्य); 1799 में चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध और टीपू सुल्तान की मृत्यु; 1800 ई. में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना; स्वयं को 'बंगाल का शेर' कहता था।

6. **लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813–1823 ई.):** आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814–16) और संगौली की संधि (1816); पिंडारियों का दमन; तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817–18) और पेशवा पद की समाप्ति; रैयतवाड़ी एवं महालवाड़ी व्यवस्था का कार्यान्वयन।

7. **लॉर्ड विलियम बेंटिंक (1828–1835 ई.):** 1833 के चार्टर एक्ट द्वारा **भारत का प्रथम गवर्नर-जनरल**; 1829 में सती प्रथा का अंत (नियम XVII); 1830 में कर्नल स्लीमैन की सहायता से ठगी प्रथा का दमन; 1835 में मैकाले की अनुशंसा पर अंग्रेजी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया और कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की स्थापना की।

8. **चार्ल्स मेटकॉफ (1835–1836 ई.):** 1835 के प्रेस अधिनियम द्वारा भारतीय समाचार-पत्रों से कठोर प्रतिबंध हटाने के कारण **'भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता'** कहलाया।

9. **लॉर्ड डलहौजी (1848–1856 ई.):** व्यपगत का सिद्धांत (हड़प नीति); 16 अप्रैल 1853 को बंबई से ठाणे (34 किमी) के बीच प्रथम रेल परिचालन; 1854 का 'वुड डिस्पैच' और 'पोस्ट ऑफिस एक्ट' (2 पैसे में डाक टिकट); 1854 में लोक निर्माण विभाग (PWD) की स्थापना; शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।

10. **लॉर्ड कैनिंग (1856–1862 ई.):** 1857 के संग्राम के समय गवर्नर-जनरल और 1858 के अधिनियम द्वारा **भारत का प्रथम वायसराय**; 1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम; 1857 में कलकत्ता, बंबई और मद्रास विश्वविद्यालयों की स्थापना; 1860 में जेम्स विल्सन द्वारा प्रथम बजट व आयकर प्रस्तुत; 1861 का भारतीय दंड संहिता (IPC) और उच्च न्यायालय अधिनियम।

11. **लॉर्ड मेयो (1869–1872 ई.):** 1870 में वित्तीय विकेंद्रीकरण की शुरुआत; 1872 में भारत की **प्रथम जनगणना** (अव्यवस्थित); अजमेर में मेयो कॉलेज और कृषि विभाग की स्थापना; 1872 में अंडमान (पोर्ट ब्लेयर) में शेर अली अफरीदी द्वारा हत्या।

12. **लॉर्ड लिटन (1876–1880 ई.):** 1 जनवरी 1877 को प्रथम दिल्ली दरबार (महारानी विक्टोरिया को 'कैसर-ए-हिंद' की उपाधि); 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट और इंडियन आर्म्स एक्ट; सिविल सेवा की आयु 21 से घटाकर 19 वर्ष की; साहित्य जगत में 'ओवेन मेरेडिथ' के नाम से प्रसिद्ध।

13. **लॉर्ड रिपन (1880–1884 ई.):** 1881 में भारत की **प्रथम नियमित दशकीय जनगणना** और प्रथम कारखाना अधिनियम; 1882 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट की समाप्ति, **स्थानीय स्वशासन का प्रस्ताव** (स्थानीय स्वशासन का जनक) और हंटर शिक्षा आयोग; 1883 का इल्बर्ट बिल विवाद; फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने रिपन को 'भारत के उद्धारक' की संज्ञा दी।

14. **लॉर्ड डफरिन (1884–1888 ई.):** तृतीय आंग्ल-बर्मा युद्ध (1885) और बर्मा का विलय; 28 दिसंबर 1885 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना।

15. **लॉर्ड कर्जन (1899–1905 ई.):** 1902 में सर एंड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में पुलिस आयोग और सर थॉमस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग; 1904 का भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम और प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम; 1905 में पूसा (बिहार) में कृषि अनुसंधान संस्थान और बंगाल विभाजन।

16. **लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910–1916 ई.):** दिसंबर 1911 का तृतीय दिल्ली दरबार (बंगाल विभाजन रद्द और दिल्ली राजधानी घोषित); 23 दिसंबर 1912 को दिल्ली में चाँदनी चौक पर रासबिहारी बोस द्वारा लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंका गया (दिल्ली षड्यंत्र केस); 1916 में मदन मोहन मालवीय द्वारा काशी हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की स्थापना।

17. **लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916–1921 ई.):** लखनऊ समझौता (1916); चंपारण, अहमदाबाद व खेड़ा सत्याग्रह; 1917 की मोंटेग्यू घोषणा और सैडलर आयोग; 1919 का रौलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड और खिलाफत व असहयोग आंदोलन।

18. **लॉर्ड रीडिंग (1921–1926 ई.):** एकमात्र यहूदी वायसराय; 1921 का मोपला विद्रोह (केरल); 5 फरवरी 1922 (4 फरवरी) का चौरी-चौरा कांड; 1923 में स्वराज पार्टी का गठन और सिविल सेवा परीक्षा दिल्ली व लंदन में एक साथ आयोजित होना प्रारंभ; 1925 का काकोरी ट्रेन एक्शन।

19. **लॉर्ड इरविन (1926–1931 ई.):** 1928 में साइमन कमीशन का भारत आगमन और नेहरू रिपोर्ट; 1929 का लाहौर अधिवेशन और शारदा एक्ट; 1930 का दांडी मार्च, सविनय अवज्ञा आंदोलन व प्रथम गोलमेज सम्मेलन; 5 मार्च 1931 का गांधी-इरविन समझौता।

20. **लॉर्ड वेलिंगडन (1931–1936 ई.):** द्वितीय व तृतीय गोलमेज सम्मेलन; 16 अगस्त 1932 का कम्युनल अवार्ड और 24 सितंबर 1932 का पूना समझौता; भारत शासन अधिनियम 1935 पारित; 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना।

21. **लॉर्ड लिनलिथगो (1936–1943 ई.):** सर्वाधिक लंबे कार्यकाल वाला वायसराय; 1937 के प्रांतीय चुनाव; 1939 में सुभाष चंद्र बोस द्वारा फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन; 1940 का अगस्त प्रस्ताव, मुस्लिम लीग का लाहौर (पाकिस्तान) प्रस्ताव और व्यक्तिगत सत्याग्रह; 1942 का क्रिप्स मिशन और भारत छोड़ो आंदोलन।

22. **लॉर्ड वेवेल (1943–1947 ई.):** 1944 का सी. राजगोपालाचारी फॉर्मूला; जून 1945 की वेवेल योजना और शिमला सम्मेलन; नवंबर 1945 का आजाद हिंद फौज मुकदमा; फरवरी 1946 का नौसेना विद्रोह; 1946 का कैबिनेट मिशन और अंतरिम सरकार का गठन; 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग का 'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस'।

23. **लॉर्ड माउंटबेटन (मार्च 1947 – जून 1948 ई.):** 3 जून 1947 की माउंटबेटन योजना (मनबाटन योजना); भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947; स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल।

खंड 'ख' : स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ एवं ऐतिहासिक नारे (भारतीय संस्कृति पोर्टल)

1. **महात्मा गांधी:** 'हिंद स्वराज' (1909, गुजराती में रचित), 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा' (My Experiments with Truth); पत्रिकाएँ —'इंडियन ओपिनियन' (दक्षिण अफ्रीका), 'यंग इंडिया', 'नवजीवन', 'हरिजन' (1933)।

2. **बाल गंगाधर तिलक:** 'गीता रहस्य' (मांडले जेल में रचित), 'द आर्कटिक होम इन द वेदाज'; समाचार-पत्र—'मराठा' (अंग्रेजी में) और 'केसरी' (मराठी में); नारा—"स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।"

3. **दादाभाई नौरोजी:** 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया'; पत्रिका—'रास्त गोफ्तार' (गुजराती)।

4. **जवाहरलाल नेहरू:** 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' (अहमदनगर किले की जेल में 1942–45 में रचित), 'ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री'; समाचार-पत्र—'नेशनल हेराल्ड' (1938)।

5. **सुभाष चंद्र बोस:** 'द इंडियन स्ट्रगल'; आत्मकथा—'एन इंडियन पिलग्रिम'; नारे—"जय हिंद", "दिल्ली चलो", "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

6. **मौलाना अबुल कलाम आज़ाद:** 'इंडिया विन्स फ्रीडम'; पत्रिकाएँ—'अल-हिलाल' (1912) एवं 'अल-ब'।

7. **डॉ. भीमराव अंबेडकर:** 'एनिहिलेशन ऑफ कास्ट', 'हू वर द शूद्राज?', 'द प्रॉब्लम ऑफ द रुपी', 'थॉट्स ऑन पाकिस्तान'; पत्रिकाएँ—'मूकनायक' (1920), 'बहिष्कृत भारत' (1927), 'समता', 'जनता'।

8. **लाला लाजपत राय:** 'अनहैप्पी इंडिया', 'यंग इंडिया'; पत्रिका—'वंदे मातरम्' (उर्दू), 'द पीपल' (अंग्रेजी); कथन—"मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में आखिरी कील साबित होगी।"

9. **डॉ. राजेंद्र प्रसाद:** 'इंडिया डिवाइडेड', 'चंपारण में सत्याग्रह', 'आत्मकथा'।

10. **भगत सिंह एवं क्रांतिकारी साहित्य:** भगत सिंह—'मैं नास्तिक क्यों हूँ?' (Why I am an Atheist); भगवतीचरण बोहरा—'द फिलॉसफी ऑफ द बॉम्ब'; शचींद्रनाथ सान्याल—'बंदी जीवन' (क्रांतिकारियों की बाइबिल); रामप्रसाद बिस्मिल—'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' (बिस्मिल अजीमाबादी द्वारा रचित ग़ज़ल को अमर बनाया); हसरत मोहानी ने 1921 में **'इंकलाब जिंदाबाद'** का नारा गढ़ा जिसे भगत सिंह ने लोकप्रिय बनाया।

11. **अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ:** सुरेंद्रनाथ बनर्जी—'ए नेशन इन मेकिंग'; दीनबंधु मित्र—'नील दर्पण'; भारतेंदु हरिश्चंद्र—'भारत दुर्दशा'; अरविंद घोष—'सावित्री', 'द लाइफ डिवाइन', 'भवानी मंदिर'; एनी बेसेंट—'हाउ इंडिया रॉट फॉर फ्रीडम'; रमेश चंद्र दत्त—'इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया'; वैलेंटाइन शिरोल ने बाल गंगाधर तिलक को 'भारतीय अशांति का जनक' कहा था।

खंड 'ग' : भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रमुख संस्थान एवं स्थापना वर्ष (भारतीय संस्कृति पोर्टल)

1. **एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (कोलकाता):** 1784 ई. (संस्थापक: सर विलियम जोन्स)।

2. **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI, नई दिल्ली):** 1861 ई. (संस्थापक: अलेक्जेंडर कनिंघम)।

3. **भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार (National Archives of India):** 1891 ई. (कोलकाता में 'इंपीरियल रिकॉर्ड डिपार्टमेंट' के रूप में स्थापित; 1911 के बाद नई दिल्ली स्थानांतरित)।

4. **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR, नई दिल्ली):** 1950 ई. (संस्थापक: मौलाना अबुल कलाम आज़ाद)।

5. **संगीत नाटक अकादमी (नई दिल्ली):** 31 मई 1952 ई. (उद्घाटन: 28 जनवरी 1953; प्रथम अध्यक्ष: डॉ. पी. वी. राजमन्नार) — भारत की राष्ट्रीय संगीत, नृत्य एवं नाटक अकादमी।

6. **ललित कला अकादमी (राष्ट्रीय कला अकादमी, नई दिल्ली):** 5 अगस्त 1954 ई. (प्रथम अध्यक्ष: देवी प्रसाद रायचौधरी)।

7. **साहित्य अकादमी (नई दिल्ली):** 12 मार्च 1954 ई. (प्रथम अध्यक्ष: पंडित जवाहरलाल नेहरू) — संविधान की 8वीं अनुसूची की 22 भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी और राजस्थानी सहित कुल **24 भाषाओं** में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान करती है।

8. **राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (National School of Drama — NSD, नई दिल्ली):** 1959 ई. (संगीत नाटक अकादमी की इकाई के रूप में स्थापित, 1975 में स्वायत्त संस्था बना; इब्राहिम अल्काजी इसके प्रसिद्ध निदेशक रहे)।

9. **भारतीय राष्ट्रीय कला एवं सांस्कृतिक धरोहर न्यास (INTACH, नई दिल्ली):** 1984 ई.।

10. **इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA, नई दिल्ली):** 1987 ई.।

11. **केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान:** लेह (लद्दाख); **नव नालंदा महाविहार:** नालंदा (बिहार); **केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान:** सारनाथ (वाराणसी, उत्तर प्रदेश)।

12. **भारत के 7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (Zonal Cultural Centres — ZCC):**

- उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (NZCC): **पटियाला (पंजाब)**
- उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (NCZCC): **प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)**
- पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (EZCC): **कोलकाता (पश्चिम बंगाल)**
- पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (NEZCC): **चुमौकेदिमा / दीमापुर (नागालैंड)**
- पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (WZCC): **उदयपुर (राजस्थान — बागोर की हवेली)**
- दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (SZCC): **तंजावुर (तमिलनाडु)**
- दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र (SCZCC): **नागपुर (महाराष्ट्र)**

अध्याय-वार विस्तृत पुनरीक्षण एवं कालक्रम संकलन: आधुनिक भारत का इतिहास (अतिरिक्त परीक्षापयोगी विश्लेषण)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — अध्याय-वार विस्तृत पुनरीक्षण एवं कालक्रम संकलन: आधुनिक भारत का इतिहास (अतिरिक्त परीक्षापयोगी विश्लेषण)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3	प्रमुख अध्ययन बिंदु 4
अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राज्य एवं उनके संस्थापक	तीन कर्नाटक युद्ध (आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष: 1746–1763 ई.)	भारत में श्रमिक आंदोलन एवं ट्रेड यूनियन अधिनियमों का विकास (NCERT इतिहास)	देशी रियासतों का एकीकरण एवं बटलर समिति (PIB भारत सरकार)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) तथा पत्र सूचना कार्यालय (PIB) के संदर्भों के आधार पर नीचे आधुनिक भारतीय इतिहास के उन सूक्ष्म कालक्रमों, समितियों और संधियों का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत है, जिनसे संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक और मुख्य परीक्षाओं में कूट-आधारित (कथन-कारण एवं कालानुक्रमिक मिलान) प्रश्न पूछे जाते हैं:

1. अठारहवीं शताब्दी के क्षेत्रीय राज्य एवं उनके संस्थापक

1. **हैदराबाद (आसफजाही वंश, 1724 ई.):** मुगल सम्राट मुहम्मद शाह 'रंगीला' के काल में चिनकिलिच खाँ (**निजाम-उल-मुल्क आसफजाह**) ने 1724 ई. में दक्कन के मुगल सूबेदार मुबारिज खाँ को शकरखेड़ा के युद्ध में पराजित कर स्वतंत्र हैदराबाद राज्य की नींव रखी।

2. **अवध (1722 ई.): सआदत खाँ 'बुरहान-उल-मुल्क'** ने 1722 ई. में स्वतंत्र अवध राज्य की स्थापना की और फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया। आगे चलकर नवाब आसफउद्दौला ने 1775 ई. में राजधानी फैजाबाद से लखनऊ स्थानांतरित की और 1784 ई. में अकाल राहत कार्य के रूप में लखनऊ में बिना स्तंभों के विशाल **'बड़ा इमामबाड़ा'** और रूमी दरवाजा बनवाया।

3. **बंगाल (1717 ई.): मुर्शिद कुली खाँ** ने 1717 ई. में बंगाल के स्वतंत्र सूबे की स्थापना की और अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद स्थानांतरित की। उसने बंगाल में इजारेदारी प्रथा और किसानों को 'तकावी ऋण' देने की व्यवस्था प्रारंभ की।

4. **कर्नाटक (अर्काट): सादुल्ला खाँ** ने कर्नाटक के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की और अर्काट को अपनी राजधानी बनाया।

5. **मैसूर राज्य (1761 ई.):** विजयनगर साम्राज्य के तालीकोटा युद्ध (1565 ई.) के पश्चात मैसूर में वाडियार राजवंश का शासन था, जहाँ 1761 ई. में **हैदर अली** ने वास्तविक सत्ता संभाली और 1755 ई. में डिंडीगुल (तमिलनाडु) में फ्रांसीसी विशेषज्ञों की सहायता से एक आधुनिक शस्त्रागार स्थापित किया।

6. **जाट राज्य (भरतपुर):** चुड़ामन और बदन सिंह ने भरतपुर के जाट राज्य की नींव रखी, जिसे **महाराजा सूरजमल** (1756–1763 ई.) ने सर्वोच्च उत्कर्ष पर पहुँचाया; महाराजा सूरजमल को **'जाटों का अफलातून' (प्लेटो)** कहा जाता है।

7. **सिख साम्राज्य (मिसल एवं रणजीत सिंह):** पंजाब की 12 सिख मिसलों में से **'सुकरचकिया मिसल'** के प्रमुख **महाराजा रणजीत सिंह** (1780–1839 ई.) ने 1799 ई. में लाहौर को अपनी राजनीतिक राजधानी और 1802 ई. में अमृतसर को धार्मिक राजधानी बनाया। 25 अप्रैल 1809 ई. को लॉर्ड मिंटो प्रथम के दूत चार्ल्स मेटकॉफ और रणजीत सिंह के बीच **'अमृतसर की संधि'** हुई जिससे सतलज नदी को दोनों के राज्यों की सीमा माना गया।

8. **त्रावणकोर राज्य (केरल):** राजा **मार्तंड वर्मा** (1729–1758 ई.) ने 1741 ई. के **'कोलाचेल के युद्ध'** में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की नौसेना को निर्णायक रूप से पराजित किया और अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति पर प्रशिक्षित किया।

9. **जयपुर (आमेर) का कछवाहा राजवंश:** मिर्जा राजा सवाई **जयसिंह द्वितीय** (1699–1743 ई.) ने 1727 ई. में जयपुर नगर की स्थापना की, यूक्लिड के रेखागणित का संस्कृत में अनुवाद कराया, 'जीज-ए-मुहम्मदशाही' नामक खगोलीय सारणी तैयार की और **दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, वाराणसी तथा मथुरा** में 5 खगोलीय वेधशालाएँ (**जंतर-मंतर**) बनवाईं।

2. तीन कर्नाटक युद्ध (आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष: 1746–1763 ई.)

1. **प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746–1748 ई.):**

• **कारण:** यूरोप में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध (1740–48) और अंग्रेज कैप्टन बर्ने द्वारा फ्रांसीसी जहाजों का अधिग्रहण।

• **प्रमुख घटना:** 1746 ई. का **सेंट थोमे (अड्यार) का युद्ध**, जिसमें फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले की छोटी किन्तु अनुशासित सेना ने कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन की विशाल सेना को पराजित किया।

• **संधि:** 1748 ई. की **'एक्स-ला-शापेल की संधि'** (Treaty of Aix-la-Chapelle) से युद्ध समाप्त हुआ और मद्रास पुनः अंग्रेजों को मिल गया।

2. **द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749–1754 ई.):**

• **कारण:** हैदराबाद (नासिर जंग बनाम मुजफ्फर जंग) और कर्नाटक (अनवरुद्दीन बनाम चंदा साहब) के आंतरिक उत्तराधिकार संघर्ष में डूप्ले और रॉबर्ट क्लाइव का हस्तक्षेप।

• **प्रमुख घटना:** 1749 ई. में अंबूर के युद्ध में अनवरुद्दीन मारा गया; 1751 ई. में रॉबर्ट क्लाइव ने मात्र 500 सैनिकों के साथ अर्काट का ऐतिहासिक घेरा डालकर फ्रांसीसी पक्ष की योजना विफल कर दी।

• **संधि:** डूप्ले को वापस फ्रांस बुलाकर गोडेहू को गवर्नर बनाया गया और 1754–55 ई. में **'पांडिचेरी की संधि'** हुई।

3. **तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756–1763 ई.):**

• **कारण:** यूरोप में प्रारंभ हुआ **'सप्तवर्षीय युद्ध'** (Seven Years' War, 1756–63 ई.)।

• **प्रमुख घटना:** 22 जनवरी 1760 ई. को लड़े गए **'वांडीवाश के युद्ध'** में ब्रिटिश सेनापति सर आयर कूट ने फ्रांसीसी सेनापति काउंट डी लाली को निर्णायक रूप से पराजित किया और बुस्सी को बंदी बना लिया।

• **संधि:** 1763 ई. की **'पेरिस की संधि'** द्वारा पांडिचेरी और चंद्रनगर फ्रांसीसियों को केवल व्यापार करने की शर्त पर लौटाए गए (किलेबंदी और सेना रखने पर रोक लगा दी गई)।

3. भारत में श्रमिक आंदोलन एवं ट्रेड यूनियन अधिनियमों का विकास (NCERT इतिहास)

1. **नारायण मेघाजी लोखंडे:** भारत में संगठित मजदूर आंदोलन के अग्रदूत माने जाते हैं; इन्होंने 1880 ई. में 'दीनबंधु' पत्र का प्रकाशन किया और 1890 ई. में भारत के प्रथम मजदूर संगठन **'बॉम्बे मिल हैंड्स एसोसिएशन'** की स्थापना की।

2. **प्रथम कारखाना अधिनियम (1881 ई., लॉर्ड रिपन):** 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों के कारखाने में काम करने पर रोक और 7 से 12 वर्ष के बच्चों के कार्य के घंटे 9 घंटे तय किए गए।

3. **द्वितीय कारखाना अधिनियम (1891 ई., लॉर्ड लैंसडाउन):** महिलाओं के कार्य के घंटे अधिकतम 11 घंटे निर्धारित किए गए और सप्ताह में 1 दिन के अवकाश का प्रावधान किया गया।

4. **मद्रास लेबर यूनियन (1918 ई.):** बी. पी. वाडिया द्वारा स्थापित यह आधुनिक अर्थों में भारत की पहली पंजीकृत ट्रेड यूनियन मानी जाती है।

5. **अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (मजूर महाजन संघ, 1920 ई.):** महात्मा गांधी और अनसूया साराभाई द्वारा 'ट्रस्टीशिप सिद्धांत' के आधार पर गठित।

6. **अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC, 31 अक्टूबर 1920 ई.):** बंबई में एन. एम. जोशी, जोसेफ बैप्टिस्टा और लाला लाजपत राय के प्रयासों से स्थापित; इसके **प्रथम अध्यक्ष लाला लाजपत राय** और प्रथम महासचिव दीवान चमनलाल थे।

7. **भारतीय ट्रेड यूनियन अधिनियम (1926 ई.):** ट्रेड यूनियनों को वैधानिक मान्यता और पंजीकरण का अधिकार प्रदान किया गया।

8. **मेरठ षड्यंत्र केस (1929–1933 ई.):** मार्च 1929 में ब्रिटिश सरकार ने मुजफ्फर अहमद, एस. ए. डांगे, शौकत उस्मानी और 3 अंग्रेज श्रमिक नेताओं (फिलिप स्प्रेट, बेन ब्रेडले व लेस्टर हचिंसन) सहित 31 वामपंथी श्रमिक नेताओं को गिरफ्तार कर मेरठ में मुकदमा चलाया।

4. देशी रियासतों का एकीकरण एवं बटलर समिति (PIB भारत सरकार)

1. **नरेंद्र मंडल (Chamber of Princes, 1921 ई.):** मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार (1919) की सिफारिश पर 8 फरवरी 1921 को गठित हुआ।

2. **हार्कोर्ट बटलर समिति (1927 ई.):** ब्रिटिश संप्रभु सत्ता (पैरामाउंटसी) और देशी रियासतों के संबंधों की जाँच हेतु गठित हुई, जिसने कहा कि 'सर्वोच्च सत्ता को सर्वोच्च ही रहना चाहिए।'

3. **अखिल भारतीय राज्य जन कॉन्फ्रेंस (All India States Peoples' Conference, दिसंबर 1927 ई.):** बलवंतराय मेहता, मणिलाल कोठारी और जी. आर. अभ्यंकर के प्रयासों से देशी रियासतों में उत्तरदायी शासन के लिए गठित; 1939 के लुधियाना अधिवेशन में **जवाहरलाल नेहरू** इसके अध्यक्ष चुने गए।

4. **रियासती मंत्रालय (States Department, जुलाई 1947 ई.):** भारत के उप-प्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री **सरदार वल्लभभाई पटेल** और सचिव **वी. पी. मेनन** के नेतृत्व में 15 अगस्त 1947 तक 560 से अधिक रियासतों का 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन' (विलय पत्र) पर हस्ताक्षर कराया गया।

5. **जूनागढ़, हैदराबाद और जम्मू-कश्मीर का विलय:**

• **जूनागढ़ (फरवरी 1948 ई.):** नवाब महाबत खान के पाकिस्तान पलायन के बाद **'जनमत संग्रह' (Plebiscite)** के आधार पर भारत में विलय हुआ।

• **हैदराबाद (13–17 सितंबर 1948 ई.):** निजाम उस्मान अली खाँ और रजाकारों के विरुद्ध भारतीय सेना के **'ऑपरेशन पोलो'** (पुलिस कार्यवाही) द्वारा भारत में विलय किया गया।

• **जम्मू-कश्मीर (26 अक्टूबर 1947 ई.):** महाराजा हरि सिंह द्वारा विलय-पत्र (Instrument of Accession) पर हस्ताक्षर किए जाने के साथ भारत का अभिन्न अंग बना।

5. भारतीय कला, वास्तुकला एवं संस्कृति के विशेष परीक्षापयोगी बिंदु (भारतीय संस्कृति पोर्टल)

1. **हड़प्पाकालीन प्रमुख स्थल एवं विशिष्ट कलाकृतियाँ:**

• **हड़प्पा (रावी नदी, दयाराम साहनी 1921):** लाल बलुआ पत्थर का पुरुष धड़ (Male Torso), अन्नागार की दो कतारें, मातृदेवी की मृण्मूर्तियाँ और 'R-37' कब्रिस्तान।

• **मोहनजोदड़ो (सिंधु नदी, राखालदास बनर्जी 1922):** विशाल स्नानागार (Great Bath), कांस्य नर्तकी, सेलखड़ी (Steatite) से बनी 'पुरोहित राजा' (तिपतिया अलंकरण वाली शॉल ओढ़े दाढ़ी वाले योगी) की मूर्ति और पशुपति महादेव की मुहर (जिसके चारों ओर हाथी, बाघ, गैंडा और भैंसा तथा नीचे दो हिरण अंकित हैं)।

• **लोथल (भोगवा नदी, गुजरात, एस. आर. राव):** विश्व का प्राचीनतम कृत्रिम गोदीबाड़ा (Dockyard), युगल समाधान, मनके बनाने का कारखाना और पंचतंत्र की 'चालाक लोमड़ी' की कथा वाले मृद्भांड।

• **कालीबंगा (घग्गर नदी, राजस्थान, अमलानंद घोष एवं बी. बी. लाल):** जूते हुए खेत के साक्ष्य, काले रंग की चूड़ियाँ, 7 अग्निवेदिकाएँ और अलंकृत ईंटों का प्रयोग।

• **बनावली (हरियाणा, आर. एस. बिष्ट):** पक्की मिट्टी से बना हल का प्रतिरूप (Terracotta Plough) और उत्तम किस्म का जौ।

• **चन्हूदड़ो (सिंध, एन. जी. मजूमदार व मैके):** बिना दुर्ग (Citadel) वाला औद्योगिक नगर, मनके व लिपस्टिक के साक्ष्य, और वक्राकार ईंटें।

2. **मौर्यकालीन स्तंभ एवं गुहा शिल्प:**

• **रामपुरवा का वृषभ (बैल) स्तंभ शीर्ष:** वर्तमान में नई दिल्ली में **राष्ट्रपति भवन** के प्रवेश द्वार पर सुशोभित है।

• **धौली (ओडिशा) का शैलकृत हाथी:** चट्टान को काटकर बनाए गए हाथी के अग्रभाग को मौर्यकालीन मूर्तिकला का सजीव उदाहरण माना जाता है।

• **दीदारगंज (पटना) की चामरधारिणी यक्षिणी:** चुनार के बलुआ पत्थर पर मौर्यकालीन दर्पण जैसी चमकदार पॉलिश की सर्वोच्च कृति है।

3. **स्तूप स्थापत्य के प्रमुख अंग:**

• **अंड:** अर्द्ध-गोलाकार उल्टे कटोरे जैसी संरचना जो शांति और ब्रह्मांड का प्रतीक है।

• **हर्मिका:** अंड के शीर्ष पर स्थित चौकोर रेलिंग जो देवताओं के निवास और पवित्रता का प्रतीक है (इसी में बुद्ध या अर्हतों के धातु अवशेष रखे जाते थे)।

• **यष्टि एवं छत्र:** हर्मिका के मध्य से निकलने वाली दंडिका (यष्टि) और उसके ऊपर लगे तीन छत्र (जो बौद्ध त्रिरत्न—बुद्ध, धम्म और संघ के प्रतीक हैं)।

• **प्रदक्षिणा पथ एवं वेदिका:** स्तूप के चारों ओर दक्षिणावर्त (Clockwise) परिक्रमा करने का मार्ग और उसे घेरने वाली पत्थर की रेलिंग।

• **तोरण द्वार:** चारों दिशाओं में बने प्रवेश द्वार जिन पर जातक कथाओं और शालभंजिका (वृक्ष की डाल पकड़े शुभ नारी आकृति) का उत्कीर्णन होता था।

4. **भारत की प्रमुख कढ़ाई एवं हथकरघा शिल्प परंपराएँ (GI टैग संकलन):**

• **कसूती:** कर्नाटक | **फुलकारी:** पंजाब | **चिकनकारी एवं जरदोजी:** लखनऊ (उत्तर प्रदेश) | **कांथा:** पश्चिम बंगाल एवं ओडिशा | **चंबा रुमाल:** हिमाचल प्रदेश | **कशीदा एवं सोजनी:** जम्मू-कश्मीर | **पिपली एप्लिक वर्क:** ओडिशा | **टोडा कढ़ाई:** तमिलनाडु (नीलगिरि की टोडा जनजाति) | **सुजनी एवं खतवा:** बिहार | **मूगा एवं एरी रेशम:** असम | **चंदेरी एवं माहेश्वरी साड़ी:** मध्य प्रदेश | **बनारसी ब्रोकेड:** वाराणसी (उत्तर प्रदेश) | **पोचमपल्ली इकत एवं गदवाल साड़ी:** तेलंगाना | **बोमकाई एवं संबलपुरी साड़ी:** ओडिशा।

संकलन एवं सत्यापन: समावेशी सार्वभौमिक करियर अकादमी (**IUC Academy**) | *100% कॉपीराइट-मुक्त शैक्षिक अध्ययन कोष।*

खंड 'घ' : आधुनिक भारत के प्रमुख ऐतिहासिक युद्ध, संधियाँ एवं कालानुक्रमिक संदर्भ (NCERT पाठ्यपुस्तक)

1. **1498 ई. (20 मई):** पुर्तगाली यात्री वास्को डी गामा का कालीकट (केरल) के कप्पड़ तट पर आगमन; हिन्दू शासक जमोरिन द्वारा स्वागत।

2. **1503 ई.:** पुर्तगालियों द्वारा कोचीन (केरल) में भारत के प्रथम यूरोपीय दुर्ग एवं व्यापारिक कोठी की स्थापना।

3. **1505 ई.:** फ्रांसिस्को डी अल्मेडा भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर नियुक्त; 'नीले शांत जल की नीति' का सूत्रपात।

4. **1509 ई.:** दीव के सामुद्रिक युद्ध में अल्मेडा द्वारा मिस्र, तुर्की और गुजरात की संयुक्त नौसेना की पराजय।

5. **1510 ई.:** अल्फांसो डी अल्बुकर्क द्वारा बीजापुर के सुल्तान यूसुफ आदिलशाह से गोवा का अधिग्रहण।

6. **1530 ई.:** पुर्तगाली गवर्नर नीनो डी कुन्हा द्वारा पुर्तगाली प्रशासनिक मुख्यालय कोचीन से गोवा स्थानांतरित किया गया।

7. **1556 ई.:** पुर्तगालियों द्वारा गोवा में भारत के प्रथम मुद्रणालय की स्थापना।

8. **1600 ई. (31 दिसंबर):** इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को पूर्वी देशों के साथ 15 वर्षों के व्यापार का अधिकार-पत्र प्रदान किया गया।

9. **1602 ई.:** डच संसद द्वारा 'वेरिंगदे ओस्ट इंडिशे कंपनी' (संयुक्त डच ईस्ट इंडिया कंपनी) की स्थापना।

10. **1605 ई.:** डचों द्वारा आंध्र प्रदेश के मसूलीपट्टनम में अपनी प्रथम भारतीय व्यापारिक कोठी स्थापित की गई।

11. **1608 ई.:** कैप्टन विलियम हॉकिन्स का 'हेक्टर' नामक जहाज से सूरत आगमन और मुगल सम्राट जहाँगीर के आगरा दरबार में उपस्थिति।

12. **1611 ई.:** अंग्रेजों द्वारा दक्षिण भारत के मसूलीपट्टनम में प्रथम व्यापारिक कारखाना खोला गया।

13. **1612 ई.:** सूरत के निकट 'स्वाली के युद्ध' में अंग्रेज कैप्टन थॉमस बेस्ट द्वारा पुर्तगाली नौसैनिक बेड़े की पराजय।

14. **1613 ई.:** जहाँगीर के शाही फरमान द्वारा अंग्रेजों को सूरत में स्थायी कारखाना स्थापित करने की अनुमति प्राप्त हुई।

15. **1615–1619 ई.:** ब्रिटेन के सम्राट जेम्स प्रथम के राजदूत सर थॉमस रो का मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में प्रवास।

16. **1632 ई.:** गोलकुंडा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह द्वारा अंग्रेजों को 500 पैगोडा वार्षिक कर के बदले 'सुनहरा फरमान' जारी किया गया।

17. **1639 ई.:** फ्रांसिस डे द्वारा चंद्रगिरि के राजा से मद्रास पट्टे पर लेकर 'फोर्ट सेंट जॉर्ज' दुर्ग का निर्माण किया गया।

18. **1661 ई.:** पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन और ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स द्वितीय के विवाह में बंबई द्वीप दहेज के रूप में ब्रिटेन को मिला।

19. **1664 ई.:** फ्रांस के सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कोल्बर्ट द्वारा फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।

20. **1668 ई.:** चार्ल्स द्वितीय द्वारा 10 पौंड वार्षिक किराए पर बंबई द्वीप ईस्ट इंडिया कंपनी को हस्तांतरित किया गया; गेराल्ड आंगियर बंबई का वास्तविक संस्थापक बना।

21. **1674 ई.:** फ्रैंकोइस मार्टिन द्वारा वलिकोंडपुरम के सूबेदार शेर खाँ लोदी से भूमि प्राप्त कर पांडिचेरी (पुदुचेरी) और 'फोर्ट लुई' की स्थापना।

22. **1690 ई.:** जॉब चार्नोक द्वारा सूतानती में अंग्रेजी कोठी की स्थापना; 1698 ई. में सूतानती, कालिकाता और गोविंदपुर की जमींदारी मिलाकर कलकत्ता एवं 'फोर्ट विलियम' की नींव रखी गई।

23. **1717 ई.:** मुगल सम्राट फरुखसियर द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापारिक विशेषाधिकारों वाला शाही फरमान (कंपनी का महाधिकार पत्र) प्रदान किया गया।

24. **1739 ई.:** करनाल के युद्ध में ईरान के शासक नादिरशाह द्वारा मुगल सम्राट मुहम्मद शाह की पराजय।

25. **1757 ई. (23 जून):** भागीरथी नदी के तट पर प्लासी के युद्ध में रॉबर्ट क्लाइव द्वारा बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की पराजय और मीर जाफर का नवाब बनना।

26. **1759 ई. (नवंबर):** बंगाल के बेदरा (बांसुरा) के युद्ध में अंग्रेजों द्वारा डचों की निर्णायक पराजय।

27. **1760 ई. (22 जनवरी):** वांडीवाश के युद्ध में ब्रिटिश सेनापति सर आयर कूट द्वारा फ्रांसीसी सेनापति लाली की पराजय।

28. **1761 ई. (14 जनवरी):** पानीपत के तृतीय युद्ध में अहमद शाह अब्दाली द्वारा मराठा सेना (सदाशिवराव भाऊ एवं विश्वासराव) की पराजय।

29. **1764 ई. (22 अक्टूबर):** बक्सर के युद्ध में हेक्टर मुनरो द्वारा मीर कासिम, शुजाउद्दौला और शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना की पराजय।

30. **1765 ई. (12 एवं 16 अगस्त):** रॉबर्ट क्लाइव द्वारा मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय और अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ इलाहाबाद की दो ऐतिहासिक संधियाँ।

31. **1767–1769 ई.:** प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध और हैदर अली द्वारा मद्रास की संधि (1769) के लिए अंग्रेजों को विवश करना।

32. **1770 ई.:** बंगाल का भीषण अकाल जिसमें बंगाल की एक-तिहाई जनसंख्या काल-कवलित हो गई।

33. **1772 ई.:** वारेन हेस्टिंग्स द्वारा बंगाल में द्वैध शासन की समाप्ति और भू-राजस्व की पंचवर्षीय ठेकेदारी (इजारेदारी) प्रथा की शुरुआत।

34. **1775–1782 ई.:** प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध; पुरंदर की संधि (1776), वड़गाँव की संधि (1779) और महादजी सिंधिया की मध्यस्थता से सालबाई की संधि (1782)।

35. **1780–1784 ई.:** द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध; 1782 में पोर्टो नोवो के युद्ध के बाद हैदर अली का निधन और टीपू सुल्तान द्वारा 1784 में मंगलौर की संधि।

36. **1790–1792 ई.:** तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध और लॉर्ड कॉर्नवालिस के साथ टीपू सुल्तान की श्रीरंगपट्टनम की संधि।

37. **1799 ई. (4 मई):** चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध में श्रीरंगपट्टनम के दुर्ग की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान की वीरगति।

38. **1802 ई. (31 दिसंबर):** पेशवा बाजीराव द्वितीय और लॉर्ड वेलेज़ली के मध्य बसीन (वसई) की सहायक संधि।

39. **1803–1805 ई.:** द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध; देवगाँव की संधि (भोंसले), सुरजी-अर्जुनगाँव की संधि (सिंधिया) और राजपुरघाट की संधि (होल्कर)।

40. **1806 ई. (10 जुलाई):** मद्रास के वेल्लोर किले में भारतीय सिपाहियों द्वारा सामाजिक-धार्मिक प्रतीकों पर प्रतिबंध के विरुद्ध प्रथम बड़ा सैनिक विद्रोह।

41. **1809 ई. (25 अप्रैल):** महाराजा रणजीत सिंह और लॉर्ड मिंटो प्रथम के मध्य अमृतसर की संधि।

42. **1814–1816 ई.:** आंग्ल-नेपाल (गोरखा) युद्ध और मार्च 1816 में संगौली की संधि (जिससे कुमाऊँ, गढ़वाल और शिमला क्षेत्र ब्रिटिश भारत में मिले)।

43. **1817–1818 ई.:** तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध; पूना की संधि, ग्वालियर की संधि और मंदसौर की संधि के साथ पेशवा पद की समाप्ति।

44. **1824–1826 ई.:** प्रथम आंग्ल-बर्मा युद्ध (लॉर्ड एमहर्स्ट) और 1826 ई. की यांडबू की संधि।

45. **1828 ई. (20 अगस्त):** राजा राममोहन राय द्वारा कलकत्ता में ब्रह्म समाज की स्थापना।

46. **1829 ई. (4 दिसंबर):** लॉर्ड विलियम बेंटिंक द्वारा नियम 17 के अंतर्गत बंगाल प्रेसीडेंसी में सती प्रथा को अवैध और दंडनीय घोषित किया गया।

47. **1835 ई. (2 फरवरी):** थॉमस बैबिंगटन मैकाले का शिक्षा संबंधी स्मरण-पत्र और 'अधोमुखी निस्यंदन सिद्धांत'।

48. **1839–1842 ई.:** प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध (लॉर्ड ऑकलैंड एवं लॉर्ड एलनबरो)।

49. **1843 ई.:** चार्ल्स नेपियर के नेतृत्व में सिंध का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय और नियम 5 द्वारा दास प्रथा का उन्मूलन।

50. **1845–1846 ई.:** प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (मुदकी, फिरोजशाह, अलीवाल और सबराओं के युद्ध) तथा लाहौर और भैरोवाल की संधि।

51. **1848–1849 ई.:** द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (रामनगर, चिलियाँवाला और गुजरात का तोपों का युद्ध) तथा 29 मार्च 1849 को पंजाब का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय।

52. **1853 ई. (16 अप्रैल):** भारत में प्रथम यात्री रेलगाड़ी का बंबई (बोरीबंदर) से ठाणे के मध्य 34 किलोमीटर के मार्ग पर परिचालन।

53. **1854 ई.:** सर चार्ल्स वुड का शिक्षा घोषणापत्र (भारतीय शिक्षा का महाधिकार पत्र) और डलहौजी द्वारा लोक निर्माण विभाग का गठन।

54. **1856 ई. (फरवरी एवं जुलाई):** कुशासन के आरोप में अवध का विलय (फरवरी 1856) और ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम (जुलाई 1856) पारित।

55. **1857 ई. (29 मार्च एवं 10 मई):** 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी में 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सिपाही **मंगल पांडेय** का विद्रोह (8 अप्रैल को शहादत); 10 मई 1857 को मेरठ से प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ।

56. **1858 ई. (1 नवंबर):** इलाहाबाद के मिंटो पार्क में लॉर्ड कैनिंग द्वारा महारानी विक्टोरिया के घोषणापत्र का पाठ और कंपनी शासन की समाप्ति।

57. **1859–1860 ई.:** बंगाल के नदिया जिले के गोविंदपुर गाँव में दिगंबर विश्वास और विष्णु विश्वास के नेतृत्व में ऐतिहासिक नील किसान विद्रोह।

58. **1861 ई.:** भारतीय परिषद अधिनियम 1861 द्वारा वायसराय को अध्यादेश जारी करने की शक्ति और विभागीय प्रणाली को मान्यता; कलकत्ता, बंबई और मद्रास में उच्च न्यायालयों की स्थापना का अधिनियम।

59. **1866 ई.:** दादाभाई नौरोजी द्वारा लंदन में 'ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' की स्थापना; सहारनपुर के देवबंद में मुहम्मद कासिम नानौतवी और रशीद अहमद गंगोही द्वारा 'दारुल उलूम देवबंद' आंदोलन की शुरुआत।

60. **1875 ई.:** स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा बंबई में आर्य समाज की स्थापना; सर सैयद अहमद खान द्वारा अलीगढ़ में मोहम्मडन एंग्लो-ओरिएंटल स्कूल की स्थापना; पुणे और अहमदनगर में किसानों का 'दक्कन दंगा'।

61. **1876 ई.:** सुरेंद्रनाथ बनर्जी और आनंदमोहन बोस द्वारा कलकत्ता में 'इंडियन एसोसिएशन' की स्थापना।

62. **1878 ई.:** लॉर्ड लिटन द्वारा भारतीय भाषाओं के समाचार-पत्रों पर नियंत्रण हेतु 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' और 'भारतीय शस्त्र अधिनियम' लागू किया गया।

63. **1881–1882 ई.:** लॉर्ड रिपन द्वारा प्रथम नियमित जनगणना (1881), प्रथम कारखाना अधिनियम (1881), स्थानीय स्वशासन प्रस्ताव (1882) और हंटर शिक्षा आयोग (1882) का गठन।

64. **1883 ई.:** वायसराय की परिषद के विधि सदस्य सर सी. पी. इल्बर्ट द्वारा प्रस्तुत 'इल्बर्ट बिल' (भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अभियुक्तों के मुकदमे सुनने का अधिकार देने वाला विधेयक) पर श्वेत विद्रोह।

65. **1885 ई. (28 दिसंबर):** बंबई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में व्योमेश चंद्र बनर्जी की अध्यक्षता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना।

66. **1892 ई.:** भारतीय परिषद अधिनियम 1892 द्वारा केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में बजट पर बहस करने और प्रश्न पूछने का सीमित अधिकार दिया गया।

67. **1893 ई.:** स्वामी विवेकानंद का अमेरिका के शिकागो में आयोजित प्रथम विश्व धर्म संसद में ऐतिहासिक संबोधन; बाल गंगाधर तिलक द्वारा महाराष्ट्र में सार्वजनिक गणेशोत्सव (1893) और शिवाजी महोत्सव (1895) का प्रारंभ।

68. **1897 ई. (22 जून):** पुणे में प्लेग कमिश्नर रैंड और लेफ्टिनेंट आयर्स्ट की **चापेकर बंधुओं** (दामोदर हरि चापेकर और बालकृष्ण हरि चापेकर) द्वारा हत्या।

69. **1899–1900 ई.:** छोटानागपुर (झारखंड) क्षेत्र में भगवान बिरसा मुंडा के नेतृत्व में महान 'उलगुलान' (मुंडा विद्रोह)।

70. **1904 ई.:** विनायक दामोदर सावरकर द्वारा नासिक में क्रांतिकारी संगठन 'अभिनव भारत' की स्थापना; लॉर्ड कर्जन द्वारा भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम एवं प्राचीन स्मारक परिरक्षण अधिनियम पारित।

71. **1905 ई. (16 अक्टूबर):** बंगाल विभाजन लागू; रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा 'आमार सोनार बांग्ला' गीत की रचना और स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन का राष्ट्रव्यापी विस्तार; गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा पुणे में **'भारत सेवक समाज'** की स्थापना।

72. **1906 ई. (30 दिसंबर):** ढाका के नवाब सलीमुल्लाह खाँ, आगा खाँ और वकार-उल-मुल्क द्वारा ढाका में 'अखिल भारतीय मुस्लिम लीग' की स्थापना।

73. **1908 ई. (30 अप्रैल):** मुजफ्फरपुर के न्यायाधीश किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर **खुदीराम बोस** और **प्रफुल्ल चाकी** द्वारा बम फेंका गया; 11 अगस्त 1908 को 18 वर्षीय खुदीराम बोस को सबसे कम आयु में फाँसी दी गई; इसी वर्ष तिलक को 'केसरी' में लेख लिखने पर 6 वर्ष के कारावास की सजा देकर बर्मा की मांडले जेल भेजा गया।

74. **1909 ई. (1 जुलाई):** लंदन में मदनलाल ढींगरा द्वारा भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार कर्जन वायली की गोली मारकर हत्या; मार्ले-मिंटो सुधार अधिनियम पारित।

75. **1911 ई. (दिसंबर):** दिल्ली दरबार में बंगाल विभाजन रद्द तथा बिहार और ओडिशा को बंगाल से अलग कर नया प्रांत बनाने और राजधानी कलकत्ता से दिल्ली लाने की घोषणा।

76. **1913 ई.:** रवींद्रनाथ टैगोर को उनकी काव्य-कृति **'गीतांजलि'** के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ (नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम एशियाई); सैन फ्रांसिस्को में लाला हरदयाल व सोहन सिंह भकना द्वारा 'गदर पार्टी' की स्थापना।

77. **1915 ई. (9 जनवरी):** महात्मा गांधी का 21 वर्षों के दक्षिण अफ्रीका प्रवास के पश्चात मुंबई के अपोलो बंदरगाह पर स्वदेश आगमन (इसी स्मृति में 9 जनवरी को **'प्रवासी भारतीय दिवस'** मनाया जाता है); राजा महेंद्र प्रताप और बरकतुल्लाह द्वारा काबुल (अफगानिस्तान) में भारत की प्रथम अस्थायी सरकार का गठन।

78. **1916 ई.:** तिलक और एनी बेसेंट द्वारा होमरूल लीग की स्थापना; लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन में नरम दल व गरम दल का मिलन तथा कांग्रेस-मुस्लिम लीग समझौता; साबरमती आश्रम की स्थापना।

79. **1917–1918 ई.:** चंपारण सत्याग्रह (1917), अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन (1918) और खेड़ा किसान सत्याग्रह (1918)।

80. **1919 ई. (13 अप्रैल):** अमृतसर के जलियाँवाला बाग में बैसाखी के दिन शांतिपूर्ण सभा पर जनरल डायर द्वारा अंधाधुंध गोलीबारी; रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा 'नाइटहुड' की उपाधि का परित्याग।

81. **1920–1922 ई.:** 1 अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन प्रारंभ; जामिया मिलिया इस्लामिया, काशी विद्यापीठ और गुजरात विद्यापीठ जैसे राष्ट्रीय शिक्षण संस्थानों की स्थापना; 4 फरवरी 1922 के चौरी-चौरा कांड के बाद 12 फरवरी 1922 को आंदोलन स्थगित।

82. **1923 ई. (1 जनवरी):** इलाहाबाद में चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू द्वारा 'कांग्रेस-खिलाफत स्वराज पार्टी' का गठन।

83. **1924 ई.:** कानपुर में शचींद्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद बिस्मिल और योगेश चंद्र चटर्जी द्वारा 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' का गठन; बेलगाँव में महात्मा गांधी की अध्यक्षता में कांग्रेस अधिवेशन।

84. **1925 ई.:** 9 अगस्त 1925 को काकोरी ट्रेन एक्शन; दिसंबर 1925 में कानपुर में सत्यभक्त और एम. एन. रॉय के विचारों से प्रेरित होकर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का सम्मेलन और कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता।

85. **1927–1928 ई.:** नवंबर 1927 में साइमन कमीशन की नियुक्ति; 3 फरवरी 1928 को बंबई आगमन पर काले झंडों से विरोध; 17 नवंबर 1928 को लाला लाजपत राय की शहादत; 17 दिसंबर 1928 को भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और राजगुरु द्वारा लाहौर में पुलिस अधिकारी सांडर्स का वध; अगस्त 1928 में मोतीलाल नेहरू द्वारा 'नेहरू रिपोर्ट' प्रस्तुत।

86. **1929 ई.:** 8 अप्रैल 1929 को भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त द्वारा केंद्रीय असेंबली में बम फेंका गया; लाहौर जेल में 63 दिनों की भूख हड़ताल के बाद 13 सितंबर 1929 को क्रांतिकारी **जतिन दास** की शहादत; दिसंबर 1929 में लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव।

87. **1930 ई.:** 12 मार्च से 6 अप्रैल 1930 तक महात्मा गांधी का ऐतिहासिक दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन; 18 अप्रैल 1930 को सूर्य सेन के नेतृत्व में चटगाँव शस्त्रागार धावा; नवंबर 1930 में लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन।

88. **1931 ई.:** 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क (वर्तमान चंद्रशेखर आजाद पार्क) में **चंद्रशेखर आजाद** की शहादत; 5 मार्च 1931 को गांधी-इरविन समझौता; **23 मार्च 1931** को लाहौर सेंट्रल जेल में **भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु** को फाँसी (शहीद दिवस); मार्च 1931 में कराची कांग्रेस अधिवेशन; सितंबर-दिसंबर 1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन।

89. **1932 ई.:** 16 अगस्त 1932 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड द्वारा 'सांप्रदायिक पंचाट' (कम्युनल अवार्ड) की घोषणा; 24 सितंबर 1932 को यरवदा जेल (पुणे) में गांधीजी और डॉ. भीमराव अंबेडकर के मध्य ऐतिहासिक 'पूना समझौता'; गांधीजी द्वारा 'अखिल भारतीय अस्पृश्यता निवारण संघ' (हरिजन सेवक संघ) की स्थापना।

90. **1935–1937 ई.:** अगस्त 1935 में भारत शासन अधिनियम 1935 पारित; 1937 के प्रांतीय विधानसभा चुनावों में 11 में से 8 प्रांतों में कांग्रेस की सरकारों का गठन।

91. **1938–1939 ई.:** 1938 के हरिपुरा और 1939 के त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में सुभाष चंद्र बोस अध्यक्ष निर्वाचित; मई 1939 में सुभाष चंद्र बोस द्वारा 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना।

92. **1940 ई.:** 13 मार्च 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में महान क्रांतिकारी **सरदार उधम सिंह** द्वारा जलियाँवाला बाग नरसंहार के दोषी पंजाब के पूर्व लेफ्टिनेंट गवर्नर माइकल ओ'डायर को गोली मारकर न्याय किया गया; 8 अगस्त 1940 को अगस्त प्रस्ताव और 17 अक्टूबर 1940 को पवनार (महाराष्ट्र) से व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ।

93. **1942 ई.:** मार्च 1942 में स्टैफोर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में क्रिप्स मिशन का आगमन; 8 अगस्त 1942 को बंबई के ग्वालियर टैंक मैदान से महात्मा गांधी द्वारा 'भारत छोड़ो आंदोलन' और 'करो या मरो' का आह्वान।

94. **1943–1945 ई.:** जुलाई 1943 में रासबिहारी बोस द्वारा सिंगापुर में सुभाष चंद्र बोस को आज़ाद हिंद फ़ौज और इंडियन इंडिपेंडेंस लीग की कमान सौंपी गई; 21 अक्टूबर 1943 को अस्थायी सरकार का गठन और अंडमान व निकोबार द्वीपों का नामकरण क्रमशः **'शहीद द्वीप'** और **'स्वराज द्वीप'** किया गया; जून 1945 में शिमला सम्मेलन और नवंबर 1945 में लाल किला मुकदमा।

95. **1946–1947 ई.:** 18 फरवरी 1946 को रॉयल इंडियन नेवी का विद्रोह; 24 मार्च 1946 को कैबिनेट मिशन का दिल्ली आगमन; 2 सितंबर 1946 को अंतरिम सरकार का गठन; 9 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की प्रथम बैठक (अस्थायी अध्यक्ष: डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा; 11 दिसंबर 1946 को स्थायी अध्यक्ष: डॉ. राजेंद्र प्रसाद); 3 जून 1947 को माउंटबेटन योजना; 18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित और **15 अगस्त 1947** को भारत की पूर्ण स्वतंत्रता (**PIB भारत सरकार**)।

मास्टर स्मृति ट्रिक्स बैंक (Complete Mnemonics Compendium) — भारतीय कला एवं संस्कृति

परीक्षा हॉल में त्वरित स्मरण हेतु IUC Academy के विशेष निमोनिक्स सूत्र

स्मृति ट्रिक #1: सिंधु सभ्यता के प्रमुख स्थल व नदियाँ

ट्रिक: 'लोभी मौसी का हरा कंघा रमा ने ले लिया' — लोथल (भोगवा), मोहनजोदड़ो (सिंधु), हड़प्पा (रावी), कालीबंगन (घग्गर), रंगपुर (मादर), रोपड़ (सतलज)।

स्मृति ट्रिक #2: सारनाथ अशोक स्तंभ के 4 पशु (दिशा अनुसार)

ट्रिक: 'घोड़ा पश्चिम, हाथी पूरब, बैल दक्षिण, शेर उत्तर' — अबेकस पर 24 तीलियों वाला धर्मचक्र और मुंडक उपनिषद से 'सत्यमेव जयते' उत्कीर्ण है।

स्मृति ट्रिक #3: भारत के 8 शास्त्रीय नृत्य एवं राज्य

ट्रिक: 'भरत नाट्यू, गान करना, पूरी आदिल, कथक उत्तर, कली-मोहिनी केरल, मणि-सत्र असम' — भरतनाट्यम (तमिलनाडु), कुचिपुड़ी (आंध्र), कथक (उ.प्र.), कथकली व मोहिनीअट्टम (केरल), मणिपुरी (मणिपुर), ओडिसी (ओडिशा), सत्रिया (असम)।

स्मृति ट्रिक #4: षड्दर्शन एवं उनके प्रवर्तक

ट्रिक: 'सांख्य कपिल, योग पतंजलि, न्याय गौतम, वैशेषिक कणाद, मीमांसा जैमिनी, वेदांत बादरायण' — भारतीय आस्तिक दर्शन की 6 मूल शाखाएँ।

स्मृति ट्रिक #5: बौद्ध संगीतियाँ: स्थान एवं शासक

ट्रिक: 'राजा-महाराजा आजा, वैशाख में सबका काल है, पटाओ मत आशिक, कुंवर जी कंगाल हैं' — 1. राजगृह (अजातशत्रु), 2. वैशाली (कालाशोक), 3. पाटलिपुत्र (अशोक), 4. कुंडलवन (कनिष्क)।

स्मृति ट्रिक #6: नागर मंदिर स्थापत्य के प्रमुख अंग

ट्रिक: 'जगती पर मंडप, गर्भगृह के ऊपर शिखर और आमलक पर कलश' — पंचायतन् शैली में मुख्य मंदिर चार सहायक मंदिरों से घिरा होता है (जैसे- खजुराहो कंदरिया महादेव)।

स्मृति ट्रिक #7: अजंता बनाम एलोरा गुफाएँ

ट्रिक: 'अजंता केवल बौद्ध (29 गुफाएँ, वाघोरा नदी), एलोरा तीनों धर्म (34 गुफाएँ: 1-12 बौद्ध, 13-29 हिंदू, 30-34 जैन)' — राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने कैलाश मंदिर (गुफा 16) बनवाया।

स्मृति ट्रिक #8: गांधार बनाम मथुरा बनाम अमरावती कला

ट्रिक: 'गांधार नीली-धूसर ग्रीक-रोमन (कुषाण), मथुरा लाल बलुआ पत्थर स्वदेशी (तीनों धर्म), अमरावती सफेद संगमरमर कथात्मक (सातवाहन)'।

स्मृति ट्रिक #9: हिंदुस्तानी संगीत के प्रमुख घराने

ट्रिक: 'ग्वालियर सबसे प्राचीन, किराना स्वर-प्रधान (भीमसेन जोशी), आगरा नोम-तोम, पतियाला तान-प्रधान (बड़े गुलाम अली खाँ), बनारस ठुमरी (गिरिजा देवी)'।

स्मृति ट्रिक #10: यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (प्रमुख)

ट्रिक: 'वैदिक जप, रामलीला, कुटियाट्टम, छऊ, कालबेलिया, संकीर्तन, नवरोज, कुंभ मेला, दुर्गा पूजा (2021) और गरबा नृत्य (2023)'।

स्मृति ट्रिक #11: द्रविड़ मंदिर स्थापत्य का विकास क्रम (पल्लव)

ट्रिक: 'महेश ने नरसिंह के साथ राज और नंदू को देखा' — महेंद्रवर्मन शैली (मंडप), नरसिंहवर्मन/मामल्ल शैली (रथ मंदिर), राजसिंह शैली (शोर मंदिर), नंदिवर्मन शैली।

स्मृति ट्रिक #12: भक्ति आंदोलन के प्रमुख संप्रदाय व सिद्धांत

ट्रिक: 'शंकर अद्वैत, रामानुज विशिष्टाद्वैत, मध्व द्वैत, निम्बार्क द्वैताद्वैत, वल्लभाचार्य शुद्धाद्वैत' — पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक वल्लभाचार्य थे।

स्मृति ट्रिक #13: यूनेस्को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (प्रमुख क्रम)

ट्रिक: 'वेद-राम-कुटिया में छऊ-कालबेलिया और दुर्गा के साथ गरबा' — वैदिक जप (2008), रामलीला (2008), कुटियाट्टम (2008), छऊ/कालबेलिया/मुडियेट्टू (2010), कुंभ मेला (2017), दुर्गा पूजा (2021), गरबा (2023)।

स्मृति ट्रिक #14: भारत के प्रमुख कठपुतली रूप

ट्रिक: 'कठपुतली राजस्थान की डोरी, कुंदई ओडिशा की, पावाकुथु केरल का दस्ताना, तोलु बोम्मलता आंध्र की छाया' — डोरी (कठपुतली, बोम्मलता), छड़ (पुतुल नाच, यमपुरी), दस्ताना (पावाकुथु), छाया (तोलु बोम्मलता, रावणछाया)।

स्मृति ट्रिक #15: भारतीय दर्शन के 6 आस्तिक संप्रदाय (षड्दर्शन)

ट्रिक: 'सांख्य-कपिल, योग-पतंजलि, न्याय-गौतम, वैशेषिक-कणाद, मीमांसा-जैमिनी, वेदांत-बादरायण' — इन्हें भारतीय आस्तिक दर्शन की रीढ़ माना जाता है।